রেলণ থে

ভারত ভুমণ

A

GUIDE TO TRAVELLERS

IN

INDIA.

শ্ৰীযুক্ত পদ্মনাভ হোষাল প্ৰণীত।

কলিকাতঃ

मणकी मवाणि बीवे १ मःशाक खत्य

সেন্যম্ভে

শ্ৰীহীরাশাল ঘোষদারা মুক্তিত এবং প্রকাশিত।

>>>> भाग।

বিজ্ঞাপন।

শ্বি কার্যবিশতঃ ক্ষেক্ষার ভারত জনগের স্থবিধা পাইরাছিলাম।
চতুর্দিক রেলভারে সমাক্ষর হওয়ার সকলেই জনগনিরতে সমুৎস্ক। বছাতও
জমগের তুলা প্রীতিপ্রদ পদার্থ আর কিছুই নাই। বাণিজ্য, জীবিকা
ত তীর্থের জন্মও বহুলাক যাভায়াত করে। কিন্তু কেছ বা দর্শনিযোগ্য
পদার্থ সকল না জানিয়া, কেছ বা প্রভারিত, কেছ বা বিপদাপন্ন, কেছ বা
শীড়াপ্রস্ত ও কেছ বা অর্জপথে অর্থহীন ছইয়া ভয়মনে দেশে প্রভাগত ছন।
এই সকল কারে বশতঃ সাগারণের হিতার্থে এই পুস্তক প্রকাশিত করিলাম। ইছার মধ্যে কলিকাভা ছইতে পেশোয়ার ও পেশোয়ার হুইতে
সেতুবদ্ধ রাইমখর পর্যান্ত রেলভরের স্থবিধানত প্রভাকছানে দেখিবার যোগ্য
শদার্থ, পাণাজ্রয়, থাছজব্য, পথ, ঘাট, তীর্থ, দেবালয়, মন্দির, প্রাচীনহর্ম্ম্য,
দেশের আচার ব্যবহার, ভাষা, ইতিহাস, বন, উপবন, পর্বত, উপভ্যকা,
নদ নদী সাগার ও তৎপরিবর্ত্তন সকল যথাসাধ্য সংক্ষেপে বর্ণন করিয়া বিনিবেশিত করিয়াছি। পুজ্জক সাগারণের জন্ম অপ্পমূল্য, অপ্পমূল্যর জন্ম
সংক্ষিপ্ত ও সংক্ষেপের জন্ম অনুনক্ষ্যনের বর্ণন নীরস করিতে ছইয়াছে।

এখনও কার্যান্তরোধে, উত্তর ও পূর্বে, বালালার সততঃ জমণ করি-ভেছি। এজন্ম প্রায় ৪ বংসর হইল এই পুজক একবার মুদ্রিত হইয়া বিনফ ইবরা যায়। এখন পুনরায় মুদ্রিত হইল। সাবকাশাভাবে অশুদ্ধ শোধন করিতে সক্ষম হই নাই। কেবল কয়েকটী মাত্র জম সংশোধন করিয়া দিলাম। বিজ্ঞা ব্যক্তিগণ দোষ মার্জনাপূর্বেক পাঠ করিবেন। অবকাশ ধীন অন্থকা-রের এই রূপ অস্থ্যারা যদি সাধারণের কিছু মাত্র উপকার বোধ হয় ভাষা ইংলেই প্রায় সার্থিক ইতি।

কলিকাতা। ১৪৭ নং কটনষ্ট্ৰীট ২৫ পোষ সম ১২৯১।

विश्वनाङ (मरवर्षा ।

সূচীপত্র।

প্রকরণ		બ ર્થ	51	প্রকরণ	পৃ	હ્ય
কলিকাতা -			3	মিহিজাম …		\$8
ক,লক(তা ছাবড়া	•••	•••	a	জামভাড়া ···	•••	78
কোননগর কোননগর	***	•••	હ	খরমাতার …	•••	28
জীর মপুর	٠	•••	Ŀ	মধুপুর · · ·	•••	28
হব ভব াটী	•••	•••	હ	পাৰ্শ্বনাথ …	;	78
চন্দ্ৰন্ধ্র	•••	•••	y	বৈভনাথ …	•••	\$8
ভগলী		•••	y	শিসুলতনা ···	•••	3¢
সাত্ গাঁ	•••	•••	4	নভয়াদি …	•••	20
মগরা		***	9	गिटभात्र …		24
তিবেণী	•••	***	9	क्षापूर	•••	20
পাতুয়।	•••	•••	b	लक्ष्मीमद्राष्ट्र	• • •	3 c
दर्भगान	•••	•••	5"	क्षकद्र।	•••	20
काञ्	***	•••	>>	বোলপুর …	400	20
ম†নকর	•••	•••	22	আমদপুর · · ·	•••	১৬
পানাগড়	•••	•••	>>	মাইত। ⋯	***	29
অণ্ল	•••	***	22	সিউড়ী …	•••	38
द्रानी गळ	•••	***	25	অফাবক্র ভীর্থ	•••	28
সেহাড় ে	ল ⋯		32	মলারপুর · · ·	***	28
সীতারামং			20	নলহাটি •••	•••	28
		***	30	মুর বিদাবাদ…	•••	5
শিটকো অ	11िन	***	50	मूबादि	***	\$>

স্চীপ্ৰ।

世帯なり		পৃষ্ঠা	প্রকরণ		পূৰ্
क्रांजगं।	•••	٦٣	टेजन एम द भारत भूदी	•••	৾৽১
পাকুড় …	•••	25-	দানাপুর …	•••	૭૨
बाट्यां	•••	35-	তাড়কারবন ···	•••	৩২
তিনপাহাড়	•••	29	আরু …	•••	૭૨
রাজমহল ···	•••	22	বেদিরমহাদর	•••	ဖ္ခ
মহারাজপুর…	***	20	বিছিয়া …	•••	೨೨
मारहरगङ्ग …	•••	২ ০	জুঁমরাও …	•••	৩৩
কহোলগ্ৰাম…	•••	20	रकमात्र …	•••	ು
ভাগলপুর …	•••	25	जगनीय	***	9 8
হুল ভানগঞ্	•••	23	মোগোল গরাই	• •	۰8
বরিয়ারপুর · · ·	•••	২ ২	কাশী …	•••	૭૬
कामान प्र · · ·	•••	২ ০	অন্তরগৃহযাত্রা	•••	8\$
मूर्ण्य · · ·	•••	২৩	পঞ্জোশীযাত্র	•••	8২
नकीगदाई	• • •	₹8	জেনিপুর ···	• • •	80
পথিকেরমতর্কত\	•••	2.0	দোপাণ্ডর তীর্থ	•••	89
মোকামা · · ·	• • •	ર છ	ञरगधाः। …	•••	88
বাঢ় …	***	રહ	প্রাচীনপ্রাবস্থি	•••	89
শাটনা …	• • •	ર છ	लरङ्की …	•••	89
বাঁকীপুর …	•••	29	टेनियशंद्रभा ···	•••	@ 2
ছাজিপুর · · ·	•••	29	ক অকুব্ৰু · · ·	•••	QO
था हो न देव भागी	•••	29	প্রাচীন,সাংকাশ্যা	434	48
ৰাখ্যা	• • •	২৭	সাজেহানপ্র…	•••	48
গয়া '…	•••	26-	रदिनी …	•••	.48
জ্বানম্বেরাজগৃহ	•••	೨೦	বৌদ্ধদেরপিলিভিত	***	89
ণিরিবজ ···	•••	৩১	দ্রোণেরঅহিচ্ছত্র	•••	aa
ষণিনাগেরবারাঞ্জাম	•••	৩১	পাঞ্দেরআশ্চর্যান্ত্র্গ	••	`aa
विश्व¦गिक्षण्ड न	•••	23	ज्ञश्रमतका स्थिलानगत	•••	¢ 9

প্রকরণ	Ø.	81	প্রকরণ	9	শ্ৰূপ
শরন বা খুকরক্ষেত্র	•••	:05	মংশ্ৰ বা বিরাট	•••	93
মুরদাবাদ · · ·	•••	49	আজমীর ···	•••	93
নৈনিভাল …	•••	Q 9	পুষ্বতীর্থ · · ·	•••	93
भाष्ट्र एक देखां विभाग क	•••	@ 9	মথুরা …	• • •	9.5
আলমোড়া	•••	05	इन्होंवन	•••	93
পঞ্জয়াগ …	•••	b-t	আলিগড় …	•••	وسو
বদরীনারায়ণ তীর্থ	•••	45	मिली	•••	6-3
टकमात्रनाथ ···	•••	05-	हेस्र श्रम् ···	•••	5
रेकनारमद्रश्य · ·	•••	60	কুত্বমিনার · · ·	•••	2.5
इ न्द्र	•••	60	ভোগলকাবাদ	•••	હ
বিশ্বাপিকতি …	•••	৬০	দিলীহইতেবিদার গ্রহণ	***	*
মির্জাপুর · · ·	•••	60	মিরট · · ·	•••	26
म र् नि '…		હ ડ	ছন্তিনা ⋯	4 * *	ఎఎ
প্রয়াগ বা এলাহাবাদ	•••	دو	সর্ধন •••	•••	29
প্রাচীন প্রতিষ্ঠানপুর	ě.,,	59	সারনপুর · · ·	• • •	>00
প্রাচীনকোশাস্বী	•••	98	হরিদ∤র •••	•••	200
রামায়ণেরশৃজবেরপুর	•••	৬8	দক্ষত স্থান কন্ধল	•••	202
কাণপুর · · ·	•••	৬8	মধ্যবার · · ·	•••	203
रेटोशा	• • •	58	কণু ও শকুন্তনার আহ	: म · · ·	302
আগর · · ·	• • •	৬৪	দেহরাছ্ন · · ·	•••	\$०२
(কল্ল) · · ·	•••	48	मरमोति ७ लाखत	***	३०३
⊙†জমহল ⋯	•••	৬8	হিমালয় শ্লের পরিচ	য় …	200
७७मटक नि …	•••	90	যমুনা পুল অতিক্রম	•••	200
(गरकक्का	•••	98	অহালে} …	•••	7 6 8
ফতেপুরশিকরী	•••	90	কুৰুক্তে …	•••	3 . 8
ভরতপুর …	•••	99	निमन्। …	•••	>03
জয়পুর · · ·	***	qbe	রাজপুরা ও পতিয়াল	1	209

经事员的	4	ल्का	প্রকরণ	প্ঠা
সর্হিন্দ · · ·	•••	309	মারকুও •••	>58
লুধিয়ানা · · ·	•••	209	চিত্রকৃট …	··· >২8
শতক্ষ নদীপার	•••	209	সতনা ফেসন ও রেগ	য়া ১২৪
জনস্কর · · ·	***	309	ভাববলপুর · · ·	··· >>@
নগর কোট তীর্থ	•••	206	নৰ্মদার ঘাট · · ·	>28
यनिकर्ति डेक श्रञ्जरन	•••	306	নর্মদার প্রপাত	328
द्यानापूषी ठीर्च	•••	202	মাৰ্কেন পাহাড়	>29
কিরতার পুর ও কপুর	তলা	208	আচীন ত্রিপুর ন	गंदब
বিপাশা পার	•••	20%	তাবশেষ	529
অমৃতসর · · ·	•••	202	नर्यमा शांत	••• 529
মিয়ান মিয়ার · ·	•••	۵۰۵	विकाषियो	329
আনার কুলী · · ·	•••	20%	পথিকের সতর্কতা	\$ 2 b
नारशंद …	•••	770	নৰ্মদা প্ৰদেশ…	325
পঞ্চাবের আচার	•••	222	थाटवांश	••• 335
भूगडांच …	•••	222	मानव ताला श्राटन	> 25
ইরাবতী ও চন্দ্র ভাগা	পার	552	विटकात (र्भागर्य)	325
राज्यां	•••	225	ভঁকারেশ্ব মহাদেব	25%
কাশীরের পথ	***	220	মণ্ডলেশ্বর · · ·	528
কাশীর ভ্রমণ…	***	22¢	কার্ত্তবীর্ষ্যের রাজধা	री माहि-
ছিমালয়ে আরোহণ	•••	222	षाजी …	25%
কাশ্মীরের তীর্থ	•••	779	জমদ্যির আশ্রম	٠٠٠ ٢ عرب
কান্মীরের আচার	•••	5 42	के टन्मात्र ···	> 52
পেশোয়ার ···	•••	১২২	উচ্চয়িনী · · ·	253
আশ্চর্যা প্রান্তর	***	320	আশীরগড়ের কেল	••• 50:
बद्ध योजा · · ·	•••	520	বুরহানপুর · · ·	30:
নৈনিতে আরোহণ	•••	>20	তাণ্ডী নদী পার	50:
বিস্ফোর শোভাদর্শনার	ৰ স্ত	250	নাগপুর প্রবেশ	50:

প্রকরণ	शृष्ठा	প্রকরণ		পৃষ্
আজাণার গুহা	200	ভড়েচি বা ভৃগুতীর্থ		349
নিজামরাজ্যে আরাকাব	वाम ১७७	জগতের মধ্যে প্রকাণ্ড	र के	205
শুপ্রসিদ্ধ দেশিতাবাদ	500	গাইকবাড়ের রাজধানী	•••	305
জগদ্বিখ্যাত ইলোরার	গুহা ১৩৪	बर्फामा	•••	206
দওকারণা ও পঞ্চবটী	>89	যযাতির স্বর্গপতন স্থান	•••	\$0\$
नागिक जीर्थ …	\$89	महीमागत महम जीर्थ	***	250
গোদাবরীর উৎপত্তি	586	আহ্মদাবাদ · · ·	•••	250
পাঞ্জিনা ও চামারলিন	त्र छहा ३८৮	গুজরাটের ব্যবহার	•••	>60
গোদাবরী পার	>89	অৰ্ক্ট্ৰাচল বা আৰু পা	হাড়	292
রেলে সহু শৈলে আগর	ाइन ১८৯	महादा द्वे तमन	•••	292
আ'ৰচৰ্য্য কেশিল আৰু	•हर्या	মহারাষ্ট্র ভাষা	•••	১৬১
चूत्रक	282	মাধিরন নগর…	•••	১৬২
সম্থের ভীষণ অভ্যন্তর	789	সংখ্য় শোভা	•••	3 50
সহু হইতে অবরোহণ	… ን8৯	কারলির গুহা…	•••	298
कनामी	500	বাদছা বেদছা গুছা	•••	> <i>e</i> 8
मनगिष्ठे बीश …	>40	পুন।	4	398
টানা …	262	দেতারা …	•••	১৬৬
বদ্বে …	262	मङ्बिटलखेत · · ·	•••	১৬৬
গোরাপুরী দ্বীপ	>40	কুষ্ণার উৎপত্তি স্থান	•••	১ <i>৬</i> ৬
धजदां जे	>48	পুঞরপুর তীর্থ	•••	১৬৭
সোমনাথরৈর ভাচল	200	ভीगाननी পात	•••	299
षांद्रका	··· sea	দোলাপুর …	•••	229
कष्ट (मन •••	sat	বিজাপুর · · ·	•••	399
পশ্চিম সাগরের উপর	ह्म… ५००	গুলবর্গা · · ·	***	مزاق د
ञ्दरे	>49	माद्यापा · · ·	•••	365
তাপী সঙ্গম পার	569	ভয়াডি ···	•••	3 34
নৰ্মণ সাংগর সন্ম	>49	वस्ताना	***	رود د
1		•		

•						
শ্রেকর ণ	ल्का	প্র	ক রুগ		9	i pi
इत्रमद्रांताम	3%	ত	ন্জোর	•••	•••	395
তৈলকী ভাষা ও আচা	ब्र… ১५	\$ 4	ক্ষীপুর তী	र्थ	•••	292
(भानक्षा	১٩	• 4	রিকট	•••	•••	>12
কুষ্ণাপার	39	৽ বি	চলোর যন্দি	র	•••	28-0
बारेटनंत्र	39	১ বং	দলুর	•••	•••	250
কৰ্ণটি ভাষা ও আচাৰ	\$9	2 9	র জ পত্তন	•••	•••	720
মুদ্দ ভজাপার	39	২ ম	হীশুর	•••	•••	22-7
बलाबी	39	২ স	(त्नभ	•••	•••	35-3
কিকিয়া দৰ্শন	59	2 4	াবেরীপার	•••	• • •	225
পান্ধা ও ঋষামূক	59	2 6	কায় স্বাটুর	•••	• • •	3>2
मानादान	5	19 7	ীলগিরিতে	আরোহণ	•••	26-5
दिख्यं नगत · · ·	১	19 6	াালখাটে ও	শ েশ	•••	35-3
কডপ নগর · · ·	39	18 ম	লের দশনি	•••	•••	22-3
यदिखां हम · · ·	5	ea T	লবারের ব	াবহ ার	***	22-8
ৰালাজী তীৰ্থ · · ·	>	98	পশ্চিম সাগ	ার	•••	22-8
माटाख …	>	900	হুমাবার	•••	•••	22-4
ভীষণ পূর্ব্ব সাগর	>	,	লগৰি খ াত		•••	28-Q
জাবিড়ী ভাষা	••• 5	99 (গাকৰ তীৰ	F	•••	369
(ठक्मभष्ठे	••• ১	99 f	ত্রচুণাপ ল্লী	ভীৰ্থ	•••	369
महावनीश्रत	>	99 7	প্রীরন্ধজীর	মন্দির	•••	366
পতিচরী …	2	99	ডিতিগল	•••	•••	36-6-
তিক্ৰমাণী তীৰ্থ	••• >	99	মছুরা	•••	•••	72-9
जिविद्यादशं · · ·	••• >	99	भाषारमभ	•••	***	১৮৯
কডালুর বন্দর্ন	\$	95-	ক্সাকুশারী	া ভীৰ্থ	•••	22-2
मझरद्रम डीर्थ ···	\$	95-	শারার	•••	•••	75-9
ক্ষুকোন্য · · ·	;	95	মুক্তা আহ	রণ…	• • •	_
कारवदी मलम	••••		সেতৃবন্ধ র		***	79.
	,	গুটীপত্ৰ সম	1481			

স্চীপত্র সমাপ্ত।

অশুদ্ধ শোধন।

অশুদা		শুদ্ধ	পৃষ্ঠা		•	াং ক্রি
महेश्र	•••	इदेश। •••	9	•••	•••	૨ ૨
রাজেন্দ্র · · ·	•••	রাজা রাজেন্দ্র	8	•••	•••	22
বিচ্ছপ্ন · · ·	• • •	বিদ্ধিয় …	Œ	•••	•••	હ
গুতিবর ···	•••	প্রতিরব …	b-	***	•••	36-
কয়র শোলের ••	•••	খয়র শোলের	22	•••	• • •	२३
পাঘমতে …	•••	পাদ্মমতে	83	•••	•••	9
সাভকাশ্যা · · ·	•••	সাকাশ্যা · · ·	œ8	•••	•••	20
প্রস্তারের · · ·	•••	প্রস্কারের •••	& 0	•••	•••	२७
मूठी	•••	মূর্তী …	43	•••	•••	29
એ	•••	ভয় …	৬৯	***	• • •	2,5-
इङ्गी	•••	इरेंगे	93	•••	•••	20
স্মত জ মহল		মমতাজ মহল	92	***	•••	2 Œ
ইন্দ্ৰাপন্ন * * * ক	वद्र …	• •••	60	•••	•••	26
ফেরোজ সহ'র	•••	ফেরেবজ সাহে	র ৮৩	•••	•••	২০
এখন ও লে কে	•••	এখনও লোকে	हेसा भर	5 বলিয়া	থাকে ৷	
		ফেরোজের বে	হ দেখীব	हेट इस	ায়ু নের	
		কবর …	b -b-		•••	360
মাংকলি লাল	•••	মা:কলি ও লাল	64	•••	•••	25-
উচ্চতায় · · ·	•••	উচ্চভার · · ·	22	•••	***	24
চন্দ্র যন্তের · · ·	•••	যন্ত্র মান্ত্রের	\$>	•••	***	22
(कामभान	•••	কোলসার	36	***	•••	29
इरर्ज …	•••	इर्ग …	৯৭	•••	•••	>
ভিক্ষুক · · ·	•••	ভিক্ষুকের…	৯৭	•••	***	Œ
স্থিত …	•••	• •••	205	***	•••	2
र्शक्षांत्र · · ·	•••	गकाषाद्वतः…	205	•••	***	৯
बक∣वर्ज ···	•••	বিশাবর্ত …	30¢		***	48

অভন শোধন !

		**		পৃষ্ঠা			পংক্তি	
অশুদ্ধ			ভৱবারির ভরবারির		200			۵
ত্বরারির	• * •	•••	•	•••	305		444	22
কেলে	•••	•••	কোণে	•••	202	**1	•••	b r
চতুকৈৰ	***	•••	इ.स्	•••	-	411		৯
कमग	•••	•••	কদম	•••	209	•••	•••	29
ত্রি মারের	•••	•••	ত্রিমাবের	•••	222			·8
गक (मरे	•••	•••	সকলেরই	•••	220	•••	•••	38
গ্ৰীম	•••	•••	এ ব	•••	220	•••	•••	_
212	•••	•••	পদ্ম	•••	224	• • •	•••	22
মলোকরা	97	•••	অশোক রা	জ	\$ 20	***	• . •	78
কুম্ব	•••	•••	₹9	•••	250	***	*** *	39
গ্ৰহ	•••	•••	গ্রস্থ	•••	252	***	•••	22
উপরি ভ	रिश	•••	উপরি ভাগ	4	\$ 28	414	***	ঽ৬
বৰ্ষি	***		•	•••	329	***	•••	29
ভেলার	•••	•••	জেল†য়	•••	226	• • •	***	२०
ভ,ট বিভ		• (•	অটি বিভ	र्दर्भ	300			25
	16.1		হরিণ	•••	200	441	•••	20
ভূরিন		•••	अ द्रग	***	202	•••		39
সরল	•••	•••	তামভা	•••	200	•••	•••	20
রামতাড়া	•••	•••	0	• • •	309	•••	•••	20178
সেকু	•••	•••	নিথি নিথি	•••	209	***	•••	₹8
নিধি	•••	•••			204	***	•••	રહ
हे इ । इ दे	• • •	•••	0		393	•••		22
ভাল	•••	•••	মনে	•••	393	•••	•••	ঽ৩
জামাদে		•••	व्यागीत व	• • • •		•••	•••	20
বা সিংগ্	ার…	•••	•	•••	\$98	•••		22
প্রের	•••	•••	প্থের	•••	22.5		• • •	20
সর্বতী		•••	স্বর্বতী	***	১৮৬	•••	•••	23
মছুৱার		***	মছ্রায়		36-	***		29
নাই	••3	•••	ন র	• • •	220	•••	•••	~ 1



(इन अर्व

ভারত ভূমণ।

প্রথম অধ্যার।



বাজালা, বিহার ও কালী বিভাগ।

কলিকাতা হইতে আমরা দেশ অমণে মিগত হইলাম। কলিকাতা হই ভাগে বিভক্ত, সহর কলিকাতা ও সহরতলী কলিকাতা। সহর ও সহরতলী কলিকাতা। সহর ও সহরতলী কলিকাতা। লইরা এই মহানগরী গালার পূর্বতীরে ছর কোশ দীর্ঘ ও ছুই কোশ বিস্তীণ। ইংরেজেরা করেকটি কারণ বশতঃ তিন ক্রোশ দীর্ঘ ও দেড় মাইল বিস্তৃত স্থানকে সহর কলিকাতা নাম দিরাছেন। সহর কলিকাতার চারি লক্ষ লোকের বাস। কিন্তু সহরতলী কলিকাতা লইয়া লোকের বাস অত্যন্ত অধিক। সহর কলিকাতায় ইংরেজ, করাসী, জর্মাণ, গ্রীক, চীন,মাণ, ছুটানী, নেপালী, আমেরিক, পারসী, মোগল, পাচান, আরব, তুরকী,হাবসী ম্যালেয়া প্রভৃতি পৃথিবীর যাবতীয় স্থানস্থিত ভিন্ন বেশী ভিন্ন ভাষী ও ভিন্ন ধর্মী লোকগণ দিবানিশি কার্যো ব্যাপ্ত ছহিয়াছে। ইহার ত্রিশ বাজার, দশ পটি ও পাঁচ চক ক্রব্যে পরিপূর্ণ। প্রত্যন্ত লক্ষ্ণ লোক প্রবেশ করিতেছে ও লক্ষ্ণ লোক বাছির হইয়া যাইতেছে। প্রত্যন্ত মক্ষ্মল হইতে ৭॥ লক্ষ্ণ টাবার ক্রব্য প্রবেশ করিতেছে ও মুদ্রাসহ ৮ লক্ষ্ণ টাবার জাহাজে বাছির হইয়া যাইতেছে।

ভূর হইতে কলিকাতার ঐশ্বর্য দেখিতে আরও ভরকর। মালে পরিপূর্ণ হইরা প্রত্যাহ তিন দিক হইতে তিন রেল যেন ভারত শৃত্য করিয়া দ্রবাদি লইরা যাইতেছে। বিজ্ঞীর্ণ গলা ও হই দিকের হই খাল আচ্ছর করিয়া অসংখ্য মালারা কলরব করিতে করিতে কলিকাতা প্রবেশ করিতেছে। কিছ যেমন তরজনালা সঙ্কুল গার্জনকারী নদী সন্ধান সমুদ্র স্পর্ণ মাত্র কোথার নিমীলিত হইরা যায়,সেই রূপ ঐ সবল দ্রব্য কল্কিগতা স্পর্ণ মাত্র যে কোথার প্রত্যাল করে কিছুই জানা যায় না।

কলিকাতায় দেখিবার উপযুক্ত অনেক বিষয় আছে। এখানকার গড়ের মাট ক্লক্সি: স্বৰুৱ। বতদুৱ দুষ্টিপাত কর নবহুৰ্বাদল মণ্ডিত স্পোভন কেত্ৰ ক্রমেই বিভাগ হইরাছে। তাহারই মধ্যে দধ্যে ভারত বিজেত। বিটিশ বীর-গণের প্রতিমৃতি সকল বিরাজ্যান। এক ছলে অকটরলোনি মন্ত্রেণ্ট ১১০ হক্ত উচ্ছি ত ছইয়াছে। দক্ষিণ দিকে দেও পালের বিখ্যাত গিৰ্জার গদণাবলম্বিনী চূড়া। ভাছার ডাইন দিকে আলিপুরের উপব্নের শীর্ষ সকল নেত্রগোচর হয়। মাটের মধ্যস্থ পশ্চিরব বিরাবিত নিকুঞ্জমালাবিমণ্ডিত ত ভাগীরখী-প্রবাহ সংস্পর্শন শীতল সমীরণ-দেবিত পথ মধ্যে প্রবেশ করিলে বোধ হয় যেন কবিকুলের বর্নিত বিষয় সকল প্রত্যক্ষ করিতেছি। পশ্চিমে কোর্ট উইলিয়ম ও বিলাসীগণের সঞ্চরণ ঘোগা পুষ্পমালা বিভূষিত, নিকুঞ্জলতাবিতান-বিমণ্ডিত, উৎসৱাজি-সমন্বিত, ব্রহ্মদেশীয় মণ্ডপ-শোভিত কুলাব্য কুমনোছর সংগীতরবে নিনাদিত ও বিজাতীয় বামাকুলাকুলিত ইডেনের বমণীয় উলান। তৎপশ্চাতে গছাঁর বিশাল বম্ব ছল নিবিড় অর্থব-শোতে আরত হইয়া গ্রাণমগুলে যেন বন শোভা বিস্তার করিয়াছে। মাঠের উত্তর ও পূর্ব্য প্রান্ত সমতল, অশৃধ্বল, অস্ক্রিত মার্ব্যেল শোভা বিনিন্দিত ও দৌরকিরণে সমুদ্র্যাসত অর্ণাক্ষরে দেদীপ্রমান হব্যমালার সৌন্ধ্য দুর ছইতে সন্দর্শন করিলে বোগ হয় যেন অর্গপুরী ভূমগুলে অবতীর্ণ ছইয়াছে। আকাশে প্ৰকাণ্ড পক্ষিণণ বিচিত্ৰ গতিতে সম্ভৱণ দিতেছে ও নিম্নে ভিন্ন কায় ভিন্ন বেশী লোকগণ যানারোহণে ও পদব্রজ্ঞে দেখিতে দেখিতে বাহির হট্যা মাইতেছে। প্রিক্ষ অব ওয়েলস্ ও তংপার্শ্বভী লোকগণ্ড কণকাল এই শোভা দেখিয়া বিমুগ্ধ হইয়াছিলেন। গড়ের মাঠের দক্ষিণে তালিপুরের পশু-भाना ७ लक्केट्रमके गवर्गद्वत अन्त्र । भार्ष (अन ७ खाड्रमिट्ड्त काम । मर्क्त मिक्किए कि पूर्व शृथितीत बर्धा विभागी वाममाह मरक्की बारक त शक পক্ষাদি পুরিত উদ্যান শোভিত জালয়। তাহার অপর পারে গছাতীরে বহুরে বিস্তীর্ণ গ্রন্থেটের বোটানিকাল গার্ডন। ইহাতে ভূমগুলছ প্রায় দশ সহল ভিন্ন জাতীয় উদ্ভিদ সংগৃহীত হইয়াছে এবং ইহার মধ্যন্তিত ক্সত্যোধ রক অতি অকাও। গড়ের মাঠের পূর্কদিকে এনিয়াটিক মিউজিয়ম বা মৃত পশ্ৰপক্ষাদির আগর। ইহাতে ভূসবদীর ও প্রাণী সম্বনীয় নামা বিষয় অব-

লোকন করিয়া পরম প্রীতিবাভ করা যায়। ইহার পুস্তকাগার অতি বিশাল এবং ইছাতে বহুকালের প্রাচীন মুদ্রা ও প্রত্তরাদি এত সংগৃহীত আছে যে, এদিয়াখণ্ডে এরপ আর কুত্রাপি দৃষ্টিগোচর হয় না। মিউজিয়ম বা যাত্র ব্যের পার্থে মিউনিদিপাল বাজার। মাঠের পশ্চিমদিকত ছুর্গ হুই কোটা টাকা বারে নির্মিত হয়। হুর্গটী অন্টকোণ। কলিকাতার দিকে ত্রিভুজাকার পঞ্চ বাছ সমভাবে আছে। এবং নদীতীরত্ব বাতত্ত্ব অবস্থান্নসারে বিবম হইয়াছে। ইহার তুলা স্থাঠিত হুর্গ ভারতে আর নাই। কিন্তু নদীতীর যেরূপ মুর্কিত ভূমিভাগ দেরপ মাই, আক্রমণ করিলে রক্ষা করিতে দশ সহজ লোকের প্রয়োজন হয়। এত লোক থাকিলে অনায়াসে বাহিরে যুদ্ধ করা যাইতে পারে। হর্ণের উত্তরে পূর্কোক্ত ইডেনের উদ্যান, তাহার উত্তরে নগরবাদী-গণের সভাগৃহ টাউনছল। প্রতিমূর্ত্তি-সজ্জিত টাউনছল অতি মনোহর। টাউন হলের নিকট বত্ত চূড়াসমন্তিত হাইকোর্ট ও বিজ্ঞীণ ফাইনেনসাল ডিপার্টমেণ্ট ॥ পুর্বে এইটি গবর্ণমেণ্ট হাউস ছিল। ইহার সমুখে ওয়েলেস্লী নির্মিত বর্তমান গ্রব্দেট হাউদ বা রাজবাটী। উলানের মধ্যন্ত গ্রব্দেট হাউদ অতি শোভাকর, হর্ষোর চারিকোণে চারিটি খণ্ড বাহির হইয়াছে। গোলাকার পথ দারা এই চারিখণ্ড মগাধণ্ডের সহিত সন্মিলিত আছে। মধাধণ্ডের গৃহ ছুই ভাগে বিভক্ত। বিভীর্ণ সোপানাবলি অবলম্বন করিয়া উঠিলে সমুখেই মার্কিন মণ্ডিত এক প্রকাশু গৃহ। অভ্যন্তরে দক্ষিণে ও বামে ডোরিক জাতীয় স্ত ভ্রমালা শ্রেণীবন্ধ হইয়া চলিয়া গিয়াছে। ইহাতেই থ্রাজিনিংহাদন সংস্থাপিত। এই গৃছের পর আর এক গৃহ। সমস্তই আইওনিক শুল্ক, এইটি বলক্ম বা নৃত্যাগার। কোণের খতে গবর্ণর জেনরলের এড়িকক্ষেরা বাস করেন এবং কেবিলাদি লইয়া থাকে। নিম্নে আফীন ও গুদাম। গ্বৰ্গমণ্ট ছাউদের উত্তর পুর্বে স্মজ্ঞিত উইলসন ছোটেল। নিকটে হ্যামিলটন, কুককেলভী, অছলর, ছারমান প্রভৃতি মণিকার ও বণিকাণের বিপনি যেন কলিকাতা প্রস্কৃটিত করিয়াছে। ইহাদের উত্তরে উদ্যান মধ্যে লালদিঘী। ইহার গভীরতা ৪০ হাত এবং উদ্যানের প্রত্যেক পার্শ্ব সহত হাত। নানদিয়ীর চারি পার্শ্ব দেখিতে অতি অন্দর। দক্ষিণে বিচিত্র ভারাগার বা টেলিএাক অকীল। পূর্বে মুক্তা পুরিত করেন্দী বা নোটের আফীস। উত্তরে বছ দুর বিস্তীর্ণ রাইটর বিলডিং

উত্তরপূর্ব কোনে অভ্যান্ত গিরজা। পশ্চিমে গযুক্ত সময়িত প্রকাণ্ড পোই আকীন পোষ্ঠ আকীনের পার্শ্বে কটন ছাউন। এই ছানে ১৭৫৭ অব্দে ভরম্বর আত্তরুপ হত্তা ঘটিয়াছিল। পোস্ক আফীদের দক্ষিণে কিছু দূরে গদার স্থানে বেল্লন বাৰ্ণক, তছভাৱে কিছু দূরে বণ্ড হাউদ। বণ্ড হাউদের অর্জ মাইল উভরে টাকশাল। লালদিখীর উভর তীর দিয়া পূর্বে মুখে শিয়ালদংগামী রাস্তা বারা কলিকাতা দক্ষিণ ও উত্তর হুই খণ্ডে বিভক্ত ছইয়াছে। 🕮 র অধিবাস অরপ দক্ষিণ খণ্ড ইংরেজ ছারা অধিবাসিত। উত্তর খণ্ডে দেশীয় লোকেরা বাদ করে। উত্তর থতে দেখিবার মধ্যে কলেজ কয়েকটি অতি छेरकुछ । यिजित्कन कलाएकत किछत हिलाडेन कौन जश्ले ने नखरनत ज्ञान 'নহে, ইহার অভান্তরে এক পশুর হুই মন্তকাদি নানারণ অদ্ভূৎ প্রসব এবং নানা রোগের ভয়কর মূর্ত্তি আছে। কলেজের কিছু দূরে চোরবাগানে রাজেজ মলিকের পশাদি পূরিত বাদী দেখিবার উপযুক্ত। নগরের উত্তরে ও উত্তর-পুর্ব্ব কোণে কলিকাতান্থ প্রধান লোকগণেব আয়াসের উদ্যান। উত্তরে সাত পুকুরের বাগান প্রভৃতি করেন্ডটি উদ্যান আছে। উত্তর-পূর্ব কোণে বেল-গেছের পার্শ্বনাথের বাগান। তাহার পার্শ্বে পাইকপাড়ার রাজাদের উৎকৃষ্ট হৈঠকখানা। ইহাতে আদম ও ইভের যে চিত্র আছে ইহার হুলা চিত্র ভারতে व्यक्ति जन्म जानिशारह। किहू पृत्त नमममात्र गवर्गस्यक्ति स्नानित्वन স্থান, ভবিকটে আর একটি উৎকৃষ্ট উদ্যান আছে। কলিকান্ডার যে দিকে দৃষ্টি-পাত কর দেই দিকেই নয়ন আকৃষ্ট হইবে। ৬০।৭০ হাজার টাকা আছে এমন লোক প্রত্যেক গলিতেই দেখা যার। এখানকার নগর পারিপাট্য অভি হৃদ্য, পঞ্চ কোশ হইতে ভাগীরথী প্রবাহ আসিয়া হারে হারে ভ্রমণ ক্রিতেছে। কখন বা ত্রিতল উপরে উপিত হইরা গৃহমধ্যে নির্মার বারি বর্ষণ ক্রিতেছে, কখন বা পথ প্রান্তে কম্প তক্তর নাায় অজজ বেগে জল দান করিতেছে, কখন বা কুত্রিম র্ফিরপে পরিণত হইয়া রাজমার্গের ধূলিজাল विवाल कविरुद्ध । मस्यान वान्य मकन वन वार्ग जानिया शृंद्ध शृंद्ध बादव ষারে পথে পথে পূর্ণ চন্দ্র প্রভা বিস্তার করিয়া প্রক্রু নিত হইতেছে। এক এক দীপ ছইতে বাৰণ বৰ্তিকা সুদ্য আলোক বিনিৰ্গত হয়। পথের গভীর অন্তরে প্রকাও পরঃপ্রপালী নগরের মলপ্রবাছ লইয়া অদৃষ্ঠ ভাবে দূরত্ব খালের দিকে

गंगन कतिराज्य । मीर्ष हार्वि ध्यक्षांन श्रथ बाजा अहे महानगनी विक्रित। পূর্ব্ব প্রান্তের পথ অতি প্রাণক্ত এবং তাছার এক পার্থ দিয়া রেল চলিতেছে। মধ্যন্থলের পথ অতি শোভাশালী। পূর্ণ ৪০ হস্ত বিল্পৃত এই পথের মধ্যে मर्था उरक्षे जेमान ७ निर्मन मनिन भूग मरतारत। उपनष्टत अञि थाहीन অপরিচ্ছন্ন ও দৃষ্টার্ণ চিৎপুর রান্তা। তদনন্তর গঙ্গাতীরের বহু সোপান শো-ভিত ও বাণিজ্ঞা দ্রব্যে পরিপুরিত ও রেল বিচ্ছন্ন গলাতীরের পথ। কলি-কাতার দেশীয় বিভাগে স্থানে স্থানে সঙ্কীর্ণ ও অপরুষ্ট পথ আছে দত্য কিন্ত প্রধান পথ সকল অতি প্রশস্ত ও সরল। যতদুর দৃষ্টিপাত কর সমতল সৌধ-মালা সরলভাবে চলিয়া গিয়াছে। পথের উভয় পার্থে রক্ষাদি হশোভিত আলোকদণ্ড সমন্বিত ও প্রস্তব্যাজি বিরাজিত মহুষ্য চলিবার উচ্চ পথ। मधाष्ट्रान्त्र निम्न जांग निश्च वर्गी, क्लिन, छांशाम, त्यस्य, त्यांन, शाकनी, শকট, পালকি, ট্রামগাড়ী দতে চল্লিশ খান চলিতেছে। যে ছানে আহ্বান কর, যান সল্পে সঙ্গেই উপস্থিত। সকল পথই লোকে আকীর্ণ। কেবল রাত্তি ছুইটার পর কিছু শুর হয়। কলিকাতায় প্রাক্ষা সর্ব্য দেশী য় সর্ব্ব বিষয়ক সর্ব্ব দ্রব্যই পাওয়া যায়। এখানে ক্সুল, সভা, প্রেস,পুস্তক,লয় নাট্যশালা, য়য়দা-দির কল ও নানা ধর্মাবলম্বীদের ধর্মাধিকরণ মন্দির বিস্তর আছে। হুই শত বর্ষ পূর্বেষ্ট কলিকাতা নিতান্ত অস্বাদ্যকর, জন্মলপূর্ণ, ব্যান্ত ও সর্পের আবাস ছিল। মহুষ্য সংখ্যা নিতান্ত অপা। পুর্বদিকত্ব বাদার বিলের জল গড়ের যাঠ পর্যান্ত বিন্তীর্ণ ছইত। পঞাশ কোশ দক্ষিণস্থ সাগর ও তত্তীরবর্তী স্ক্ষর বনের প্রতাপে লোকের বাস করা ভার হইয়া ছিল। কেবল দক্ষিণদিকস্থ কালী-ঘাটের তীর্থ দর্শনার্থ লোক আগমন করিত। ১৬৯০ খ্রী: অব্দ অবধি কলি-কাতার জীর্দ্ধি আরম্ভ হয়। এখন ইহার তুল্য নগর এসিয়াখতে আর নাই।

কলিকাতা হইতে হাবড়া পর্যান্ত গলার আশর্ষা ভাসমান সেড়। হই
দিকে গ্যাদের শোভা ও মহ্নরা চলিবার পথ।জাহাজ প্রবেশ করিবার কালে
কিয়দংশ উল্লাটিত হর এবং পুনরার বিলীন হইরা বার। যথম গাড়ী সকল
গমন করে, তখন কি গভীরই গর্জন হইতে থাকে। পুল পার হইরা হাবড়া
টেসন। এই খান হইতে জেটি খচিত কলিকাতা দেখিতে অতিচমৎকার।
টেসনের উত্তরে বহু ভূর পর্যান্ত ভক-ইয়ার্ড। ভূরে সুস্ডীর কল। হাবড়ার

উেসনের ভাব নিতান্ত দান্তিক। নদী দকল দাগরে প্রবেশ করিবার কালে বেষন মুখবাদন করিয়া দমন্ত গোরব বিভাব করে, হাবড়া টেসন ইউ-ইণ্ডিরা রেল সম্বেদ্ধর দেই এপ গোরব প্রকাশ করিভেছে। কত দিকে কত রেল, কত গাড়ী,কত কল, কত মাল কত দূর ব্যাপ্ত করিয়াছে। এইরূপ স্থানে আমরণ ট্রেণে আরোহণ করিলাম।

स्वकृष भाव स्रेश डेड्स भार्य गम्भूर क्वा । भर्य हाममातीत भूल। অ্নতিমূরে কাদান প্রস্তুতের প্রাচীন স্থান। তাহার পর বালির পুল। জন্মারন সাহেবের কোশলে এই পুল বিনির্মিত। ইহা ডুই সহত্র স্তুপের উপর অবস্থিত আছে। থালের উপর বড় রাস্তার দোহলামান পুল ডেক্স সাহেবের মতে প্রস্তুত হইয়াছে। নিকটে পাটজনিত কাগচের বল। বালী পার হুইরা কোর্মার। মধ্যে মধ্যে ধানা কেত্র, পানের বরজ ও পানদের ৰৌপ। কোন্নগরের অপর পারে পাঁচ কোন দূরে ভিতাগড় নামক ছানে ৫০ বর্ষ পুর্বে ত্রিশ হাজার মণের উপযুক্ত জাহাক্ত প্রস্তুত হইত। পুর্বের কোন্নগর প্রকাণ্ড গ্রাম 🌬 । পূর্বে বাঞ্চালার মুসলমানদিগের অভ্যা চার আরম্ভ ছইলে বলাল বিভক্ত ত্রাহ্মণ ও কায়স্থাণ অনেকে কোন্নগর ছইয়া পশ্চিম বাঙ্গালায় প্রবেশ করেন। কোন্নগরের থা ক্রোশ পরে জীরাম-भूत । ১৮३৫ অলে দিনেমারের। বারো লক্ষ টাকার কোম্পানিকে এই ছান বিজ্ঞার করে। এখানে দেখিবার মধ্যে গির্জ্জা কলেজ ও ক্ষেদ্রাভিবের বাগান धरे क्यूक्टी अधान। बिदामपूर्वत व्यापत शारत हानरकत मरनारत हेमान उ পলতার জলের কল। জীরামপুরের পর* বৈদ্যবাদীর প্রকৃত হাট। তাহার जिन क्लाम शास कतामिनिरगंत हम्मननगंत, र महत्त्वत छेत्रत शाहीन हर्रात এখনও ভগ্নাৰ্শেষ দেখা যায। নদীতীর হইতে ফরাশিদিগের আবাসন্থান দেখিতে অতি মুন্দর। তদনন্তর হুগলী, ই এখন যেকপ কলিকাতা বান্ধানার क्षेत्रान वानिका सान २०० वर्ष भूत्र्य इननी क्षेत्रभ हिन। उपन (भाउँ गीज-

[&]quot; পাত পাঁকাটী কাঠের আদী, তিন নিয়ে বৈদ্যবাচী।

[া] গাঁজা গুলি অৱভালা, তিন নিয়ে ফরানি ডালা।

^{\$} মোণল মিলি মাথাখনা তিব দেখতে ভগলী আনা।

দিশের বান্ধালায় বড় অধিপত্য। বর্তমান এমাম ব্টীর নিকট ভাছাদের কেলা ছিল। সাজেহানের আন্তা ক্রমে ১৬০২ অবে কাশিম আলি ত্র্গুলীর স্থা করিয়া পোর্ত্ত্রীজ দিগকে বিনাশ করেন। ১৬৮৬ অবে ইংরেজরা ३७३৫ ज्ञटक উভियादि शांशितिदा अहे नगद ज्याक्रमण करदा। मर्गनरवाना विवरव्रत मध्या ध्यापवाड़ी, ३०৯৯ जस्म निर्विष्ठ वास्मानत शिर्छ, भीज भिक्का, ১৮১० जरक (भेरत) मार्ड्य निर्मिं ह भनी करन क गृह, भाराया-विक ७ दिश्वीनिक्न উमान धेर कराकति ध्वधान। हुरू श्रेव शाहावादिकन নিকট ওলনাজদিনের কেলা ছিল। ১৮২৫ অন্দে ওপনাজেরা হুমাত্রা নইরা ইংরেজদিগকে এই নগর প্রদান করে। চুচুড়ায় ১৬৯৫ অব্দে নির্মিত আমানি গির্জ্জা ও গলনাজদিণের কবরের চিহ্ন এখনও পাওয়। যায়। হুগুলী ফৌসন পার হইয়া সরস্বতীর উপর সাত্র্ণীর পুল। তিন শত বর্ষ পূর্বের এই নদীর উপর দিয়া বড় বড় জাহাজ চলিত। সাত্র্যা প্রাচীন সপ্তথাম। যাহা এক-কালে বাজালার রাজধানী ছিল। প্রাচীন রোমানদিগের সময়।বধি পোর্ভু-গীজনিগের সময় পর্যান্ত ১৫০০ বর্য কাল বছ বাবসায়ী লোক পূত্রিত সপ্তথ্যাম অতি প্রকাণ্ড বাণিজ্য স্থান ছিল। প্লিনি ইহার কি ভয়ানক আতিশঘাই বর্ণন করিয়াছেন। পূর্বে গলার বেগ সাত্র্গা,তগলী,জীরামপুরাদির পশ্চিম ভাগ,হ,বঢ়ার বর্ডমান জলাজমী ও আদ্য গন্ধার খাল দিয়া বাক্টপুর ও রাজ-গঞ্জ হইয়। কলাগেটেছ নামক ছানে মিলিত হইত। পরে গঞ্জা বর্ত্তমান পথ অবলম্বন করাতে ১৬০০ অবলবধি সপ্তথাম হততী ও চগলী হৃদিশীল ছইল। এখন। টুঙ্করোড। বড় রাস্তার দেতুর নিকট সপ্তথাদের ছুর্গচিহ্ন পা ভয়া যায়। আক্রেরে সময় পর্যান্ত সপ্তথাম উড়িয়ার উত্তর সীমা ছিল। তদন্তর मगता। मगता इंदेर जित्वनी जर्द्धा कान। जित्वनी मिनन धारा विना भाज। গঙ্গা বমুনা ও সরস্বতী প্রয়াগে যুক্ত বেনী ও এখানে মুক্ত বেনী হইয়াছে বলিয়া इहाज माम जिट्नी। जिट्नी इहेट अक वींश मगना खिनन इहेना शिक्टम वह দুরে চলিয়া গিয়াছে,বোর হয় এইটি বাজাল। ও উড়িয়ার সীমা ছিল। শত বর্ষ পুর্বের দাযুদর বর্ত্তযান মগরা পুলের নিম্ন দিয়া ছগলীর উত্তর নদারাই না-মক স্থানে গলায় আদিয়া পতিত হইত। কিন্তু একটো দাযুদর মগরার দশ क्यान शन्तिम निशा कशारशरक्त विकते गंकाम मिनिङ क्हे:उर्छ। **अ**दः

ভাষার বালুকাতে নাবিক্লিগের ভয়াবহ জেমস ও মেরি সোল নামক মসিমা ক্লিয়াছে ৷

্ৰণাকার ৪ই ক্রোল মূরে পাওুয়া। এই সময় আমরা বর্দ্ধান জেলার আৰেশ কৰিলাম। সমুদ্ৰ সৰিছিত বালালাৰ ভাব পৰিবৰ্তিত প্ৰায়, নাৰি-दंबन, भनम ७ कमनि-कानन करम द्वाम इरेट्ड नाशिन। गृडिका करमरे विन আলোছিত ও চিন্ধন । ৫৫০ বর্ষ পূর্বে পাঁচ মাইল প্রাচীর বেটিত গভীর পরি-খাবুঁত ও টাকশাল সমষিত পাপুয়া নগর হিন্দু রাজাদের অধীন ছিল। केंशिएक किलीन महाठिएक श्वामि मिथियांत्र क्रमा अक छन धामन क्र्याणात्री ছিল।মে সম্ভানের জন্ম উপলক্ষে গোবধ করায় নগর বাসীরা ভাছার সন্তান इन्छा करता नित्राच्यत सूननमान महारिक धरे विवत निर्वतन करितन ক্ষেরোজ তোগল্পক দৈনা সহ সা সফীকে প্রেরণ করিলেন। ফ্রেসনের পশ্চিম মাঠে ভয়কর যুদ্ধের পর ছিত্তর। পরাভূত হইল। এই রূপ ৬১ পুৰুষ বাজ্য ভোগের পর ১৩৪০ অব্দে প্রচান্ন নগরের ছিল্কাজা বিলুপ্ত হইল। এখনত क्या इट्रॉब क्यानश्न नशरवत नीट्य चारन चारन मृक्टिगाठत वत्र अवर किय-দংশ উৎখাত করিয়া তহুপরি তৌদন নিশ্বিত হইয়াছে। মুদলমানেরা দমস্ত ছিম্মিণকে নক্ত করিয়া তত্ত্বপরি এক প্রকাও শুল্জ নির্মাণ করে, এখন কিয়-দংশ বসিরা গিয়াছে। স্তান্তর পার্থে ২০০ কিট লয়া ও ৬০ কলসমুক্ত আশ্রুষ্টা প্রতিবর শারী সা সফির ভজনালয়। সন্মুখে তাহার কবর। কিছু ছবে ৫০০ বর্ষের খাত ৪০ ফিট পভীর মুসলমানদিগের পীরপুকুর। তাহা-রই চারিপারে পাওুরার পতিত মুদলমানদিগের কবর। পুক্রিণীতে क्छिया नामक कुछोद्राक जांस्तान कदिल थाना लाए जांगमन करत। ক্টেমনের ৪০০ ছাত অন্তরে ছিম্মাদিশের অমৃত কুও। লোকে বলিয়া থাকে মিছত হিন্দু সৈনাগণ উছার জল স্পর্শ মাত্র সজীব ছইত। মুসল-মানেরা উহার শ্বণ নউ করে।*

্ৰুজ্বাৰ। পাওুৱাৰ পদত্ৰ কোল দুৱে বৰ্জ্বান। এই জেলার মধ্যে এত লোকের বাদ যে,এত অস্প ছানে এত অধিক লোকের বাদ পৃথিবীতে আনই

^{*} সমীদ স্কুকড়ো নেড়ে, পেড়োর আছে পড়ে।

দেখিতে পাওয়া যায় না। পতিত ভূমি অতি অম্পা, সর্ব্বভই শস্যপূর্ণ ক্ষেত্র এবং মধ্যে মধ্যে নদীনিচয়ের কুলু কুলু ধনী, কৃষকগণ সানন্দ মনে বটতলে বিশ্রাম করে এবং দূরস্থিত তালরাজি দর্শকের দৃষ্টিপথ আকর্ষণ করিয়া থাকে। বৰ্দ্মানের ফৌনন অতি পরিচ্ছর। সম্মুখে পুষ্পোদ্যান, তম্বধ্যে কৃত্রিম উৎস উৎসলিত হইতেছে, নিকটে হোটেল ও নিস্ব পথিকের পাস্থশালা। অনতি-দুরেই মহারাজার প্রকাণ্ড রাণীসায়র পুষ্করিণী, তাহার কিছু দূরে গভীর সামসায়র, তল্লিকটে হন্তীশালা। রাজবাটী ফৌসন হইতে প্রায় এক মাইল, প্রাসাদ ইংরাজী প্রথায় বিনির্মিত, তমধ্যে মহতপ মন্দির স্কাপেকা সুস-জ্বিত আছে। বর্দ্ধমানের মহতপ মন্দির, দেবালয়, অখশালা, দেলারাম, भानाम कू**ठी ७** (मनरशामवाग (मिथवात छे भयुक्त । (मवानर यत मर्था লক্ষ্মীনারায়ণ, সর্ব্যক্ষলা ও রাধাবল্লভজীর বাটী এবং ছোট দেউড়ী এই কয়েকটী প্রধান। দেবহর্মাগুলি পরিষ্ত, সুসজ্জ্বিত ও মনোহর। ঝুল-নের সময় দেখিবার বড় শোভা। কিন্তু মহারাজার নাম চির্ম্থায়ী হয় এরপ উচ্চ মন্দির বর্দ্ধমানে একটিও নাই। অশ্বশালাও দেলারাম রাজ-বাটী হইতে দূর নছে। দেলখোদবাগ ফেদন হইতে দেড় মাইল অস্তর। কৃষ্ণনায়র, প্রালাসকুঠী, পাতালঘর, পশুশালা ও গোলক ধাঁনাদি লইয়া দেলখোদবাগ বহুদুর বিস্তীর্ণ। স্থান অতি মনোহর। নির্মাল সলিল পূর্ণ, স্থদীর্ঘ সরোবরের প্রান্তভাগে প্রশস্ত প্রামাদ কি শোভাই বিস্তার করি-য়াছে। যে দিকে দুর্ফিপাত কর উপবনের শোভা মন ও নয়ন আকর্ষণ করিতে থাকে। কোথাও বা রক্ষসভ্যের মধ্যবভী স্থদীর্ঘ দঞ্চরণ পথ, কোথাও বা নব্য জন আকাজ্ফণীয় লতাবিতান, কোথাও বা কোবিল নিনা-দিত নিকুঞ্জ বন, কোথাও বা নব কিশলয় শোভিত তৰু রাজির শীতল ছায়া, কোথাও বা প্রন্ধৃতিত প্রস্থনচয়ের মধুর দৌরভ, কোথাও বা নানাকারে কর্ত্তিত কামিনীতক্র কমনীয় শোভা, কোথাও বা মত্ত মধুপের গুঞ্জন শব্দ, ব্যান্তের হুস্কার ধনি, মন্থুরের কেকারব, হরিণের সচকিত দুষ্টি ও মৎস্থের मत्नाइत की छ।। वर्क्तमात्नद था हीन हिरु मकल वर काल विलुख इरेग़ाइ। লোকে মালিপোঁতায় স্থলবের স্তুজাদি দেখাইয়া হদয়। কিন্তু দে কেবল নাম মাত্র। পেরিবাণিক বর্দ্ধমান বা কুন্তমপুর দামোদরের বৈগে বিনষ্ট হই-

शाहि। इरे महस्र वर्ष शृंद्ध (य मकन नमी निश्र) आठीन (त्रांमारनत्र) वार्णि-জ্যার্থ বর্দ্ধানে প্রবেশ করিত, এখন তাহারা শুষ্ক প্রায়। স্থাসিদ্ধ বেউলা নদীর নিতান্ত হানাবছা। ত্রীক গ্রন্থকারগণের সে বরভীয়া নগর আর নাই। চারি ক্রোশ দূরে রোমান কখিত করজনায় এক পুন্ধরিণী ও বটের শুক্ষ কাও মাত্র অবশিষ্ট আছে। মুসলমানের। বর্দ্ধমানকে বর্তমান স্থানে শোভাশালী করে। জগৎ বিখ্যাতা ত্রুরজেহান এই নগরে কিছু কাল বাস করিয়াছিলেন। এই স্থানে তাঁহার কন্যা হয় এবং এই নগর ছইতে তিনি হৃতা হইয়া ছিলেন। পৃথিবীর সর্বাপেক্ষা বিলাসী সত্রাট সাজেহাদ বিদ্রোহী इरेश वरे नगांत्र जवसान कविशां हिल्लन। ১৬২১ जाक मांगालका वरे নগর অবরোধ করে। ১৬৯৫ অবে শোভাদিংহ এই নগর লুওন করিয়া জ্বগৎরাম রায়ের যথাদর্কক হরণ করে, ও তাঁহার পিতাকে বধ করে। ১৬৯৮ অবে ইংরেজের। বর্দ্ধনানে আদিয়া আজিম ওয়ানের নিকট কলি-কাতা ক্রয়ের প্রথম অভ্নমতি পান। ১৭৪০ অবদ মহারাষ্ট্রীয় দেনাপতি ত্ত্রপ্ত ভাকর পণ্ডিত এক লক্ষ বিশ হাজার দৈন্য সহ শিবির সন্নিবেশ করিয়া এই নগর ভস্মীভূত করেন। উত্তর দিকের মাঠে হ্বাদার আলি-বন্দীর সহ তাঁহার ঘোরতর যুদ্ধ হয়। ত্রিশ সালের বন্যায় বর্দ্ধ্যানের অনেক গৃহ বিশ্বট হইয়াছিল। বৰ্ত্তমান সমুদ্ৰ হইতে ১৩ ফিট উচ্চ। পূৰ্বে এখান-কার জল বায়ু উৎকৃষ্ট ছিল। রেল গ্রে হওয়ার কিছু কাল পরে মহামারী প্রবেশ করিয়াছে। এবং একণে কদলী ও নারিকেলাদি স্বক্ষ্যেন জন্মি-**एटर । वर्कमा**रने महाताका गवर्गरमण्डेक ८० लक्क छोका द्राक्क अनान করেন। কিন্ত ইহার পূর্ব্ব পুক্ষধেরা অনেক সময়ে স্বাধীন ভাবে কার্য্য করিয়াছেন। এক দময়ে ইহারা বর্দ্ধান জেলায় কোম্পানি বাছাদ্ররের বাণিজ্য বন্ধ করিয়াছিলেন, এবং সভাট সাহআলমকে সাহায্য দান অঞ্চী-কার করিয়াছিলেন। বর্দ্ধানের বংশ ব্রহ্মত্ত দানের জন্য বাঙ্গালায় সর্বত্ত প্রসিষ। স্বাধীন রাজাদিগের রাজ্যেও এরপ দান নাই। কিন্তু পত্নি-দারেরা রাজার নিকট ক্ষমতা না পাইয়াও সেই সকল কীর্ত্তি বিল্পু করি-खुर । महात्राकात वर्धमान कमीमाती मीर्स 80 ७ थाए ९० माहेल जाल-কাও অধিক। আইটোন রাজাদিগের খাত প্রকাও প্রকার পুরুরিণী থাকায়

জেলায় প্রায়ই জল কন্ট নাই। বর্দ্ধানের সীতাভোগ, লালমোহন, মিহি-দানার মিঠাই, খাজা ও চিনির পাকের দ্রব্য প্রাসদ্ধ।

কান্ত। বর্দ্ধানের এক মাইল পরে মহারাজার ১০৮ মন্দির। তাহার পর কান্তজংসন। রেল পৃথক্ ভূত। বাম দিকে বৈছ্যনাথ হইয়া কর্তলাইন ও ডাইন দিকে রাজমহল হইয়া লুপলাইন চলিয়া গিয়াছে। উভয়ে লক্ষ্মী-সরাইয়ে পুনরায় মিলিত হইয়াছে। পূর্বে কান্তর ধ্ম ধাম ছিল, এখন ভগাবস্থা। নিকটে বনপাসের লেহি স্ববাদি প্রসিদ্ধ।

মানকর। কান্ন হইতে মানকর ৭ মাইল। ভূমি ক্রমেই কঠিন ও ঘুটিঙ্গে আরত। পথে বড় রাস্তা (ট্রন্ধরোড) কাকদা নামক স্থানে বিখণ্ডিত হইন্যাছে। বাম দিকে ছাতনার ধুমময় মূর্ত্তি দূরে প্রকাশমান। এই পাহাড় ৬৬ হাত অপেক্ষাও অধিক উচ্চ। ক্রমে যত যাও সমতল ক্ষেত্র আর দুর্ফি গোচর হয় না। সামুদ্রিক সজল বায়ুর পরিবর্তে পার্কতীয় নীরদ বায়ু অন্নভূত হইতে থাকে। ভূমি সাগর তরক্ষের নায় উচ্চাবচ হইয়াছে। উচ্চস্থান সকল নীরদ কম্বরময় ও অন্ন্র্করা। কেবল নিম্ন প্রদেশে শাস্তাদিলকিত হয়। মানকরের কদমা উত্তম।

পানাগড়। মানকর হইতে পানাগড় ৭ মাইল। পৈথে কালিপুরের কঠিন খাত। সমুখে ইউক নির্মিত আশ্চর্যা সেতু। কেবল একটি মাত্র খিলান অথচ ৫০ হস্ত বিস্তৃত। এই সেতু চারি মাসে নির্মিত হয়। পশ্চিমে তমলা নদীর প্রকাশু বাঁধ। তদনস্তর তমলার ১৭ খিলান বিশিষ্ট সেতু। প্রত্যেক খিলান ১০॥০ হাত প্রশস্ত। নিকটে ডাইন দিকে মন্ত্র আদি বনচর পাক্ষপূর্ণ কয়র সোলের স্বদৃশ্য জলল। বাম দিকে শুত্র বালুকার মধ্যদিয়া দামোদর মৃত্র মন্দ বেগে প্রবাহিত হইতেছে। কয়র সোলের কয়লা খনি বাদসামা পর্যান্ত বিস্তীণ আছে।

অন্দল। পানাগর হইতে ১৭ মাইল। ডাইন দিকে সিন্ধারণ হইতে কয়লা আনিবার পথ। সিন্ধারণের নিকট দামোদরের বিস্তীর্ণ বাঁধ। পুর্বের এই বাঁধ না থাকাতে রেলওয়ের বিস্তর অনিষ্ট হইয়াছিল। এখানকার সেতু ১৫ খিলান বিশিষ্ট প্রত্যেক খিলান ১৮॥০ ছাত। অনতিমূরে ননীয়া ও দামোদরের সন্ধ্য স্থল। ইছার নিকট মৃত্তিকা নিম্নে বহু কালের এক প্রকাণ্ড

জরণ্যনীর অবশেষ পাওয়া যায়। মিসরে কেরো নগরের নিকট এই রূপ এক বনের অবশেষ পাওয়া গিয়াছে।

রাণীগঞ্জ। অন্দল হইতে নীরস আপীত উচ্চাবচ ভূমি ক্রমশই উচ্চ হইয়া গিয়াছে। ছাতনা, বেহারিনাথ ও পাচেটের পাহাড় সকল স্পার্টরূপে ध्यकाश्चमान । इत्राकाण पृत्वहे विश्वाबिनाथ । भालको कवित्र। या अस हाल । উচ্চতা ৮০০ হাত। রাণীগঞ্জের পাহাড় সকল হিম্বান হইতেও প্রাচীন। এক কালে ইহারা সমুদ্রের অভ্যন্তরে ছিল সত্য কিন্তু সে যে কত কাল হইল তাহার ইয়ত্তা নাই। কয়লার খনি উৎখাত করিতে প্রায় ৩০ প্রকার উদ্ভি-দের চিহ্ন পাওয়া গিয়াছে। ৬৭ বংসর গত ছইল দামোদরের বেগে ভগ্ন এক স্থানের মৃত্তিকা দেখিয়া জোন্স সাহেব কয়লার থনি আবিষ্ণার করেন। ৯০ ফিটের নিম্নে কয়লা ছিল। রাণীগঞ্জে মণ প্রতি এক আনা ধরচায় বার্ষিক ১৬০ লক্ষ্মণ কয়লা উঠিতেছে। আফিস খরচা সহ প্রতি মণে তিন আনা পড়িয়া থাকে। এই খনিতে বাউড়ী জাতীয় প্রায় চারি ছাজার জী-পুৰুষ কাৰ্য্য করিতেছে। রাণীগঞ্জের স্থানে স্থানে লেহিও পাওয়া যায়। পুর্বের জন্সল ছিল কিন্তু পরিষ্কৃত হওয়াতে ভূমি রসহীন ও অভ্বর্বরা হই-য়াছে। এখানে বনপাশের আমদানী লেহিন্তব্য ও মৃত্তিকার চাকচিক্যশালী টাইল প্রভৃতি করেকটি জব্য পাওয়া যায়। দূরে তদর শালপাতা ও মেল প্রভৃতি বনজাত ত্রবা পাত্রা গিয়া থাকে।

রাণীগঞ্জ পার হইয়া কয়লাপূর্ণ সেহারসোল ও নিমচার ক্ষেত্র। তাহার
এক মাইল দূর হইতে স্থনীয়া নদীর দোছলামান সেড় দৃষ্ট হয়। স্থনীয়া
নদী ও আসানসোল ডাক বাদালার মধ্যে এক আশ্চর্যা পদার্থ দৃষ্টি গোচর
হইবে। এক কালে এই স্থানে ভূগর্ভ ফাটিয়া পাতাল হইতে প্রবল অমি
উন্থিত হয়। উহার স্থরস্ত তেজে ভূগর্ভম্ব পদার্থ সকল এবীভূত হইয়া পৃথিবীর অভান্তরে দশ ক্রোশ লঘা ও ৮০ হাত প্রশস্ত এক প্রভারের অতলম্পর্শ
পাচীর জমিয়া দিয়াছে। কঠিন কৃষ্ণবর্ণ গোল গোল যে সকল প্রস্তর থও শ্রেণীবন্ধ হইয়া বছদূর বিস্তীপ হইয়াছে তাহারা ঐ প্রাচীরের উপরিভাগ।
পৃথিবী উহাদিগকৈ প্রবীভূতাবস্থায় উদ্গীরণ করে। রাণীগঞ্জের নানা স্থানে
এইয়প্র তারেয় প্রভারের প্রাচীর জন্মিয়াছে। ইংরেজেরা মধ্যে মধ্যে কলি-

কাতার রাজায় দিবার জন্য এই স্থানের প্রস্তর আনেন। কিন্তু উহা বড় কঠিন। রাণীগঞ্জের ভূমি উৎখাত করিলে বা নদী দারা উৎখাত ভূমি দৃটি করিলে বাদুকাময় প্রস্তর দৃটিগোচর হইবে। জলের অভ্যন্তরে জনের কর্দমাদি একত্রিত হইয়া প্রাণীদিগের অন্থিসহ এরপ প্রস্তর উৎপন্ন হয়। ইহাকেই ভূতত্ত্বিজ্ঞায় প্রাটিফায়েড্রক বলে। পূর্বেক,ক্ত আয়েয় প্রাচীরের উত্তাপে অনেক বালুকাময় প্রস্তর উত্তপ্ত হইয়া ভিয়াকার হইয়াছে। দেখিলে বোধ হয় যেন স্পান্টই এক সময় গালিয়া গিয়াছিল। পরে শীতল হইয়া কঠিন হইয়াছে। কোন কোনটার গাত্রে আমিষের আয় রক্ষ বা ধুসর বর্ণ দাগ সকল চক চক করিতেছে, ইহাকেই ভূতত্ত্বিজ্ঞায় মিটামরকোজ্ড্রক বলে। ছোট নাগপুর ও হাজারি বাগ পাহাড়ে ইহা অনেক দেখিতে পাওয়া যায়।

সীতারামপুর। কলিকাতা হইতে ১৩৯ মাইল। এই স্থান হইতে বরাকরের দিকে এক শাখা রেল চলিয়া গিয়াছে। পুরুলীয়া ও হাজারীবাগের
যাত্রীরা ঐ শাখারেলে গমনাগমন করে। এই রেল পরেশনাথ পর্যন্ত
বিস্তৃত হইতে পারে। যেহেতু ইহার অনতিদুরেই ঝিরাইয়ের ২৭০ মাইল
বিস্তৃত কয়লাক্ষেত্র আছে। দামোদরের পার্শ্বে পার্শে রামগড় ও পালামো
পর্যন্ত স্থান সমপ্তই কয়লায় পরিপূর্ণ। এই স্থানের প্রস্তর কুনারের প্রস্তর
অপেক্ষাও কঠিন। এই জন্ম গৃহ নির্মাণার্থে কলিকাতার আনীত হয়।
বরাকরের যে বৃহৎ সেতু দূর হইতে দৃষ্টিগোচর হয় তাহা নির্মাণ করিতে
গ্রণ্নেক্টের ১৪ বৎসর লাগিয়াছিল।

বরাকরে রেল ত্যাগ করিলে পদব্রজে পরেশনাথ পাছাড় ২৫ ক্রোশ দূরে থাকে। পরেশনাথের পর পিটকোর ও বেলকপির প্রস্তবন। তাছার পর ১০০০ ফিট উচ্চ ও প্রতিমাইলে ৭০০ ফিট নিম্ন বিবিধ দৃশ্য সংযুত পার্বক্রীয় ধ্বাপথ। তদনস্তর কিমোর পাছাড় ও শোণ তীরে রোটাস-দ্র্র্গ। এই ছানেই বরাকরের উৎপত্তির নিকট চানির থর্মাল প্রস্তবন। পালামো সরগুজা ছোটনাগপুর ও প্যাচেটের পাছাড়ে ব্যান্ত ভক্লুকাদি ভীবন জন্তু পুরিত আদি কালের অরণ্যানি, অস্ত্র্যাদিগের বিচ্ছিন্ন আবাস, প্থিবীর বার্ষার পরিবর্ত্তনের নানা চিছ্ক, মধ্যে মধ্যে নির্মার ও স্থীতল

উৎস, দামোদর ও অজয়াদির ক্ষীণ উৎপত্তি ছান, বিবিধ জাতীয় পক্ষী ও বস্থাতকরাজির শোভা দেখিরা মন অতীব আক্ষাদিত হয়। কিন্তু রেল ত্যাগ করিয়া পদত্তজে ও অপরাপর যানে এত দূর ভ্রমণ করা সহজ ব্যাপার নহে।

मारेजाम। कलिकाछ। इरेट ১৪৯ मारेल। निकटि मामगीत वाजात, শক্ত তৈল ও পথাদি দেশজ ক্রব্য কলিকাতায় রপ্তানি ছইতেছে। মাই-জাম পার হইরা অরণ্যানি শরিবৃত বুদমার অদুখ্য পাহাড়। তাহার পর জামতারা। এখানে এক জন ক্ষুদ্র রাজা ও ডেপুটী কমিশ্রনর আছেন। তদনন্তর থরমাতর। থরমাতর হইতে হুই ক্রোণ দুরে ব্যবসার স্থান কোরা-ন্থাম। কোরান্থামে এক কয়লার থনি আছে। তাছার পর সম বিষম ভূমি অতিক্রম করিতে করিতে জয়ন্তীয়ার সেতু দুট হয়। সেতুর কিছু মূরে মধুপুর। বাম দিকে করহরবালীর শাখা রেল চলিয়া গিয়াছে। धर्भनकात क्यमा मर्स्वारक्के। ১১ वर्ग माहेल क्यमा क्वा मर्या ०৮ কোটি মণ কয়লা আছে। বার্ষিক আড়াই লক্ষমণ উঠিলেও তিন শত বংসর চলিতে পারে কিন্তু ভারতবর্ষে যত কয়ল৷ উৎপন্ন হয় ইস্ট-ইগুিয়া-কোম্পানি তাহার অর্দ্ধেক আস করেন। করহর বালীর কয়লা ক্ষেত্র মধ্যে ১৫টি আয়ের প্রাচীর আছে, এবং রাজমহল পর্যান্ত অনেক দেখিতে পাওয়া যায়। এখান হইতে পরেশনাথ দশ ক্রোশ। নিকটেই পালকী পাওয়া যায়। ৬ ক্রোশ ভূরে পালগঞ্জ আম। পথিমধ্যে বরাকর নদী। আীঘুকালে জল শুষ্ক থাকে। পালগঙ্গের ৪ কোণ দুরে পরেশনাথ। পর্ক-তের পাদদেশে মেধবন ও উপরে জৈন প্রভু পার্থনাথের মন্দির। উঠি-বার উৎক্লফ্ট সিঁড়ি আছে। এখানে বর্ষে বর্ষে অন্ধ লক্ষ জৈন যাত্রী উপ-স্থিত হইয়া থাকে।

দেব্যর বা বৈদ্যনাথ। খ্যাত দাদশ লিক্ষের মধ্যে বৈদ্যনাথ এক লিক্ষ।
স্থানটি প্রান্দের নায়। শিবালয় ও মন্দিররাজির শোভা অতি, রমণীয়।
বর্জমান মন্দির ১৪৭৭ শকে বিনির্দ্মিত। নিশাকাল্কে কাশীর বিশেষরের
ন্যায় বৈদ্যনাথের পূজা ছইয়া থাকে। বিশেষর অপোকা বৈদ্যনাথের মূর্ত্তি
কিঞ্জিৎ কুশ। মস্তকে একটি দাগ আছে। বৈদ্যনাথ ব্যতীত এখানে বীর-

নাথ সঞ্জানাথ গণেশ কার্ত্তিক পার্ববিতী প্রভৃতির দ্বাবিংশতি মন্দির আছে। ব্যয়ের জন্য গ্রব্দেট ৩২ খানি নিক্ষর আম দিয়াছেন। শিবরাত্তির সময় বৈদ্যনাথে বিস্তর যাত্রী উপস্থিত হয়। এই স্থান হইতে বাঙ্গালা মিশ্রিত ছিন্দী আরম্ভ ছইল।

বৈদ্যনাথ পার হইয়া শিমুলতলা। তাহার পর নরজ্গঞ্জের খাত।

এত খাত যেন উভয় পার্শে প্রস্তর প্রাচীরের মধ্যদিয়া গাড়ী চলিতেছে।

কেবল মধ্যে মধ্যে উপরকার জললের অপ্রভাগ কিঞ্চিৎ কিঞ্চিৎ দৃষ্টিগোচর

হয়। এত খাতেও স্থানে স্থানে এত উচ্চ আছে যে, সময়ে সময়ে মালগাড়ীর
জনা নওয়াদি হইতে আর একখান কল প্রেরিত হয়। নওয়াদীর পর

গিধাের রাজের জনীদারী। ইনিই বিনামুল্যে রেলওয়ে কোম্পানিকে দশ

কোশ পথ প্রদান করেন। পতসন্দাতে উহারই বাটা গাড়ী হইতে দৃষ্টিগোচর হয়। এখানে কীল নদীর পার্শগুলি উর্করা ও আফিমের চাসে পূর্ণ।

গিধােরের পর জামুই। বাবসার স্থান জামুই নগর ফৌনন হইতে দ্বে কীলতটে অবস্থিত। নাম মলিপুর। তদনস্তর মিরনপুর। ইহার নিকট কীলের
পাল্যিম তটে মৃগয়ার উপযুক্ত জৈনগরের পাহাড়। তদনস্তর লক্ষ্মীসরাই।

যেখানে লুপ ও কর্ড লাইন মিলিত হইয়াছে।

লুপলাইন।—এক্ষণে আমরা লুপলাইন দিয়া লক্ষ্মীসরাই আগমন করিব।
বর্দ্ধমানের দশ ক্রোশ দূরে গুল্পরা। গুল্পরা ও ভেদিয়া পার হইয়া অজ্যের
২২০০ ফিট লম্বা সেডু ৫০ ফীট করিয়া ৩৬ খিলানে বিভক্ত। শুল্পের মূল ৯
হইতে ১৫ ফীট পর্যান্ত বালুকায় প্রোধিত আছে। অজ্য় বর্ধাকালে স্থানেস্থানে গঙ্গা তুলা বিস্তৃত হয়।

তদনন্তর বোলপুর। কলিকাতা হইতে ১৫০ মাইল। ইহার এক ক্রোশ দূরে অ্বকল। স্থানে পূর্বে কোম্পানি বাহাছরের এক প্রকাণ্ড রেশমের ক্রী ছিল। বোলপুর হইতে কলিকাতায় বিস্তর তণ্ডুল রপ্তানি হয়। বোলপুরের ৪॥০ ক্রোণ দূরে ইলেম বাজার। ইলেমবাজারের চৌপাহাড়ির বন ৪ ক্রোণ বিস্তীণ। এখানে অতি উৎকৃষ্ট গালার ক্রব্য প্রস্তুত হয় এবং এই স্থান লাকার জন্য প্রসিদ্ধ। ইহারই নিকট সেক্কাপুরের ওল বিখ্যাত। এবং ইহারই অনতিদূরে স্থানিদ্ধ কবি জয়দেবের জন্মস্থান কেম্বলি।

আমদপুর। কলিকাতা ছইতে ১১২ মাইল। এখান ছইতে সাওতাল পরগনার পাহাড়ের শীর্ষ দেখা যায়। সিউড়ী ৫॥০ ক্রোণ দূরে অবস্থিত। কিন্তু যাভারাতের অবিধা নাই। আমদপুর প্রভৃতি বান্ধালার উচ্চ বিভাগের মংস্থ অতি স্কুমিন্ট, কিন্তু বেহারে প্রবেশ করিলে বিস্থাদ ও হুর্গন্ধ বৌধ হয়।

সাইতা। কলিকাতা হইতে ১১৯ মাইল। মুরী তীরে অবস্থিত। মুরীর সেতু অজয় হইতে ৩০০ কটি হ্রস্ম। সাইতার ছয় কোশ দুরে সিউড়ী। গাড়ী ভাড়া প্রায় ২ টাকা। বর্ষাবালে স্থান অতি শীতল থাকে। ভেলার ভূমি বালুকা ও প্রস্তরে পরিপূর্ণ, ইহার স্থানে স্থানে অভ, কয়লা ও লেহি পাওয়া যায়। কোন কোন স্থানের লেহি স্ইডেনের তুলা উৎরুষ্ট। সিউজের নিকটে সারখনি ও কোরা নামক স্থানে চা খড়ির খনি আছে। পশ্চিম-দক্ষিণে হ্বরাজপুরের পাহাড় অতি মনোহর। পর্কতের মন্তকটি ধৃস্তরা পুশ্পের নাায় হইয়া উঠিয়ছে। ৮ কোশ দুরে গুর্তীয়ার রেশমের প্রকাণ্ড কুঠী। সিউড়ীতে শাল, পিয়াল, মোল, সেগুণ জাতীয় কার্ছ, খদির ও লোহার স্রবাদি উত্তম প্রয়া যায়। জন্সবাসীয়া বাঁশের নানাবিধ দ্রব্যা প্রস্তুর আনে। এখানকার মোরকা ও পিয়াল মিঠাই অতি উৎরুষ্ট। সিউড়ীর অনভিদুরে বক্রেশ্বরের উষ্ণ প্রস্তুরণ তথায় অফাবক্রের প্রতিক্তিত বক্রেশ্বর নামক শিব, পাপহরণ নদী ও কুণাদি আছে। বীরভূমের প্রাচীন রাজধানী নাগোর নগর অপা দূরে অবন্থিত।

মলারপুর। কলিকাতা হইতে ১৩০ মাইল। ইহারই অদ্ধি ক্রোশ পশ্চিমে মহম্মদপুরে লোহার কারখানা। মলারপুরের পর আমরা মুরশিদা-বাদ জেলায় প্রবেশ করিলাম। তদনস্তর রামপুরহাট। এখান হইতে অনেক শহাদি কলিকাতায় রপ্তানি হয়। তাহার পর নলহাটি।

নলহাটিতে মুরদিদাবাদ দেখিবার জন্য ইন্ট ইণ্ডিয়া রেল ত্যাগ করিয়া ভাইন দিকের রেলে আরোহণ। যেন প্রবল গদা ত্যাগ করিয়া বেলেঘাটা খালে চুকিলাম। গাড়ী যায় না, নড়িতে চায় না। কত কন্টে ধানের খেত, কুলের ঝোঁপ, তাল গাছ, খেজুর গাছ ক্রমে অতিক্রম করিয়া ২॥০ ঘণ্টার পর গদা তীরে আজিমগঞা। ডাইনদিকে রায় ধনপথ বাহাছরের বিশাল জৈন মন্দির পঞ্জতে গগন শোভিত করিয়াছে। মধ্যছলে প্রকাণ্ড

ধ্যান নিময় শভুনাথের প্রশাস্ত সৃত্তি বিরাজমান। নানা দিকে নানা তীর্থ-করের মূর্ত্তি। ধনপৎ বাছাত্তরের জুল, চিকিৎসালয়, জৈনপামুশালা ও অন্যান্য ধনীদিগের মন্দির, আলয় ও ব্যবসা দ্বারা আজিমগঞ্জ যথার্থট গঞ্জ সদৃশ। গদার অপর পারে হজপতাক। শোভিত বহু জৈনমন্দির। হুই আনায় গলা পার হইয়া বালুচর ৷ বালুচরে পাত্যালা, দানশালা, অম্ব-শালা, উষ্ট্রশালা, শত্মশালা, মন্দির ও হর্ম্মাদি সহ সকলের আশ্ররীভূত প্রকাণ্ড বটরক্ষের ন্যায় রায় লছমীপৎ বাহাছর এক পলী আরত করিয়া আছেন। এই সকল হর্ম্যের মধ্যে পথপ্রান্তে ক্লকটাউয়ার। সমুখে উভানের উপর করিছিয়ান ও আইয়োনিক শুক্তযুক্ত রায় লছমী-পতের মনোহর প্রাসাদ। বাটীর স্থানে স্থানে এক এক বর স্বর্ণ বর্ণে এরপ সজ্জিত যে নিজামের ও এই জাতীয় ঘরের এরপ শোভা হয় নাই। সর্কো-পরিম্ব গৃহের ভিত্তির প্রত্যেক ইঞ্চ অতি স্থানর জয়পুর চিত্তে চিত্রিত। উহার নানা স্থানে নানা নগরের প্রতিক্ষতি ও কামিনীগণের কামচাতুর্যোর পরিচয়। বালুচরের অভূরে মহিমাপুরে জ্বাৎ দেটের বাসবাটী। নিকটে ছত্রবাগ। ইহাতে প্রায় ১০লক টাকা ব্যয় হইয়াছে। প্রবেশদারের প্রতন অতি চমৎকার। স্থাজ্ঞিত আলয়, স্পরিচ্ছন্ন সরোবর, বিভূষিত মন্দির ছানে ছানে মার্কেন মুর্ত্তি, রাশি রাশি ফুল, আত্রের নিকুঞ্জ, পশুশালা ও পক্ষীশালা প্রভাবে বিস্তীর্ণ এই উল্লান নিতান্তই প্রীতিপ্রদ। উল্লান মধ্যে এরূপ মার্কেল ছবির ঘটা ভারতে কোথাও দেখা যায় না। তদনস্তর জাকরাগঞ্জে মীরনের ভগ্ন বাটী ও বর্ত্তমান নবাবদের ক্বরস্থান। বাটীর মধ্যে দিরাজবধের স্থান এখনও বর্ত্তমান আছে। নেজামত কলেজ, এমামবারা ও নেজামতের গৃহ। গঙ্গা তীরে তুর্গরহিত নেজামতের গৃহ ইংরেজি প্রথায় নির্মিত। অভ্যন্তর ভাগ নবাবের পিতা পুত্র শীক্ষুদ্ধ ও লগুন সম্বন্ধীয় নানা চিত্রে ভূষিত। পার্শ্বে গোলমরের ঝাড় ১০৮ ডাল। ত্রিভলে পূর্বে নৰাবদের চিত্র। এক দিকে অয়ত্বাবছায় হুর্ভাগ্য দিরাজের চিত্রপট। মুখ বাঙ্গালীর মত, কিঞ্চিৎ লঘা ভাব, গোঁপ দীপ ও নরনদ্বয় আবৰ্ত্তিত, যেন নেশায় খোর ছইয়া আছে। এই গৃতের পর নেজামতের অন্তঃপুর। কিছু ভূরে নবাবের অশ্বশালা। ভাষার পর কাশীশ- ৰাজারে মহারাণী স্বর্ণময়ীর বাটী প্রাচীরে লুকারিত। তদনস্তর খাগড়া।
তাহার পর বহরমপুর কাছারি ও গোরাবাজার। বালুচর হইতে বহরমপুর
৬ কোশ। এক কালে যে মুরশিদাবাদ কেবল দোকানের আলোকে
জালোকিত হইত এখন দেসকল স্থান গলায় ধংস হইয়াছে। পূর্বকালের
বহল লোকপুরিত স্থান সকল এখন' জললাকীর্ণ। এখানকার কাশার,
হাতীর দাঁতের ও রেশমের জিনিস উৎকৃষ্ট। প্রকাশ বাল শাভিত
মন্দ নহে। মুরশিদকুলী গোড়ের ভগ্নাবশেষে মুরশিদাবাদ শোভিত
করেন। মালের কাছারি কলিকাতায় উঠিয়া যাওয়ার পর মুরশিদাবাদ
হত্তী হইতে আরম্ভ হয়। মুরশিদাবাদ দেখিতে ইচ্ছা না হইলে নলহাটি
হইতে বামরেলে মুরারি গমন করিবে।

মুরারি। কলিকাতা হইতে ১৫৬ মাইল। নিকটে জঙ্গীপুরে নীলের চাস, ভাগীরখীতে নে^কায় মাস্থল আদায় ও অনেক স্রব্যাদি বিক্রীত হয়। সাঁওতাল প্রগণার ১৬০০ ফীট উচ্চ মাহীঘরী পাহাড় ইহার ১৫ ক্রোশ দূরে অবস্থিত।

রাজগাঁ। ১৬০ মাইল। সমতল ভূমি হইতে প্রায় ২০০ ফীট উচ্চ হইয়াছে। বামদিকে দামিনিকোহের বন আরম্ভ। লুপলাইনে এইখানে আমরা সাঁওতাল প্রগণায় প্রবেশ করিলাম।

পাকুড়। ১৭০ মাইল। এক জন রাজার আবাস স্থান। ১৮৫৫ অব্দে ৮ সহস্র সাঁওতাল এই নগর লুগন ও ভন্মনাৎ করিয়া ছিল। বহু নগরবাসী তাহাদিগের হস্তে বিনাশ প্রাপ্ত হয়। ১৮৫৬ অব্দে ইংরেজেরা ৩০ ফীট উচ্চ একটি কেলা নির্মাণ করেন। ৭॥০ ক্রোশ দূরে অবস্থিত জ্লীপুর ও অধিকতর দূরবর্তী রাজমহলের পাহাড় এখান হইতে ত্ত্তি-গোচর হয়। পাকুড়ের ৫ ক্রোশ দূরে গোমানী নদীর স্থান্থা সেড়।

বাছোয়। নিকটে সাঁওতালদিগের আবাস ভূমি। অনেক সাঁওতালি দ্রব্য আমদানী হয়। কিছুদুরে সীতাপাহাড়ের খাত। প্রস্তুর
অত্যন্ত কঠিন ও ক্ষরময়। কাটিবার সময় বিস্চিকায় বিস্তুর সাঁওতাল
কুলি মন্ট হইয়াছিল। পাশে কুলে কুলে পার্কতীয় নদী। বর্ষাকালে এই
স্কল নদী দুই ঘণীর মধ্যে ১২ ফীট বাড়িয়া উঠে।

তিনপাছাড়। কলিকাতা হইতে ১৯৬ মাইল। এই স্থানে রেল তিনটি পাছাড়ের মধ্যে প্রবেশ করিয়াছে। ইছার মধ্য-অবিত্যকার উত্তর পূর্বা সীমা। এই পাছাড় দক্ষিণ পশ্চিমে বিস্তৃত হইয়া বস্বের সহিত সংলগ্ন হইয়াছে। ইছাদের গাত্রে আংগ্রেয় উপজ্বের চিহ্ন পাণ্ডয়া যায়। বর্ষা-কালে জঙ্গলপূর্ব এই সকল স্থান নিতান্ত অস্বাস্থ্যকর হইয়া উঠে। তিন-পাছাড়ের ডাইনদিকে রাজ্যইলের শাখা রেল।

রাজমহল। ১৬০০ অব্দে এই স্থান বাঙ্গালার সুবাদার সা স্কার রাজধানী ছিল। একণে ভগ্নাবশেষের মধ্যে ষ্টেসনের এক ক্রোশ উভরে कर्शकी अकां प्रमान । पक ताक्रवानित बर्ग बारह। जलः प्राप्त অধিকাংশ ভাগ রেলওয়ের কর্মচারীরা পথ নির্মাণে নিয়েজিত করিয়াছে। রাজমহলের নিকট মতিঝিরের জলপ্রপাত। পূর্বের গঙ্গা নগরের নিম দিয়া প্রবাহিত ছিল, এক্ষণে লোত বহুদুরে পড়িয়াছে। পুনরায় আসি-বার সন্তাবনা। রাজমহলের মাণিকচকের ঘাটে গঙ্গা পার হইয়া ৯ কোশ पृत्त हेश्द्रकावान। याहेटा भाषांन खाष्ट्रा ३॥०। हेश्द्रकावात्मत्र विशाख আমের নিকুঞ্লোভা অতি মনোহর। অপর পারে মহানন্দা তটে মাল-দহ। গোড় বিনফ্টপ্রায় হইলে অধিবাদীগণ মালদহে আসিয়া বাস করে। ইংরেজাবাদের ৬ ক্রোশ দক্ষিণে গৌড় নগর। গোখান ১॥০। ভাগীরখীর পুর্ব্বতীরে এই নগর এক কালে ৯ কোশ দীর্ঘ ও তিন কোশ বিস্তীর্ণ ছিল। রোমানদিগের বাণিজ্য কালাবধি আকবরের সময় পর্যান্ত ইহার কত এখ ষ্যাই বর্নিত হইয়াছে। এখন কৃষ্ণ মার্কেলে স্থাপাভিত একটি প্রকাণ্ড মদ-জিদ এবং ৬৭ ছাত উচ্চ রাজবাদীর হই অদুত ভিত্তি মাত্র অবশিষ্ট আছে। কত দিকে কত ভগ্ন আলয়, রাজাদিগের মালখানা ও উচ্চ উচ্চ কিন্তু চারিদিকে জঙ্গল। বাাতের ছকার, রশ্চিকের দংশন ও সর্পের দৌরাত্মো কাহার সাধ্য অগ্রসর হয়। কত ইটক ও প্রস্তর লোকে লইয়া গিয়াছে। এখন আর কেছ লইতে পায় না। ছই শত বর্ষ হইল গঙ্গা গৌড় ত্যাগ করিয়াছেন। এখানে দশ লক্ষ লোকের বাস ছিল। এখন ব্যান্তাবাস ও প্রায় শৃত পুরী। মালদহের নিকটে মুসলমানপূরিত ইহাত এক কালে বালালার রাজধানী ছিল। এখন ভগাবশেষে পরিপূর্ণ। পাঞ্মার থাকাও মসজিদের আর সে শোভা নাই। গোড়ের নিকট রামকালীতে চৈতনোর মেলা হয়। রাজ্মহলের অপর পারে ৩॥০ কোশ ছুরে মালিক নগরের মেলা হইয়া থাকে।

শহারাজপুর। কলিকাতা হইতে ২১০ মাইল। ফৌসন ত্যাগ করিয়া বর্ধাকালে বামদিকে কিছু দূরে গমন করিলে একটি সামান্য জলপ্রপাত লক্ষিত হয়।

সাহেবগঞ্জ ২১৯ মাইল। পুর্বের এই স্থান হইতে লোকে দারজিলিং যাইত এখান হইতে তিমারে কারাগোলা তুকারাগোলা হইতে ডাকগাড়িতে দার-জিলিং যাইতে ৩০ ঘটা লাগিত। পথে কারাগোলা, পূর্লিয়া, কৃষ্ণাঞ্জ ও লিলাগোরী তরাইয়ে এক এক ডাক বালালা আছে। এই পথ ১২ লক্ষ টাকা বারে নির্মিত হইয়াছে। পূর্লিয়া,পার হইয়াই বরক্ষণ্ডিত হিমালয়ের লীর্ম সকল নেত্রগোচর হয়। উহার মধ্যে যেটি বৃহৎ দেইটিই বিখ্যাত কাঞ্চনগঙ্গা।

নাহেৰণঞ্জের এক ক্রোশ দুরে গন্ধাপ্রসাদ পাছড়। আড়াই ক্রোশ পরে বান্ধালা ও বেহারের চাবি অরপ বিখ্যাত তেলিয়ায়র পথ। সা হজা নির্দ্ধিত কেলা পুর্বেব নদীতীরে ছিল। একণে এক ক্রোশ দূরে পড়িয়াছে। দারময় পরস্পার অন্ধক্রোশ ব্যবধানে ছিল। এখন আমরণ লুপলাইনে ভাষপুর জেলার সন্নিক্রট ছইলাম।

পীরপৈতি ২৩৪ মাইল। পাছাড়ের তলে অবস্থিত। পর্কতের উপর পীরপৈতি মুদলমানের কবর। শিলাসঙ্গম বা পাণরছাট পর্কতমধ্যে অনেক গুছা আছে। পূর্কে তথায় সন্ত্যাদীদের আবাদ ছিল। এখন শৃত্য পড়িয়া আছে।

কাহোলপ্রাম ২৪৫ মাইল। ফেসনের পার্যে কতকগুলি পাহাড় জেনী।

গঙ্গা হইতে প্রায় ৪০ ক্রিক্তা উপরে বড় বড় গাছ ও গুলা থাকাতে

অপুর্বে শোভা হইয়াছে। ইহারা রাজ্যহল পাহাড়েরই অংশ মাত্র। পর্বেতোপরি ভূতত্ব সহতে দেখিবার অনেক পদার্থ আছে। ৫০ বর্ব পুর্বেবে যে

শিবালয়টি ছিল ভাহার পুরোহিভ ইন্দাপুর্বেক গলায় নাঁপ দিবার সঙ্গে

শক্ষেই উহা শভিত হয়। দক্ষিণদিকের পাহাড়ে এক মুসলনান ফকীরের

গৃহ ছিল। ২৫ বর্ষ হইল তাঁহার মৃত্যু হওয়াতে এখন তথার পাররা চরিতেছে। কাহোলপ্রামে কছোল ঋষির আশ্রম ছিল, এখানে ভগীরথের রথ নির্ভিন্ন পর্বতি দিয়া গঙ্গা প্রবাহিত হইতেছেন। নিকটে বটেশ্বর মহাদেব। কাহোলপ্রামের সন্ধিয়ানে গঙ্গায় কলসভীর্থ, সোমভীর্থ ও অপর পারে কোলিকী সন্ধ্য তীর্থ। এই প্রামের নিকটেই জন্তুদ ও অদিতি তীর্থ। দুরে মন্দর পর্বতে, মধুস্থদনমঠ ও মহাকালীরমূর্তি।

ভাগলপুর ২৬৫ মাইল। কাছোলআমের পর যোগার সেতু পার হইয়া ভাগলপুর। এখানে বর্ষাকালে গলা ৭ মাইল বিস্তৃত হয়। মুদলমানদিগের সময় এই নগার বর্ত্তমান ভাব প্রাপ্ত ছইয়াছে। পুরাকালে বর্ত্তমান কেলার নিকট কর্ণাড় ছিল। ছই সহঅবর্ধ পুর্বের এক জন কর্ণ এখানে প্রাসাদ নির্মাণ করিয়াছিলেন। তাঁহার। পরে জৈন হইয়া মগধে রাজ্য করেন। ভাগলপুরের ৫ কোশ পশ্চিমে চম্পা নগর তাঁহাদের রাজধানী ছিল। কর্ণ আনের নিকট জৈন সময়ে নির্মিত ৭০ ফীট উচ্চ হুইটি গোলাকার স্তম্ভ আছে। শীতকালে বহু জৈন-যাত্রী দর্শনার্থ আগমন করে। চম্পক তীর্থে গঙ্গা স্নান করিলে কাশী তুল্য ফল লাভ হয়। ভাগলপুরের গুছা অতি আশ্চর্যা, পূর্বে নদীতীরপর্যান্ত বিস্তৃত ছিল, এখন মুধ কন্ধ হইয়াছে। ভাগলপুর ও তন্নিকটকর্ত্তী ছানে দেখিবার উপযুক্ত প্রাচীন অনেক আশ্চর্য্য कीर्खि आरह। महरत्रत्र निकंग्रे क्लीरमध मारहरतत्र मञ्चरमध । ১৭৮० अस्म ইনি পার্বতীয় অসভ্যদিগকে দৈত্র করিয়া ইহাদের উপর জমীদারদের অত্যাচার নিবারণ করেন। ভাগলপুরে নীল কুস্থমকুল ও শত্যাদি যথেষ্ট জমো। কাচ, অর্ণ, রেপা ও লেহের স্থাও প্রস্তুত হয়। এখানকার খেদ বান্ধালায় প্রসিদ্ধ। এই স্থান হইতে বান্ধালা ভাষা ক্রমে বিলুপ্ত হইয়া हिनी जात्र इहेन।

স্লভানগঞ্জ ২৮১ মাইল। ১৮৬১ অব্দে খুঁড়িবার সময় এখানে তাত্র নির্মিত ১০ ফীট উচ্চ এক বেজি মুর্তি পাওয়া গিয়াছে। নানা ছানে বেজিনি বাসের চিহ্ন পাওয়া বায়। পর্বতন্ত্র পার্থনাথের মন্দির দর্শন করিতে বর্ষে বর্ষে অনেক জৈন-যাত্রী আদিয়া থাকে। হিন্দু দেবদেবীর মুর্তি-বিশিষ্ট জানদিয়া পাছাড় দূরে দুর্ফিগোচর হয়। পাশ্চাভোরা বৈছানাথের জন্ম এই স্থানে গঞ্জিল পুরণ করিয়া থাকে। স্বভানগঞ্জে মুসলমানদিগের একটি মসজীদ আছে। নিকটে কোম্পানির আফিমের গুদাম। এখন আমরা লুপলাইনে মুস্কের জেলার সন্ধিক্ত হইলাম।

বরিয়ারপুর ২৯২ মাইল। বরিয়ারপুরের পাহাড় মুঙ্গের ছইতে আরম্ভ হইয়া বিস্কোর অংশ ধরকপুর পাহাড়ের সহিত যোজিত হইয়াছে। ক্রমে ক্রমে তিন শ্রেণীর পাছাড় দুরিগোচর ছইবে। উত্তরদিকে পূর্বে পশ্চিমে বিজ্*ত* এক শ্রেনী। তাহার দক্ষিণে অস**হন্ধ** আর কতকগুলি গণ্ড শৈল। **उम्मरुत मर्क मिक्स् अकडे। विखीन (अमे) कम्मः शिक्स गिश विस्हात** সহিত সংমিলিত হইয়াছে। এই সকল পাছাড় পরিত্যাগ করিবার জন্ম রেল ক্রমে বক্র হইয়া অবশেষে উত্তরদিকের পাছাড় ভেদ করত বাহির হইয়াছে। এই গহর ৬০০ হাত লখা ১৫।০ হাত উচ্চ ৩ ১৭।০ হাত বিস্তৃত। পাছে পাহাড় চুয়াইয়া জল পড়ে এই জন্য পূর্কাংশের কিয়ৎ ভাগ ইষ্টক দ্বারা অধিত আছে। গহ্বরের অভ্যন্তর ভাগ দেখিলে বোধ হয় যে এক কালে জলের নিম্নে এই পর্যবত জিমিয়াছিল। উপরিভাগ ভয়-কর তাপে বিগলিত ও পরিবর্ত্তিত **হইয়াছে। বরিয়ারপুরের নিকট ধরক**-পুর। ধরকপুরের পাহাড় জামুই হইতে মুঙ্গের পর্যান্ত বিশুনি। উপরি-ভাগে নিবিড় আবলুদ বম। কোখা (কোখা একটা প্ৰকাণ্ড শাল গাছ, কোণাও একটা অজ্বুন রক্ষ, কোথাও বা সুপুষ্পিত পলাখরাজির অগ্নিবর্ণ শোভা ও কোথাও দাক্চিনির সুগন্ধ আত্রাণ। কত রুক্ষ লতাতে জড়িত হইয়া নিকুঞ্জের ন্যায় হইয়াছে এবং কোন কোনটা বা সর্পাকৃতি লতার ভয়-কর আলিন্ধনে শুক্ষ হইতেছে। পর্বত মধ্যে নদ নদীর প্রস্তবণ দেখিতে বড় মনোহর। প্রস্তারের উপর টেঙ্গারিগুলি কেমন ক্রীড়া করিতেছে। ছুই পার্ছে পুলেপর কি মনোহর শোভা। মরক পাছাড়ের উপরিভাগে निविष् जनम । मूल्कत बरेटा देशात भीर्यटमा दमिया शाला यात्र । প্রায় ১১০০ ফীট উচ্চ। অভ্যন্তরে সরীস্পের বড় ভয়। এক সময়ে ১০ ফীট লম্বা একটা সর্প ছাগ গিলিতেছিল। তাহাকে বধ করিয়া মুন্দেরের মৃত ত্থাবিশালার পাচান হইয়াছে। গোদাপ গিরগিটি ও বিহাক্ত দর্প অনেক আছে। এক জাতীয় মাকড়দা জাল পাতিয়া পক্ষী ধরিয়া খায়।

গছি নাহেব একটা মাকড়দাকে পক্ষী থাইতে স্বয়ং প্রভাক্ষ করিয়াছেন।
মুক্তেরের মৃত প্রাণীশালায় মরক পর্কেতের এই ভয়ঙ্কর মাকড়দা করেকটি
রক্ষিত হইয়াছে।

জামালপুর ২৯৯ মাইল। পূর্বে জামালপুর সামানা স্থান ছিল। মুন্দের পর্নিতের ক্রোড়ে এই স্থান স্থান্থকর বলিয়া রেল ওয়ে কোম্পানি এখানে আপনাদের কারখানা ও আপীন স্থাপন করিয়াছেন। একণে ইহা প্রকাণ্ড সহর হইয়াছে। মধ্যে এক উৎকৃষ্ট সম চতুক্ষোণ সরোবর। পূর্বে এইটা বিল ছিল। রেলওয়ে কোম্পানির যত্ত্বে এখানে প্রকালয়, পাঠাগার, নাটাশালা, ক্রীড়াভূমি, পানভূমি ও উপাসনা মনিরাদি স্থাপিত ইইয়াছে।

মুক্তের ৩০৪ মাইল। জামালপুর পার হইয়া ৩০ মাইল ক্রমাণতই পাছাড়। তদনন্তর মুঙ্গের। মুঙ্গের জেলার উত্তর ভাগা শীতকালে দেখিতে অতি ক্ষমর, সমস্তই রবিখন্দে পরিপূর্ণ। বরফের ভয়ে সাইবিরিয়া, তিবত ও নেপাল হইতে বিবিধ জাতীয় জলচর পক্ষী আসিয়া স্থানে স্থানে তিন শত বিহা বিস্তীর্ণ জলাশয় আক্ষন করে। কোন প্রকার শব্দ করিলে যথন লাকে লাকে থাকে থাকে সেই সকল দল শব্দ করিয়া উড়িতে থাকে তথন বোধ হয় যেন সাগরের বেলারব বিলীন হইতেছে। কিন্তু বর্ধাকালে উভর ভাগ সমস্তই গলা জলে প্লাবিত হইয়া যায়। গৃধেরা অন্ধনিময় রক্ষতেণী আশ্র করিয়া কথঞিৎ জীবিত থাকে। জলের উপরিভাগন্থ উচ্চ ভূমি সকল প্রায় সমক্তই আফ্রার্কে আফ্রের, ইজার, শিমুল ও অনেক স্থানে দেখিতে পাত্রা যায়। নীল ও কুন্ম এই ভাগে বদ্ধিত হইয়া থাকে। মুক্তেরে ভাগীরথীর দক্ষিণ ভাগ জাঙ্গলিক জন্তুপূর্ণ জঙ্গলাহিত পর্স্বত, খ্যামল ধান্সপূর্ণ হুশোভিত উপত্যকা ও সতেজ শোভাশালী পোস্ত রক্ষে স্কর রূপ বিভক্ত। মুক্তেরে মত ও হ্র অতি উৎক্ষ। কিন্তু লক্ষীর আলয় স্বর্প এই দেশে অবস্থান করিয়াও দীন অধিবাসীগণ আমকুসীচূর্ণ ও আরণ্য দ্রব্য ভক্ষণ করিয়া কালাভিপাত করে। গোধুম, সর্যপ, মীল, আফিম আদি সমস্তই কলিকাতা প্রাস করিতেছে। মুলের নগর অতি আত্থাপ্রদ স্থান। ইহার পূর্বে নাম মোদাগিরি। নিকটে মুদ্দল ঋষির আভাম ছিল। মুক্তেরের পথ সকল অতি পরিষ্কৃত ও রক্ষনিকুঞ্জে সমাক্ষ্যদিত। প্রক্রিণী

সকল স্বিত্ত ও প্রায় সলিদপূর্ণ। বর্তমান দুর্গ চতুর্দশ শতাকীতে হোসেন সা নির্মাণ করেন। ভূমির দিকে পরিখা বিলক্ষণ আয়ত। ছ্রাজনা এই দুর্গ দৈর্ঘে চারি সহস্র ও প্রন্থে সার্দ্ধ তিন সহস্র কীট। মধ্যে মৃত্তিকার স্তুপ। তথায় পূর্বে এক দুর্গ ছিল এক্ষণে বিনফ্ট হইয়াছে। মুক্তেরের মসজিদ বিচিত্র ইন্টকে বিনির্মিত ও অত্যন্ত শোভাশানী। এখানে নানা জাতীয় প্রস্তর, চেয়ার প্রভৃতি কাঠের সাধারণ দ্রব্য, আবলুদ, হস্তীদন্ত ও বংশ ও লোহরচিত দ্রব্যাদি প্রাপ্ত হওয়া যায়। নিকটে দেখিবার নানা বিষয় আছে। চারি মাইল দক্ষিণ পূর্বে সর্বতপ্রান্তে বিখ্যাত সীতাক্ত বা শান্তাকুও। কুণ্ডের চারি পার্ম প্রস্তুরে গ্রন্থিত, অনবরত উক্ষবারি উদ্যাত হইতেছে। কিয়ক্ষুরে ঋষিকুও নামে আর একটি প্রস্তবন। এবং ১৫ মাইল দ্বে সীতাকুও অপেক্ষাও অধিক উত্তপ্ত অপর এক প্রস্তবন। মুক্তেরে গ্রাহার মুদ্যাল তীর্থ। এই স্থানে ঋষাশ্রেরের আগ্রম ছিল।

लक्ष्मीमदारे। अनस्तर आमद्रा कर्ड ७ लूभ मार्रेश्नर मिलन द्रान লক্ষীসরাইরে পুনরায় এপথ দিয়া উপস্থিত হইলাম। প্রবেশের মুখেই কীল নদী, কলীদেতুর উভয়পার্শ জাকরীকাটা লেছি প্রাচীরে আচ্ছা-দিত। নিমে শত হত্ত অন্তর ৯ খিলান। গাড়ী প্রবেশ মাত্র ঝন্ ঝন্ শব্দ ধনিত হইতে থাকে। ছই কোশ দৃরে হলোহর নদীর কীলতুলা সেতু। এই यूथ निशा कहुद जन निमु ७ इरेटिए । इलाइत ७ कीन, निक्टिर मिनिउ হইয়া গলাগামী হওয়ায় বৰ্ষাকালে এই অঞ্চল জলে প্লাবিত হয়। কখন কখন জল ৮ হাত গভীর হইয়া উঠে। এজন্ম পার্শে প্রকাণ্ড বাঁধ ও জন্মশঃ ৫৩২ খ্রিলানের উপর দিয়া রেল চলিয়া গিয়াছে। কর্ড লাইনের যাত্রীগণ এই স্থানে আদিয়া সম্পূর্ণরূপ হিন্দীভাষা প্রাপ্ত হইবেন। এখন লুচিকে शूबी, जनत्क भानी, भिशाबातक आमक्द, भानत्क शिनी, घणितक लाहि।, म्डीरक द्रमी, चौद्रुरक रथामा, कमलालवूरक नादांकी, जर चौद्रारक दार्वाछ, মেথরকে ভালি, পথকে সড়ক, ধূলাকে গদ্ধা, বাবছার করিবে। পানী-ওয়ালে, মিঠাইওয়ালে বলিয়া প্রয়োজন হইলে আহ্বান করিবে। প্রায় আ্রাবর্তের সমস্ত স্থানে ও অধিক কি কোহিস্থান পর্যান্ত হিন্দী দারা মনের ভাৰ ध्यकान इरेरव। मंगरध छेर्म्, कानीरछ हिन्नि, निकरन त्रांकड़ी, इन्ना-

ৰনে ব্ৰজভাষা, পঞ্চাৰে গুৰুত্বী, মূলতানে মূলতানী, মাৰোলাড়ে মাৰো-शाष्ट्रि, काम्बीदत काम्बीती, পোশোशांदत পुत्र औरउन मार्क मर्था रहे है हिन्छ থাকিলেও লকলই সংস্কৃত জাত বলিয়া একরপাবুঝা চলে। মগথে টাকা विनात खरन शहमा, कनाभीता शहमा विनात खरन दूरता। धक्क টাকাকে রূপেয়া, ডবল প্রদাকে আধ আনা ও প্রদাকে পোয়া আনা विनिया वावहात कता छेठिछ। आध शाहेत्क आर्थना, निकि शाहेत्क हमाय বা ত্ৰকড়া কৰে! পশ্চিমের নানা ছানে কোথাও লোছিয়া নামক প্রসা होकांत्र २४ गणा, काथान गांत्रकभूती वा बूट्टोनिया ১४ वा २० गणा শাভয়া যায়। এজন্য সর্বদা বাদালায় প্রচলিত পয়সায় দাম করিবে। এখানকার পায়সাকে পশ্চিমে লাটসাহী, ডিবলৈ বা গড়াইদার কছে। ইহা मर्बेड होकांग >७ गछ।। शिक्टाम श्रादम कित्रा मन मार्यशास शंकित । দোকানী ব্যতীত অপবের হস্তের পান বা কোন খাছ্য কদার্চ গ্রহণ করিবে না। ভ্রান্তারা বিষ দিয়া দেয় এবং পৃথিক অচৈতন্য ছইলে ব্যাগ লইয়া প্রস্থান করে। খাছা তিক্ত বোধ হইলে তৎক্ষণাৎ বমন করিবে। জব্যাদি খরিদ কালে যেন তর্দ্দেশীয় কোন ব্যক্তি নিকটে না থাকে। দালালের। অতর্কিত ভাবে সঙ্গে যায় এবং সঙ্গে থাকিলেই দোকানী তাহাদের দালালী মূল্যের সহিত যুক্ত করে। হামবি কোনে মে থাড়া হায় অথবা ইয়ে বাবু চারোখুঁট জাননে গুয়ালা ইত্যাদি চারি বোধক কোন শব্দ করিলে বুঝিতে ছইবে যে, প্রতি টাকায় চারি আনা দালালীর কথা ছইতেছে। এতদ্বাতীত তাহাদের সাক্ষেতিক কথা আছে। যথা-সাং ১ সোরান ২ একোরাই ত কোঁক & বুধ ৫ ডাঁছাক ৬ পাঁইত ৭ মং ৮ কোণ ১ সলায় ১০ ইত্যাদি। টাকাকে মণিয়া, বাজনা বা চিট্টা, আনাকে রতি ও দশগুণকে দছাই কছে। মং চিট্টা ৮ টাকা, টালি বা মং রতি ॥০, মং দছাই ৮০ ইত্যাদি। পৃথিক मिथिलाहे होत महा महा याता। धक है। हैका हिकान हात विलाल वाध ছইবে যে চোরের। পথিকের নিকট হাজার টাকা থাকার সন্দেহ করিতেছে। **এইরপ তক্ষরেরা ১০০ কে লাগোয়ারা ইত্যাদি বলিয়া ইন্সিতে কথা কয়।** থীয় ও বর্ষা কালে পাশ্চমের বিবাক্ত বিচ্ছ বড় ভুয়কর। দংশন করিলে কাটিয়া তথাকার রক্ত বাহির করিবে। যদি তাহা না হয় তবে অগ্নিষ্টেদ

খরদান তামাকের ধূমা, উত্তের কাঁই খদা, কাঁটানটের শিখডের রদ, মন্নয়ের মূত্রমুক্ত মৃত্তিকা, শেবুর রদ বা রশ্চিকের রদ দিলে কিঞ্মিত্র উপাঠ্ন হয়। হিন্দুখানীদের লোটা ও পাকশালার চেকাি পরম পদার্থ, অতথ্যব স্পর্শ করা উচিত নছে। মেধরের চেকাির বান্ধণ গেলেও তাহারা মারিতে আইলে।

লক্ষীসরাই পার হইয়া বেছারের নিবিড় তালবন দেখিতে দেখিতে বর্তিয়ায় মুলের জেলায় প্রবেশ করিবে। এই সময় হইতে রেল পুনরায় সলভিীর জাজয় করিল। বামে শোণা বা মাগধী নদীর ক্ষেত্র সকল শক্ষে পরিপূর্ণ। এই মাগধী তীরে রাজগৃহে রাম বিশ্বামিত্রের সহ জমণ করিয়াছিলেন। কিছু ছুর পরেই মোকামা। মোকামায় আহারাদির সমস্ত জবাই পাওয়া যায়। মোকামা পার হইয়া৮ জোল পরে বাড়। বাড়ের পার্ম সকল চামেলী বনে আকীণ। সায়ংকালে কি সোগদ্ধই বিস্তার করে। চামেলীর কুলন তৈল, এইছানে যথেন্ট পরিমাণে প্রস্তুত হয়। বাড়ে গঙ্গা পার হইয়া দয়ভালাগামী ত্রিহুতের রেল। দরভালা হইতে ও মাইল উত্তরে সীতার জন্মভূমি জনকপুর।

বাড় পার হইয়া ২৫ মাইল পরে ফতোয়া। এই ছানে পুণাসলিলা পুনপুনা নদী গলায় পতিত হইতেছে। এখানে ভাদ্র মাসে মেলা হইয়া থাকে, তাহার পর বেহারের শোভা দেখিতে দেখিতে ডাইন দিকে গলার প্রেলান্ত বক্ষঃছল। মধাছলে একটা প্রকাণ্ড চড়া। দুরে উত্তরদিকে ভীষণ গণ্ডকী পতিত হইতেছে। অপ্পক্ষণ পরেই থাপরল গৃহে পূর্ণ, বেহারের রাজধানী পাটনা। বসতি অভান্ত খন এবং ছান বাবসায়ে পরিপূর্ণ। মসজীদ অনেক আছে কিন্তু অধিকাংশ মসজীদে লোক পণ্যান্তরা রাখিয়া থাকে। বর্তুমান আফীমের গুদাম ঘরে ১৭৬০ অন্দে মীর কালিম ২০০ ইংক্রেজ হত্যা করিয়াছিল। ইহারই নিকটে করাদি, ওলনাজ ও দিনামার-দিগের কুঠী ছিল। পাটনার বহু মুসলমানের বাদ। নবাবের শিধিল শাসনকালে বড়যন্ত করাই ইহাদের কার্য্য ছিল। শেষাবছার রামনারায়ণ সকলকে ধর্ম করিয়া পাটানার বহু উন্নতি করেন। ইনি কান্যীরের মৃত্তিকায় পাটনার পারিপাটা সাধন করিয়া ধরমুজ ও দ্রাকার বীজ রোপণ

করিয়াছিলেন। প্রাচীন কালে এই স্থানে দশ কোশ বিস্তীর গাড়ীর পরিখা-যুত, কাষ্ঠপ্রাচীর পরিবেক্টিত ও বাদশ বার সময়িত মহা প্রতাপশালী পাটলীপুত্র নগর ছিল। প্রান্ধ বিসহত বর্ষ অতীত হইল অজাতশক্ত कुच्रम्भूत्वद निकछे धरे नगद मश्याभन करतन । तुक रेवणांनी गमन कारन আশীর্বাদ করিলেন যেন পাটনীপল্লী সমৃদ্ধিশালী নগর হউক! প্রায় সাত भे उर्वकान करे नगद **कांद्रा**खद दोक्यांनी हिल। नम, हस्त्र थ, मिगान्दि-নিস, চাণকা, পাণিনি, কাত্যায়ন প্রভৃতি মহাত্মাগণ এই স্থানে বাস করি-য়াছিলেন। তৎকালে শোন পাটনার নিকট গলায় পতিত হইত। এখন পাটনায় প্রাচীন চিহ্ন কিছুই নাই, লোকে কেবল পটনেশ্বরীকে প্রাচীন ৰলিয়া ব্যাখ্যা করে। ছরিমন্দির শীকমন্দির প্রভৃতি কয়েকটি মন্দির দেখিবার অন্নপযুক্ত নছে। পাটনা হইতে বাহির হইয়া সহরের ধারে খারে বাঁকীপুর পর্যান্ত রেল গিয়াছে। আদালত কলেজ গির্জা আদি সমস্তই পাটনার পরিবর্ত্তে বাঁকীপুরে সংস্থাপিত। এখানে উচ্চ পিরামিড সদৃশ একটি হর্মা আছে। তাহার নাম গোলঘর। পূর্বে এটি শস্তালয় ছিল। উপরে উঠিবার দিঁড়ি বাহিরের দিকে পাকে পাকে উঠিয়াছে। ইহার আভ্যন্তরিক প্রতিধনি অতি চমৎকার। পাটনার খেরো, পিরারা, ফুল-কপি, ডালিম ও শস্তাদি প্রসিদ্ধ !

বাঁকীপুরের অপর পারে হাজীপুর, ফিনার ভাড়। ।। গগুক তটে হাজিপুরে কার্তিকীপুর্নিনার দিবস হরিহরছত্তের ১৫ রোজ মেলা হইয়া থাকে, বিজর হাতী খোড়া বিক্রয় হয়। হাজীপুর হইতে ত্রিহুতের রাজধানী মুজঃফরপুর ৪২ মাইল। বাইতে যানের স্থবিধা আছে। মুজঃফরপুরের পর দিগোলি দিয়া নেপালের পথ। হাজীপুর হইতে প্রাচীন বৈদালী নগর ২০ মাইল। বর্জমান নাম বেছারা, গগুক তট হইতে এক ক্রোদা। সত্যযুগে এইছানে ইন্দ্র দিতির গর্ভ ছেদন করাতে মক্তের জন্ম হয়। তখন এখানে কুলপ্লবন নামে বন ছিল। ইক্লাকুপুত্র বিদাল এ বনপার্থে বৈদালী নগর নির্মাণ করেন। বৈদালীর রাজ্যণ বছকাল রাজ্য করিয়াছিলেন। বুজদেব সময়ে সয়য়ে বৈদালী নগরে অবস্থান করিতেন। ১২০০ বর্ষ পুর্কের চীনমাত্রী কাহিয়ান এই নগর ভয় দেখেন, এখন সমস্তই ভয়াবলেরে পূর্ণ।

একটা প্রাচীন ছর্গের ভরম্বর অবশেষ আছে। তাছার চারি কোণে চারিটা ভঙ্ক এবং পরিখা ভলে পূর্ণ। মধ্যে একটি নৃতন মন্দির রহিরাছে। ছর্গের দক্ষিণ পশ্চিমে ভূপের উপর মুসলমানদের করর। দক্ষিণে সেই ছার যেখানে বুল বলিরাছিলেন, আমার নির্বাণ সন্নিকটছ হইরাছে। এখানে চৈত্রে মেলা হইরা থাকে। ছর্গের পশ্চিমে প্রশান্ত সরোবরমধ্যে শিব মন্দির এবং পার্শ্বে অনেক ভয়মুর্ভি ছর্গের ২ মাইল উত্তর পশ্চিমে বাধরা। এখানে বুলের চেন্দিপোরা প্রতিমৃত্তি অশোকের ৪০ হন্ত লছা সিংহভন্ত, ভক্ত দক্ষিণে বুলের জন্য বানরখাত ভক্ষ সরোবর তীরে প্রকাণ্ড বানরমূর্তি ও অনেক ভয় ভূপ আছে। এইছানে ১৪০৫ বর্ব পূর্বের বেন্দিদেব ভূতীয় মহাধিবেদ্যন ছইয়াছিল।

বাঁকীপুর হইতে ৩০ ক্রোশ দক্ষিণে গ্রা ক্ষেত্র। ফল্পতীর হইতে গরা অতি হৃদ্দর দেখায়। প্রবেশ কালে উভরপার্যে নানা দৃশ্য, তদ-নম্ভর ত্রন্মধোনি পাছাড়। চারিদিকে পিগু ও পাঞার কলরব হইতেছে। **बनायां** मित्र शांमरमर्ग विकृशम मन्द्रि । थात्र ७७ इन्ड डेक्ट इन्टेर । ১৮०० শকের কিছু পূর্বে মহারাষ্ট্রীয় রাণী অহল্যাবাই পঞ্বিংশতি লক্ষ টাকা এই লন্দির নির্মাণার্থ প্রদান করেন। কিন্তু কেবল যোল লক্ষ্য ব্যয় করিয়া অব-निके छोक। कर्यागतीता जश्म कतिया नय। मन्दित अदम मूर्थ गिना-শ্রার সাহেবের হণ্টা। যাত্রীর কর্ম্মাহী নিলাগুর ছিন্দ্দিগের উপর সন্তুই इरेज़ अरे बंधे। ১१৯৮ जरक मस्मित बादा जावक करतन। मस्मिदात मछन গৃহটি অভি পরিপাটি। চতুর্দিক ভঙ্ক বেফিত। এক এক দিকে আট আটি ভঙা। এবং এক এক ভঙা চারিটিতে সংলিও। ছই থাকে এই ভঙা ছাদমূল স্পর্শ করিয়াছে। গৃহটি গুরুসমূহের বহির্ভাগে ৩৯ হস্ত ও অভ্যন্তর ভাগে প্রায় একাদশ হস্ত সমচতুকোন। মগুপের সমুখে অফপদবিশিষ্ট উচ্চ গৃহ মধ্যে বিষ্ণুপদ সংখাপিত। ইহার অভ্যন্তর ভাগ প্রায় ২৫ হস্ত তথাগে হুই হস্ত ছান বিহুপদে আরত। সমুপে ভন্তচতুইর সময়িত বণ্টাবরণ মধ্যে নেশালমন্ত্রী রঞ্জিত পাতে প্রেদত্ত রহৎ ঘণ্টা। পার্ষের অনারত পার্যগৃহে ৪া৫ শত লোক গোলমাল করিয়া পিও পাকাইতেছে, কেহ বা ঘটা বাদন করিতেছে, কেছ ভব পাঠ করিতেছে, কেছ বা পিওদান করিতেছে। ভার-

তের নানাজ্যতির ভয়য়য় জনতার মধ্যে পাণ্ডাদের মন্তের স্বর ও চারিদিকে জয় গদাধর শব্দ। দেখিলে মন মুয় হয়। বিষ্ণুপাদ মন্দিরের প্রাক্তনে বিচরণ করিলে ভিত্তি গাত্তে কত রাজার নাম দুই হয়। কোথাও লোন রাজাল্পজে যুজপালে গয়ারুতে, কোথাও গোবিন্দপালদের গতরাজ্যে চতুর্দলালম্বর গয়ারাং-ইত্যাদি কত নাম লিখিত রহিয়াছে। হাকাল ! এখন কোথায়, সেই রাজগণ, কোথায় বা তাঁহাদের দান, কোথায় বা তাঁহাদের কীর্তি, কে লিখিয়াছে, কে ব্ঝিতেছে, কে বা দেখিতেছে। নিকটে দিতীয় প্রাক্তনে প্রস্তর নির্মিত গদাধর মন্দির। উত্তর পশ্চিমে পঞ্চ কোশ পরিনাপক স্তম্ভ। প্রবেশ দার পার্যে উত্তর হন্তীপৃষ্ঠে ইন্দ্র প্রতিমৃত্তি। তাহার উত্তর পশ্চিমে গয়াল্মরী দেবির মন্দির।

विष्ट्रभन मन्द्रित खगीत निकारे थकां अभूकतिन। ১৯৫ इंड मीर्च उ ১০৪ হস্ত বিজ্ত। পশ্চিমে একটা উত্তম নিম্ন রক্ষ ও তীরে স্থামন্দির। পূর্ব্বমন্দির বিনফ হইয়াছে। বর্ত্তমান মণ্ডপ গৃহ ২৬ ছাত দীর্ষ ৫৯ ছাত প্রস্থা প্রতার ভারতালি বটুছভাষিক হইবে। গর্ভ গৃহ প্রায় ৬ হাত সমচতুকোণ তথাধ্যে সপ্তখোটকোপরি দিভুক্ত স্থামুর্ভি। বিঞ্পদ মন্দিরের অর্দ্ধ মাইল দক্ষিণ পশ্চিমে ব্রহ্মযোনি পর্ববিত্পতে অক্ষয় বট। নিকটে ভূতেশ্বর মহাদেব। তহত্তরে পরপিতামহেশ্বর। তৎপশ্চিমে কৃত্রিণীকুণ্ড। পরপিতানহেখনের মশুপগৃহ ১৮ হক্ত সমচ্ছুকোণ, গর্ভগৃহ সপ্ত হক্ত সমচমুকোণ, ভিত্তিবেধ ৫৭০ ছাত এবং শুস্তের উচ্চতা ৯।০ ছাত। এক-स्यानि शर्बक गरांत्र प्रक्रिंग अदर धार ७०० इन्ह डेक्क, नगरत्र प्रिक्र किकिए ঢাল। অফীদশ বর্ষ হইল মহারাষ্ট্রীয় দেবরাও তাও উঠিবার সোপান প্ৰস্তুত কৰিয়া দিয়াছেন। উপৱে শক্তিমন্দির ও পঞ্মুখ দেবতা। বেদিটা ১৬৯০ শকে নির্মিত। আরংজেব এখানকার বিগ্রাহ বিনষ্ট করি-বাম পার্শ্বে একটা দ্বিভুজা মূর্ত্তি ও নানাস্থানে হরপাক্ষতীর SICE ! थवारम ।

গারার দক্ষিণে বৌদ্ধগার। বা বুধগার।। এখানে বুদ্দেব বত্কাল যাপন করিয়াছিলেন এজন্ত চীন বর্মা ও ভোট ছইতে বুদ্লোক আসিয়া এখনও তীর্থ করে। কিন্তু বৌদ্ধদের প্রাচীন মন্দির সকল এখন ভগ্নাবন্থার পতিত আছে। গ্রার সাহেবগঞ্জ নামক ছানে সাহেব ও বণিকেরা বাস্কিরে। গ্রার পেড়া তামাক পান ও প্রস্তারের দ্রব্য প্রসিদ্ধ।

গরা হিন্দ্দিণের মহাতীর্থ এবং পিতৃলোকের পরমগতি। এখানে খেত-কলেশ গর নামে এক অহার তপশ্যা করিতেছিল। তক্ষযক্ত করিব বলিয়া তাহাকে কোশলে পাতিত করেঁন। গরাহ্যরের মন্তকে স্থাপিত বিস্থাদ-শেন্তর মরীচিন্ত্রীর দেহজাত এবং পিতৃগণের মুক্তিপ্রদ। তক্ষা গরাহ্যরকে তাহার অভিনয়ত বর প্রদান করিয়া তহুপরি যক্ত করেন। তদনন্তর গর রাজা বহু যক্ত করাতে গর। নিতান্ত পুণ্যক্ষেত্র বলিয়া প্রসিদ্ধ হইল।

গ্যায় প্রথমদিনে লোকে করুতে আন, তর্পণ, আন্ধা, গ্রার উত্তরে প্রেত-শিলায় আৰু, তমিকটে প্ৰভাগস্তুদম্ব বামতীৰ্থে স্থান ও আৰু এবং পৰ্বত-मिन्दिन यमविन थानान करता विजीय नितन गरात थात २ (कान वायू-কোণে প্রেতপর্বতে আদ করে। তৃতীয়দিনে উত্তরমানদে কনখলে, দক্ষিণমানদে করুতীর্থে স্থান তর্পণ আদ্ধ ও পর্বতরূপী গদাধর পূজা এই পঞ্তীর্থ করিয়া থাকে। চতুর্থ দিনে ধর্মারণাস্থ মতঙ্গবাপীতে কূপযূপ मर्था ७ उपधिरकार्ण स्थान आमि करता शक्य मिरन उक्षमरत स्थान बक्रमृत्र आक, उर थानकिन धवः उथा समर्गन थाना करता सर्व नितन ক্তম বিষ্ণু ব্ৰহ্ম দকিণাগ্ৰি ইত্যাদি ১৭ পদ দৰ্শন স্পৰ্শন ও তত্ত আদাদি করিয়া গয়াশিরে আদ পূজাদি করে। পরে গজকর্নিকায় তর্পণ ও কেদা-द्रिश्चंद्र कर्गाकश्चन नद्रमिश्इ ७ वामनामित्र शृंखां कद्र । १ मश्चमित्न गेमार्लाल প্রাদ্ধ ও অক্ষরবটে আদ্ধ ও ব্রাহ্মণকৈ ভক্যাদি দান করে। পরে যথাসাধ্য নিয়ত দিন কৃত্য কর্ত্তব্য। পাণ্ডারা সম্ভব্মত দর্শনী ও খাপরলগয়াদি করাইরা থাকে। মুও পৃষ্ঠান্তির চতুর্দ্ধিকে ২॥০ ক্রোশ করিয়া পঞ্জোশী গল।। উত্তরে ব্রহ্মকুপ, দক্ষিণে দক্ষিণমানস, পূর্বেক কল্প ও পশ্চিমে গৃঙ্জে-শ্বর, এতখধান্ত ছান গরাহ্রের লির।

গ্যার ১২ কোশ উত্তর পূর্বের রাজগৃহ, গিরিব্রজ, মগধপুর বা কুশাথা-পুরের ভয়ারশেষ। এই ছানে জরাসক্ষের রাজধানী ছিল। এবং তেতাযুগ হইতে প্রায় মহানন্দের কাল পর্যান্ত এই ছানে মগধেরা রাজ্য করিয়া-ছিলেন। ইহার প্রভাবেশ এককালে পৃথিবী প্রকশ্যিত হয়। এখন কেবল

সেই পঞ্চ পাছাড়, সেই শোণা নদী ও কতকগুলি ভয়াবশেষ অতীত মাছ-ছোর সাক্ষা প্রদান করিতেছে। আমরা পশ্চিমদিক দিয়া প্রবেশ করি-লাম। উত্তর পশ্চিমে বৈভার গিরি। তথ্যো লতাজাল বেষ্টিত হুগঠিত একটি প্রকাণ্ড গুহা। লম্বে ২২॥০ প্রম্পে ১১।০ ও উচ্চতায় ৮ হাত। সমুখে আরও আরত স্থান ছিল। ইহাই বেষিগণের বিখ্যাত সাতপনি গুহা। বুদ মৃত্যুর তিন মাদ পরে ধর্ম প্রচারার্থ বৌদ্ধগণের এইস্থানে দর্ব্ব প্রথম মহা-ধিবেশন হয়। নিকটে আর একটি ভগ্ন গুছা। তৎপরে আর এক ভীষণ গুছা। বোধ হয় হুরাম্বা জ্বরাদম এই স্থানে রাজ্যপকে বন্ধ করিয়াছিল এবং বেজি মধ্যাক্ষকালে এই স্থানে তপস্থা করিতেন। ইহারই অনতিদূরে क्षत्रामस्त्रत रेवर्रको। अथन अक्टो ७ इ छ भ मात्र। निकर्ट अक्टो अक्टा শিবালয়ের ভগ্নাবশেষ। অনস্তর বেদিদের পাঁচ মন্দির পার হইয়া উত্তর পূর্বেব বিপুল গিরি। বৈভার ও বিপুলের মধ্যভাগ সমতল। পাহাড় হইতে একটি নদী নামিয়া ঐ দিকে গমন করিতেছে। নদীর বৈহার পার্শ্বে সাতটি ও বিপুল পার্শ্বে আটাট উষ্ণ প্রস্তবন ছিন্দ্রদের তীর্থ। নিকটে অনেক দেবা-লয় এবং রাজগৃহের হস্তিনাপুর দার। এইছানেই জরারাক্ষসীর মন্দির। অদুরে জৈনমন্দির ও একটা ভগ্ন চৈত্যও দেখিতে পাওয়া যায়। বিপুদ গিরির পুর্কের কুরিরি। রকুণিরির পর উদর্যারি। উদর ও শোণ গিরি চক্রাকারে দক্ষিণদিক বেষ্টন করিয়াছে। এইরূপ পঞ্চ পর্বত বেষ্টিত হই-লেও জরাসর পুনরায় প্রাচীর দ্বারা নগর তিন কলায় বিভাগ করিয়াছিল। এখনত তাহার ভগাবশেষ পড়িয়া আছে। পশ্চিমদার পঞ্চ পাণ্ড রঙ্গভূমি বলিয়া প্রসিদ্ধ। রাজগৃহের পূর্ব্ব পার্শ্বের নাম গিরিব্রজ। ১২ মাইল দূরে বিছার নগর। বিছারের একক্রোণ দক্ষিণে তুলীগ্রামে বিলোয়া নামক ছানে বলিশ্বর মহাদেব আছেন। এককোশ পশ্চিমেক্সাঘরা আমে মাঘরা লক্ষী বা শীতলা দেবী আছে। ৩ ক্রোশ পশ্চিমে বলিপ্রাম বা বড়গাঁও। পল্লীতে স্থামন্দির ও অনেক বৌৰমন্দির আছে। বিহারের ৫ কোল ডিতর পশ্চিমে বারাত্রামে স্বতিক ও মণিনাগের আলয় ছিল। পূজা হইয়া থাকে। কৃষ্ণ গোরেশ পর্বতে আরোহর করিয়া অব্দুনকে এই সকল তীর্থ দেখাইয়াছিলেন। বিহারের নিকটেই কোশগ্রামে বিশামিত

যজ করিয়াছিলেন। যেশ্বানে রাম মারীচকে চুরীভূত করেন, এখন তাহার নাম লোহ দণ্ড। রাজগৃহ হইতে আও জোশ উত্তরে বালাদিতোর রাজ-ধানী নানক নগর। ঐ স্থানে প্রকাণ্ড শক্তবাপী অনেক পুকরিণী ও বাজ-দিখের নাগতীর্থ আছে। রাজগৃহের নিকটবর্তী বছরুর পর্যান্ত স্থান প্রাচীন হিল্প ও বৌদ্ধ তীর্বের ভয়াবশেষে পূর্ণ। বিহারকে রাজগৃহ মহান্ত্যে হিন্দেশের বিহার বন ও বৌদ্ধ পুক্তকে বুদ্ধের বিহার স্থান বলিয়া কথিত হইরাছে। রাজগৃহ, বলিগাম, পারাপুরী ও গোনামা জী বিধ্যাত জৈনতীর্থ।

এই রপে ইক্ছা হইলে বিহারের বহুছান জমণ করিয়া পাটনার প্রতানগমন করিবে। পাটনা পার হইয়া দানাপুর। দানাপুর পূর্বের পাটনারই সেনানিবেশ ছান ছিল। তদনস্তর ভিটা ফেসন। ভিটা হইতে ৪ মাইল ছুরে জগছিখাত শোণ সেতু। প্রকাণ্ড শোণের উপর দিয়া প্রশান অর্জালা সেতু চলিয়াছে। অফাবিংশতি ভাগে এই সেতু বিভক্ত। প্রত্যেক ভাগের বিস্তার পূর্ব শত হস্ত। ইহার এক এক ছন্ত এই আকালেও জলের নিম্নে একবিংশতি হস্ত প্রোধাত থাকে। শোণ বিশাল বদন ব্যাদান করিয়া গদার পতিত হইতেছে। প্রশানালে মৃতপ্রায় হইয়া বালুকাময় ক্ষেত্রে বিভিন্ন হইয়া থাকে। কিছু বর্ষাকালে মৃতপ্রায় হইয়া বালুকাময় ক্ষেত্রে করিবার জন্ত রেলওয়ের পথে জনেক স্থান থাত হইয়াছে। পূর্বের এই নদ ১৫ ক্রোণ দক্ষিণ পাটনার নিকট প্রবাহিত ছিল।

শোণ পার হইয়া 'আরা ও বিহিয়া পর্যান্ত বাদদিকে বিভীপ ক্ষেত্র।

এই ছানে তারকার বন ছিল। এই ছানে ইন্দ্র রুত্র বধ করিয়া আন করিয়া

ছিলেন। তাঁহার গাত্রমল ও কক্ষর অর্থাৎ ক্ষুধা পরিত্যক্ত' হওয়াতে তিনি

এই ছানে মলল ও কক্ষর নামে ছুই নগর ছাপন করিয়াছিলেন। অগস্ত্যের

এই ছানে আশুম ছিল। কিন্তু তারকা সমন্তই বিনক্তী করে। অবশেষে

বিশামিত্র সহ রাম তারকাকে বধ করেন। এখন এই ছান হলকর্ষিত ক্ষেত্র,

ছার এক একটা আিত্র রুক্ষ দেখা যায়। শোণ পারাবধি,সাহাবাদ জিলা
আরম্ভ।

আরা। সাহাবাদের রাজধানী। কলিকাতা হইতে ৩৬৯ মাইল। এই জেলা শোণ থালে বিদ্ধিয়। শোণ খাল পাখা প্রশাসা বিস্তার করিয়া পাটনা চুনার কাশী বক্লার প্রভৃতির কৃষি ও বাণিজ্য বিষয়ক হিত সাধন করিতেছে। ইহাতে প্রায় ২১০ লক্ষ টাকা ব্যয় হয়। সাহাবাদের স্থানে ছানে হীরা ও ফট্কিরি পাওয়া যায়। আরার ৩৬ মাইল দক্ষিণে বিখ্যাত রোহিতাশ্য বা রোটাল ছুর্গ। আরার তিন ক্রোশ পশ্চিমে বৌদ্ধালিগের মহাসর। এখন শতোয়া নামে পুকরিনী ও কয়েকটি মন্দির মূর্তিও ভগ্নাবশেষ আছে। আরা হইতে অনেকে সরযুগদাসদম দর্শন করিয়া থাকে। পুর্বের্ব সরযুগদানে কামের আশ্রম ছিল। ইহার নাম বেণীবাহ্য তীর্থ। মহাভারত মতে এখানে ক্রে উপাদনায় ও স্থানে পঞ্চার্থমেধ ফললাভ। এখন লোকে বলি ভর্গাশ্রম বিলয়া থাকে। ইহার নিকটন্থ বটরক্ষ অতি প্রশস্ত। গ্রীষ্ম্বালে ছায়ার পরিসর প্রায় ৮০০ হাত হয়।

অনন্তর বিহিয়া। দক্ষিণে জগদীশপুরের জঙ্গল। এই জঙ্গলে ১৮৫৭
অন্দে কুমার সিংহের দৈত্যের। আগ্রন্থ লইয়াছিল। জঙ্গল কাটিয়া গ্রন্থমেণ্ট তাছাদিশকে পরাভূত করেন। তদনন্তর রঘুনাথপুর। ইহারই এক
কোশ দূরে ব্রহ্মপুরে শিবরাত্রির মেলা হয়। তৎপরে ভূমরাঁ গুলা এখানে
একজন রাজা আছেন। নিকটে ভোজপুর। এখানকার লোক এত হুট যে এরূপ হুট লোক ভারতে পাওয়া ভার।

অনন্তর বক্সার। কলিকাতা হইতে ৪১১ মাইল। ইংরেজ সেনাপতি মনরো ১৭৬৪ অব্দে এই স্থানে মীর কাশিম ও অ্যোগ্যার সৈত্য জায়
করিয়াছিলেন। নগর মধ্যে মুসলমানদিগের করেকটি উক্তম মসজীদ
আছে। হুর্গনদীতীরে অবস্থিত। গলার অপর পারে গবর্গমেণ্টের অশ্বশালা। বক্সারের বা ব্যাস্থ্যমেরের চারিদিকে অনেক বেজিমুর্তি। তিন মাইল
দ্বের বেজিদের একটি উৎকৃষ্ট মন্দির আছে। এবং নগরের ৪ মাইল দক্ষিণে
সাসিরামের প্রশস্ত পুক্ষিনী মধ্যে সের সাহার বিখ্যাত করে। বক্সারে
রামেশ্বর, পরস্করাম ও বিশ্বামিতাক্রম আদি নানাস্থানের নাম স্কার্ড্য গোরিশঙ্করের মন্দিরের সন্মুখ্যকর্তি পুক্রিনীকে অনেকে অ্যানর বিলিয়া, থাকে।

অনস্তর দিলদার নগর। কলিকাতা ইইতে ৪৬০ মাইল। অথগু আম নফু করিয়া আরংজেব দিলদার নগর স্থাপন কুরেন। নগরের পশ্চিমস্থ পুক্রিশীর নাম রাণীসাগর। দিলদার নগর পার ছইয়া করেক মাইল পারেই কলিকাভার লেফ টুনেট গবর্ণরের রাজ্য সীমা কর্মনাশা নদী। ত্রিশঙ্কুর লালা ছইতে বিনির্গত বলিয়া হিম্মাত্রেই কর্মনাশার জলস্পর্শ করেন না। সেডুটি একাদশ খতে বিভিক্ত। প্রত্যেক খত ২৬ হস্ত অস্তর।

জমানীয়া। কলিকাতা হইতে ৪৪০ মাইল। গদা অতি নিকট। ০০ বংসর ক্রমাগত ১২ ফীট করিয়া ভাদিয়া আসিতেছে। নিকটে গাজীপুর। গাজীপুরের চারিদিকে গোলাপের বন। ১০ টাকা বোতলের গোলাপ জল, ৫০ টাকা ভরি আতর এখন ও প্রস্তুত হইতেছে। কিছুকাল পূর্বের চুই লক্ষ্ ফুল হইতে এক তোলা আতর প্রস্তুত হইত। তাহারই ভরি শত টাকা ছিল। জমানীয়ার অপর নাম জামদগ্রা নগর। ভগ্নাবশেষে রেলওয়ের রাস্তার বিত্তর সাহায্য হইয়াছে। ফেসনের ০ মাইল দূরে লাট নামক স্থানে ৬২ ফীট উচ্চ অশোকরাজের স্তস্তু।

জমানীয়া পার হইয়া কিছু দূর পরে মোগলসরাই। এখান হৈইতে এক রেল কাশী গিয়াছে। কাশী টেসন জাহ্নবী ত.ট সংস্থিত। টেসন হইতে বাহির হইয়া গলভীরে দণ্ডায়মান মাত্র অপর পারে কি মনোহর দৃশ্য। প্রান্ত হইতে প্রান্তপর্যান্ত ক্রোশাধিক দূর বিভীর্ণ ঘনসন্নিবিষ্ট ঘাট শ্রেণী কি স্থন্দর রূপে সজ্জ্বত ছইয়াছে। কিন্তু নদীর প্রভাবে কোন কোনটা বা বদিয়া ঘাইতেছে, কোন কোনটা বা ভয়ম্বর দৈত্যের ন্যায় পতনোমুখ হইয়া আছে এবং কাহারত বা বিকটাকার প্রতর খণ্ড পতিত হইয়া ভাগী-রখীর বীচিমালা বিভিন্ন করত কলোলধনি রদ্ধি করিতেছে। ভারতের 'বলুদেশাগত বিচিত্ৰ বসৰধারী বালক বালিকা, যুবক যুবতী ও যতিবৃদ্ধ বিম-ৰ্দ্ধিত বিস্তীৰ্ণ ঘাট পরস্পরা তত্নপরি ত্রিতন চতুস্তল ও পঞ্চলবিশিষ্ট ঘট্-ষ্টি হন্তাধিক বিন্তীৰ্ণ প্ৰকাণ্ড প্ৰকাণ্ড প্ৰাসাদ্মালা, তদ্বকাশে বহুশীৰ্ষ সমাযুক্ত জাত্মলামান স্বৰ্ণকলস ভূষিত মন্দিররাজির মনোহর গঠন স্থানে স্থানে শ্বৰণ পতাকা ও ঈষৎ বায়ুবেগে আন্দোলিত বিচিত্ৰ শ্বজ্বক্ত ও অভাচ্চ স্তম্ভচ কুষ্টার সময়িত বেণীমাধবের বিশাল মন্দিরাদি প্রাতক্ষিত অকণকিরণে রঞ্জিত হইলে যে কি শোভা বিজ্ঞার করে তাহা কি বর্ণনা করিব। সতাই যেন ভ্রানীপতির প্রী দন্দর্শন করিতেছি। সভাই যেন অনপূর্ণ বিরাজ

করি:তছেন। আমেরিক ভ্রমণকারী মিন্টরন বলেন আমি এরূপ পুলিন শোভা পৃথিবীতে দেখি নাই।

উত্তরে ডাইনদিকে নৌকার দেডু। ৈকিন্তু দেডু হইতে বিশ্বেশ্বরের মন্দির বহুদুর। চারি প্রসায় মেকায় পারই স্বিধা। মালারা ও গলাপুত্রের। নৰাগত বুঝিতে পারিলে নিশ্চয়ই দৌরাত্ম করিবে। উত্তরখণ্ডগামীগণ বেণীমাধ্ব নিমে পঞ্চাদাঘাট, বিশ্বেশ্বরগামীগণ তদক্তি। মণিকর্নিকা ষাট ও বাঞ্চালীটোলাগামীগণ তদ্দক্ষিণে দশাশ্বমেধে ভউতীৰ্ হয়। মণি কর্মিকা চুমার প্রস্তার নির্মিত ও প্রশস্ত। কিন্তু এক্ষণে গঙ্গায় ভগ্ন ছই-তেছে। ভন্ন প্রস্তারের উপর অনেক কাষ্ঠফলক স্থাপিত রহিয়াছে। তহ-পরি বসিয়া লোকে পূজা সমাপন করে। সোপানাবলির কোন স্থানে পুষ্পা, কোথা । চন্দন ও কোথা ও অপরাপর দ্রব্য বিক্রীত হইতেছে। ঘাটের উপরিভাগে রেল বেষ্টিত ও চহুর্দিকে দোপানাবলি অথিত বিবর্ণ জলপূর্ণ চতুকোণাকার মণিকর্নিকা কুও। প্রতি পঞ্চদশ দিবসে গ্রণ্মেণ্ট পুর্ম-দিকের মুরি দিয়। জল পরিবর্তন করেন্। বর্ষাকালে কুও গঙ্গার জলে ও কর্দমে পূর্ণ হইলে কার্ত্তিকে উৎখাৎ করিতে হয়। । মণিকর্নিকা নিকটে গদা-পুত্রগণের উপবেশন স্থান। কেছ বা কোন্নিরীছকে নিম্নে কুও মধ্যে মণিকর্নিকে মহাভাগে বলিয়া স্নান্মন্ত্র বৈলাইতেছে, কেহ বা ভিকার জন্ম পার্শে দণ্ডায়মান রহিয়াছে, কেহ বা কার এক জনকে এরপ জালে জড়িত করিবার চেক্রা করিতেছে, এবং কেছ বা নবাগত ব্যক্তি দেখিলেই ব্যস্ত করিতেছে। অথ্যে চুক্তি করিয়া পরে তীর্থ স্থানে সকল কার্য্য করা বিধেয়।

স্থাতে। গদাপুলের পরিশ্রম জন্ম ও থাতাওয়ালার একদিনের পরিশ্রম জন্ম ও থাতাওয়ালার একদিনের পরিশ্রম জন্ম ও থাতাওয়ালার একদিনের পরিশ্রম জন্ম ॥০ যথেন্টা। পঞ্জোলী যাতার তাহার খোরাকী বাদ ১॥০। এক জনের যাত্রী হইলে আর বিরক্ত করে না। কিন্তু সকলকে নবাগত বাক্তি জানাইবার জন্ম হস্তে সৃত্তিকা ভাতে জল ও পুষ্পা দিয়া থাকে। সে ব্যক্তি ঘে মন্দিরে গমন কৈকক স্বলেই ও তারণার চেন্টা করে। অতএব দর্শকণাণের নিতান্ত সাবধান হত্যা আবশ্রক। প্রতি মন্দিরে এক প্রস্থা দিছণ দেওয়া দক্ষিণ প্রস্থা দর্শকের ইচ্ছা।

কাশীর পূর্ব্বদিকে গঙ্গা উত্তরমূখে কোণাংশ হইয়া প্রবাহিত ইইতেছে। মণিকর্নিকার পশ্চিম দক্ষিণাংশে বিশ্বেখরের পথ। কাশীর সকল পথই প্রভার নির্মিত ত্রনিতান্ত অপ্রশত। উভয়পার্শ্বে প্রকাণ অট্রালিকা ও সর্বভাগ লোক ও রুষে আচ্ছন্ন। যেদিকে দুফিপাত কর শিবালয় ও শিব-मुर्खि। मन्मित्र भिन, वाहित्र भिन, भार्थ भिन, मकलात्रहे मूर्थ भिन भिन अस। किছ वान कानीनाथ, किছ वान विश्वशिक्ताथ। नकत्नहे श्रूष्णानि লইয়া মন্দিরে দৌড়িতেছে। কেহ বা পথের শিবের উপর করুণাবিশিষ্ট इरेश गेकाकनं ७ दिनुमन दर्श कतिएउए । धरे मकन मिथिएउ मिथिएउ যাইবার কালে ভূষার্দ্দিত ভগুতপন্দীর ভীষণ ভিক্ষা শব্দে সময়ে সময়ে ভীত ২ইতে হয়। কিছু ভুর গিয়া ডাইনদিকে গমন করিলে বিশ্বেশ্বরের পাশ্চাৎ দ্বার ও বামদিকে গমন করিলে বিশেষরের প্রধান দ্বার পাওয়া যায়। বিশেশরের বাটিটি চতুক্ষাঝ ক্ষুত্র ও খোদকারীতে পূর্ণ। উত্তরমুখে প্রবেশ করিয়া দক্ষিণ ও বামদিকে গৃহত্তের দরজার মত দেব দেবী পূর্ণ দরজা। মধ্যক্তলে একটি মঞ্জ ও তথাধ্যে একটি শিব ও কয়েকটী বৃহৎ ঘণ্টা। মণ্ড-পের চারিপার্থের কুঠরী ও দালান দেব দেবীতে আক্ষম। পূর্বাদিকের পার্খে বিশেশরের অর্ণমণ্ডিত ক্ষুদ্র মন্দির। যতদূরে মহ্য্য স্পর্শ করিতে পারে তাহার উপর হইতে অর্ণমণ্ডিত। বিখেখনগৃহের চারি দার। পুর্বদার প্রায়ই বন্ধ থাকে, উত্তর ঘারে মহাস্ত উপবিষ্ট, পশ্চিমঘার প্রধান এবং দক্ষিণ ষার দিয়াও লোক প্রবেশ করিতেছে। গৃহটি নিতান্ত ক্ষুদ্র ১২ জনের বসি-বার উপযুক্ত ও সমন্ত মার্কেল মণ্ডিত। মধ্যস্থলের কুও মধ্যে বাণলিন্দ মুর্ত্তি বিশ্বেশ্বর বিরাজিত। লোকে হ্যাজল তণ্ডুল পুষ্পা চন্দন ও মাল্য অনবরত মন্তকে প্রদান করিতেছে। এত গোল যে বিশ্বেশ্বরের পরিবর্তে অপর লোকের মন্তকে পড়িতেছে। প্রাতঃকালে জনতায় প্রবেশ করা বড় কঠিন। কিন্তু দৃশ্যুটি অতি মুদ্ধকর। যখন সেই গৃহমধ্যে উন্নতকায় পঞ্জাবী, থকাকুভি জাবিড়ী, মধ্যমাকৃতি বন্ধবাসী আদি ভিন্নাকার ভিন্ন দেশী, ভিন্ন ভাবি ভিন্ন ভিন্ন দেশীয় যুবক যুবতীগণ, পরস্পরের গাত্তে সংমর্দিত হইলেও পরস্পরকে ক্ষমা করিয়া এক পরিবারের লোকের ভায় স্থানাভাব বশতঃ পরস্পরের হত্তে হত্ত দিয়া পুস্পাঞ্জলি দিতে থাকে, তখন কে না বলি রা

থাকিতে পারে, ভারত এখনও তোমার একতা বিনষ্ট হয় নাই। এখনও বিংশতি কোটি লোক ভাতা ভগিনীভাবে মিলিত রহিয়াছে। এখনও ধর্মের উপর হস্তক্ষেপ হইলে ভিন্নাকার ভিন্নভাষী বিংশতি কোটি লোক মুহূর্ত মাত্রে মিলিত ২ইয়া যায়। হা ঋষিগণ! তোমরা একত্র হইবার এত কৌশল করিয়া গোলেও গৃহ বিচ্ছেদে ভারত পদানত হইয়াছে। এবং তোমাদিগকৈ নির্কোধ বলিয়া নিন্দা করিতেছে। মহাদেবের যে মস্তকে বীর প্রবর ভীত্ম পুষ্প দান করিয়াছিলেন, যাহার উপর অর্জনুন আদিয়া বিলুদল বর্ষণ করিয়াছিলেন, যাহার নিকট দণ্ডায়মান ২ইয়া জরাসক শত-ৰুদ্ৰীয় পাঠ করিয়াছিলেন, এখন দাদদিগকে সেই মন্তকে পুষ্পাঞ্জলি দিতে দেখিয়া কাহার চকু হইতে নেত্রজল বিগলিত না হয়। বেলা দশটার পর ছইতে এই সকল জনতা ক্রমে হ্রাস হইতে থাকে। রাত্তিকালে ৮॥० ও ১১ টার সময় ছইবার বিশ্বেখারের আরাত্রিক দর্শন অতি প্রীতিপ্রদ। উপাসকেরা অভিষেক করিয়া বিশ্বেশ্বরকে চন্দন ও মাল্য দানে ভূষিত করিতে থাকে। তিন জন দক্ষিণে ও তিন জন পশ্চিমে এক জন পুর্বে বনিয়া সাতটি পঞ্জদীপ প্রস্থলিত করে। এ সময়ে কয়েক জন এক কোন হইতে সুমধুর স্বরে * "ছস্তো ছত্তা ছত্তা, বলিয়া নিস্তর হয়। তৎক্ষণাৎ অপর কোণ হইতে আর কয়েক জন ''ছিভা ছিভা ছ-অস্তো,, ব্লিয়া উঠে। যখন বারমার এইরূপ শব্দে শিবকে প্রবোধিত করিতে থাকে তথন পাৰভেরত মন দ্ৰবীভূত হয়। তালে তালে ভমক ঘণ্টা ও গাল বাছ হইতে থাকে। এবং পুরোহিতগণ শুব পাঠ করিতে করিতে আরাত্রিক সমাপন করেন। বিশ্বেখবের বাটী হইতে বাহির ইইয়া পশ্চিম মুখে কয়েক হল্ত পরেই ভিক্ষুকারত অনপুর্ণার আলয়। প্রবেশ দারেই যাঁড় রোমস্থ করিতেছে। বাটিটি বিশ্বেশ্বর অপেকা প্রশস্ত এবং থোদকারিতে পূর্ণ। মছামগুপ ও গর্ভ গৃছ প্রদক্ষিণ করিবার চারিদিকে প্রশস্ত ছান, ষতে পরিবেটিত। অমপূর্ণা দেবী ভিত্তিগাতে সংস্থিতা। ছই প্রছরের পর অভিষেক হইলে সর্বজাতিকে স্পর্শ করিতে দেয় না। বাটী মধ্যে

^{*} শক্তো শস্তো শস্তো

অনেকে কুমারী পুরুষ করিতেছেন। কাশীর অনেক কুমারী বেশু। কর্মাও শুক্ত জাতীয়া 🗓 আনেতা মহাশয়ের। তাহাদিগকে হুই চারিটী পয়সা দিয়া ভাছাদের প্রাণ্যগুলি আত্মদাৎ করেন। প্রভারকপূর্ণ কাশীর এইরূপ অখা। অনপূর্ণার বাদী হইতে বাহির হইয়া পশ্চিম মুখে যাইতে কয়েক হাত মধোই ডাইন দিকে মোড়ের মাধার পথের গায়ে দৈত্রলিও চুঞী-রাজ গণেশ বদিয়া আছেন। ভালা ভাঁড়টীর কতক রোপ্য নির্মিত এবং কখন কখন কাপড়ে পেটটী ঢাকা। ঢু তী ২ইতে উত্তর মুখে গিয়া বিছু দূর পরেই মসজীন পার্শ্বে জ্ঞানবাপীর দরজা। জ্ঞানবাপী বর্ত্তমান বিশে-শ্বর মন্দিরের উত্তর ও সাবেক ুমন্দিরের অর্থাৎ মসজিদের দক্ষিণ। জ্ঞান-বাপীর আয়তনের মধ্যভাগে ৬৪ গুলুবিশিষ্ট একটা নাতিদীর্ঘ মণ্ডপ আছে। মগুপের পার্শ্বন্থ অনারত স্থানে নানা দেব দেবী ও ছুই একটী রুক আছে। মণ্ডপের পূর্বভাগে লেহিজালে আরত জানবাপী নামক প্রস্তর, প্রথিত অদৃশ্রকূপ। নীচে যাইবার লেহিময় সিঁড়ী আছে। এবং স্থানের জন্ম তলায় অন্ধভাগ বাঁধান আছে। কিন্তু কূপ মধ্যে স্থান করা দূরে থাকুক পূজার জন্ম প্রতাহ পতিত বিল্পত্তে জল এত হর্গন্ধ যে কাহার माधा नामिकांत्र निक्छे नहेशा जारम। ज्ञानवानीत भूर्विमिटक मसूर्थ ৭ ফীট উচ্চ নন্দিকেশ্বর নামক প্রস্তরনির্মিত রহৎ যাঁড়। আয়তনের উত্তরে মসজিদের প্রাঞ্জন প্রায় এক লোসম উচ্চ হইয়াছে। এজ অ অপার भार्त्र निम्ना ममिकारन याहेरा इस । धहे ममिकान भूर्य विराधिधारमस्त्र हिल । প্রায় তিনশত বর্ষ হইল মহারাজা মানসিংহ ৩৬ লক্ষ টাকা বায় করিয়া এই মন্দির নির্মাণ করিয়াছিলেন। প্রায় হুইশত বর্ষ অতীত হইল দিলীর ত্রাত্মা সম্রাট আরংজেব মন্দিরে জমা মসজীন করিয়াছে। তদবধি প্রাচীন বিশেষর বিলুপ্ত ও বর্তমান বিশেষর বাণ রাজার প্রাচীন শিবে অধিষ্ঠিত इरेशा हन्। वित्थं येत्र मिन्द्रत किছू मृत छेखद मछभागि, हक, टे छत्र-নাথ, কালকুপ ও বিভ্যাধবাদির স্থান। কালকূপের বাহিরের ভিত্তিতে এমন একটা ছিদ্র আছে যে, প্রতাহ মধ্যাহকালে স্থা কিরণ উহার মধ্য দিয়া কূপে প্রবেশ করে। বেণীমাধবের মন্দির ও হুরাছা আরংজেব ভয় করিয়া মসজীদ করিয়াছে। এখন বেণীমাধব তাহারই পার্শ্বন্থ গৃহে

जारहर। दिनीमांभरदेत थांडीन मिन्द्र दां मम्बीरमंत्र थांकरनंत्र हांद्रि কোনে ৯৮ হস্ত উচ্চ এক বিশাল শুস্ত আছে। তাখার নিচের বেড় া। হাত এ ক্রে হুক্ম হওয়াতে উদ্ধের বেড় ৫ হাত। উপরে উঠিবার ১৩০ সিঁড়ি। কিন্তু শুল্জ গুলি প্রায় এক ছাত ছেলিয়া থাকাতে সাবধানে উঠিতে হয়। ইহার পর অনেক মন্দির ছাড়াইয়া ভাঙ্গা কেলাবা পতিত ৭০০।৮০০ বর্ষ পুরের এই স্থানে অনেক বসতি ছিল। ভয়ত্তরে কাণীর উত্তর সীমা গলা বকণা সলম। ছই মাইল দুরে কলেজ। কলে-জটী গণিক জাতীয় হর্মা। নানাবিধ প্রাচীন গ্রন্থ ও মিউজিয়ম বিশিষ্ট। বেটন মণ্যে অশোকের আজ্ঞা খোদিত প্রস্তর স্তন্ত্র। পূর্কে এই স্তন্ত নদী তীরে ুআরংজেব মদজিদের সমুখে ছিল। কাণীর ছই ক্রোশোভরে বৌদ্ধদিগের সারনাথ মন্দির। এখানে পূর্কে অনেক বসতি ছিল। গৌড়ে-খর পালের। ১০৮০ অবেদ মন্দির।দি নির্মাণ করেন। এখন ভালা ইট ও প্রস্তরে প্রায় ০০।০২ বিষা ভূমি ভড়িয়া আছে। অবশেষের মধ্যে ৪৬ হাত উস ৪৬ হাত বিজ্ ত ও ৮ হাত বেগবিশিষ্ট প্রস্তুর ও ইষ্টকে এথিত এক স্তম্ভ আছে। উপরে নান। প্রকার অবয়ব ও ফলাদির প্রতিকৃতি খোদিত আছে। বৌদ্ধের বিখাত চারি ভাছের মধ্যে এটা একটা। বিশেষধরের দন্দিরের দন্দিণে অতি-অপ্প দূরেই নেপ।লীয়দের স্থদৃশ্ব মন্দির। তংপরে স্থাসিদ্ধ মানমন্দির। ১৬৮০ অব্দে জয়পুররাজ জয়সিংহ ইহা নির্মাণ করেন। বাটীটী সমচতুক্ষোণ, প্রস্তর নির্মিত প্রশংসিত এবং উপ-রের সমতল ছাদের উপর নানাবিধ যন্ত্রাদি বিশিষ্ট। এছ নক্ষত্রাদির বিষয় নিরূপণ করাই প্রস্তর নির্মিত এই সফল প্রকাণ্ড যন্ত্রের উদ্দেশ্য। মূর্বোর প্রাত্যহিক গতি নিরূপণার্থ ৭ হাত ৮, অঙ্গুল উচ্চ ও ছয় হাত বিস্তৃত ভিত্তি কাশীর যাম্যোত্তর রেখার উপর সংস্থাপিত আছে। গ্রছ-গণের দূরতাদি নিরূপণার্থ ২৪ হাত লঘা ৩০ হাত প্রশস্ত স্থান আর একটী যন্ত্র দ্বার। ব্যাপ্ত আছে। কিন্তু সকলই এখন নফ হইয়া মাইতেছে। মানমন্দিরের দক্ষিণে দশাখ্যেধ ঘাট ও বাঙ্গালি টোলা এখানে বাড়ীওয়া-লাদের নিকট থাকিবার বাদা পাওয়া যায়। কিস্তু বাড়ীওয়ালারা গলা-পুজের নিকট কমিদনী খান ও নিরীছ জমণকারীকে কুমারী পূজা ও নানা

कार्या इंड कड़ान। इंशामित वाणील मकनई शाइता यात्र। धरे मिरकरे কেনারেশ্বর, তিলভাণ্ডেশ্বর, বিজয়নগরের রাজার বাটী, ভেলুপুর, মুর্গাবাটী ্ত কাশীর দক্ষিণ সীমা অসিসন্ধন। ভুগাবাদীতে বানরের বড় উপদ্রব। নিকটে চারিণার গাঁখান পুছরিনী। তুর্গাবাটীর মন্দিরটী উৎকৃষ্ট। প্রান্ধন মধ্যে ৰাদশ শুভবিশিক্ট কোণে কলন সমন্বিত ও ১৮০০ অবেদ মির্জাপুরেব মাজিট্রেটন্ত ঘটাযুক্ত উত্তম খোদিত মগুপ। অসি নদী একটা শুফা নৰ্দমা তুলা। কিছু দূরে খালের পরিচয় পাওয়া যায়। তদনন্তর সিক-त्त्रात्न देश्दत्राक्षत्र। वाम कदत्रन। छे९कृष्ठे छेणान छेशनमी, निकूक्ष्वन, পদাতি ও অশ্বারোহী দৈভের গৃহ, গির্জ্জা, কাছারি, ডাক্ষর ও অপরাপর হর্ষে সিকরোল ফুল্ররূপ ফুলোভিত। রাজঘাট হইতে এখানকার গাড়ী ভাড়া ২। কাশী সহরে বসতি অতি ঘন। ছাদ হইতে ছাদান্তরে যাওয়া যায়। রাজা অতি ুঅপ্রশস্ত ও জনপুরিত। সহর মন্দির ও ভারত বাসী রাজগণের প্রকাণ্ড অট্টালিকায় শোভিত। প্রায় সহস্র মন্দির ও ৩০০ মদজিদ আছে। কাশীতে ৬৪ যোগিনী,৫৬ গণেশ,৯ চঞী,১২ রবি,১৬ গোরী, সপ্তশ্বি, সপ্তপুরি, অক্ট ভৈরব, চতুর্দ্ধশ মহালিক ও অসংখ্যা শিব বিভ্রমান। विश्वि मकन अत्या भूगी। योनाइमी माड़ी कानायपुत कांक, मृत्व कांक. ঝুটোপাখরের কাজ, দাযাত্ত পাখরের জিনিদ, দাধারণ গিল্টি জিনিদ, কার্চের কেটিানি কুক্ত জিনিস ও পিতলের দাযাত্ব ক্রবোর জত্ম কাশী প্রসিদ্ধ। বুললখণ্ডছ হীরার বাজারই কালী। পাতিলের, পিয়ারা, আচার, আম, কুল, বেল, মোরবা ও আমলা উৎকৃষ্ট পাওয়া যায়। কাশীর চিনি সর্বত্ত প্রদিশ্ব। কোনমতে সত্যে ও কোনমতে তেতায় শিব কাশী স্থাপন করেন। দিবদাদের, দময়ে কাশী শৃত্ত ছিল। পারে, পুনর র শিববাস হয়। কলিতে বেতিজন সময় ছইতে ভোজেন সময় পর্যান্ত ও পরে পালেদের সময়ে কিছুকাল বেজিদের বাস হইয়াছিল। পাঠান সময়ে দেরিছো। আকবর কালে উন্নতি। আরংজেবের কালে বিনষ্ট প্রায় ও মছরা ব্রকালে উরতিশীল হয়। তৎপরে বর্ত্তশাকাল। কাশীতে উত্তর হইতে আরম্ভ করিয়া ব্রুণাদক্ষ ঘাট, এক মাইল পরে রাজ্যাট, তেলিপাড়া, প্রহ্লাদ, বিলোচন, লাল, গো, শীতলা, বন্ধা, হর্গা, পঞ্চালা, রাম, ঘোষলা, শৃষ্ঠা,

দেকিলা, মণিকর্নিকা, জলসাঁই, ললিতা, মীর, মানমন্দির, দশাখ্মেধ চতুঃ-ঘক্তি, পাঁড়ে, লল্যমিত্রি, কেদার, হনুমান, শিবালা ও অসি এই ক্রেকটা প্রধান ঘাট পাওয়া যায়।

কাশীর গঙ্গা ১২০০ হস্ত বিস্তৃত ত ত হন্ত গন্তীর। বর্ষায় ৪০ ফটি উচ্চ ও অর্জ্ননাইল বিস্তৃত হয়। কাশী তিন মাইল লখা ও অর্জনাইল বিস্তৃত। মধ্যমেশ্বরকে কেন্দ্র করিয়া দেহলি গণেশকে ব্যাদার্জ্ন লইয়া রস্ত অন্ধিত করিলে পাখনতে কাশীর দীমা হয়। কাশীর বিপরীত পারে রামনগরের রাজবাটী। তরিকটে চিত্রসিংহের পুক্ষরিণী ও অর্জনির্মিত দেবতাদি সহ মন্দির। কেলা মধ্যে বেদব্যাদের মূর্ত্তি, তথার্থ্যাখ মাদে মেলা হয়। কাশীতে দোলের ৭ দিন মধ্যে বুঢ়োয়া মঞ্চলের মেলার বড় ধুম। কাশীর অন্তর্গৃহ যাত্রা ও পঞ্জোশী যাত্রা নিম্নে লেখা যাইতেছে।

অন্তগৃ হ যাত্রা—১ মোদবিনায়ক জ্ঞানবাপী পুরের কাশীকরোয়াতগাল, ২ প্রমোদবিনায়াক আরংজেবের মদজিদ পুর্বের, ৩ স্থামুখবিনায়ক ঐ স্থানে, ৪ ছর্ম খ ঐ, ৫ গণনাথ জ্ঞানব্যাপীর বাজার দক্ষিণে, ৬ বিশ্বেশ্বর, ৭ মণি-कर्निका, ৮ मिकिविनायक औष्टारन, ৯ मिनिकर्निक्षंत्र काकादाम गान, ३० कथ-লাখতর এন্থানে, ১১ বাস্থকীধর শক্ষটাঘাট, ১২ পর্বতেশ্বর, ১৩ গলাকেশব ननिज्ञाची, ১৪ জরানদ্ধের মীরঘাট, ১৫ নোমেশ্বর মানমন্দির ঘাট, ১৬ বরাছেশ্বর দশাখ্যেঘঘাট নিকট,১৭[ব্রেমেশ্বর খালিসপুরা নিকট,১৮[জগঞ্জী-श्रंत ले ছात्न, ১৯ कथा (भश्रंत जलम महला, २० इतिरुक्त ले ছात्न, २১ देवछ-माथ करेमा इत रंही की निकरे, २२ कृत्व बंद के चारन, २० त्यां कर्ण बंद के चारन, ু ২৪ ছাট্রেশ্বর হড়ছার্চেক, ২৫ অস্থিকেপ তড়াগ ঐ, ২৬ কিক্সেশ্বর ঐ, ২৭ চতেশ্বর শক্ষটাঘাট নিকট, ২৮ বীরেশ্বর ঐ, ২৯ চিত্রগুপ্ত মছরছটার ফাটক চেকির উত্তর,৩০ চিত্রখাট চন্দিনাউরগলি, ৩১ পশুপতীশ্বর চেকি নিকট, ৩২ ভারভতেশ্বর রাজদ্বার নৃতন চৌকনিকট, ৩০ পিতামহেশ্বর সিদ্ধেশ্বরী মহলা, ৩৪ কল্মেশ্বর ঐ, ৩৫ বিজেশ্বর ঐ, ৩৬ নাগেশ্বর যোষলাঘাট, ৩৭ অগ্নীশ্বর खे, ०৮ इतिम्हट्स भक्त होशाहि, ०৯ हिन्दामिन खे, 8. तमाविनायक खे, 83 বশিষ্ঠ বামদেব এ, ৪২ সীমাবিনায়ক এ, ৪০ বৰুশেশ্বর ললিভাঘাট, ৪৪ जिनंदकथत की, 80 विणालाकी भीत्रशांक, 80 धर्मेथन की, 89 धर्मकूश की. ৪৮ বিশ্ববাছকা ঐ, ৪৯ আশাবিনায়ক ঐ নিকট, ৫০ রন্ধাদিতা ঐ, ৫১ চতুর্তে শ্বর ঐ নিকট, ৫২ ব্রান্ধীশ্বর ঐ, ৫০ মনঃপ্রকাদেশ্বর চৃতির অনুরে, ৫৪ দিশানেশ্বর ঐ, ৫৫ চতিচণ্ডেশ্বর ঐ,৫৬ ভবানীশহ্বর ঐ,৫৭ অন্ধরপূর্ণ, ৫৮ চৃতিরাজ, ৫৯ নকুলেশ্বর চৃতির অনুরে, ৬০ রাজরাজেশ্বর দশুপাণির অনুরে, ৬১ পারামেশ ঐ, ৬২ লাঙ্গুলেশ্বর কচোরিগালি, ৬০ পর্মবোশ্বর চৃতির অনুরে, ৬৪ প্রতিশ্রহেশ্বর ঐ, ৬৫ নিক্ষলহেশ্বর ঐ, ৬৬ মার্কতেরেশ্বর ঐ, ৬৭ অপ্সদেশ্বর জ্ঞানবাপীর উত্তর ফটক, ৬৮ গঙ্গেশ্বর জ্ঞানবাপীর অশ্বত্তলে, ৬৯ জ্ঞানবাপীর উত্তর ফটক, ৬৮ গঙ্গেশ্বর জ্ঞানবাপীর অশ্বত্তলে, ৬৯ জ্ঞানবাপীর বিশ্বেশ্বরের অনুরে, ৭৪ মহেশ্বর জ্ঞানবাপীর অনুরে, ৭৫ মোক্ষেশ্বর ঐ, ৭৬ বীরভদ্রেশ্বর ঐ, ৭৭ অবিমুক্তেশ্বর ঐ, ৭৮ পঞ্চগণেশ জ্ঞানবাপীর দরজার বানে, ৭৯ বিশ্বেশ্বর। ইতি কাশীথণ্ডে ৮০ অধ্যারে লিখিত জন্ত গৃহ যাত্রা।

शक्राकाशाचावा।-मिकर्तिका। निकविनायक खे। मिनकर्तिकश्वता গদকেশব ললিতাঘাট। ললিতা ঐ। জরাসদেশর মীরঘাট। সোমেশ্বর मनात्राराय । मान उत्रेत्र मानमन्त्र । मृत्रके एक येत्र मनात्राराय । जानि-दर्बार थे। मभाषंत्रधा विमातन त्रागीयस्त्राचा । मार्क्वव याणिमी-ঘটি। কেলারেশ্বর সোনাপুর রাস্তা। হনুমদীশ্বর হনুমানঘাট। সঙ্গমে-श्रेत जिनम्बारे। लोनार्क रालाकानार्क छ। जर्कविनायक छ। इर्श-कुछ इर्शावाणे। इर्शाविनायक खे। इर्शामियो खे। विषक्तित्यंत कर्क-মেশ্বর রাস্তা। কর্দমেশ্বর কারওয়ার্থাম। (অত্ত ৩।০ ক্রোশ পরে প্রথম দিন প্রায় শেষ)। কর্ম্ম তীর্থ তত্ত। কর্মমূপ তত্ত। সোমনাথ কালেজ महला। विकाशक उता नीनकर्र जमत्याम। नारायंत उता हामूला অওডেগ্রাম। মেক্টেশ্বর তত্ত। বৰুণেশ্বর তত্ত। বীরভক্তেশ্বর চেলনাগ্রাম। বিকটাক তত্ত। উমত্তভিরব যোরাপ্রাম। নীলগণ যেরিগ্রাম। কাল-कृष्ठे विनायक निकटि जनला। विमना इर्गा उन्ताया। महाराव उन्ताया। নন্দিগ্ৰ তদুৰো। ভুলারীট তদুরো। গ্ৰহণ তদুরো। বিৰুপাক গোর-আম। ষকেশ্বর ভদত্রে। বিমলেশ্বর তদত্রে। মোকেশ্বর তদত্রে। জানদা তদত্তা। অমৃতেশ্বর ওদত্তা। গম্বর্ধনাগর তদত্তা ভীমচতী প্রাম (অঞ

৭ ক্রোশ পরে বিতীয় দিন শেষ) ভীমচণ্ডী অত্ত। চণ্ডবিনায়ক অত্ত। রবি-বক্তক্যা অত্ত। নরকাঞ্ণার ভারশিব অতা। একপাদ গণ কচনারপ্রাম। মহাভীম শিবসাগর পুক্ষরিণী। ভৈরব হরসোমগ্রাম। ভৈরবগণ অত । ভূতনাথ তিদতো। সোমনাথ তদতো। সিন্ধুদাগর তদতো। কামনাথ কোনাথাম। কপন্ধীশ্বর অত। কামেশ্বর অত। গণেশ্বর অত। বীরভদ্র চেখিতীপ্রাম। চতুর্যুপ অতা গণনাথ অতা দেহলি বিনায়ক অত। ষোড়শ বিনায়ক অতা। উদগুবিনায়ক ভুইনীপ্রাম। উৎকলেশ্বর অতা। ক্রাণী অত্ত। তপোভূমি অত্ত। বরণা রামেশ্বরপ্রাম। (বার ক্রোশ পারে তৃতীয় দিন শেষ)। রামেশ্বর অত। সোমনাথ অত। ভরতেশ্বর অত্ত। লক্ষণেশ্ব অত্ত। শত্রুদেশ্ব অত্ত। ছাবাভূমি অত্ত। নত্রেশ্বর অত। অসংখ্যাত লিম্ব বৰুণাপার। অসংখ্যাত তীর্থ অত। শধ্যেশ্বর করোখাগ্রাম। পাশপাণি কুলবেড়িয়া। পৃথীশ্বর খজরীগ্রাম। স্বর্গভূমি অত্ত । যুপসরোবর দিৎ্দয়ালপুর । র্যভগ্নজ কপিলধারাতাম । (নয়জেশ পরে চতুর্থ দিন শেষ)। রুষভধজ অত্ত। জ্বালান্সিংছ কটুয়ার্থাম। বঞ্ণা-সন্ধ্য তীর্থ অত্ত। সন্ধান্ত অত্ত। আদিকেশব অত্ত। ধর্মনিবায়ক অত্ত। প্রহ্লাদেশর প্রহ্লাদঘাট। ত্রিলোচন ত্রিলোচনঘাট। বিস্থমাধব পঞ্চাদাট। পঞ্চাদা অত্র। শতগভতীশ্বর অত্র। মদলা গৌরী। विभिन्ने वामरमय भक्त हो चाहि। शर्कर उच्चेत्र ज्या । मर स्थेत ज्यानवाशी। मिकि विनायक मानकर्तिकाषाछ। जाब यद्भकां मचिनायक। मानकर्तिका। वित्य-শ্বর। মুক্তিদণ্ডপ। বিশ্ববিশেশর দার ভিতরে বামে। দণ্ডণানি চুণ্ডী निकछ। पृथिताक । टेब्द्रव प्रवृत्ताता शार्थ। यानिका कुनमी दनवी निकछ পঞ্চগণেশ জ্ঞানবাপীর দার। ইতি কাশীরহত্তে একত্তিংশৎ অধ্যায়ে পঞ্চ-কোশী যাতা।

কাশী হইতে অযোধ্যা লক্ষ্ণে ও নৈমিষাদি দেখিতে ইল্ছা ইইলে অযোধ্যাগামী রেলে আরোহণ করিবে। ২৫ মাইল পরেই রামায়ণের শুলিকাননদী। খাহার তীর হইতে রাম বিদায় লইয়া শৃন্ধবের পুরে গমন করেন। ৭ মাইল অন্তরে গোমতীতটে জেনিপুর। এককালে এই স্থান আধীন পাঠান রাজাদের রাজধানী ছিল। কেলা প্রান্তরময় ও মসজিদ অতি

প্রকাণ । যোরী ও লিখিজি পাঠান প্রথায় মিপ্রিত নানাদিকে নানাহর্মা রহিয়াছে। পুল অতি চমৎকার। প্রায় ৩০০ লত বর্ম হইল নির্মিত
হইয়াছে। মধ্যে ১৭৭৬ অন্দের বস্থায় এমন জলমগ্র হয় যে ইহার উপর
দিয়া বার্কার নাহেব সৈন্তসহ পোত লইয়া চলিয়া যান তথাপি একন
পর্বায় একটা কয়রও শিখিল হয় নাই। এখানে আতর, উৎকৃষ্ট ফুলেল
তৈল ও গোলাপ পাউডার আদি প্রস্তুত হয়। জেনিপুরের কিছুদুর
পরে মালিপুর। মালিপুরের পশ্চিমে গোমতীতটে প্রাচীন কুলপুর বা
হলতানপুর। কথিত আছে যে ইহার ১৮ মাইল পুর্বের ধোপাপুরে রাম
রাবণ বধান্তে আন করিয়া পাপচ্যুত হল। এখনও জ্যোতের শুক্রাদশমীতে মেলা হয়। নিকটে য়য়ার কেলা ও মুদলমান চুর্নিত বিশুর
হিন্দু মন্দিরের ভপ্নাবশেষ। ১৫ মাইল উত্তরে গোমতীতটে খেতবরাহপুর। রামনবমীতে ও কার্ভিকে মেলা হইয়া থাকে।

সালিপুরের পর অ্যোধ্যা ফেন। আর সে রাম নাই, সে অ্যোগ্যাঙ নাই। কেবল দেই প্রাচীন সরযু মৃত্ মৃত্ বহিতেছে। সরযু দেখিয়া মন আহুল ছইরা উঠিল। আজ কোন্গোরবের কবরক্তে আদিয়া দাঁড়ী-ইলাম, কোন্ অতীত বিভবের ভবনে উপদ্বিত হইলাম। এই না সেই বাল্মী-কির অযোধ্যা ছিল। " যত্নপতেঃ ক গতা মথুরাপুরী, রযুপতেঃ ক গতোত্তর কোশলা। ইতি বিচিত্তা কুক্ষমনস্থিরং, নদদিদং জগদিতাবধারয়।,, উত্তর পূর্ব্ব ও পশ্চিমে সরয় প্রবাহিত। উত্তর পূর্বকোণে অর্গদারঘাট হুইতে ৬ মাইল দুরে উত্তর পশ্চিমকোনে গোপ্রতার ঘাট পর্যন্ত প্রাচীন অবোধানগরের সীমা। উত্তর দক্ষিণের বিস্তার সরযু অবধি তমদাপর্যন্ত ছিল, ঠেসন হইতে বাহির হইয়া উত্তর মুখে যাইতে অংশ দুরে: জাইনদিকে ভाषा देवे ७ कहत्वधिक 88 हाउ फेक्र मिन शर्मा । देवेशन मीर्स ७ थास ১৫ जक्न, त्वथ 8 जक्न । नीटि मार्टित गांधन ७ छेशत शाका । हीन बाबी-দের কথার বোধ হয়। মণিপর্বতের উপরিভাগ অলোক গাঁথিয়া বান। ইহার ৫০০ কিট দক্তিৰে ১৮ হাত উচ্চ ভালা ইটের কুবের পর্বত। উপরে জন্মন ও हुरेडे। एउँकृत शाह । निकटि गर्गनकुछ वा देमाय जानात । भार्त्यर करवाधा জ্ঞান করিতে ছত মিদ ও আবুরের কবর। দক্ষিণ পূর্বের ইউকপূর্ণ স্থ প্রীব

পর্বত। ইহার উত্তরদিকের খণ্ড ৩০০ ও দক্ষিণদিকের খণ্ড ২০০ ফিট সম চতুকোণ। ইংরেজেরা বলেন, এই তিনটি পর্বত বা ইন্টক রাশি ২৪০০ ৰৰ্ষেরও অধিক প্রাচীন! এই তিনটি দেখিয়া ডাইন বা বামে যে পার্ছে যাও উত্তর মূথে গেলেই ছনুমানগড় বা রামকট। রামকটের পূর্বে মান-সিংছ মন্দির ও উভবে সরযু তটে রামের স্নানঘাট স্বর্গদার। রামকট বা বর্তমান অযোধ্যায় পূর্ব্ব প্রান্তের রাস্তা ধরিয়া সোজা পশ্চিমমূখে কৈজা-বাদের দিকে গমন করিলে চক পাত্রা যায়। চকের উত্তরদিকে পদ্চিম গামী রাস্তা ও পশ্চিমদিকের উত্তর পশ্চিমগামী রাস্তা কলিকাতা কেলার মধ্য দিয়া গোপ্রতার উদ্যানের সমীপবর্তী হইয়াছে। উদ্যান নিম্নে স্থবিখ্যাত গোপ্রতার ঘাট। এই স্থানে রাম প্রজাদহ সরযুতে প্রাণ বিসর্জন করেন। মহুর সময়াব্ধি মছানন্দের সময়পর্যান্ত অ্যোধাায় স্থাবংশীয়েরা রাজ্য করেন। বুদ্ধ এখানে কিছুকাল বক্তৃতা করিয়াছিলেন। মগধ রাজারা অনেককে বেদি করিয়া অযোধ্যায় অনেক বেদি মন্দির নির্মাণ করেন। তাঁছা-দের পেরিছেয়া অনেক হিন্দুমন্দির বিনষ্ট ও জঙ্গলারত হয়। পরে বিক্রমা-निज नम्मन्या हे इरेट श्रुत्रान दिस्या मार्थ आहल करतन। नार्शयंत्रनाथ প্রাপ্ত হইয়া তিনি অপরাপর স্থান উদ্ধার করিয়াছিলেন। তাঁছার উদ্যোগে অযোধ্যার ভিন্ন ভিন্ন স্থানে ৩৬০ মুন্দির নির্মিত হয়। চীনযাত্রী ছোয়ানথসং আদিয়া বিত্তর ত্রাদ্ধণে পূর্ণ ৫০ এইন হিন্দুমন্দির ৫ ২০ বৌদ্ধমঠ দেখেন। কয়েকজন জৈনতীর্থন্ধর এখানে জন্ম গ্রহণ করিয়াছিলেন। এজন্ম তাঁহা-দেরও মন্দির নির্বিত হয়। পরে মুগলমান সময়ে স্থলতান বাছর আসিয়া ১৫২৮ অব্দের এপ্রেল মানে জন্মস্থানের মন্দির ভগ্ন করিয়া তথার মসজিদ নিৰ্মাণ করেছা মসজিদ মধ্যম্ভ ৫া৬ ছাত লম্বা উৎকৃষ্ট প্ৰস্তৱন্তম্ভ গুলি প্রাচীন হিন্দুমন্দিরের অবশেষ মাত্র। অযোধ্যার স্থবাদারেরা প্রথমে ফৈজা-वारिन श्विर् जन। जन्म सामानि वर्षकान मूमनमानरिन वर् स्ना। ১৮৫৫ অবে বলপূর্বেক হিন্দুরা হনুমানগড় দখল করে। এবং তিনবার আক্রমণের পর জন্মছানের মসজীদ দখল করিয়া লয়। তদবধি ছিল্ফ ও মুসলমান উত্ত-वरे जयकारन धारम करिवार्छ। देश्टबर्णका विवास एकनार्थ दान मिवा **पिशार्टिन। यूनलगारनता ममजीरम नमाज ७ हिन्दु। वाहिरत धकि गाँथा**

জারগার পূজা করে। অর্গদার ও ত্রেভাকা ঠাকুরের মন্দির ভয় করিয়া আরংজেব মসজীদ নির্মাণ করে। ত্রেভাকা ঠাকুরের মন্দির ছান (যেখানে যজ হয়) পঞ্জাবস্থ কালুর রাজা দখল করেন। এবং খৃঃ ১৭৮৪ অব্দে বশোবস্ত রাও ছোলকারের জ্রী বিখ্যাত অহল্যা বাই ঘাট নির্মাণ ও মন্দির সংস্কার করিয়াছেন। এখনও ছোলকারেরা বার্ষিক ২০১ টাকা দিয়া থাকেন। অযোধ্যার তীর্থের মধ্যে বিষ্ণুছরাদি সপ্তহর, বর্ষহ্রের সমুখে জানকীঘাট, তংছানে রামঘাট বা অর্গদারঘাট, তাহার পশ্চাতে রামসভা, তাহার দন্দিণে দন্তবাবন কুণ্ডাদি রহিয়াছে। জম্মছানের পার্শ্বে জানকীর রন্ধনছান, নিকটে ভরতজ্ঞা ছান, বৈকেয়ীর বাটী অপরদিকে শ্রমিলার বাটী ও দন্দিণ পূর্বে সীতাকুপ। হনুমন্ত কুণ্ডের নিকট শ্বর্ণদার, তদ্দিশে জাতবেদী অগ্রিকুণ, তংশালিমে ধিয়াকুণ্ড, তাহার পরে গণেশ দশরথ কোশল্যাদি নানাকুণ্ড। নদীতীরে বিষ্ণুছরি নিকটে চক্রতীর্থ বশিষ্ঠ কুণ্ড ও ঋণমোচন ঘাট। গুপ্তহরি ও চক্রছরির নিকট সর্যুতটে গোপ্রোভার ঘাট ইত্যাদি।

কৈন তীর্থের মধ্যে আদি তীর্থন্ধর আদিনাথের জন্মন্থান, মন্দির ভর্ম করিয়া ১২০০ অব্দে সাজ্বন যোরী মসজীদ করে। স্বর্গঘারের নিকট মৌরী তলাতে এই মন্দির স্থান জ্বান টিলা নামে খ্যাত। ১৭৮১ অব্দে ইটারা পুর্কারণীর নিকট দ্বিতীয় তীর্থন্ধর অজিতনাথের জন্মন্থানের মন্দির করা হয়। সরাই নিকট চতুর্থ তীর্থন্ধর সোমস্থাথের মন্দির। ভিতরে পরেশ-নাথের ছই ও নেমনাথের তিন মূর্ত্তি আছে। সরয় বা ঘর্ষরাতটে গোলা-ঘাট নালার নিকট চতুর্কশ তীর্থন্ধর অনন্তনাথের পাদযুগল আছে। অপ্পাদিন হইল আলমগারী মহলার আর এক অজিতনাথের মন্দির ইইয়াছে। অযোধ্যায় নির্বাণী, নির্মায়ী, দিগন্থরী, খাকী, মহানির্বাণী, শাস্ত্রকী ও নিরান্দ্রী এই পঞ্চ সম্প্রদারী বৈফবের মঠ আছে। কোনহ মঠে ৩০০।৪০০ করিয়া লোক থাকে, বাকী ভারতে ভিক্ষা করিয়া কেডায়। মঠের বায় জন্ম লাখরাজ জন্মী ও অন্তান্ধ বন্দোবস্ত আছে। অযোধ্যার অনভিদ্রে নন্দিগ্রাম। সরযুর অপর পারে দশর্মণ পুজ্রোকি যাগ করিয়াছিলেন। অযোধ্যার পার্যবর্তী হান স্থান্ধ কেওড়াবনে আকীর্ণ। এখানকার নামাবলী, জপমালা ও তিসকস্থিতিকা প্রাদিদ্র।

অযোধ্যার প্রায় ৫৮ মাইল উত্তরে গোণ্ডার নিকট রাস্তীতটে যুবনাশের প্রায় বর্তমান নাম সাহেতমাহেত। বুদ্ধ এখানে বহুকাল বাদ করিয়াছিলেন। বিক্রমাদিতা বোদ্ধ নফ্ট করিয়া পুনরায় ছিন্দ্র নগর করেন। একণে চারিদিক জঙ্গলাকীর মধ্যে মধ্যে স্তৃপ ও পুক্ষরিণীর খাত। একদিকে ৩০ মাইল অক্ষ্রচন্দ্রাকার স্তৃপটী হুর্গভিত্তির অংশ,২৫ কটি উচ্চ স্তৃপটী হুর্গভিত্তর ও ৩৫ কটিটী অঙ্গুলি মাল্যের ও প্রমরিণী তিনটী বোদ্ধনিন্দান কারীদিশের বিনাদ স্থান হওয়া, অসম্ভব নহে। প্রাবন্তি নিকটে ভারতবর্ষীয় বিশ্যাত আট বিহারের মধ্যে এক বিহার ছিল। এখনও বর্মার লোক তীর্থ করিতে আদে।

লক্ষো। অযোধ্যা ফেনন পার হইয়া বিখ্যাত স্থান লক্ষো। নদীতীর হইতে লক্ষ্ণে দেখিতে অতি হুন্দর। গোমতীর বিমল সলিলোপরি লক্ষ্ণো নগর বহুদুর বিস্তার্ণ হইয়াছে। শ্বেতবর্ণ সৌধমালায় নদীতীর বিক-শিত। তহুপরি জাত্বলামান প্রকাণ্ড প্রকাণ্ড গাস্থুজ শোভা। থাকে থাকে আকাশভেদী মিনার শ্রেণী, স্থানে স্থানে নিকুঞ্গবনের নিবিড়পত্তের অস্ত-রাল। দেখিলে বোধ হয় যেন কি অপরূপ রূপ দেখিতেছি। সায়ংকালের সৌন্দর্যা বড় মনোহর। দিল্লীর পর এই নগর প্রধান ইইরাছিল, ইহার ও এখন আর দে ঐশ্বর্যা নাই, শোভা ক্রমে বিলুপ্ত হইতেছে। গোমতীর প্রস্তর সেতু ১৭৮০ অব্দে উদ্দোলা নির্মাণ করেন। গাজীউদ্দীন লোহ সেতুর উদ্যোগ করিয়া যান। তাছার মৃত্যুর ৩০ বর্ষ পরে এই দেড়ু নির্মিত ছয়। নগর প্রবেশ করিয়া দেলখোন বাটীর দিকে যাত্রা করিলাম। সদতআলি কৃত্রিম অরণা প্রস্তুত করিয়া এই স্থান পরিপূর্ণ করেন। ইহাতে তিনি কামিনী সহ বনবিহার বা মৃগয়া করিতেন। বিজোহ সময়ে কাম্পাবেল এই ছানে সেনানিবেশ করিয়াছিলেন। অনন্তর মার্টিনিয়ার বা কনস্টাণ্টিয়া গৃছ। ৭৫ বর্ষ পুর্বে মার্টি:নিয়ার নামক একজন ফরাশি সেনাপতি আদক উদ্দোলার জন্ত এই প্রাদাদ আরম্ভ করেন। ইহার মধ্যে করেকটা উৎকৃষ্ট গৃহ আছে। মার্টি-নিয়ার এক অন্ত,ত রক্ষের লোক ছিলেন। সকল দেশীয় সকল প্রকার গুহের অত্নকরণ করিয়া তিনি ইহার এক এক অংশ নির্মাণ করেন। কোথাও ৰা প্ৰকাণ্ড দিংহের প্ৰতিমূৰ্ত্তি, কোখাত বা চীনদেশীয় সন্ন্যাসীর আকার, কোণাও বা মন্তক নাড়িয়া বেড়ায় এমন সকল জীলোকের অবয়ব ও কোণাও বা নানাদেশীয় নানা দেব দেবীর প্রতিকৃতি। সমুখে এক প্রকাণ্ড পুকরিণী ও তমধ্যে একটা শুন্ত। প্রামাদ সমাপ্ত হইবার পূর্কে তাঁহার মৃত্যু হয়। কিছু পাছে নবাব দখল করেন এজন্ত তথায় আপনার করের মণ্ডপ ও এক ক্ল স্থাপন করিয়া যান। ১৮৫৭ অন্দে বিজ্ঞোহীয়া মার্টিনের দেহ দুরে নিক্ষেপ করিয়া অনেকাংশ বিনষ্ট করিয়াছে।

ভদনন্তর সেকেন্দরবাগ। নবাব ওয়াজাদ আলি সেকেন্দর মহল নামক তাহার এক পত্নীর জন্ম এই উদ্ধান প্রস্তুত করেন। স্থানটী প্রত্যেক-দিকে ২৪০ হাত। চতুর্দ্দিক প্রাচীর বেফিড এবং প্রবেশের একটা প্রকাণ্ড দরজা। বিদ্রোহ কালে হুই সহত্র সিপাছী এখান হইতে ইংরেজদের উপর ভন্তরর অগ্নির্ফি করিরাছিল। ইংরেজেরা বহুকটে উদ্থান অধিকৃত করিয়া তাছাদিগকে নিপাতিত করেন। তদনন্তর নজীব অসরক বা সন-জক। ইছা অযোধ্যার প্রথম স্থবাদার গাজীউন্দিন ছাইদরের কবর। এই কবর আরবদেশন্থ নজফ পর্ব্বভন্থিত মহম্মদ জামাতার কবরের অহ্ন-क्त्रन विलया देशांत्र माम नक्षक इहेशाहि। गांकी उक्तीन हेशांत मश्क्रद्रन क्रम বন্দোবস্ত করিয়া গিয়াছেন। এখানে অধোধ্যার নবাব ও তাছাদের বেগম-গণের প্রতিমৃতি চিত্রিত আছে। লক্ষ্ণে অধিকার কালে কমাগুরনচীক এই স্থানে বার বার বাধা প্রাপ্ত হইয়াছিলেন। অবশেষে পিল সাহেবের কামান দ্বারা হুই ঘণ্টা কাল গোলার্ফির পর বিভিন্ন হইলে ইংরেজেরা নগর व्यादाभ कतिरस्त । वाष्म किम्मिन छेहै किन्छ मारहरदत छेष्ठान । त्रक-গুলি উৎকৃত্তরপ খেনীবন্ধ, মধ্যে নানাক্ষাতীয় ছরিণ চরিতেছে। অনতি-দুরে গির্জা। বেগদ কুঠী আক্রমণ কালে এই স্থানে আঘাত প্রাপ্ত হইয়া মেজর হডদন প্রাণত্যাগ করেন।

অনন্তর স্পোভিত হজরখগঞ্জের পথ পার হইরা কায়সরবাগ। কারসর অযোগ্যার স্থানারদিন্দের গরিস্চক উপাধিমাতা। ইহাদিগের মোহরেও ঐ নাম আছে। পদসূতে রাজা ওরাজাদ আদি ১৮৪৮ অব্দে আরম্ভ করিরা ১৮৫০ খৃন্টাব্দে এই উল্লান সমাপন করেন। ইহাতে আসবাব সহ ৮০ লক্ষ্টাকা ব্যার হইরাছে। উত্তর পূর্বে ধার দিয়া প্রবেশ করিলে তারা-

বালি কুঠীর সমুখে এক অনারত স্থান। ইহারই ডাইনদিকের কুত্র ছার দিয়া বন্দীগণ কারাগারে নীত হইত। খারের সন্মুখে জিলেখানা নামক ছানে নবাব বাহির হইবার পূর্বে শাস্ত্রীগণ সঞ্জিত হইত। তাহার ডাইন-দিকে চীনবাদনে সঞ্জিত চীনাবাগ ছিল, তাহার পর অন্ধ্যমন্ত্রাকার মৎস্থ-মূর্ত্তি শেভিত গেট পার হইয়া হজরতবাগ। ডাইনদিকে চণ্ডীবালী বার-দ্বারী। এই স্থান রেপিলেরো সজ্জিত থাকিত। । এই স্থানেই খাসমহল ও বাদদাছেদ মনজল। ওয়াজাদআলি দদতজালি নিৰ্মিত পূৰ্বোক বাদসাহী মন্দির আপন রাজবাদীর অন্তর্ভুত করেন। হরিত অর্দ্ধাৎস্থা-কার মহয় শোভিত গেটে আলিলখী খাঁ মন্ত্রী বাদ করিতেন। বাদদিকে রাজনাপিত আজীমউলা খাঁ নির্মিত চেলিকলহায়র নামক গৃহপুঞ্ বাদদাহ বেগমদের আবাদের জন্ম চারিলক টাকায় এই স্থান খরিদ করেন। ১৮৫। অন্দের বিদ্রোহী বেগম এই ছানে বাস করিতেন এবং এইস্থানে বিটীশ বন্দীগণ আবদ্ধ ছিল। কিছুদুর গ্র্মন করিলে মার্কেল-মণ্ডিত রক্ষতল। মেলার দিন ওয়াজাদআলি সা ফকীরের পীতবর্ণ পরি-চ্ছদ পরিগান করিয়া এই স্থানে বদিতেন। কিছু দূর পরে লক্ষ মুদ্রা বায়ে নির্মিত লাখী দর ওয়াজ।। লাখী দর ওয়াজা পার ছইয়া কায়সরবাগের विखीर्ग ममन्जूरकांग मधन। अरे श्वात जागके मारम रमना रहेल, अर এই মদজিদের পার্শ্ব হর্মা সমূহে বত্তর বেগম বাদ করিত। লাখী দর হাজার অনতিদুরে বামদিকে চাকচিকাশালী অল্পচন্দ্রাকার কায়ছর शहक । नामीत्रेडकीन शांत्रपदात मखी त्रश्चमडेटकीना रेहा निर्माण करतन I ওয়াজাদআলি ভাঁছার নিকট হইতে কাড়িয়া লইয়া প্রিয়ত্যা মহল মাস্থ-কুল অ্লভানাকে দেন। ইছারই নিম্নে ধোরেরার রাজার প্রেরিত বিটিশ वसीग्रंग बरधत्र जन्म त्रिक्ति हिल। ७,इनिमिट्क जात्र अकरे। जिल्लाभाना । धरे जिल्लामा श्रेकिंगरकत जिल्लामात ज्वांव माज। धरे मत्रका निशा আমর। কার্সরবাশের বাহির হইলাম। নিকটে সের দরজা বা নীল-এখানে সেনাপতি নীল কায়সরবাগের দরজা হইতে কিন্ত গোলার আখাতে প্রাণ্তাাগ করেন। কায়সরবাগের বিস্তীর্ণ চক্রফোন म ७ न ७ हिनिवाकाद्रित मर्गा नमरक्माल वा लिने क्यांत्रमारा ७ काँ वात

বেগম মুরশিনজাদীর কবর। তাঁছাদের মৃত্যুর পর তৎপ্তা গাজীজদীন ছাইনত্র এই কবর নির্মাণ করেন। কারসরবাণের সমূপে রাভার অপর भार्ष्य जाता अली कृति वा मानमित । देश्दरक्रिया अभारन अभन वार्ष করিরাছেন। ইহারই সমূপে ধেরিরা ও মিধেলি রাজা প্রেরিত বিটিশ ৰন্দীৰ্ণৰকে হত্যা করা হয়। এখন ইংরেজেরা স্মরণচিচ্ছ নির্মাণ করিয়া-নদীতীরে নসিরউদ্ধীন ছাইনরের বাসন্থান ফরহনবন্ধ ও তাহার পাত্নীগণের বাদস্থান ছত্রমনজিল। গিলিট করা ছত্র শোভিত ছিল বলিয়া ছত্রখনজিল নাম হইয়াছে। ইংরেজেরা একণে পুত্তকাগার করিয়াছেন। করছনবন্ধ অর্থাৎ প্রীতিপ্রদ গৃহ সদত্তালির সময়াব্যি ওয়াজাদ আদির मभन्नभाष बाक्यांने हिल। रेहांत्र नमीजीतक जश्म (जरनदान मार्टिन সাহের প্রস্তুত করিয়া অযোধ্যাপতিকে বিক্রয় করেন। অবশিষ্টাংশ সদত আলি নির্মাণ করিয়াছিলেন। ইহার মধ্যত দরবারগৃহের নাম কছকল-হুলতান বা লালবারধারী। একণে গবর্ণনেট পোষ্ট আফিল করিয়াছেন। ইংরেজ রেসিভেণ্ট এই স্থানে বাদসাহদিগকে সিংহাসনে অভিষিক্ত করিয়া নজর প্রদান করিতেন। এই জন্ম বাদসাহ। বেগদ ও মুনাজান বেগদ **अथानकां**त्र जिश्हांमरन विभिनांत्र जन्म रुक्षे कित्रशहिरमन। अवश् विरक्षांही দিশাহীরাও মুনাজান বেগমের দাপেকে রেদিডেট কর্ণেল লো সাহেবকে অহ্নেরাধ করিয়াছিল। করহনবজের নদীতীরস্থ অংশে স্পর্বর্ণে জাজুলা-মান গমুজ শোভিত তিন্দী অতি প্ৰকাণ্ড প্ৰকাণ্ড উৎকৃষ্ট হৰ্মা আছে। অপর পার্ষে চতুর্দিকে দৌধমালা শোভিত প্রশন্ত প্রাদন পরস্পরা, মৎস্থাদি পুরিত সরোবর নিচয়, প্রাচীন থ্রীক বীর্গণের মার্কেলমূর্ত্তি ও উদ্ভানের मत्यांबत (भाष्टा। मतवात वर्षा शक्छलविभिक्टे। मर्क नित्त मतवातगृह। ভাষার নিকটন্থ ভাগ অখলালা, ভূতালালা, পত্নীলালা, ও অপরাপর গৃহ লইয়া বহ দুর পর্যান্ত, আরত। করহদবক্তের ছাদের উপর ১ইতে স্বৃত্ত লক্ষেনিগরের প্রকাণ্ড প্রকাণ্ড অট্টালিকা সকল দেখিতে অতি স্থলর। তাহার পর ইংরেজদিপের রেনিডেন্সি। সদত আলির সময়ে ত্রিতল বিশিষ্ট এই कृती निर्विष्ठ इत्। अथादन विद्वाहकारन व मान कान करत्रकळन देश्त्रक जालमामिगरक तका धितिशाहिरनम, ममंख गृंदरे छनि श्रीमात मार्गः

বিশংকালে কয়েকজন ইংরেজের উপর যে দরজা ভালিয়া পড়ে এখন তাহা মেই রূপই আছে। হর্ষাের উত্তর পূর্বাগৃহে হেনরি লরেল যুদ্ধে আহত इरेश थां लेळाग करत्र । निकार प्रश्ने गृह तथात विधिन महिना वानक ও পীড়িত্তনণ প্রাণভয়ে আত্রর গ্রহণ করিয়াছিল। পার্ম্বর নির্দ্ধা চূর্নিত थाइ। निकटित मन्छीन ও দেশীরদের গৃহ সকল ইংরেজেরা ভূমিদাৎ করিয়াছেন। এখন সকলই তদবস্থায় পতিত। কেবল কবরভূমির পারি-शांका क्रेशांक। **अर्ह मकन करत गर्धा नातक नीन ७ वाकि** जानि वीत-গৰ নিহিত আছেন। রেনিডেন্সির অনতিদুরে মুখ্য ভবন বা কেলা। २०० वर्ष भूट्य देश थक ध्यशंन (कल्ला हिन । विद्याहकांतन देशतासका সংখারের ইচ্ছা করেন। কিন্তু দৈন্ত অপা থাকাতে দে ইচ্ছা ভাগি করি-लन। उननखत जायदा धरामवाता ग्रमन कतिनाम। अर्थाम धक्की প্রকাও দরজা। পরে একটা প্রশস্ত ছান। ভাছার পরেই বিখ্যাত রোমী দর ব্যাজা, এত উচ্চ, এত 'বৈস্তৃত, এরপ সক্ষিত' ও এত শোভাশালী যে পৃথিবীতে এরপ দরজা আর নাই। রোমীর্ দর ওয়াজা পার হইয়া অপেকাকত আর একটা প্রশস্ত ছান। চারিদিকেই মিসীদ বামে এযায-বারার শোভা। লক্ষে বুএমানবারা হই প্রাপনে বিভক্ত। একটা হইতে একটা বিস্তাপ সিঁড়ি দিয়া অপরটীতে উঠিতে হয়। উভয়েরই প্রবেশ-দার বিশাল ও বিস্তৃত। গৃহটা ১১৪৸০ হাত লম্বা ও এং হাত বিস্তৃত। প্রত্যেক পার্যে ২০০০ হাত বিস্তৃত এক এক কুঠারী। ইহাতেই আসক উদ্দোলা নিহিত আছেন। হথাটী অতি শোভাশালী ও ভিত্তিমূল অতি शकीत । जामक উদ्দोन। देशांक ভाরতের সকল दश्रा जाराका छेरकुके করিতে বছ টাকা বায় করেন। কৈকৎউল্লার আদর্শ মনোনীত করিলা তাছাকে নির্মাণ করিতে আদেশ করা হয়। কিন্তু যেরপা অর্থ ব্যন্ত ছইয়াছে দেরপ হর নাই। অভ্যন্তরে যাছা কিছু শোভা ছিল লক্ষ্ণে গ্রহণ কালে ত্রিটিশ লৈভের। বিনষ্ট করিয়াছে। এখন গ্র-মেণ্ট অজাগার করিয়া-(हन। धाकन शांदर्वत मनीन उानुन उंश्वर नरह। नरक्नी धमामबाताव নিকটে বিতীয় তাজের ভার শোভিত ও বিনির্মিত হোসেনাবাদ এঘাখ-बाता। विमाश विवत देशांत व्यवस्य मुख्ये माहिक द्देशहित्मन। व्यवा-

ধারে তৃতীয় নবার মহম্মদ্যালি ইছা নির্মাণ ক্রেন। এখন ইছার মদিনাবছা। পার্শের উদ্ধান শোভাকর বটে। কিন্তু তাজের অপকৃষ্ট पञ्चाति के करूकश्रीन कृत शृंदर जान्दत । महत्रस्य तांब्रिड जारमा-কিছ হইলে হোদেনাবাদের মসজিদ ও হর্যাঞেণী অতি শোভাশালী হ-ইক্ত 🗥 অস্প দুরে পথের পার্ছে মহলদআলির সরোবরতীরে তাঁহার व्यक्तिर्विञ मनजाम। क्रमायमञ्जीम इरेटि उल्ह्रूके कतिवात रेष्टा हिम। কিছু কার্যারম্ভ করিয়া ভাঁহার মৃত্যু হইল। নগর দর্শনা র্থ তিনি সপ্ততল বিশিষ্ট সাতথ্য নামক স্তস্ত নির্মাণ আরম্ভ করেন।. কিন্তু চারিতলের পর আর হয় নাই। তমনন্তর মুসাবাগ। একটা উল্লান ও তমধ্যে হর্মা। मनर जानि अथात बनामकत नक्षि (मिथाउन। मूमा भनवीथात्री कर्तान নির্মাণ করেন বলিয়া মুদাবাগ নাম, ইন্দুরের কবর জন্য নছে। ইছার পর স্থাপু ক্যানিং কলেজ। তৎপরে আসফউদ্দেল্যি নির্মিত চক। চকের मत्रका इरेडे। आंकरतात ममकानिक वनिशा लाटक आंकरती राल। भूनी-পেক্ষা এখন লক্ষ্মে নগরের ভগাবস্থা। দেখিতে লক্ষ্মে নগরের সকল শেকই নবাবের ঘত। মুসলমান পুরিত লক্ষে নগরে মুসলমানের প্রয়ো-জনীর সমস্ত বিলাস তাবা পাওয়া যায়। এখানকার মাটির জিনিস, ছিট, कालाबस्त काक, स्रेकांद्र काक, त्रीभाजवा अभिज्ञात विमती कार्या छे एक छै। लक्ष्मी नगरतत बायुरकारन हर मारेन हरत रागमजीत वामजरहे विशाज दैन्धियांत्रगा। वर्खमान नाम निमधात। जात (मधीर नाहे, (म दन नाहे। আর স্থতের পার কর্ণগোচর হয় না, আর বজ্ঞীয় ধুম গগনমণ্ডল শোভিত করে না। যে গোমতীতীর রণমত বীরদিগের সদর্প ধনি প্রতিধনিত করিত, আজ্ঞ ভাতাই সামদিণের ক্রন্ধনধনি প্রতিধনিত করিতে একান্ত অসমর্থ হইয়া (यम थ्रा थ्रा थ्रा थ्रा थ्रा थ्रा करन करामक वीक्रान कथिकांक इन्हर्शां कविशाहित्नन, मिरे जन शाम मिराकाती मामिरिशत धूनि धूमतिल ছাছে কলুমিত হইবার ভারে যেন অদৃশ্ব হইতেছে। যেখানে একজনের কোললে খত গত দানবদ্ধ নিমেষ মধ্যে নিছত ছইয়াছিল, মেই ভূমিতে শত শত আৰ্ব্য ৰসিয়া সাতৃশত ৰৰ্ব হুংখ ভোগ করিল দেখিয়া কাহার ছদয় विकीर्ग ना इत ? विश्वास मिनक विके महत्र अविदेश भेटवर्ष क्लांकन कताहे- রাছেন, আজ সেখানে অরের জন্ম আর্যোরা লালায়িত। পূর্ব্ব গোরবের কিছুই নাই, কেবল সেই চক্রতীর্থ বর্ত্তমান আছে। এই স্থানে বিষ্ণুর চক্রনেমি শীর্ণ ছইরাছিল। চক্রতীর্থ একটা ষট্কোণ সরোবর। চারিদিকে মন্দির। সরোবরের বিস্তার ৮০ ছাত। কুণ্ড ছইতে জল উঠিয়া দক্ষিণদিকের চেদ্দি ছাত প্রশস্ত গোদাবরী নালা দিয়া বাছির ছইরা যাইতেছে। উত্তরে ১১০ ফীট লম্বা ৪০০ ফীট বিস্তৃত ও ৫০০ ফীট উচ্চ এক কেল্লা।

লক্ষে নগরে ছই রেল সমিলিত। বামের রেল কাণপুরে গিয়া কলি-कांठा इहेट मिल्लीगांभी दबल म्लान कविशाह । हेन्हा इहेटन छाइन मिटकब রেলে নৈমিষের ক্ষেত্র দেখিতে দেখিতে পাঞাল বা রোহিলখণ্ডে প্রবেশ করিবে। লক্ষে হইতে হরছির পর্যান্ত যে কোন স্থানে অবভরণ কর নিকটে কলিশলা সলম। কিন্তু কাণপুর ছইতে করেকাবাদগামী ব্লেলে ঐ স্থান আরও নিকট হয়। এই সন্ধমেই প্রাচীন পাঞাল মহোদয় গাধিপুর কাম্বকুজ বা কনোজ নগর অবস্থিত। এখন গঙ্গার প্রাচীন প্রবাহে কালী व्यवाहित इहेटल्ड्। वर्खमान करनीक मामाच भन्नी मात। व्यारमन मक्ति। शन्तिम दश्मक्त ७ **ज**हात्स्यत च्यापूरी। मशूर्थ अकते। ध्यकाक ভিত্তি ১৬০ হস্ত দীর্ঘ ০ হস্ত বিজ্ ত ও ২৬ হস্ত উচ্চ। উপরে ৪০ হাত অন্তরে চারিটী স্তস্ত। তাহার ৬।০ হাত পরে আর এক ভিডি। ৬ হাত পরে আর একটা এবং ১৪ ছাত পরে চতুর্থ ভিত্তি আছে। মুর্গের ঠিক मधायाल अक अकां किन मिनत किन। क्षीनभूत्वत हेवाहिम माधा ১৪০৬ অব্দে তাহাকে নফ্ট করিয়া জমা মসজীদ করিয়াছেন। উহার অভ্য-ন্তর ৭২ হাত লখা ১৮ হাত ঞাশন্ত ও চারি থাক ভাবে মজিত। ভিতি-গাতে অনেক দেব দেবীর মূর্ত্তি ছিল, এখন চুণকামে আরত ছইয়াছে। ছুর্গের দক্ষিণ পূর্বে ১৪৭৬ অব্দে নির্মিত মধ্যম জহানীয়াও একটা হিন্দু मिन्त्र हिल। अथनव यणीत मुश्रेस युनिएउट्ट। करनीरखत पूर्व किरकाना-কার ছিল। স্থানে স্থানে উহার ভিত্তি ৪৬ হক্ত উচ্চ রহিয়াছে। মুর্গের অনতি-দুরে সিংহ ভবানী প্রায়ে ৪ ছাত উচ্চ এক বুদ্দুর্ত্তি ১ ৭০ ছাত উচ্চ বক্ত-वाताही महिरमर्किनी ७ भिद्रहुशीत मुर्खि छेटिशाइह । मकदम नगरबन मिकन পুর্বে হুর্। এখন ওক্ত আলুকেতে পরিগত। ভারমানে মেল।

হইয়া থাকে। আঘের দক্ষিণে বিদ্যালয়ের ভয়বিহার। উত্তরে রাজ্যাটের নিকট হাজিহরনায়ন হইতে ও মাইল দক্ষিণে মিরন কাসর পর্যন্ত কাত্রকুজ নগরের ভিছ্ন পাওয়া বার। যে নিকে চাও কেবল ভয়াবশেষ ও কর্বর-ক্ষেত্র। যে নগরের আভিলর্য্য বর্ণন করিতে বিশ্বাদিত মুগ্ধ হইয়াহিলেন, যে নগর হর্বর্জনের কালে ভারতকে কম্পান্তিত করিয়াহিল, বাহার আত্রায়ে বেছি বিদলিত ত্রাহ্মণগণ বছকাল বাস করিয়াহিলেন, যেখানে এক কালে ত্রিশহাজার পানের দোকান ছিল এবং যাহা পৃথিবীর মধ্যে অন্বিতীয় নগর বলিয়া খ্যাত ছিল, আজ ভার'এই দলা।

কার্ত্রের উত্তর ও করেকাবাদের কিছু দূরে কালীনদীতটে প্রাচীন সাভকাঞা নগরী। বাল্মীকির সে বর্ণনার আর কিছুই নাই। কেবল এক উচ্চ ভয় ভূমির উন্নর করেকবান গৃহ ও পার্থে আর কতকগুলি ভয়স্ত্রপ। কেলার চিহ্ন গান পর্যান্ত দেখিতে পাওরা বার। দক্ষিণ পশ্চিমে আধ মাইল দুরে রাজ্ঞ্যাট হইতে কাকরা ঘাট পর্যান্ত কালীনদী প্রবাহিত হইতেছে। পালীর দক্ষিণ ভূপে বিশারীর মন্দির। তাহার ৪০০ কটি উত্তরে অংশাকের ৩৫ হাত উচ্চ শুগুরীন হজীন্তম্ভ, দক্ষিণ পূর্বের প্রাচীন নাগক্তের অবংশাব কাজিয়া ভালাও। কিন্তু বেখানে বেছি এয়জিংশং অর্গ হইতে ক্রমা ও ইস্রান্ত্রির ভোগান করিয়াছিলেন, বেখানে অংশাক ভাহার প্রকাশ্ত মূর্তি ছাপন করিয়াছিলেন, বেখানে পূর্ব্ব চারি বেছি বিদিয়া ধ্যান করিয়াছিলেন, স্বেশানে ইন্ত ও ক্রমার ভূপ ছিল, বেখানে প্র্যুবীক বর্মা বেছিকে ক্রশ্ব করিয়াছিলেন, সে সকল ছান ছির করা বড় কঠিন। ১৩০০ বর্ষ পূর্বের এখানে বিভার বাজ্মণের বাস ছিল। প্রায় ১৮০০ বর্ষ হইনে এই নগরের আন্তিশন্ম ব্রায় হইতে আরম্ভ হয়। চীন্যান্ত্রী হোয়ান্ত্র্যান্ত্রির সময়েও দশ ছিল্পন্ত্রির ও কক্ষ ভাক্ষণের বাস ছিল।

শশুলি দেখিতে ইচ্ছা না ছইলে ছরাপুরি ছইতে সাজেছানপুরে অঞ্চর ছইবে। বাজেছানপুরের শর মুদলনানপুরিত ব্য়েলী। জ্য়া ও শহরা নদীর সঙ্গম ছলে অবস্থিত। এখানকার দোস্তী ও কাঠের জিনিস উৎকৃষ্ট। ৩০ মাইল কশানকোণে গ্রাস্থাট প্রাচীন পিলিভিত নগর।

- ब्रायनीय ১१ मार्डन शास अवस्ता किन्न। अवस्तात १ मार्डन **डेख**रब

প্রাচীন অহিছত্ত নগর। অজ্পুন সহ জ্রোণ ক্রপদকে পরাভূত করিয়া এই নগর অধিকার করিয়াছিলেন। যাইতে পথে মাঝে মাঝে গান্ধননদীর খাত। দূর হউতে এক শিবখন্দির নেত্র গোচর হয়। নিকটে গিয়া ছুর্গ দেখিলে বোধ হয় যে অঞ্ ন वशार्ष रे अकजन खत्रकत यीत हिल्लन । চीनराजी हाशान-থদং ও ইংরেজের। ইছার ত্রাক্ষণ্যতার ভূরদী,প্রালংসা করিরাছেন। রথ লইর। নিকটবর্ত্তী ছত্তরা অত্যন্ত কঠিন। উত্তর পশ্চিমে প্রবেশের একমাত্র পথ আছে। ছুৰ্গটী বিষমাকার সমকোণি ত্রিভুক্ত। একদিকে বালুকাপুর্ণ রামগন্ধ ও অপরদিকে গভীর খাতযুক্ত গলননদী, উভয়ই পার হওয়। স্তুক্ষর। উত্তর পূর্বে খাল জল ভাঙ্গাল ও গহ্বরযুক্ত ভয়হর পিরিয়া নালা। প্রাচীর কণ্টকা-হত,তাহার উপর অন্যন ৩৫টা শুশু উচ্ছিত হইয়াছে। কোনটা ২০ কোনটা হয় ও কোনটা বা ৩২ হস্ত উচ্চ। আলি মহক্ষদ খাঁ এই হুৰ্গ দৃঢ় দেখিয়া সংস্কার আরম্ভ করেন। কিন্তু বায় দেখিয়া ছাড়িয়া দেন। শুনা বায় ভাঁছার এক কোটি টাকা ব্যয় হইয়াঞ্জিছু হয় নাই। ইহার বিস্তার প্রায় পা॰ মাইল। লোকে ইহাকে পাণ্ডু ছুৰ্গ বলিয়া থাকে। ছুৰ্গ মধ্যে তিনটা জুপ। উত্তর ভিত্তিরদিকে ৪০ ছাত উচ্চ এক বেদী। তহুপরি ভগ্নগৃহ মধ্যে ৭ ছাত স্কৃপ ও ৫ হাত উচ্চ মহাদেবের ভগ্নলিক। এই গৃছের প্রাচীর উত্তর দক্ষিণে ও হাত পুৰু এবং পূৰ্ব্ব পশ্চিমে বারান্দা সহ ৯॥• হাত ও ১২॥• হাতছ ল। মন্দিরের অভ্যন্তর দীর্ঘ ও প্রস্থে ১০ ও ৭ ছাত এবং বহির্ডাগ ৩২ ও ২০ ছাত। ইংরে-জের৷ ইছার বিকটাকার ভগ্নাবশেষ দেখিয়া ছির করিয়াছেন যে ৪০ ছাত উচ্চ বে দীর উপর এই মন্দির ৬৬ ছাত অপেকাণ্ড অধিক উচ্চ ছিল। তুর্গ প্রাচীর অপেকা বেদী ২০ হস্ত উন্নত। এজন্ম বন্ত দূর হইতে শিবসৃতি দু উদ্যোচর হয়। চীন ধাত্রী কাহিয়ান বলিয়াছেন অহিচ্ছত্তে অনেক প্রকাণ্ড শিবমন্দির আছে। কেছ কেছ বলে খোর শিৰভক্ত অখব্যামা । এই মন্দির নির্মাণ করিয়াছিলেন। ইছার পশ্চিমে ২৪ হস্ত এবং কিছুদূরে ২০ হস্ত উন্নত ভুই প্রকাণ্ড শিবালয়ের ভয়াবশেষ। তুৰ্গ বাহিরে পশ্চিম্দিকে ২০০ হস্ত স্বচতুকোণ ও ২০ হস্ত উন্নত আর এক ভয় ভূপ। ইংরেজেরা খনন করিয়া চতুর্জ তিনেত্র পদাহত একমূর্তি ও লাল ঐত্তরের শন্ধ ও হজাধারী জীর এক মূর্তি বাহির করিয়াছেন । নিল্লে সমস্তই জন্ম। বোধ হয় মুসলমানেরা দগ্ধ করিয়াছিল।

হুগের উত্তর পশ্চিমে কডকগুলি জুপ, তাহার ঘুই মাইল ছুরে ১২৫ বিযা বিস্তীর্ণ গাদান লাগার লরোবর। আর আর্ম পোরা ছুরে ১৫০ বিয়া বিস্তীর্ণ আহিছজের আদি রাজার নরোবর। ছত্র ও কাটারিখের নামক জুপ বোধ হয় বেজি কীর্জির অবশেষ। একলীর মধ্য হইতে কোটার অভ্যন্তরে মুক্তা নীল কাচ অস্বর্মালা ও ১০ টা চাখড়ির বর্ণের জপমালা পাওয়া গিয়াছে। কাটারিখেরের মধ্য হইতে ইংরেজেরা এক ভাঙ্গা বুদ্ধ মুর্জি উৎথাত করি-রাছেন। অহিছজের ০ ক্রোল দক্ষিণে দিলাবাড়ী নামক স্থানে সমচতুক্ষোণ ভক্তে শুপুরাজাদের বিবরণ লিখিতঃ আছে। ছুগের ২৫০ মাইল উত্তরে শুলারিয়া আমে আর এক প্রকাশ্ত ভীম লিক আছে।

অহিত্তের দক্ষিণ বদাউন ত্রেকরোবাদের মধ্যে গলার প্রাচীন প্রবাহ তটে মহাভারতের কম্পিলানগর। জ্ঞাপদ ক্রোণকর্ত্বক তাড়িত হইয়া কাম্পিলানগর দক্ষিণ পঞ্চালের রাজধানী করেন। এখন কাম্পিলোর ভগ্না-বছা হিমালের ছইতে চন্ত্রপর্যান্ত পঞ্চাল বিস্তৃত ছিল।

অহিছ্তের প্রার ২০ মাইল দক্ষিণে গদার প্রাচীনপ্রবাহ তটে শরণ বা শুকরক্ষের। ভগবান এই ছলে বরাহ অবতার হইরা হিরণাক্ষিকে বধ করেন। এজন্য ইহার নাম শুকরক্ষেত্র। মহাভারতেরমতে এখানে গদাম্বানে মহাপুণা হয়। ইইলতবর্ষ হইল গদা এ ছান ত্যাগ করিয়াছেন। প্রাচীন বেণ বা সোমদন্তের কেলার মধ্যে সীতারামজীর মন্দির। এবং পলীর উত্তর পাল্চিষে বরাহজীর মূর্ত্তি। মার্গালীর্বের শুক্রএকাদশীতে মেলা হইরা থাকে। মীতারামজীর মন্দির মুগলমানেরা ভয় করে। ১৮ বর্ষ হইল সেই ভয় গৃহের সংস্কার করিয়া একজন বণিক বর্ত্তমান মন্দির নির্মাণ করিয়াছে। এখন গর্ভাণ্ড ১৮ হন্ত সমস্কার করিয়া একজন বণিক বর্ত্তমান মন্দির নির্মাণ করিয়াছে। এখন গর্ভাণ্ড ১৮ হন্ত সমস্কার করিয়া একজন বণিক বর্ত্তমান মন্দির নির্মাণ করিয়াছে। এখন গর্ভাণ্ড ১৮ হন্ত সমস্কার করিয়া একজন বণিক বর্ত্তমান মন্দির নির্মাণ করিয়াছে। এখন গর্ভান্ত ১৮ করি আয়তনের চিচ্ছ এখনও দেখা হায়। ভগ্নভিত্তি গাত্রে যাত্রীদের নাম লিখিত আছে। একটা সন্থৎ ১২২৬ বা ইংরেজি ১১৬৯ অন্দে লিখিত। ১৫১১ শৃঃ অন্ধ পর্বন্ত ও৮ বাত্রীর নাম আছে। ১২৪১ অবধি ১২৯০ খৃঃ অন্ধ পর্বন্ত বেণারীদের সময় ১৫ নাম। কিন্ত খিলিজি ও তোগালকদের দিলীতে দাজ্যকালে কেবল ১০৭৫ অন্ধে কেরোজের সময় এক নাম আছে। এরপ হত্তমা বিচিত্র নছে। ছর্মন্ত আলাউদ্দীন ও উন্মাদ তোগলকের সময় তীর্থ

বাখাত হওরা সম্পূর্ণ সম্ভব, ভাছার পর সৈয়দদের রাজ্যকালে যোট ত নাম। তদনন্তর বিলোলিলৈদীর রাজ্যকালে ১০ নাম। তাছার পর খোর হিছুদ্বেমী সেকেন্দর লোদীর রাজ্যে ১৫১১ অন্দের পর আর নাম নাই। বোধ হয় এই ত্রাত্রাই মন্দির নক্ট করিয়াছিল। তাহা না হইলে প্রশংসনীয় আক্বর, অননোযোগী জেহালির ও প্রজারঞ্জক সাজেহানের সময় নাম নাই কেন?

এওনলা ফৌনন হইতে চণ্ডেলি জংগন। বামের রেল দিয়া আলিগড়ে দিল্লীগামী রেল স্পর্ল করা বায়। পথে মহন্দপুরে গঙ্গার সহিত সাক্ষাং হইবে। এখান হইতে নেকিবোগেও পুকর ক্ষেত্রাদিতে বাওরা বায়। ডাইনের রেল মুরদাবাদে শেষ হইয়াছে। মুরদাবাদ নগর পাহাড়ের উপর সংস্থাপিত, পাহাড়টী ঈশানকোণ হইতে বায়ুকোণে বিস্তৃত ও ২০ হস্ত উচ্চ। জেলার উত্তর পূর্বে ভাগ পর্বত্যয়। উত্তর পশ্চিমে হিমবানের তড়াইক্রোড় অস্বান্থ্যকর ও জঙ্গলাকীর্ব। এখানকার তণ্ডুল, গোধুন, আক্রুর, গোণ্টর করণী আদি পিত্তলের উপর শিয়াকলমকারি কার্যাদি উৎকৃষ্ট।

মুরদাবাদ হইতে নৈনিতালের এক পথ আছে। ভুলীতে কালাভুন্ধী পর্যান্ত ৪৯ মাইল। পরে পর্বতোপরি যোড়া, ঝাঁপান বা ডাগুীতে ১৬ মাইল যাইতে হয়। নৈনিতাল বা নৈনি সরোবর অতি গভীর ও স্বচ্ছ জলে পরিপূর্ণ। স্থান স্বাস্থাকর ও রমণীয় বলিয়া ইংরেজেরা বাদ করেন।

নৈনিতালের কিছু দূর পাশ্চিমে গোভিষণ, ট্রোণ সাগর, উজেন বা বর্ত্ত-মান কাশীপুর। কথিত আছে যে দ্রোণ সাগর ও উজেন কেলা পাওবেরা প্রস্তুত করিয়াছিলেন। দ্রোণ সাগর প্রতি দিকে ৪০০ হাত। লোকে তীর্থ করিতে যার এবং চৈত্রের ক্রফার্টমীতে মেলা হইয়া থাকে। উজেন কেলা মাঠ হইতে ১০ হাত উচ্চ। কোন কোন ছানে হয় হাত উচ্চ প্রাচীর আছে। প্রাচীরের এক এক খানা ইট ২০ অকুল লম্বা ও ১০ আকুল চৌড়া। ছুর্গের মধ্যভাগ বিষম, প্রায় চারিদিকে পরিখা ও সর্করে জন্মারত। ছুর্গমধ্যে উদ্ভরে ১৪ হাত উন্নত, ৪৮ হাত লম্বা, ৪২ হাত প্রস্তুত হাত পুক্ ভিত্তিবিশিক্ট ভীমগজ নামক এক প্রকাণ্ড ভয় জুপ। ঈশান কোণে ৪০০ হাত লম্বা ও ৩০০ হাত প্রস্তু বেদীর উপর ২২ হাত উন্নত আর এক জুপ। দক্ষিণে ১৪ হাত বেদীতে ১০ হস্ত প্রশাস্ত্র এক মন্দিরের অব-

শেব। নানা ছানে নানা চিছ। তীনবাত্রী কাহিয়ান এই গ্রুল প্রকাত হিন্দু মন্দিরের উর্লেখ করিয়াছেন। খড়গপুরের নিকটে বেজিদের ভূপ ছিল। এখন লোকে ছুর্গের পূর্বেজঙল। দেবী বা উজ্জানী দেবীর মন্দিরে পূজা করে। এখানকার ডক্তেখর মুক্তেখর প্রভৃতি মন্দিরগুলি নৃতন নির্মিত।

ৈ দৈনিতালের ২২ ঘাইল ঈশান কোনে কমার্নের রাজধানী আলমোড়া মগর পর্বভোপরি সংস্থিত। এই প্রদেশে নামাবিধ রত্তের আকর আছে। ক্মায়নের পর্বত শোভা অতি মনোহর। হিমালয় হইতে মিঝরিনী সকল জাসিয়া গলায় মিলিত ছইতেছে। অলকাননা সহ ভাগীরথী সন্ধা रेमवध्यक्षण, मन्मकिनी मन्द्रम क्षाध्यक्षण, शिखांत्र मन्द्रम कर्ण्यक्षांभ, नन्म-কিনী সক্ষে নক্ষ্যাগ প্ৰদেষ্ণী সক্ষম বিষ্ণুপ্ৰয়াগ। আল্যোড়া হইতে ৮০ মাইল উত্তরে বিষ্ণুগঙ্গার ভাইন তীরে সাগর হইতে দশ হাজার কুট উচ্চ হ'প্ৰদিশ্ব বদরীনাথ তীর্থ। বড় বরফ, বড় শীত। নিকটছ উষ্ণ প্রস্তু-বণের জলে অনেক আরাম বোধ হয়। মন্দিরটী ৩০ হাত উচ্চ, উপরে হর্ণর কলগ ও মধ্যস্থলৈ শ্রামপায়াণের নারায়ণ মৃতি বিরাজমান। বিতাহটা প্রায় इरे रां डेक्ट, मस्टरक वस्त्रानि, किसू पृष्टिंगे करा रहेशाए। अक्षत्रान्धा क्रम इंटेंड छूनियां छार्यन करत्रन । अथन अमनवारतत जानार्यंत्र शृक्षां करत् । वारम्ब जन गर्डामाल ১१६ ७ कमामूल १७ थानि (१वइ आम जारह। वार्षिक আয় ২ হাজার টাকা, বর্ষে ৭ অবধি ১০ হাজার যাত্রী যায়, প্রধান পুরোহি-তকে রাঙ্গ কছে। শীতের সময় পুরে।ছিতেরা মন্দির বন্ধ করিয়া পা ওকে-भन्न वा यगीयर्क आमिशा थारक। यगीयर्क नन्निश्च मन्त्रि आर्ष्ट । वन्त्री-नार्थंद्र निकट्डे टिक्ड वा टेक्नांग बाहेबाद्र मांना शंथ। के शंथ मिला वम-বিকার্জামের প্রোত্তরতী অংশে অংশে আসিতেছেন, পথে তিনখানি আম। কিন্ত মধ্যে মধ্যে হিমবানশৃক হইতে বরুক্সজ্য নিপতিত হইয়া আমকে আম-উৎসন্ন করিয়া কেলে। এই বিস্তীর্ণ ভরত্বর বরফসজ্বকে পার্বভীরেরা ত্ইনগল वाल । यमतीमांश वर्षेट्ड २६ मारेल, किन्तु भाषत बक्का बणांडः ১०० मारेल ছুরে কেদারনাথ তীর্থ। রাস্ত। অতি হুর্গন, শীত ও বরক নিতান্ত হংসহ। কেদারনাথের মৃতি বাঁড়ের করুদের মত কতকটা এতার উন্নত হবলা আছে মাত্র। ভাষার উচ্চতা ২ হাঁত ও বেড় ৯ হাত হইবে। অমরসিংহ একটা মন্দির

করিয়া দিয়াছেন। প্রোহিত পূর্বোক্ত মঠে থাকেন এবং কেদারে প্রতিনিধি পাঠান। ইহার ও মলবারী ত্রাক্ষণ। মন্দিরের আয় বদরীনাথের,তিন ভাগের এক ভাগ। বাহাদের প্রাণত্যাগ করিতে ইক্ষা হয় তাহার। মহাপথে ভৈরব बन्ना मित्र व्यर्थार উত্তরদিকে গড়ামীরা বরফের মাঠে দৌড়িরা যায়। গড়ানীয়া ৰশত: আর উঠিতে পারে না, শীতে প্রাণ ত্যাগ করে। এখন গবর্ণমেণ্টের লোকে সে দিকে ঘাইতে দের না। হিমালয়ে পঞ্চকেদার আছেন। পাঞারা বলে শিব র্যরূপ ধারণ করিয়া পৃথিবীতে প্রবেশ করাতে শরীরের পঞ্জান বাছির ছয়। তাছাই পঞ্কেলার। কেছ কেছ क्नांत क्ष्णायंत्र, मधारमयंत्र, क्षांत्राथ ७ कृत्रनाथ विमानस्त्रत क्रित्र क्रित ছানে এই পঞ কেদারই দর্শন করে। বদরী, কেলার হইলা সম্নাসীয়া মানা পথে না গিয়া ভুরের অপ্পতা বশতঃ হিমালয়ের হুর্গম জোয়ার भर्थ नित्र। मानम महत्रादत ७ रेकलाम शर्वेठ मिथिए यात्र । दाखा दफ् दिक्छे, কিন্ত পথে পঢ়াশাও নগরে অভিধিদেব। আছে। কমায়ুন গড়োয়ালের পার্বতীয় পল্লী সমূহে মাটি ও পাণরের ছই তিন তলা ঘর, নিম্নতলে গৰু পাকে। তাহার উপর মাত্রয় ও শত্র থাকে। নদী পার হওয়া বড় দায়। কাষ্ঠ যোগ করিয়া শালী, দড়িতে কাষ্ঠ বাঁধিয়া বুলা অথবা দড়ির শিকা कतिशा ननी भाद इस । भारा एक कार्य कार्य कार्य मर्था प्रकार वार्य পাথর চুয়াইয়া পড়ে। ইহাকে ইংরেজেরা বিটিউমেন ও বৈজেরা শিলা-यक बाल । क्रोर्लिन टैज्लब इत्कब कार्क क्रानिया शास्त्रजीरयवा मना-শের কার্য্য করে। এখানে চামরা ও চুরী নামক প্রায় ২০ হাত লম্বা গাছের ফলের ভিতর নবনীত পাওয়া যায়। ফল প্রায় পিয়ারার মত, ভিতরে ৰীজ, খাইতে স্থমিষ্ট মাধনের ছায়। রীজ পিদিলে তাহার তৈল জমিয়া माश्रामत काम कम । दीरक विनि अञ्च वहेमा शास्त्र, हेशद कूल वर्षत করিলেও মধুর আক্ষাদন পাওয়া যায়। কমায়ুনের লোক মধুর চাদ করিয়া ্থাকে। পার্বভীর চুরীকুলের মধু বড় মিষ্ট। ছিমালয়ে নানা জাভীয় ফল क्न कार्क, कठाबारभी भावता गार।

যদি কাশী ছইতে অধ্যোধা পাঞ্চাদাদি দেখিতে ইন্ছা না হয় তবে মলল-দরাইয়ে দিরিয়া ঘাইবে !

মঙ্গলসরাই পরে চুনার বা চরণাত্রি। গলার দক্ষিণ তটে শতহত উচ্চ এক প্রকাণ্ড পাছাড় ৷ তহুপরি ১৫০০ হাত লহা ও ৬০০ হাত বিস্তৃত এক অৰ্চ হৰ্গ। প্ৰাচীৱ কোঞ্চ ৭ হাত কোণাত বা ১৪ হাত উচ্চ। তত্বপরি মধ্যে মধ্যে চূড়া, কামান ও বড় বড় পাণর। অভ্যন্তরে হিন্দরাজার এক প্রচীর প্রানাদ, কূপ, ছানে ছানে তৃণ, বৃক্ষ, সেনাবাস, বাকদাগার, इंगिপाতान, खन ७ उरकुके अथयहक निष्ट्र अक मार्किन विनी। लांक वत्न त्य वित्यंश्वत २ वर्षे। धे मार्त्सन त्वनीरङ विदाक करत्रन । ১৫२३ जस्म এই দ্বৰ্গ বাৰরের ছিল। তৎপরে অনেকের পর ১৭৬৮ অবেদ ইংরাজের। প্রাপ্ত হইরা আয়ুগাগার করেন। একণে পীড়িত দেনাগণের আবাদস্থান। इर्गात श्रुकांश्रम नगत। नगत वाहिन्त कानीममनिमान ककीरतत कवरता-পরি সমাট নির্মিত প্রকাণ্ড মসজীদ। চুণার প্রস্তরে প্রস্তরের কাঠিম, স্থায়িত্ব, উৎকৃষ্ট আভা ও উৎকৃষ্ট দানার জন্য প্রানিদ্ধ। টিছা কলিকাতায় मुर्जिनियान कार्या निराधिक इत। रक्षेत्रन शात इहेता अर्क गाहेल मृदत প্রস্তর এথিত ৭ খণ্ড বিশিষ্ট জরওনালার সেই। প্রত্যেক খণ্ড ৪০০ ছাত। বামে বিদ্ধাপর্বতের বিকার্ণ "শুলাবলী। পথে দশ মাইল মধ্যে ২১ সেডু। বর্ধায় বিদ্যোর জল উহার মধ্যদিয়া গন্ধায় নিপতিত হয়। তাহার পর ডাইন দিকে গন্ধাতটে মির্জ্জাপুর। নগরের প্রাদাদ মন্দির মদজিদ ও ঘাট-শ্রেণীর শোড়া ভাগীরথী ছইতে অতি ক্রন্দর দেখার। যে তংশে দেশীর লোকেয়া বাস করে তাহার মধ্য দিয়া উভয় পার্শ্বে বৃক্ষ শোভিত তিনটী স্দীৰ্ঘ স্থিত ও সৱল পথ চলিয়া গিয়াছে। ইহারই পার্যে পার্যে বালু-কা প্রস্তের নির্মিত মন্দির।বলি। চক ও উদ্যানের শোভাও প্রশংসাযোগ্য। विकाश्वत कार्लंड लगगी जनमी अ स्वतक्षक्रमा श्रामिक। इनिहा, कार्लंड-প্রস্তারের যান্ত্র গুলি দেখিতে প্রীতিকর। লেছির জিনিসত মন্দ নর, धवर धनावमानाशन व्यक्ति स्था ७ सम्भ । जन सरेवात शूर्व विकाशूत মধাভারতের প্রধান বাণিজা স্থান ছিল! টেসন ছইতে বিদ্যাবাসিনীর मिन्त ७ किंग मृत्त । धका छाड़ा १०। त्रम दात्र शथ हरे ७ वह मिन्त দেখিতে পাওয়া বার। পূর্বে চক, ডাকাইত ও গাঁটকাটারা ব্যাত্তপূর্ণ এই প্রস্তিপ্রান্তে বাদ করিত, । এখন নিব্রত হইয়াছে। নবরাতি দিনে এখানে

মেলা হয়। এবং গঙ্গা বিদ্ধো সঙ্গম ছঙ্গায় দশগুণ কুক্লেত্র কল জন্য বহুলোক স্থান করিতে আইসে। মির্জাপুর ছইতেও দাইল দূরে ভোরা নামক সেনানিবেশ ছানের নিকট ৪০ হস্ত উচ্চ একটা জলপ্রপাত দেখিতে পাঙ্গা যায়, পাছাড় ছইতে ঐ প্রপাত দেখিতে অতি স্থলর। মির্জাপুর ছইতে ১ দিন গমন করিলে পূর্ববর্নিত শোনপ্রজ্বণের সমীপবর্তী ছঙ্গা যায়। ইছারই নিকট সিন্ধাবাসী কয়লা ক্ষেত্র। মির্জাপুর ভাগা করিয়া কিছু দূর পরে সির্গা রোড়। তৎপরে ভ্যমার সেতু। ভ্যনন্তর নইনি।

নইনি হইতে শাখা রেল জব্বলপুর হইনা বন্ধে গিয়াছে। নইনির পার যমুনার আশ্বর্যা সেতু। নিম্ন দিয়া নোকা, তত্বপরি লোক ও তাহার উপর দিয়া রেলগাড়ি চলিতেছে। ২১৪৯ হস্ত লম্বা সেতু,পঞ্চদশ কুকরে অর্দ্ধমাইল বিস্তীর্ণ কালিন্দীর উত্তর কুল স্পর্শ করিয়াছে। প্রত্যেক ভাগ ১৩৬ হাত। তাহারই মধ্যে যমুনার নীল জ্রোত প্রবাহিত হইতেছে। এক একটা স্তম্ভ জল হইতে নিম্ন পর্যান্ত ৫০ ফীট প্রোথিত আছে। বর্ষাকালে তত্বপরি আর ৪৫ ফীট জল রন্ধি হয়। স্তম্ভ সমূহের নিম্নভাগ প্রস্তর ও উপরিভাগ লোহ নির্মিত। স্রোতসকুলা যমুনার বালুকার এই স্তম্ভ প্রোথিত করিতে বিশেষ কট হইয়াছিল। সেতুর বিতীয় তল দিয়া গাড়ী হোজা ও লোক চলিতেছে। দক্ষিণ মুখে প্রবেশ করিতে হইলে বাঁধ দিয়া ও উত্তর মুখে প্রবেশ করিতে হইলে ৩০ টী থিলানের মধ্য দিয়া প্রবেশ করিতে হয়। এই উচ্চ স্থান হইতে বালকেরা যমুনায় ঝাঁপ দিতেছে।

সেতৃর ভাইনদিকে গলা যমুনা সল্পানর পতাকা কথঞিৎ দুক্তিগোচর হয়। সেতৃ পার হইরা বাদদিকে পথের নিম্নে বিটপী আচ্ছাদিত প্রয়াগের থাপারল-ঘর ও শেতবর্ণের গৃহ সকল দেখিতে দেখিতে প্রকাণ ফেসন। ফেসনের বাহিরেই প্রবাদি পূর্ণ ইফক নির্মিত উৎরুফ্ট বিশ্রাদশালা। সমুখে কূপ, পুপাবাটকা ও ভাইন দিকে কোণাংশে ঘলগৃহ। ফেসন নিকটে হুই এক পায়সা দিলেই প্রয়াগীরা প্রয়োজনীয় বিষয়ে যথেফ সাহায্য করে। উত্তর পালচমাঞ্চলের সর্ব্বেই সামান্ত পরসার যথেফ কার্য্য হয়। বামদিকে অংপদূরে বালালীদের বাসন্থান বাদসাহী মুণ্ডী প্রয়াগ নগর,উত্তর পালচমাঞ্চলের রাজধানী। দেখিবার মধ্যে প্রথমে প্রবাদিপূর্ণ চক। তাহার কিছুত্বপরে

সরাই। এই ছামে ৫০০ ফীট বিজ্ ত হুপোভিত ও প্রস্তর প্রাচীরে বেচিত थक समुख नमम्बुरकान मकन। मर्था मर्था निःस शथिकमिराव शकिवाब জন্ম গৃহ। একদিকে সুদলমানদিগের সারাদন প্রথায় নির্মিত ৪০ ছাত উচ্চ এত হাত প্রশাস্ত এক প্রকাণ্ড বার আছে। উহার মধ্য দিয়া হতভাগ্য জেহালির পুত্র শশকর উদ্যানে প্রবেশ কর। যায়। উদ্থান মধ্যে তিনটী উৎ-কৃষ্ট গায়ুজবিশিক্ট খদক পরভিজ ও জেহালিরের মাড়োরারি বেগমের কবর মন্দির। এলাছাবাদ নগর বিস্তীর্ণ কিন্ত হুরমা গুরাদি অতি অপা। জমা-মন-জীদ পূর্বে অধিবেশন গৃহ ছিল। বিজ্ঞোহের পর হইতে ক্যানিং টাউনে ইয়বোপীয়গণ বাজধানী করিয়াছেন। ইহার নিকুঞ্জশোভা অতি মনোহর। भारताबादिक, जामान उ शहरकार्षे मर्ननर्थामा वर्षे । धरे धकारत धनाहा-वान महत्र नर्मन कतिशे वारनाक (कला ७ भका यमून) मक्स मिथिए यान । ठक হইতে ঠিক দোজা এক রাস্তা বেণীঘাট চলিয়। গিয়াছে। প্রায় তিন কোণ গকা বমুনা জলে প্লাবিত হয় বলিয়া জলের গতিরোধার্থ মাটী ফেলিয়া এলা-श्वाक्षभार्य डेक्र कत्रा इस्ताह । डेस्टिक्र वाँध वरन । क्येनन इस्टि वाँध পর্বাস্ত একা ভাত্তা আলু ।/০। বাঁধের ভাইনদিকে যমুনা তটে কেল।। বর্বাকালে কেলার নিকট উভয় নদীর জল আইসে। কেলার চতুর্দিক লোহিত প্রস্তরে আৰিত। বেড় প্ৰায় পাঁচ সহজ হস্ত। ১৫৭২ অবে আকবর প্ৰাচীন হিন্দু-प्रतित छे भन्न धरे पूर्व निर्मान करतम धर धनारगद नाम धनारायान तार्यन। ইছার বাহ্নি নৌনর্ব্য পূর্বে আরও অধিক ছিল। ইংরাজেরা ভগ্ন করিয়া बर्खमाय कारनत सुरकाणरमानी कतिका नदेशारहन। क्ला मरधा आकरतत्त्र गृह, जात्नाक्छछ । जन्म वहेनि (पश्चात योगा। जाक्दरतत छेदकृष्ठे इन ১৯০ হাত লয়। । একণে আছাগার ছইয়াছে। অশোক রাজার প্রকর ভত্ত প্রায় ২৮ ছাত উচ্চ ৷ ইহাতে পালিকাবায় অপোক ও সমুস্কওওের বিবরণ লিখিত আছে। ইহারই নিকট কেলায় সৃত্তিক। নিমে অকর বট । অত্যন্তরে গিরা অক্সকার। হই পার্শ্বে দেব দেবী মৃতিবিশিষ্ট হই আন্তর প্রাচীর চলিচা गिश्राटक । जान्य वृत शहर के जानकाटन अक भिया अवः वर्तक शक करा अंक्रिक नित्त अकरे। शिखलिक त्नवीमूच। रेखेकरे शृक्षांत्र नाम व्यक्तवरे शृंका, पिक्नो हरे भर्तमा । किला बरेट वाहित बरेश वाहित निया निया निया

বালির চর। চরের মাধায় সিতাসিত সঙ্গমের মনোহর শোভা। কি শভীর ভাব। দক্ষিণ ও ঈবৎ পশ্চিমমুখী গলার প্রবল বেগে পুর্বাভিমুখী বমুনার বেগ শুদ্ধ প্রায়। যাটে কেশপূর্ণ,বালির উপর নিশান পোতা,প্রয়ানী পাতা-দের কুটীর 🖰 পুজোপকরণ জব্য পূর্ণ দোকান। প্রয়াগী পাণ্ডারা কাশী অপে-ক্ষাত ভয়কর, এজন্ম অত্যে চুক্তি করিয়া কার্য্য করা কর্তব্য। মস্তক মুগুন মূল্য 🗸 । স্থানকালে জলমধ্যেই পুষ্পাত্ত্মাদি বিক্রেডা ও ভিক্ষুক উপস্থিত। অনেকে নৌকা করিয়া গিয়া সঙ্গমে স্থান করে। কিন্তু সমস্তই বালির চর, তথায় বুৰিয়া পদত্ৰজেও যাওয়া চলে। তীর্থযাত্রীদের অনেকে বদিয়া আছ করিতেছে। তীর্থশ্রাদ্ধ বড় সহজ ব্যাপার নহে। পাণ্ডাদের হাল্ড নিজ্ঞার পাওয়া ভার। কুশের পরিবর্তে কেশে ও সংস্কৃত মন্ত্রের পরিবর্তে নানা প্রণানা আদি অপশব্দ প্রয়োগ করে। শান্তজ্ঞান বিবর্জিত শৌচাচার বিহীন পাণ্ডারা পান চর্মন করিতে করিতে পাগড়ী বাঁধিয়া ইতন্তত মন্ত্রোবলায়। দেৱপক্ষ পিতৃপক্ষের সম্পর্ক নাই, কেবল লুগ্তন পক্ষই প্রবল। এক ছানে এক হরন্ত পাণ্ডা এক গরিবের হন্তে পৈতা জড়াইরা কসিয়া বাঁধিতেছে এবং খোর মূর্ত্তিতে বলিতেছে "আরে বোল ক্যা দেগা।,, জিজ্ঞানা করিলাম ব্যাপার কি ? বলে উহার পিতৃ পুক্ষ উদ্ধার হইতেছে। ঐ গরীৰ আদ্ধ-কারীকে বলা ছইল, মৃত যমের হস্ত ছইতে তোমার মৃত পিতৃ পুৰুষ উদ্ধার হইয়াছে, এখন জীবিত ফমের হস্ত হইতে তোমাকে উদ্ধার করিতে বুঝি বা পুলীস ডাকিতে হয়। পাণ্ডারা পুলীদের নাম শুনিয়া বন্ধন মুক্ত করিল। আর এক যাত্রী শত শত পিপিলিকা সহ ছাতু পাকাইতেছে এবং ভাছার পাঞা বড় খুদীতে সন্মুখে বসিয়া আছে। আর এক ছানে গৰু উৎসর্গ করিয়া मार्यत जन्न मात्रामाति । दाः धर्म ! এककात्म त्यथात्न पूर्वि मूर्जिमान हित्म-আজ দেখানে নিশাচর দৌরাজ্যে স্থান করা ভার। সমস্ত তীর্থেই আন্ধের এই রূপ দশা। অথচ পাণ্ডাদের দৈনিক পরিশ্রমের বেডন ॥ আটি জানার অধিক নছে।

সন্ধার বিপরীত দিকে ঝুঁসীর উণ্চান কেলা। পূর্বকালে ঝুঁসী ছানে বিখ্যাত প্রতিষ্ঠানপুর ছিল। কেলার পার্শ্বে যযুনাতটে সরস্বতীকূপ ও প্রান্তে যযুনার ঋণ্যোচন ও কল্লাস্থতর্ঘাট। তদনস্তর রেলুপুল; তাছার পর রাষ্ ষাই ও দুরে শীধাকুওবাই। বামদিকে গঙ্গাতীরে বে দুরে বাঁধা ঘাই দেখা বার তাহার নিকট রাজা বাহ্মকীর ঘাই বা ভোগবতী। প্রতিষ্ঠান প্রিরাগ কমলাখতর ও ভোগবতী, ইহার মধ্যন্থান প্রজ্ঞাপতির বেদী। এই ছানে দেবজা, যতি ও নরপতিগণ ভূরি যাগ করেন বলিয়া ছানের নাম প্রয়াগ, ইহাই পরম তীর্ব। প্রতিষ্ঠানে সমুদ্রকূপ ও তহুতরে হংসপ্রপতন। বৈশাখ পর্যান্ত গঙ্গার নোকাসেডু দিয়া যাওয়া চলে। যমুনা দক্ষিণে দরওয়াজি নগরে অগ্রিতীর্ব, কেলা মধ্যে ক্ষক্ষরটে ক্রমনা। দারাগঞ্জে বেণীমাধব ও কিয়ন্ত্রে ভরম্বাজ আশ্রম। আশ্রমে শিব ও মাটার নিম্নে অন্ধনার গৃহে কয়েকটা প্রজ্ব মুর্ত্তি আছে। বাহুলাভয়ে অন্তর্কেদী ও মধ্যবেদীর ভূরি তীর্থ ও পঞ্চলোলী যাত্রা লিখিত হইল না। প্রয়াগমণ্ডল পঞ্যোজন বিস্তরিণী প্রয়াগের লেখিজবন্ত্র, তরমুক্ত, কালাকক্ষ ও পিয়ারা উৎকৃক্ট।

প্রয়াগ বছকালের প্রাচীন তীর্ধ। নহুষের সময়াবধি রাজধানী হয়।
তিনবুগো বছ ঝির আশ্রম ছিল। কলিতে কিয়ৎকাল পতিত থাকে।১২০০
বর্ব পূর্বে হেয়ানখনং বলেন ছই মাইল প্রশান্ত প্রকাশ্ত থাকার পাশ্চমে
প্রস্লাগ নগর মধ্যে এক লিবমন্দির ও সমুখে ছাড়বেন্টিত প্রকাশ্ত অক্টয়বট।
গজনীর সমকালবর্তী আবুরিছানের কথাসুসারে রিদি উদ্দিন বলেন সন্ধমে
প্রকাশু বটরক্ষ। আকবরের মুর্গ নির্মাণকালে আবহুলকাদের বলেন যমুনাতীরে বটরক্ষ। লিবমন্দির ভয় ও ক্রমে মৃত্তিকা প্রভাবে নগর উচ্চ হওয়াতে অক্টয়বট ও লিব মৃত্তিকানিয়ে পড়িয়াছে। ২৪০ পূঃ খৃঃ অব্দে অলোক
স্বিকীয় আজ্ঞা সম্থালত প্রস্তম্ভ উত্থাপিত করেন। তাছার পর লম্বভাবে
লেখা দেখিয়া বোধ ছয় পতিত ছিল। তাছার পর দিবিটায় শতাকীতে সমুদ্রগুপ্ত স্বীয় জয় ঘোষণা খোদিত করেন। তাছার পর পতিত ছইলে সয়য়াসীয়া
নাম লেখে। তাছার পর জেছাদির ১৬০৫ অব্দে তুলিয়া দেন। তাছার পর
১৮০৮ অব্দে গারিন্টন সাহেব মন্তকের ভয় সিংছ পুনরায় নির্মাণ করিয়া
তুলিয়া দেন।

প্রয়াশের ১৫ কোশ দূরে যমুনাতটে প্রসিদ্ধ কোশাখী নগরের ভয়াব-শেষ। ২ কোশ বিজ্ঞীপ এক ভয় হুর্গ, তথাগো অশোকের অর্দ্ধ প্রোধিত এক শুন্তরন্তর ও চতুয়ু থ ত্রিনেত্র এক শিবসূর্ত্তি পড়িয়া আছে। পুকরবার ১০ম, পুক্ষ কুশাষ এই নগর ছাপনা করেন। অব্দ্রুনের অন্টম পুক্রে হজিনা বিনষ্ট হলৈ পাণ্ড্রংশীরেরা শেষ পর্যন্ত এই নগরে রাজ্য করে। পরে ইহা বৎস রাজ্যের রাজ্যানী হয়। উদয়নাথের সময় ইহার অত্যন্ত পেরিব ছিল। ইনিই এখানে বুছের চন্দ্রনময় অবিকল মুর্ত্তি নির্মাণ করিয়া ছাপন করেন। কেশাষী ভারতের ১৯ রাজ্যানীর মধ্যে এক রাজ্যানী ছিল। শতবর্ষ হইল কোশাষী ভাক্ত হইরাছে, এখনও জৈনেরা তীর্থ করে। কোশাষীর ৭ কোশ দক্ষিণ পুর্বের ও শিহরাজপুরের ২ কোশ উত্তর পশ্চিমে গুপুদের রাজ্যানী যারোয়ার ভয়াবশেষ। এলাহাবাদ হইতে ছুরে গলাতীরে রামায়ণের শৃক্ষ-বের পুর।

প্রয়াগ ত্যাগ করিয়া মন্তর মধ্যদেশ দিয়া রেল চলিতেছে। সমস্তই সম-তল ভূমি স্থানে স্থানে জোয়ারির ক্ষেত্র। দৃষ্টির উত্তেজক কিছুই নাই। তদনস্তর প্রধান সহর কানপুর গঙ্গার বালুকাময় তীরে অবস্থিত। অধিবাসীর मश्था वर्ष नक् । कानश्राद्व मगवर्ग माहेल हेश्राक रमनानिर्वाण वाष्ट्र । সাতসহত্র সৈত্ত অচ্ছনে থাকিবার বিলক্ষণ স্থান আছে। ১৮৫৭ অব্দের দিপাহী বিজ্ঞাহে কানপুরে ভয়ঙ্কর উপদ্রব হইয়াছিল। নানার ভীয়ণ অত্যাচার স্মরণার্থ ইংরেজেরা একটা উদ্যান করিয়াছেন। তম্মধ্যে সেই ভয়-হ্মর হত্যাকাঞের গৃহ এবং যে কূপে নিহত বিবি ও বালকগণকে দিপাহীরা বিক্ষেপ করিয়াছিল তাহার উপর একটা স্বর্গীয় পরির প্রতিমূর্ত্তি যেন জন্দন ক্রিতেছে। নিকটে নানাবিধাকারে খোদিত প্রস্তরাবরণ ও নিহত লোকের সমাধি। স্থানে স্থানে দুকিপ্রীতিকর রক্ষ। উত্থানের ১ মাইল দুরে ও গন্ধার অর্দ্ধ মাইল অন্তরে তুইলর সাহেবের গড়খাই। যেখানে তিনি ২১ বার আপনা-দিগকে রক্ষা করিয়াছিলেন। এখন জলপ্লানের কূপ ব্যতীত আর কোন চিছ নাই। নিহত ব্যক্তিদিগের কবরোপরি এক একটা জুল আছে। অনস্তর খেত চেড়া ঘটের গির্জা। নানার অভয় পাইয়া ইউরোপীয়েরা চলিয়া যাইবার সময় নেকায় এইস্থানে নিহত হয়। কানপুরের নিকটেই গলার খাল শেষ হইয়াছে। ছইকোটি টাকা বায়ে নির্মিত এই খাল ছারা এ অঞ্চলের दिश्य छे शकात इरेट छ। कानशूद्धत्र मानुकाशक, कामाकक यस नत् । কানপুর পার ছইয়া পাকুণ্ডের পথে মধ্যে মধ্যে বভহরিণ চরিতে দেখা

বার। তদনন্তর ইটোরা বসুনাতটে অবন্ধিত। গাবর্ণনেটের সামান্তমত সৈত্ত থাকে। ইটোরার প্রীখের অতি হ্রন্ত প্রভাব। প্রীশ্বকালের লু অর্থাৎ গারমার বায়ু এলাহাবাদ পর্যান্ত চলিয়া থাকে। গাত্র আরত না থাকিলে শরীর দক্ষ হইরা যার। আম-পোড়া লুর মহোষধ। যে দেশ দিরা মনুনা বহিরাছে, যমুনার পার্থান্ত ছানের কূপের জল প্রায়ই লবলাক্ত হয়। মনুনার তীরে জমণ করিতে ছানে ছানে প্রায়ই খাত পাঙ্যা যায়। পূর্বেই টোরার টগা বাস করিত। এখানে মনুরের পাখা অত্যন্ত স্থান্ত। ইটোরার পর দারাসিকো ছাপিত সিকোয়াবাদ। তদনন্তর টুণ্ডলা। টুণ্ডলা হইতে এক শাখা রেল আগারা গিয়াছে।

- আগারা। পূর্বে নাম অতাবন। কেছ বলেন এই ছানে পরশুরামের জন্ম হয়। সেকেন্দর লোদীর কালে বাদলাগড় বলিত। আকবর নগর স্থাপন করিয়া আৰুবরাবাদ আখ্যা দেন। এই নগার যযুনার ডাইন তটে অবস্থিত। প্রবেশমুখে ছইপার্যে ভালা ভালা মৃতিকা জুপ। তৃণ নাই, রস নাই ও भरधा मंदश अक अकी थांछ। किन्छ जनिङ्गादारे ভारका मदनारत क्रे । পশ্চিম হইতে ক্রমাগত বালি উড়িয়া আসিতেছে। রাজপুতানার মহুর এই বালুকাতে আগরার পশ্চিমভাগ আচ্ছমপ্রায়। পথগুলি প্রস্তর নির্মিত। अञ्काल इहेशा शिशाह किन्छ कर्मत्यत्र मण्यकं नाहे। विधिनिप्तिशत्र निर्मिज পথ এীখে ধূলি ও বর্ষায় কর্মমে আচ্ছন হয়। চক ও অপরাপর ছানে অভ্যন্ত যম বসতি কিন্তু এক এক ছলে কিছুই নাই। কেলা, ভাল, এছ-भाकीना, मिनानित्वनकान, मारकला ७ २८ गारेन जलात करलभूत विकतीत প্রাসাদ দেখিবার যোগ্য। কেলা কালিন্দীতটে অবস্থিত, চতুর্দিকে লাগ প্রভাৱের প্রাচীর দেড় মাইল বেষ্টন করিয়াছে, প্রাচীরের উচ্চতাও অপ্য নর, প্রায় ৪০ ছন্ত। উপরে তীর নিক্ষেপের কাট। কটা ক ক । পূর্বে বাছিরে এক ভিত্তি ছিল। এখন তাহা বিলুপ্ত হইয়াছে। বর্তমান পরিখা ২০ হস্ত বিজ্ঞ এ তদা সমস্তই পাগরে গাঁথা। আমরা উত্তর হার দিয়া প্রবে-भारत कार्या । अशुर्थे के धकां व महका, जाबात हुई शांद्र हुई हो। বিশাল ভাজ ৷ যত ভিভাৱে যাওয়া যায় দোধারি সারি সারি যর ভত্পরি শৃত্বলা মত কোলদী ও অন্ধচক্রাকার ছিত্র। সম্ভই খোদিত ও চিত্রিত।

ৰার হইতে এই সকল দেখিতে দেখিতে আমরা ক্রমাগত সিঁড়ি দিয়া উপরে উঠিতে লাগিলাম, কিছুক্ষণ পরেই দেখি এক বিন্তীর্ণ প্রাক্তণ, প্রায় ৩০০ ৰাত লখা ও ২৪৬ হন্ত প্ৰশস্ত। তাহার চারিধারে রক্ষণতাকীর্ণ পথ, ইহা-: রই একদিকে আকবরের বিখ্যাত দেওয়ান আম বা সদর কাছারি। গৃহটী প্রায় ১২০ ছাত লখা ও ৪০ ছাত প্রশস্ত। এখন গবর্গমেন্ট অক্রাগার করিয়া-ছেন। প্রায় বিশসহত্র অক্স ভিত্তি ও শুস্তুগাত্তে শ্রেণীবন্ধরূপে সক্ষিত রহিরাছে। পূর্বে এই গৃহমধ্যে তিন থাক শুম্ভ ছিল, এবং প্রত্যেক শুম্ভবন্ন यांदनिक थिलात्न मश्लिख हिन । गरर्गरमणे अक्तर्ग म अलि क्क करियां-ছেন, গৃহের মধ্যভাগে খেতমার্ফেল বিনির্মিত আকবরের বিচিত্র সিংহাসন স্থান। ইহার নিম্নে একটা প্রস্তর ফলক। আকবর ইহার উপর উপবেশন করিতেন, দেওয়ান আমের গন্ধীর ভাব ও বর্তমান অবস্থা দেখিয়া মন আকুলিত হইল। যেখানে গমন করিবার জন্ম ইংরাজেরা শত শত লোকের উপাসনা করিতেন, এখন সেই খানে দণ্ডার্ঘান ছইয়া বিটিশ দৈলগাণ ধুমপান করিতেছে। যে ছানে তানদেনের স্মধুর স্বর উল্বিড ছইত, আজ সেই দেওয়ান আমে চামচিকা চীৎকার করিতেছে। শত শত বিশ্সের অর্থ সামাদানে তিন তিন গঞ্জ দম্বা কপুরি বাতিতে যে গৃছ আলো-কিত হইত, আজ সেই দেওয়ান আম অন্ধকার। যে জনপুরিত স্থানে প্রবেশ করিতে মুর্নাভিষিক্ত রাজগণও ভয় করিতেন, আজ দেই স্থানে একাকী করদেশে কপোল বিন্যান করিয়া আমরা অতীত ইতিহাস স্মরণ করিতেছি। হা কাল! তুমিই ধনা। গৃছের পার্ষে এলেনবরা আনীত সোমনাথের চন্দনকার্তমর দরজা। প্রায় ৮ ছাত উচ্চ। বারের সমস্ত ভাগই উত্তমরূপ খোদিত এবং তত্ত্পরি তিনটী ঢালের সুল আছে। শুনা বার এই তিনটী মহমদের ঢালের ফুল ছিল। দরজা যে সোমনাথের তাহার বিশেব প্রমাণ কিছুই নাই। দেওয়ানখাস বা আকরবের মক: বল কাছারীর সমুখে অনারত ছানে ৪ হাত সমচতুকোণ এক খান কাল মার্কেল ভক্তা পড়িয়া व्यादि। मत्था मत्था काही । गाता अकदान अकट्टे नानमां। मूनल-মানেরা বলে বে আকবরের এই তক্তার ভরতপুরের রাজা বনাতে তক্তা কাটিরা যায় ও রক্ত পড়ে। এবং কর্ড এলেনবরা বদিলেও আবার রক্ত পড়ে। ইহার সন্মুখে ক্ষুত্র সাদা মার্কেলের আর এক খান সিংহাসন। ঐ সিংহাসনে ভাঁড় বসিয়া বাদসাহ সাজিরা আক্ররের সহিত তামাস। করিত।

ং কেইয়ান আনের পর স্ফ্রাটের আবাসগৃহ। আবাসগৃহের নিম্ন দিয়া কালিকী প্রবাহিত হইতেছে। গৃহের ভিত্তি ও মধাভাগ সম্ভই দানা মার্কেলে ঝক ঝক করিতেছে। তছপরি নানা রঙ্গের নানা লতা ও নানা ফুল নানারূপে চিত্রিত ছইয়াছে। বোধ হয় যেন কে রং দিয়া চিত্র করিয়াছে। কিছ বছত: দে গুলি সমস্তই জাজুলামান ভিন্ন ভিন্ন বর্ণের প্রস্তুর ঐরপ বিনিৰেশিত হইয়াছে। গৃহঞ্লি আয়তনে হুন্দ, কপাট আলের ও কোল-লার মধ্যে পূর্বকালীন কোলজার ন্যায় অর্থ রাখিবার গহবর আছে। গৃহের ৰাছিরে যমুনারদিকে বারান্দা অতি মনোহর। গজনন্ত বিনিন্দিত খেত মার্কেলে সৌর কিরণ পতিত হইয়া তাহার উপরিভাগন্থ রতুময় ফল পুষ্পা হইতে কত রত্ত্বের কতরূপ আন্তা নির্গত করে। উপরিভাগের মার্কেল আজাদন কি চমংকারই বিরচিত ৷ তত্রপরি অর্ণ বর্ণ কলস সকল লেণীবন্ধ রূপে সক্ষিত হইয়াছে। গুল্ক সকলের শোভাই বা কি ? এবং শুল্ক যোজিকা সকল এরপ অগঠিত যে নিম হইতে দেখিলে বোধ হয় যেন উৎকৃষ্ট ঝালর সংযোজিত আছে। কামিনীগণের গৃহসমন্তই যমুনার ছিলোলে অথপ্রদ। 8७ इन्छ निष्म कालिकीय नीम ध्यवां । पृत्य निकृश्यन ७ তात्क्य मर्गाद्य মুর্জি। গ্রেছ একবার উপস্থিত ছইলে আর ফিরিতে ইচ্ছা হয় না। অনন্তর আমরা সীসমহল বা দর্পণ গ্রহে প্রবেশ করিলাম, সম্রাট এখানে স্থান করিতেন, ভিত্তির কিয়দংশ লইয়া গৃছের উদ্ধৃতাগ সমস্তই সমবিষম। সমবিষম ভাগে আয়নার কুত্র কুত্র কাচখণ্ড সংলিপ্ত আছে। একজন প্রবেশ করিলে ঐ অসংখ্য দর্শনে প্রতিমৃত্তি পড়িরা অসংখ্য মৃত্তি দেখা যায়। কেলিকালে এক সম্রাট ও এক কামিনী শত শত সম্রাট ও শত শত কামিনী হুইরা নায়কের দর্শন পথে এক কালে পতিত হুইত। ভিত্তি গাতে শত শত ক্রমে নির্বারিশ। জলের পথ এরপ নির্মিত যে জল আমিৰার কালে ৰোধ হইত যেন ক্রীড়মান মংক্ত আসিতেছে। এই রূপ কৌললে জল আদিয়া গধাছলের চৌবাক্ষায় পতিত হইত। চৌবাক্ষার

মধ্যে ও এরপ কৌশন আছে যে, উছার অভান্তর ভাগ দীপ দারা আলো-কিত হইত। ভিন্ন ভিন্ন স্থলতানের কেলিগৃছ ও সন্মুখের পুষ্পাশোভিত প্রাক্ষন সমস্তই কুত্রিম উৎসে পরিশোভিত। এই স্থানে মার্কেল ও ব্রম্প্রা অন্তরাদির শোভা আছে সত্য কিছু উৎসই ইছার পরম শোভা। প্রান্ধনের পুর্ব্বতন পুশা সকল এখন জবলাবন্থায় পতিত। ইহার পর আমরা ক্রীড়া-गृह्द धाराण कतिलाम, कृष्ण ७ श्वंजमार्व्सनकलक वात्रा मङ्ब्रह्म यत वरे-য়াছে। বেগম সহ বাদসাহ কেহ রাজা, কেহ অর্থ, কেহ গজ, সাজিয়া সভরঞ্চের গতিক্রমে পরস্পরকে ধরিবার জন্য দেড়িাদেড়ি খেলা করিত। জীড়াগৃহ তাগি করিয়া আমরা উপাসনা মন্দিরের দিকে গমন করিলাম। যে প্রাঙ্গনের উপর উপাদনা মন্দির আছে দেটী অতি উচ্চ, এত উচ্চ বে নিম্ন হইতে মসজিদের তিনটী সাদা গমুজ মাত্র দেখা যায়। অনেক সিঁড়ি ভाक्तिया উঠि न अकी प्रजान परका। [श्रूनिवामां विकीर्ग (वतन-शार्थस्त्र প্রাঙ্গন, মধ্যে চৌৰাচ্চা ও সমুধে মতিমসজিদ আছে। আহা, নামেও মতি 'দেখিতেও তজ্ঞপ। উদ্ধে নীলবর্ণ আগরার আকাশ দেখিতে বড় স্থন্দর। মতিমসজিদ অতি উৎকৃষ্টজাতীয় মার্কেনে নির্মিত। অতি শুজ, অতি রমণীয়, অতি পরিপাদী ও সম্পূর্ণ রূপ খোদকারী। ছুর্গার দাদানের স্থায় ঠিক তিব-কুকুরে ও তিনভাগে বিভক্ত। ভারময় মধাছ খিলান গুলি সমস্ত সারাসন জ্ঞাতীয়, ভিত্তিগাতে লেখা আছে, সাজেহান ১৬৫৬ খৃঃ অব্দে নির্মাণ করেন। মতি মসজিদের পার্শ্বে এক অন্তুতকাণ্ড। ভিতের ভিতর দিয়া এক আশ্চর্য্য রক-মের সিঁড়ি নিম্নে চলিরা গিয়াছে। এবং ইছার সন্থিত অপরাপর স্থানের যোগ আছে। मक्रांठे भन्नन्द्रभशदिनी कायिनीगंगत्क महेश्रा मोज़ारमोज़ि 🗷 मुका-চুরি খেলা খেলিতেন। তাছাদিগের পদালভারের ঝন্ঝনার রব ও হ্মধুর হাত চারিদিক শব্দার্মান করিত। শুনা থায় বে, তাজমহল ও সেনানিবেশের মাঠ পর্যান্ত এই সিঁড়ির যোগ আছে। জ্রন্তা কামিনীগণকে নিকেপ করিবার জন্ম এখানে একটা কুপ ছিল। মূই জন গোরা পড়িয়া যাওয়াতে ইংরাজেরা মুখ বন্ধ করিরাছেন। এইরূপ এখনও আকবরের অভঃপুর, মানাগার, ক্রীড়া चान ७ किलिक्शांति ममखरे विश्वमान आहि। अखः श्रादेश मार्क्सनेत जांकती कांछ। शक्ता मित्रा (कर्म अक्षी शामा या अत्राट्ड वेड एक्षमान स्थान स करे-

রাছে, এবং ছুই এক ছানে কেছ বা এক আম খান প্রস্তৱ তুলিরাছে।
কোরারা সকল শুক কিছু নই হর নাই, সমস্তই রিদ্যানান, কেবল বাদসাহ
নাই। কোখার সে আকরর কোখার বা তাঁর কামিনীগণ,কোখার সে বীরবল,
কোখার সে আকল প্রতাপ। বিজ্ঞান বা দে জরসিংহ, কোখার সে অতুল ঐখর্যা,
কোখার সে প্রবল প্রতাপ। বিজ্ঞানিত বর্ষ পূর্বের এখানে আইসে কাছার
সাধ্যা। বে অন্তঃপুরে মকিকাণ্ড প্রবেলা করিতে পারিত না এখন আমরা
পাছকানহ সেখানে ভ্রমণ করিতেছি। যেখানে কামিনীগণের কহল, বানহকার কর্ণগোচর হইত, হার রে কাল! এখন ঐ দেখ সেখানে বিদরা কে কার্ক
কাটিতেছে। রজপুত কামিনীর লাখা চুর্ণের বিবরণ ও অপরাপর রাজবাচী
বাহলা ভরে লিখিত হইল না। বেলা অপরাহ্ন প্রার । আমরাও কোর্ট
হইতে বাহ্রির হইলাম। কোর্ট প্রবেশের পূর্বের বিয়েও মেজরের পাস লইরা
প্রবেশ করিতে হর।

অনস্তর তাজ পরিদর্শন। পথের বামদিকে এক প্রশস্ত রওরাক। তত্ত্পরি লালপাথরের মানারূপে খোদিত প্রকাত গোট। এত উচ্চ বে উর্নমুখে দেখিতে গেলে সত্য সত্যই মাধার আবরণ খুলিয়া পড়ে। এই প্রকাণ্ড গেটের উপর সারি মরি ২৬ কলস, অন্তরাল ও বহির্দেশ সমন্বিত গেট পার হইবা মাত্র এক প্রকাণ্ড উদ্যান। সমূবে একতলাসম লালপ্রস্তরের প্রকাণ্ড বেদী। তত্বপরি মার্ফেলমণ্ডিত অপেকারত অপা প্রদান্ত একতলাসম আর এক विकीर विमी। जाबात हादिएकाएन हातिकी गंगनएकमी मार्क्स एक धवर মধ্যন্থলে মন্দির সদৃশ খেতকার প্রকাণ্ড তাজ। তাজের উদ্যানটী পূর্ব পশ্চিমে ১৪০ ছন্ত লম্বা ও উত্তর দক্ষিণে ৬৬৬ ছাত প্রশস্ত, চারিদিকে লাল-भाषात्रत क्यांकीत, (कारन कारन कुछा, मक्तिरन ७ वारमं जात हरे मतला जरर शम्हारक कानिकोत नीम ध्याह। ध्यायम गाहे बहेरक जास्त्रशंख সমুখে প্রজ্ঞবণরাজি জীড়া করিতেছে। প্রজ্ঞবণসমূহের মুই পার্থে প্রস্তরের शव । श्वमम्बार्त भावद भार्ष मम्बीर, ममर्ग अ ममकाम विवाजी कार्ड व्यानी, উদ্যানৰ বুক্তের হুগন্ধ, ফোরারার বারিবিক্ত ও চারিদিকে নিকুঞ্গোভার व्यक्तार मत्रीत त्यायाकि इंदेश फेटिं। जेमार्ग्यत व्यक्ति भर्ष मार्स्यमत किल दबनी माथा जात्र अयंकी उरहरू कुकिय उरमा वानातवा उरामत उना

প্রদত্ত কলেও কুলের ক্রীড়া দেখিরা করতালি দিতেছে। অনন্তর তাজের नामधान्त । मीर्स भारत मार्सिन मिन्ड धार्म रामी। मीर्स ७४० ७ धार ৩২০ हान्छ। इंश्व मिक्स्टन ७ वास्य इहेम्स्टिक इहेडी यमिक ७ यगूनातमिएक इरेशारत इरेजी मार्क्सनीर्व तरबत मठ गृर। ध्येषम रामीत छेलत मार्क्सन মণ্ডিত ২০৯ হল্ত সমচতুকোণ দ্বিতীয় বেদী। ইহারই চারিকোণে শত হল্ত অ মাণ চারিটী চমৎকার মার্কেল শুক্ত বা মিনার, তাহার উপরিভাগে বসি-বার ভব্ত অফ্ট শুল্লে সংরক্ষিত এক এক গমুজ। উঠিলে বভ চুর দৃষ্টিগোচর হয়। এই শুক্র বেদীর মধাছলে তাজমন্দির। তাজের মন্দির অইকোণ বিশিষ্ট, চারিদিকের চারিভিত প্রত্যেকে ৮৬ হাত ১৬ অসুদ দম। প্রত্যেক ভিত্তির উপরে ছ্ইপার্শে ছ্ছটী ও মধান্থলে ছ্ইটী গুল্প শীর্ণের ফায় উন্নত হইরা উঠিরাছে, মধান্থলে গুল্পদরের ব্যবধানে ভিত্তি গাত্তে জাফরী-ক্ষ এক এক দরজা, দরজার ছুইপার্খে কোলদার স্থার উদ্ধে ও নিম্নে এক এক জোড়া জাফরীবদ্ধ প্রকাশ্ত কোলন্ধা। ইছারই মধ্য দিয়া তাজগৃছে আলোক প্রবেশ করে। চারিকোণের চারিভিত অপেকারুত অপে কয়া। এইরপ অউভিতিবিশিষ্ট ত:জের ছাদের উপর চারিকোপে অট শুস্তোপরি চারিটী গমুজ আছে। এই চারি গমুজের মধ্যন্থলে তাজের বিশাল গমুক্ত। গমুক্তের ব্যাস ৪৬ ছাত ১৬ অন্তুল বেড় ইছার ডিনগুণ এবং উচ্চতা ৮০ ছাত। গমুজের উপর অর্থবর্ণ কলসোপরি চল্কের অর্থময় মুর্ত্তি, ভূমি হইতে চল্ডপর্যান্ত তাজ মন্দির ১৭০ হাত ৯ অন্ধূল উচ্চ, তাজের ছাদকে ৰালীর ছানের মত বোধ হয়, অধচ কলিকাতার মহ্দেট ছইতেও উচ্চ। সম্পূৰ রূপে খেত মার্কেল বিনিশ্বিত এই প্রকাণ্ড অবয়বের আমুলাগ্রা। নানাজাতীয় বভ্ৰুল্য প্ৰস্তারের প্রাদি রচনা ও বৃহৎ বৃহৎ অক্ষরে কোরাণের পদাবলের ছারা বিভূবিত হইয়াছে। মুনলমানেরা সভা সভাই দৈভাের ক্রায় এক প্রকাশু হর্মা আরম্ভ করিয়া জহরীর ক্রায় তাহার প্রত্যেক অংশ ভ্ষারূপে সমাপন করিয়াছে। তাজের মন্দিরের প্রবেশ দার অতি কুছে। ভবিষাতে যদি কেই সেলাম না করে এই কারণে প্রবেশ কালে মন্তক অবনত করাইবার জন্ত দার এত কুন্তে করা হয়। প্রবেশ করিলে গৃহের মধ্যভাগে অন্তকোণ জাকরী বা মার্বেল গুরদা বেন্ডিত কবর্ষর।

धे कराइत नित्त यथार्थ करत जाहि, धार्यभवाद उ गार्क्सन-शक्त मर्था মেৰের সহবর দিয়া নিম্নতলে যথার্থ কবরের অন্ধকার গৃহে আবেশ করিতে হয়। রক্ষকেরা প্রফারের প্রত্যাশায় আলো আলিয়া ধরে, নানাবর্ণ প্রস্তরে স্কৃতিভ্রিত ও মালাদামে বিভূবিত, সমুখের খেত-করর রাণীর ও তৎপার্থের ক্ষর সাজেহানের। কর্ত্তের উপর ভক্তীয়ারা জ্রী ও কল্মদান যারা পুক্র চিনিতে হয়। উপরের কবর ইহারই অভুরূপ। উপরেরজাকরীকাটা মার্কেল পদা চারি হাত উচ্চ ও নানাবিধ খোদকারিতে পূর্ব, এই খোদকারী মধ্যে জনেকে ইটালীয় পুষ্পের চিহ্ন দেখিয়া তাজ ইটালীয়দের নির্মিত বলিয়া বুখা সন্দেহ করেন। তাজের উপর নির্যাতাদের নাম স্পষ্টাক্ষরে লিখিত আছে। প্রাচীরের চারি দরজার জাফরী, অভান্তরে মার্ফেল পরদার জাফরী ও উপরে গমুজ নিমের জাকরী দিয়া আলে৷ প্রবেশ করাতে উপরিভাগের কবর আলোকিত হয়, কবর ছুইটী চহুকোণ বেদী মাত্র। নিম্নভাগ প্রশস্ত কিন্তু উদ্ধে যত উঠিয়াছে ততই ক্রমে অম্প পরিসর হইয়াছে, ইহার সর্বাঙ্গ ৰহমুল্য প্ৰস্তৱ দারা নানাবিধ লতাপাতায় চিত্রিত আছে। সমুখপ্রাস্তে অন্-জিমান বায় বেগ্য বাহার নাম সমতাজমহল, তাঁহার জন্ম ১০৪০ হিজরীতে তাক্স নিষিত হয় ইত্যাদি বিবরণ লিখিত আছে। শীতল, স্থাসেবা, মসুণ, সর্বাত্র খেতবর্ণ ও চাক্চিক্যশালী নানাবিধ রড্নের আভায় উচ্চ্ লিত ভাজগৃহ মধ্যে দণ্ডারমান ছইলে মনে অনির্বাচনীর ভাবের,উদর হয় । শব্দ করিলে বা গান করিলে তাহার অর বছক্ষণপর্যান্ত প্রতিহ্বনিত হইতে থাকে। কেছ কেছ ৰলেন ইয়ুরোপের স্থাসিক পাইসার ব্যাপটিছটি প্রতিধনি এরপ সুমধুর ৰছে। তাজের রমণীয় রূপ নয়নে পতিত হইলে ছাদয় শিখিল হইয়া যায়। পরে পার্শ্বে ভ্রমণ করিতে করিতে বমুনার কমনীয় কান্তি, স্থাভেন উদ্যানের হৃত্বিদল সমীরণ উৎকৃষ্ট আজাণ ও উৎদলিত উৎদের ক্রীড়াসই সাজে-হানের অতীত বিবরণ স্মৃতিপাৰে উদিত হইলে নেত্রজন সহসা করিত হইতে बाटक ! क्र्र्सानरत्रत्रे शृंदर्स ठाक नेयर नील, छनरत्रत्र शत त्रकाछ, क्रियरक्रन পরে পীতবর্ণ এবং মেয়াচ্ছর হইলে নীল রক্ত হর, কিন্তু সর্ব্বাপেকা চন্দ্রা-লোকেই অধিক রমণীয় হইরা থাকে। বামদিকে যাইতে প্রায় ৮০ হাতের পর ছইতে তাজ দেখিতে অতি হামান, বোধ হয় যেন বায়ুতে ভাসিতেছে এবং

যত নিকটাবর্তী হওয়া যায় উতেই অপাস্ত হইতে থাকে, চল্লালোকে অন্সাই দুই হওয়ার ভালাকে অভান্ত হুছৎ বোব হর। আল নীলবর্ণ আলোকে আলোকিত হইলে অতি আল্ডের্য দেখার। ইহার তুলা উবচ্চ হুলা ভূমণেল আর নাই। সাজেহান অকীর পর্যা ক্ষরী জীর সমতালমহানের করজে জন্ত এই বর্ষালয়েও করেন। স্পঞ্জাকে আরক্ত হইলা স্ব বার্ষা তালা সামার হল, এবং ইবার মার্রাল ও লক্ষ টাকা বার্রিত ছইরাছিল। টাভাবনিয়ার বলেন, বিশ্বালার লোকে ২২ বর্ষ পরিলাম করিয়া ইহা নির্মাণ করে। কিছু বাদপাহের ভূমনে বিনা বেতনে অধিকাংশ লোককে কার্যা করিছে ছইরাছিল। তালা নির্মাণ করিতে ইবা মহমদ নিরাজবানী আরমদ শাত বোগদান বাসী বহলক ছানিক সামার সহল নিরাজবানী আরমদ শাত বোগদান বাসী বহলক ছানিক সামার টাকা বেতনে নিযুক্ত হব। হুরকা, পারক্ত, নির্মা, পারার, ও কটক হইতে বে সকল ছপতি আনে ভাহাবের বেতন ২০০ হইতে বেক পর্যান্ত হিল। জন্মপুর হইতে বেত মার্বেল, মর্বালা ছইতে ৪০ টাকা গজে ক্ষক্তয়ার্বেল ও চীন হইতে বেণ টাকা গজে ক্ষক্তয়ার্বেল ও চীন হইতে বেণ টাকা গজে আন্তিত হয়।

भक्षां वरेट जनवजन, जिस्त वरेट रम्हां है साम वरेट अगर, नका वरेट गर्टाजां, जावर वरेट धरान, रूसम्बंध वरेट होता, भावण वरेट राटानमानि क जमानीता, नका वरेट मीनकास्त्रमा क कट प्राचित्रमानि क जमानीता, नका वरेट मीनकास्त्रमा क कट प्राचित्रमा के बाजाव गांकी नामध्यस्त्र कांबील वर्ष प्राचित्रमा के सकट विकास वर्षमा धर्म भावणा वरेनादिन। स्माटक स्टाचित्रमा कांवार वर्षमा वर्षमा करेनाट । वर्षमा वर्षमा वर्षमा वर्षमा कांवार कांवार

্ এতমংক্ষালা। নদীয় অশার কারে আতিলোতা অনুসা অবলয়ন করিয়া গমল করিলে রামদাগ আতি কলনা নার। সামনাগ ভাল উভালের অনুসাল মার। ইয়ার মধ্যে কালা আইন কা মুর্জেনামের শিতা বাদশা কর অনাধাক এতমংক্ষালার করে। উল্লোখনের ডাজিনিকে জিডি, ক্ষাক্ষালে কার্কেনাভিত ৩০ হাত ম্যাভত্তাবে ও ৮ হাত উক্ত বেদী গ ক্ষাক্ষালি চারিকোনে ২৬ হাত উচ্চ চারিটা ভঙ্ক, তাঁছার মধ্যজাগে কবরমন্দির। গৃহতী গোলাকার এবং উপরিভাগে হালাররূপ-ছাল্ডিড। অভান্তরে এডমর্কোলা বিনীংন আছেন। এবন সাক্ষান্তর ক্রিটালেটালেটে।

-३ श्रीहरूक्कारेको कांक्कारककाकवत्त्वान । कालवा करेटक प्रदेश वर्ष । पार्टन । পশ্বাদে করেনটা বোডালাদী কুক, ভাষার সন্থাৎ এক অভি আদাও मतका, आहा का काल केल । चारतकाहिरकाटन हार्विन छक, मसूरनत छक-बरसम न्यायक क्रम बरेमारक । खास केतियांक मिकि मारक, किन् क्रमसन, मर्ग श्रीकारकत कामहाक वाहे। बात लात हरेलाहे त्वतु, जाम, कना, कून व আখাৰ পৃথিত এক প্ৰশন্ত উদ্যাৰ, তাহার তিন দিকে তিনটা ভাষা দরজা अवर बंबाक्टन क्रमार्गिक्ड करत हवी शांक शांक देविहाट । गतिनित्कत প্রারি মরকা হইতে বেতুর ভার চারিটা পথ গিরা হব্য স্পর্শ করিয়াছে। अरे भट्यत प्रश्वत प्रमान मुक्तिनी उ क्लावाता। भूटर्यत मार्त्यनावनी সমান্ত কাল আন্তোক সিকে ২৬৬ হস্ত ৷ ইহার উপর ২০০ হস্ত সমচক্রকোণ मांत्रश्चारक हता भीत बादक खांत ७७ इस केल ब्रेसाइ । बाद्याक शास्त्र চতুৰ্নিকে খিলান কলা বালাকা, ততুপরি কলসভোণী বিবিধাকারে সক্ষিত ছই-शिक्ष । अवस्थे नान-श्रष्ठातुत्र. (क्यन नहर्काणविज्ञातात पाक (यंज्यादर्कान বিৰিত। ভৰ্মান্তে। কিঞিৎ নিম্নগামী এক পথ নিয়া এক অন্তকারময় খিলান कता शृंख बार्ट्य कतिए कत्र का का की कि कितर व कारमारक माम याज आरमास्त्रित । अ श्रंब गर्या व्याक्तवात्त्र गंडीव करत । वाहिरत व्यामिता छाहेन-লিকে উপরে উর্জিনার সিঁড়ি। যাইতে আকল্যার পরিবারগণের আরও ভই এক নামর। নিজি নিরা,উপরে দোডনা ভেডনা পার ছবর। নর্বোপরি তলে বেতমানের বিশ্বিত চতুর্নিকে উৎকৃত আতীর বেউত এক আনারত शंग, डाशायक वयायल अयायकारीएड गर्न छ वेशावक ३३ नामविणिके निर्मात क्वराम कि केट्ड काकारता कारावा काराव । हारमह क्विकि वार्टिन व्यक्तिक कामकी कवा क वाकि उदश्यातकारण व्यक्ति । हेनाएक नारमधारं अमेका स्मानाम केंप्या विका, ब्याटकेवा मधन कविकारक । कारलब करकाम रक्षांत्र रक्षांका रक्षांका पार्ट्सम खडाधार केलिकारम चर्नार्ट कतान । ल्यांक जमित सूरत क्वाक्यरहत्र स्थाय त्यांत सायक त्थां की स কৰর। বিজোহী সিপাহীরা অনেকাংশ নট করে। এখন কর্মে বাইবার পথ বছ আছে।

प्यांगेवा वरेट २० वादेनबृद्ध खत्रभूद्वत गर्म स्थानस्यव क्राउभूव निक রীর রাজবাদী। সম্রাট কবিকাংশ সময় এই স্থানে আভিবাহিত করিতেন। লোহিতবৰ্ণ ৰাজুকা এভারের আৰু কুলে পাছাড়ের নিকট এই মনোছর হয়। নিৰ্বিত হইলাছে। ইহার চারিদিক শোহিতবর্ণ প্রস্তরের প্রাচীরে বেকিও। তাহার বেড় প্রায় আন জোল। প্রবেশকালে এক প্রকার সরজা; বামে ও मिनिर्ण खरिखीर्ग आमारमञ्ज उद्यानरभव मकन रमिका यन मुख दस । उभरत উঠিলে এক रिखीर्ग मसंस्कृतकान क्ला। स्वितिक्रिक्ट र्माययाना, देशह अक দিকে আকবরের দরবার গৃহ। তাত ক্রোপ ভ্রমণ করিতে কট ছইবে বলিয়া जारनरक अवेष्टारन जार्चारकत्र উरक्षांगं कतिहा नन । किकिए मिरन नरक अक অনস্তর প্রথমে সেলিয় চেন্তির কবয়। সেলিয় এক জন देशात ज्लानात्र जाकरदात्र (मिल्स वा क्लाबाहर पूज व्हेग्नाइक। কতকগুলা সিঁড়ি উঠিলা কবর গৃছের দরজা, কলস শীর্ষ সমন্বিত, এই ছার অতি বৃহৎ। কেবল কুকর ৪৮ ছাত ও কলস সহ দার ৮০ ছাত উচ্চ। আরেশ করিতে ডাইনদিকে আরবীতে দেখা আছে। জিনন বলিরাছেন,শৃথিবী নেতু কপা, পার হত, যেন উপরে গৃহ করিও না। বার পার হইলে ৩০০ হত বিভ্ত এক সমচতুকোণ কেত, তাহার চারিদিকে ২০ ২ন্ত উচ্চ স্তর্জনালা। बार्य जिम्ही यार्क्सन गंधुकविनिक्षे यत्नास्त्र यमक्रीन, मश्चर्ष क्कीरक्षत्र क्यत शृष्ट् । स्थाप्तिमम्बिक शृंद्रणि ठाविमित्क ७३ वाक, यदास्थात्म कदत्त । कव-রের চারিপার্বে খোদকারীপূর্ণ দার্বেল শর্কা, উপরের চক্তাতণ শুক্তিদভিত, নিপ্ৰভাগ ভূৰ্বাকান্তমণিতে জড়িত, ভিত্তি সমল বৰ মূল্য প্ৰভৱে বিচিত্ৰিত ও बारत जावमूमकार्क सरमाख्यि । ममजितमत्र बारत मीक्षांवेरम तम्या यात त्य, কি অন্ত ভবাও করিয়া পাহাড়ের উপর জল আনিত। সমুখে আভিছুরে खरुजनूरत्रत बंबिरदार भीवं नकन वृक्तिभाग्त पत्र । क्वत हृदयन भार्यव शक्ता-टिंव शामाम हिम, अथम खन्नावद्या । मबकात ग्रहत कितनश्य व्यक्तिके व्यारह, তাছার এক পার্বে অকথার মার্কেল সিংস্থাসন কেবা বার। তাছার পর জাক-बद्धत मुखी ७ मधा योजबरणत गृंद । गृंदकी विकल् व्यवस्थान (कांके कांके किस

व्यवसात त्यासकात्रीय वृत्ता अववातिक मृत्यत नाटर्य काया वर्गा देना देना देना के वी व यत विशास अस्ति नीक माहा मापा थात्रुत प्रस्तित कार्य असल विविक जारिक मानक कामाजांक कार बाहन गरन न महारंगर अ नकीव कारितृ हिं। त्यानकामा जाति गैरका अन्तरिक्ति कारक । निवरिक निवर वर्ग ने पक्रिय है अवक्रमान नोक वृद्ध केकर त्यानिक स्टब्स्नान विकास समिति र स्टब्स् উঠিছাছেৰ অনুদেৱ লড়ক বেলিবার চিত্তিক বছ ৷ আলনের কোণের বিকে कामिनी मह त्यांकियाह त्यां त्यां कथाकात चक्र कि हुए त त्य व्या नथा ग वा चक्र यन নাৰ্ভাৱি। যাত্ৰী বাহিৰ ছইছে দেখিতে বেল ছিতল । আতি কোনে এক একটী क्ला । किनु बार्यन क्रिका स्वया गांत रा, धकरी धक उना यह खानाना नेप-উল্লেখ্য প্ৰাৰ্থনিক নাম্প্ৰাৰ্থনিক ভাৰত ভাৰত উভয়ৰণ বাৈদিত ও ভাৰত পোৰ্কণ তিন-মান বিজ্ঞ । ইহার বহিত ধ্যেতুর জার প্রভর পথ ধারা চারি-निक्त गानि वृद रगामिक चारह। जाकरत उरस्त मशाहरण रमिरंडम जर॰ আধান আধান লোক চানিকোনে কমিয়া হয় ও বিজ্ঞান বিবয়ে তর্ক বিতর্ক করি-रक्त, किन्दे विश्वक्रम मन्द्रमक महिल जेगररनम कहिएकन गाँ। धक्रम जैरिहा নিষ্ঠিত প্ৰভাৱত উপায় উৎকৃত খোদিত অভাৱেই চন্ত্ৰাতশবিশিক স্থান विकार निर्मित व्येत्रास्त देवांत कार्निम गर्गाकांत्र । नाम अक्कामकी । जन-ভাৰ ক্ৰটা জিৰোশানের হানভানার খব। ইহার আভোক ইঞি বিবিধাকারে (याजिक) अवस्थामम साम कार्क नारे वियास कार्म जल ना कार करा तक-ৰভাৰি চিত্ৰিত ক্ৰয়াছে। ভাসনগৰকে কতন্ত্ৰ কণাৰাই করিতে ক্ৰয়াছিল। न्त्रांचय क्षानि एक्सन नात्रवा । जनस्त्र स्थान् विस् हे क्रमारमय हरूकान रक्षा । ভাষাৰ ব্ৰুখোড়াৰ এডার নিবিত তাবা ও দেহি ক্রাযুক্ত লালপ্রভারর कर्ममाना । दीवप्रमान वाजिकके खात हो है बद्र काका, व्यापनक हर्ग निर्मान ্ৰক্ষা কৰিলা আই অবজ্ঞা সাভনত জনেব সত ইহাৰ অউকোণ নুকজনৰ অতি विक्रिक्त, हुर नार्ज (स्मीक केनक कड़कामा व्यवस्त प्रदे अवस्त रही। व्यवस्था क्रेमी क्रेमार्ट्स परा निका कटन अस कर राज । लाटन पाटन पाटन ভাগাৰটো ভাষাৰ পৰি আধুৰাত্ৰ-অভৱেন মন্ত্ৰীনতে বিভূষিত এক হুমং क्किन्छ । जाक्यत यह जाह कविहा और तकन एक ब्यन्ड कराया । किन्तु रा क्की बाक्यरहत्र मुखार्मा जक क्यारहत्र निक्र वार्यमा कतिसहिम, स्म व्याप-

নার ভজন ছালে গোলবোগ দেখিলা এক দিন আক্বরজে কৰিল, হর সুনি ছান পরিজ্ঞাগ কর, নর আমি ছান পরিজ্ঞাগ করি। ফকীরের মুকীরের কাছে রাজবালীর গোল কেনা- আক্বর দিনীত ভাবে উত্তর করিলেন, বদি নিকটে না হাবেন, তারে এই ভূতাই ছান ভ্যাপ করিজেছে। এই বনিয়া জিনি আগরা নির্মাণ করিজেন। ভলমুধি করেজার পরিজ্ঞাক বইল। আগ্রার সালা পাধরের উৎকৃতি জ্বাদি, ভরপুরের আমলানী পাধরের নানা দেবস্তি, উৎকৃতি সতরক বা দড়ি, লোহজ্ঞাক শুড়গুড়া নল, আন ও শিশুকার্ভের জিনিস, চুড়ী, উত্তর্গ জার, আরালী, ভরসুজ, ভালভাজা ও কালাকল বা বরকী, নকলদানা পাওরা ঘার। জাজা আক্রে ছাণ উদ্ভাবির সকল হয় একতে লোহন করে এজন্ত সাধ্যান ছইরা এরিদ করা উচিত।

আগরার পরে ভরতপুর। উর্বরা কেন্ত্র ও স্থার বনরাজি বেইড ভরতপুর। চতুর্দিকে মৃত্তিকা প্রাচীর ও পরিধা। নগরের জভ্যস্তরে পাকা কেলা, পরিখা এত বিভৃত যে একটা কৃত্র নদী বলিয়া বোষ হয়। তথ্যে রাজবাদী, ৮ কোশ দূরে রাজার ছপ্রালম ডিয়োর উচ্চান, नरच ०३७ ७ व्याच २०० हाउ । উष्टान मरबा धकनी प्रकेरनांन स्क-রিণী, ভাষার ৪ দিক হইতে চারিটা পথ চারি আসাদে গিরাছে। সে গুলি ভরতপুৰের বালিজাত অতি উৎকৃষ্ট ৰালুকা শ্রন্তারে নির্মিত, ইহার নিষাণ প্রণালী এত উৎকৃষ্ট যে ভারতে এরপ নিষাণ কেশিল অতি অম্প আছে। উত্যানের গোপাদভবন অতি শোভাকর, আগরা ভয় করিয়া এই গোপাল ভবন নিখিত ছইয়াছে, কোনাবার লৌকর্বা কভান্ত व्यक्ति, म्रा उद्दान पात्र, छ्ड्यकृष्टि नाना पान दक्ति छेश्म देति-তেছে। উহার অল উত্তিহার প্রধা এরপ চমংকার বে তছুপরি সুর্বা-রশির পতিত হবর। গৃহ যধ্যে ছুই ইপ্রথমুকের আবিভাব ক্ষরাছে। ব্যক্তার এক প্রাসাদের উপর কুরিক প্রার্থি আছে, ত্রীক্ষালে সেই ছান জলি শীতদ থাকে। শুখানিক ভরতপুরের কেলা নগরের দশিংশ এক দিনের পথে বর্জনান আছে। অকাও পর্বাতোপরি অভি সমুচ কেরা। অভ্যন্তরে গভীর কুণ্ড ও খোলিভ প্রাচীব প্রস্তর স্কর। গৃংহর এক ক্তম্বে

ৰক্ষের আছু লি চিচ্চ, যার যার তিন্তান করিয়া বিংলাজের। এই সূর্ব অধি-বাংলাক্ষিতিও লিভিনা বাই । পারে ১৮/২৬ অধ্যে করিকার করেন।

"धक्रअभूतिक किन्निक केन्द्र । प्रक्रित वाजी जिन्निक नार्ण्य শ্বাহ্ম শ্বান্ত্রানয়, চারিদিকে শাকা প্রাচীর, ইহার অভাতরে তিন बोबेन भवा क रमक बहिन क्षण जबत, खरुपूर्वत जूना ग्थलायक मर्गव व्यक्ति व्यक्ता रहेवा बाहा। नेश मकन क्षेत्र क मन्त्र केल महन, नेश আছিছ শৃক্ত সকলের আচীর এক রেখার সমিলিত আছে। সৌধসমূহ বিভাৱ ধৰৰ ও অৰ্থৰ কললে বিভূষিত। কেছ কেছ বলেন, জয়দিংছ নগায় পাত্তমের পূর্কে এক জন ইটালীর বর্মকার ঘারা রখাদি প্রস্তুত কল্পান, ভাৰার শার অধিবাসির। সেই মতে গৃত নির্মাণ করিয়াছে। এই জন্ত সর্কবিভাগই দেখিতে এরপ হুদুখা। রাজবাটী প্রার সহরের চতু वीरन बाह किशाइ। देशक मधाक छेळान कांगाता शाविकालत मिनन ও স্বাহার ভিন্ন ভিন্ন প্রাপাদ অত্যন্ত র্থনীয়। জয়পুরের দেকিন সকল केलब क्रम समिक्छ । किन्छ लोकारगत भार्ष्य विकार भावता प्रतिय। शास्त्र । वर्गात अवादम वाणुका वर्गाङ किछूमा व कर्मम देश मा। किछ धीचकारन মুম্বত আমি ও পাৰের উত্তপ্ত বালুকাতে গমনাগমন প্রায় বন্ধ হয়। এখানে ষেতপাধরের এবা, চিত্রপট, অর্থমোহর অতি উৎকৃষ্ট পাওমা ঘার। এখানকার লোকে উল্ফেট ভোজন পাত্রাদি জলে খেতি না করিয়া শুক वांबिएंड बांबिश बांडिश करन, जाननरकालनानि वालनरथ इरेश थारक। अन्नभूरतत्र बांकात वार्षिक जान ५० नक्कोंका, देशंत मरश हिना লক টাকা জারণীর ও কৃষ্ণ দেবার বারিত হর। আরাংজেবের দৌরাত্ম मगरत श्रुक्षावरमत (गाविकको धवारम आनीउ दम। धवानकात रेजन बिनित नक्षेत्र छेरक्कि। अप्रभूतित ० माहेन अग्निति। ज्यात बिनित ७ क्रमांनि चाएक, ठाति गरिन पूरत थाठीय बाजवांनी 🗸 गांना अरनत কাঠের শালী লোভিত রাজার শীল মহল। নিকটে কেলার অভাস্তরে बाम मार्थ कलक स्नि बाल जारह, डेराइ मरशा वित्नव मार्शिनगरक কৃষ্টা ও নৰবাক্ত অল দেওয়া হয়। ইহার অবস্থা বলিতে অভি অস্প लाक वाहित बहेताइ । किला मध्या कि देश्तक कि जानेत कि दे

भाक मा, १४ मारेक अधिदर्भाद शिकादक विकास दिन । अधिक अधिद सामार्क रकोशन मालावृक्तिन मस्यूरकक्षेत्रनामी क्रम अवर बाजान्छ बातीया ज्याच क्रिकांत्र स्थानकारण क्रिकां । ज्यान क्रिकां विश्वास्त्र स्थानकार क्रिकां भारतत क्रांक प्राप्त केलन भूति क निवित्त अञ्चलन देवक्क काल थाहीन विस्ति नत्त्र उभाव भाष्ट्रभाव क्रीमध्या क विकृष्ट कार्भारक सम আছে। পৰ্বত হইতে বড় বড় পাধর ধরিয়া পজিরাছে এবং এজগ্র এক প্রস্তারে অংশাকের আক্রালিপি ধ্যেদিতঃ ভীমঞ্চরার বেড়াও» <u>ক্রা</u>ড ও উচ্চতা ১০ হাত। জরপুর হইতে ভাইনদিকে এক বেল সাম্ব হ্রদেঞ্চ मिन्निमित्क अक (बन कुक्षभेष, बहेग्रा जालमीत विवाद । जालमीत शर्काक পার্যে সংছিত। কিন্ত উপত্যকা ভূমি এলান্ত হ্রদ পুক্রিনী ও লাশ্য ভেঁছুলালি রক্ষেত্র হরিত খোডায় খোডিত, এখানকার ছুর্গ ছাড়ে, **जगरधा अञ्चत निर्मि** रेमजेकीरनत करत। करतशृंदः शूटका हैकानम्बाह्य ছিল। আজমীরের ৬ মাইল উত্তর পশ্চিমে প্রান্তর তীর্থন জন্ত পুরিত পুক্তর নগর পুকর ছদের তীরে অবস্থিত, ছুদদী বিক্ষিত প্রার্থাপ্তার শোভায় অতি রমণীয়, তীরে বেলার মন্দির, পর্বতের উপ্লর, ক্লেফ ক্রিক अ मधाम शूक्रदानि चर्न जारह, किछ , मत्रयंत्री, सनी ध्यदाहिक नाहे, अधान-कांत्र आका निवारकत जोका जूना इहर ७ मधूर। आक्रमीत बहुर्छ नहीं-রাবাদ, এখান হইতে রাজপুতানার অপরাপর স্থানে নাওয়া চলে, উদয়-পুরের নাখদোরারার দেবা অতি প্রদিদ্ধ, এই বিথাক রন্দাবনের তিন প্রাদিদ্ধ বিএহের মধ্যে আর একটা।

রাজপুতানা দেখিতে ইচ্ছা না কইলে আগরা টুগুলার কিরিবে। তাছার পর হাটারদ জংশন, রামে মধুরার রেল। মন্দ্রির ও বাট মম্বিত মধুরা মধুরার জেল। মন্দ্রির জাইন তাই অর্থিত। ও কোশ ছুরে রন্দারন ও কুনুনা, রামে গোকুল, গোকুলকে পালের করিব। করিয়া পুরাণে চারিদিকের বিশ্বাত ছান দকল জিলিত ক্ষরাছে। আঘিকোণে ভিত্তীয় দলে নিকুক্তন, পুর্কাদিকে ভূতীরদলে শত্যজালন তীর্ম, ইশানে চতুর্বদলে ক্ষরার, উত্তরে প্রকাশন দলে ভালাদিতা ছান, রাম্বতে মুক্তনলে কালীয়ন্ত্রন, পশ্চিমে সঞ্জন্তর ভালাহর নির্মাণ ও ব্রহ্মেন্ডন এবং নৈর্মতে অইন্দেশে শথান্তবের ছান

য় লাবন । তথগতে একণ ক্ষতে আৰু আৰু মোড়ালনের প্রথমনাল মধুবন, বিভাগে বিভাবনাল ক্ষতিক মোবর্ত্তন, চতুর্বে ক্ষতমন্তনী, পর্বেষ্ট্র নানীয়র, বর্তে নানানাল, ক্ষতমে ক্ষেত্রকা, ক্ষতমে ভালবন, নবমে ক্ষত্রকান, কর্মমে ক্ষত্রকান, কর্মমে ক্ষত্রকান ক্ষতমে ক্ষতমে ভালবন, নবমে ক্ষত্রকান, কর্মমে ক্ষতমানাল ক্ষেত্রকান নির্মাণ, ভালবো ভাতরি, প্রয়োলণে ভালবন, চতুর্বনা নির্মাণ ক্ষতিব কে ভালবন ক্ষতিব কে ভালবন ক্ষতমান প্রক্রিক ক্ষতমান ক্ষতমান ক্ষতমান ক্ষতমান ক্ষতমান ক্ষত্রকান ক্ষতমান ক্ষতমান

লামকা চারিদিকে রক্ষাব্যের লোভা দেখিতে দানিলাম। নানা
নিহক নানা ছানা জনন করিতে লানিলাম। আর দে নোপাল নাই,
ক্ষার লৈ রাখাল নাই, জার বে রাই অভিসারে যার না, জার কেছ রাধা
রারা বলিরাও তাকে না। কিন্ত সেই গোবর্জন, সেই যমুনা, সেই বনস্থান
আক্ষাক আছেও কোকিলের কলরব, অমরের গুঞ্জন ও মর্রের নৃত্য এখনও
ক্ষাবিদ পোজিত করিয়াছে। মন্দির খাটে যমুনাতীর আকীর্ণ। চারিক্ষিক্ষে ক্ষাক্রণ, চারিদিকে ক্ষানাম, গাত্রে ক্ষা, বেল ক্ষা
ক্ষা যথে মধ্যে ক্ষার রাধারানী শব্দে গান বিস্ফারিত ছইতেছে। পানে
পরে-নিক্রমনোভা।

ৰত দেখি বত বাই, কিরে কিরে পুনঃ চাই, V

নব কব ভাব বেন বিকসিত হার রে।
বাবে বাবে মনে করি, একি সেই মধুপুরী,
যাহার হর্ণনে বাসে উত্মন্তের প্রায় রে। ৮

্ শুর্কে এই পুরী মনুষদ দামে খাত ছিল। জব এই বনে কিছুকাল জণকা করিয়াছিল। তাছার শর মধু দৈতা বাদ করিয়াছিল, শত্রুদ্ধ জালাকে বন্ধ করিয়া মনুষ্ঠা নগর নির্মাণ করেন। কালে এই নগরী উত্তা-লেনের প্রক্তাত বন্ধ। উত্তানেকে পান্তাত করিয়া কংল রাজ্য প্রাণ্ড হন। কংলকে কৃষ্ণ বন্ধ করিয়া প্রদান উত্তানেক নিংহানন দান করিয়াছিলেন। জালাকর তালকা বানকার মনুষ্ঠা আক্রমণ করিত, মাঠ স্কল পাব্যর ও ইজালার বলিয়া ধাকেঞ্চ কেরেডিলর কোটিল। হইতে ভ্রামুনের কবর

क्षांतीय खरा कविताहिन । कररमय मध्य कुक जन्नियारण याम कतिरखेन। ব্ৰজনিবানের উত্তর একজেল বিকশন্তব ছিল। তাহার পরেই লপপুরিত काकीम जुका तमार्कान व्यक्ता काकीमके वर्तात नीम पर्क वं क्रमह-লোভিত বসুনা হিল ও গোবর্ছনের উভরে বসুনাতীরে তালবন হিল। কার্ড क प्रवरण बनायर यह यहिका कुमार्य । धारत रहिकानि गुष्ठ 'स्वीयता कुक তথার গোড়ারণ করিতেন। মধুরার কংসব্ধ হইলে জরাসত্তির সহিত তাঁছাকে বারনার বৃদ্ধ করিতে হইয়াছিল। লেবে আচীরাদি ভয় ইইলে কিছুকাল তিনি মধুরা। ত্যাগ করিয়া যান। তুক্যুক্তের পর মধুরার ইঞ্জ वरभीरात्रा बाका कतिप्राहिम, अधन वसूना जानमुख इत्याप्त कानीब पुन पूर्वि मत्या गंगा बहुतारह । योच कावात अवात किहूकान वाम कतिशोहिरने । বোধ হয় মধুরার প্রাচীন ভূর্গের ১ মাইল পাশ্চিমে কাটরায় ও কাটরার जिन मोरेस मिक्का भूर्ति (क्षेत्रिमिश्यंत्र मिक्का ଓ विशेष हिन ि 800 क्रि অব্দে ফাহিয়ান তিন সহজ্ঞ বৌদ্ধপূর্ণ ২০ বিহার ও ৬০৪ খৃঃ অব্দে হোগ্নান-থসং ঐছানে ২ সহজ বেদি দেখেন। তৎকালে ত্রাক্ষণদের পাঁচ ও বেদি-(मत १ ध्यशंन मस्मित हिल । ১০১৭ जरक गरुवाम शक्तनी जामिता विकास মন্দির শোড়া দেখির। অভ্যন্ত চমংকৃত হন। কিন্তু মুর্দাদা মুসদমান विश्वित मधुत। लूकेन कतिताहिल, यवतनता मानिकात क्रूपूक नाकि অৰ্ণবিতাহ ও একখণ্ড /১৮০ সের নীলকান্তমনি জড়িত আর এক প্রকাশ্ত चर्नमृद्धि धरः ১०৮ উট্টের উপর ১०৮ রোপ্যমৃতি महेश यात्र। सूनमयान हेजिहान (संगठका) बर्लन मधानी प्रश्नाम जनत्था जर्न ध्यां छ इरेमहिल। गजनीत शतको मूनममात्मका मधुकात मन्त्रिक मनन চूर्नि करता कार्छ-রার কেশব রায়ের মন্দির বলিয়া এখনত একটার কিয়দংশ বর্তদান আছে ব व्यातश्रक्षकः अरे मिल्यतः कामामाजिनः स्थाननः कतिमाहिकाः देशीय गारविस व्यक्त ३१२० मचर शर्याक महारहेड नाम स्थातिक व्यक्ति वाक्रीक पास कः क वर्षकाम व्यावस्थात्वव वाका मगतक धारे याचित विक्रिमिरगर्व (मर्गामत हिन । ভাষার পর मगक्तिम दत्त । विष्णू मखनीत शत बहेटल पहुंची े हमानामक प्रवाह आक्रम प्रवाहित । आपने होने कार्यक कार् त्रीवाच ७ क्षा गना उन अटबंबर केबाब कडिवर गिवाइडमा विक्यु डीवरिवेब

भगत मगुता क प्रमायन आक्ष्याद्य फिल्ल कीन कत नाके, त्यातीत्मत नगरत त्महरू बीडिया छीर्व कविशाहिल। ग्रिशामत व्यन्नकाल शृंदर्व विवत गयन हुनि वह । त्यारकंद्र ममखरे चादन हिन, अवमक लाटक र्वावनिया মানক কাৰিনায়কের তাশ আনকটিয়া ও বিনায়কটিয়া বলিয়া দেখাইয়া अकृत विशिक्ष अध्यानांत्र छेटनांटन मादिनकी मननत्माहन उ लोली-बाह्यक पूर्कि वरशाणिक करा। आकरदात नगरत गानिनश्च मधुता ७ इन्ना-ব্যক্তি বিশক্ষণ শোভা সম্পাদন করেন। জয়সি॰ছ মথুরাতে এক মাব-ৰ্মনীৰ নিৰ্মাণ কৰিবাছিলেন, কিন্তু তাহার জাতিবত বামোতির ভিত্তিবন্ত, साकी दिन क जावारहा कि नकन खद्य थाता। धरे नवर वर राधिक जागरमन व जारात शरू रिवाम अरे दार्य विषय क्रकलीला गांन कविरक्त । आक-वब क्षेत्रांवरम व्यक्तिका कामरम्बरक मरक लहेका यान, जाकवरतत मगरव মধুরা ও রক্ষাবনের যে সকল উরতি হইরাছিল আরংজেবের সময় তাহার অধিকাংশ বিনষ্ট হয়, এই পামরের রাজ্যকালেই গৌরাক সম্প্রদায় ছাপিত আ্লান অধান বিএই রাজপুতানার চলিবা বার। আরংজেবের মৃত্যুর পর মহার্জীরকালে দিক্ষা, জ্বপুর ও রাজপুতানা প্রবন হইলে পুনরায় মপুরা শোভিত হইল। বৈরাগী, বানর ও ব্রজমায়ী পুবিত বৃন্দাবনে সভত क्लाबांचन इक्ट उटह। वर्जमान विद्याद्य मत्था भाविकाजी, मननत्माचन গোপীনাথ এই কয়েকটা অধান, গোবিপজীর গৃহে প্রবেশ করিবার তিনটা বিশাস ও সমুশে বারান্দা, অভ্যস্তরে বনাতের লালকানাৎ খালিতেছে, इरेनिटक इरेके। शिखलित मामानान । पूर्विकी स्मात, वाटम ताथिका अ मिक्सि निन्छ। त्यांभीनाथ पूर्वि गाविमकोत पूना छे०कृके नत्ह। अभारत शाबिककी कर्मनकाल य एउँ किए इत याद दूरे राष्ट्रिक कार्षे धार्य कहितां थाटक। इक्सार्ट विश्वत बाकात मिन्द्र अ मानणीया प्यादकः। मधुत्रा इन्संबद्धनद्भ क्रमशानद्भ कीर्जित मध्या (मार्टेशमत मन्त्रित्रीम विश्वित स्वाना, हनायन अगामि क्षण किन् क्षण्यानाता मानानी नत बिक्का क्टब्रुव नहेच कविया माख कविक श्ला महा। ह्रन्तावरेनव दावछी, প্রেক্তা, খুরুর আনি হয়জাত বিবিধ জারা, ছোলা ভাজা, পিতলের লোট। ৰ,জ্বৰুৰী লোক্ষত ছাপু। কাণড়, হুনৱী প্ৰভৃতি অত্যন্ত প্ৰদিৰ।

তদনত্তর আলিগড় জংসম। এখানকার অধিবাসীরা একণে তুলার ব্যবদায়ে রত। আলীগড়ের কেলা মহারাজীরদের সময় দুচ ছিল। অধানকার মার্টির সরাই বা জনের কুজা ও সতরঞ্চ মন্দ নহে।

দিলী। আদিগড় পার হইয়া দিলী থাবেশ করিতে বমুনার বিতীয় আৰ্ক্তহা সেড়া হাদল খণ্ডের নধ্য দিয়া বালুকাপুত্রিত বসুনা বিক্ষিত্রভাবে প্রবাহিত হইতেছে, প্রত্যেক খণ্ড ১৩৬ হস্ত বিস্তৃত। পুলের উত্তর পার্বে জাকরী, সর্কনিছে নদী, তত্বপরি লোক ও তত্বপরি দিয়া বেলগাড়ী চলি-তেছে। অথ্যেই দেলিম গড়ের কেলা। হুধারের প্রকাণ্ড কাণ্ড দেশিয়া ^{নি}শাণ হর বেন সভা সভাই কোন মহানগরীতে প্রবেশ করিভেছি। তদমস্তর দিল্লী নগর। দিল্লী কতবার কতন্তানে সংস্থাপিত ছইয়াছিল। বর্তমান সম্ব রের নাম নয়া বা নূতন দিলী। ছই শত বর্ষ ছইল সাজেহান এই নগর স্থাপন করিয়াছেন,ইহার চতুর্দিকে লোহিত গুলুরর প্রাচীর বেঞ্চিত, ভাষার বেড প্রায় ৫॥০ মাইল, প্রাচীরের উপর তীর নিকেপের জন্ত কাটা কাটা ফাক। নার প্রবেশের একণে দশটী মাত্র হার আছে। তথ্যে কলিকাতা, काचीत, त्याती, लाट्टांत ७ किली अरे लाउंडी अधान । উত্তর পূর্বে সালিম-গড় বা কলিকাতা উত্তরে কাশীর ও মোরী, পশ্চিমে কাবুল ও লাহোর, मिकिन शिक्टाम कताम । बाजमीत, मिक्कान पुर्किश्वान । मिली । शुर्वि यम् नामित्क ब्रांकचां हे अरे मगरी क्रमाया आह्र। नश्द्रब मिन पश्चित নানা সময়ের স্থাপিত পূর্ব্য দিলী সমূহের ভগ্নাবশেষ ক্রমাণত দশ মাইল চলিয়া গিয়াছে। বর্ত্তথান সহরের কেরোজসহরে কোটিলার নিকট এই ভগ্নাবলেষের উত্তর প্রাপ্ত তিন মাইল ও কেলা রায়পিথোরা হইতে তোপল-काराम भर्वास देशा मिक्न भारत विखात । मारेम। धरे १६ वर्ग मारेम কুড়িয়া নানা সন্মের ভয়াবশের পড়িয়া আছে। দিলী বছকাল ভারতের রাজধানী ছিল, কতবার শক্তকর্তৃক আকাস্ত ছইয়াছে ও কতবার ধংক ছই-शाह, नक वर्क्क थातीन नवत दिनके व्हेटन काम महादित केरक्केका जस्य निर्वान रेग्स सरेटन थाठीन मस्त्रत्र स्वाम गाविज्यक रहेड । अस्मिट्न রাম পিথোরা হইতে ক্রমে অঞ্জনর হইতে হইতে বর্তমান দহর, সর্কঞাচীন সহরের ১০ মাইল দূরে পাড়িয়াছে। বর্জনান সহরের নর্কা শাসান রাস্তার

मान हैं। क्ली रहीक । हाक्कांत्र कुदे शांदर्व विकार स्मानाम, अएअक्लीत बना-शिकी কলনী, জনীয় টুলি, ও জাপড়ামি বিজয় কলিতেছে ৷ বাজালি দৰ্ভ কোল পূৰ্ব্ব পশ্চিমে সহা ৮০ হাত বিজ্ঞ, পরিষ্কৃত, স্থাকিত এবং উচ্চর পার্বে ক্লান বারা শোভিত ব বিলীয় শুর্মপ্রান্ত হিত বসুবাতীরে সভাটের বালীর लाकिन बारने कानवा क्षेत्रा सगरबंद किन बंदा निता शिक्तविकक मारवादी लतकतांकांत्र कामित्रा अदे वृष्टा भाव बरेताटह । अदे शर्थरे नक क्रोका वास निविक निकी बेनकिकिक माट्य विमानित चाटक। धरे शर्थरे तिरे काटका-अवित, रवश्राटन शवर्गायणे जगर जारिकाय कहिता विद्यादीगर्गाक वश करतन । केशांबर मिकडे तर्व खडांबक ममस्तीम, रायारम मधायमान करेशा ३१०० प्रान नांगीत माक् नांत्र मुक्तन जारमंग कतिरम अकतिरत वधामान नक्त नगंत्रवामीत আৰ্শভাগ কালীন চীংকার শবে দিলীতে আকাশ বিকারিত হইতে नामिन। आदेशन क्छा। कविशा माजीव महत निश्हानन नदेश श्राहान करकम । देवाहरे मधूरच बहातानीह वागान । काचीत नतका हरेटा उत्तर দক্ষিণে লক্ষা আৰু এক রাস্তা দারা দিল্লী সহর পূর্বে পশ্চিমভাগে বিভক্ত ছাইয়াছে। এই রাজ্যর পার্ষে কর্পেন ভিনের গির্জা নির্যাণ করিয়াছেন। हेराबर मिक्यांटन गंबर्गटनएकेत निमाधाना वा ज्ञांगांत हिन। शांट वाक्न e আন্তাগার বিজ্ঞোহীর হক্তে পত্তিত হয় এই তয়ে ১৮৫৭ অব্দে লেপ্টনেণ্ট केवनावि देवहरू जाहि क्षमान करतन ।

हिन। अथन देश्नकीतरमत्र काल हुन यांत्रा कांत्र करेत्राट । स्वतान कांग দৰ্যে জিভি গাতে দশক্ষি উচ্চ নিংহানন ছান। তরিয়ে নিঁড়ি, উপরে প্রাঞ্জ বের চজাতণ। চজাতণের চারি প্রান্ত খারে বিত বার্কেলের ভতের ইপার সংস্থাপিত। সমন্তই চিত্তিতের জায় নানাবিধ প্রভয় দারা অভি উৎকৃষ্ট সন্দিত হইরাছে ৷ নিংহাসনের পঞাতে একটা দরজা সভাট অভাগুরু হইতে ঐ দরজা দিয়া আদিয়া সিংহাসনে বসিতেন। সিংহাসনের পার্শ্বছ ভিজ नकल नामाविश वेश मूना धाखतवाता (भागानी। भूभा, कल, भक्ते. शक्ट किविक इरेशारह। अधिकाश्मरे अक्टल नम्ने आहा। निक्ट हेरे टाउ-য়ান খাস বা মক:অনকাছারি। অপেকাতৃত ক্ষুদ্র ছাবে সংস্থাপিত। গুন্ধী ममञ्ह्यान अवर देशांत खन्न ममञ्ह्यान । खन्नवात्र मध्या प्रेरक्के विनाम । ममल्डरे मार्क्सन निर्वित अवर रेशंत्र मार्क्सन जिल हाकहिकानानी। अधिक কাড় বুটাকাটা নাই বটে কিছু যাছা এই একটা আছে ভাছা ক্ষতি সুন্দর। দেওরান। থানের এক দিকে প্রাক্তন অপর দিকে উজ্ঞান শোক্তা আর এক দিকে যমুনা ও অবশিশুদিক অন্তঃপুরের ভিত্তি সংলগ্ন । বাছিরের অভ্তঞ্জলি অতি উৎকৃষ্টকপ খোদিত মার্কেল গরাদিয়ায় সংযুক্ত, উপর ছালে প্রাক্তেক कारन अक अकी मार्खन भीवं उद्दर्शन भिष्ठी कहा गहुक । गृहकी नरव हर इस, शृत्क देशविद्यां एवर्न । ब्रक्टमा स्नात्न वाण्डव हिन । ब्रविद्य स्वय-সিক মছুর সিংহাসন থাকিত। সিংহাসনের পশ্চাভাগ নানাবিদ রত্ব **ম**চিত হুইয়া মন্ত্রপুড়েছর ভার শোড়া ধারণ করিত বলিয়া লোকে ইহাকে তক্ত छाउँम वा मञ्जानिश्वामन कविछ । मञ्जानिश्वामन ममख्ये निहत्रके ख्वार्य নিৰ্মিত ছিল। লবে ৪ ৰাত ও প্ৰছে ২ ৰাত ১৬ আছুল। উপৰে স্বায়ুপাৰী ছবৰ্ণ গুৱা। ভতুপরি অৰ্থের চল্লোভণ। চারিনিকে মভির নালব। সামু-। नाथ अध्यक्षे वस्पृता तर् थित । इवे शार्थ वस्पितिक हरे इस মঞ, লখে ৫ হাত আট অনুদ। ছতের আবরণ লোহিত ঘণামল। চতুপরি ক্তির ও মুকাজানের শোভা। আলোকের অভাবে ঐ সক্ত বর্ হুইতে নানা বৰ্ণের আভা বহিগত হুইয়া মভার অপুর্ব্ধ শোভা বিস্তার করিত। নৃতন বিলী সংখাপক সাজেখাবের আজা জয়ে অক্সি ভি ব্যেদ্ধা এই সিংহাসন প্রস্তুত করেন। করাশি জহবি টাস্কুরশিয়ার পরীক্ষা করিয়া

নিমিয়াছেন নে, মুন কাশ্যিত ইয়ার বুলা ৬ কোটি টাকা ছিল। নাজীরদাহ বিদ্ধী লুগ্রন কালে পর নিংছাদন কইয়া বান, গৃংহর ছ্বর্ণরর চল্রান্তপ ১৭৪৯ বৃঃ অব্দ নহারাক্রীয়েরা লইয়া বায়, এবং গলাইয়া কেনে, তাহার ছ্রেড্রান আৰু টাকা হইয়াছিল। অন্তঃপুর দেওয়ান খাদের সহিত সংলয় ছিল, এখন অভি অব্দ অংশমাত্র অবলিন্ট আছে। ইহার মধ্য নিয়া হাম্মান বা আনায়াক্রের পথ । আনাগার ভিনটী প্রশান্ত গৃহ, তত্তপরি মার্কেল গায়ুক্ত, ন্মান্ত নিয়ের আরু এবং তিন গৃহমধ্যে তিনটী মার্কেল কোরারা তৎশাক্র বিভিন্নকালির আল্প ও মার্কেলে হানির্দ্ধিত, ১৮৫৭ অব্দের নিপাহি বিল্লোছের পর ইংরেজেরা সত্রাটের আরু কিছুই অবশিন্ট রাখে নাই। সমন্তই ভূমিয়াই করিয়া কৈন্তদের গৃহ নির্মাণ করিয়াছেন।

জনা মসজিদ। কেলার অনতিভূরে সহর যধ্যে সংস্থিত, এই মসজিদ ভারত্বৰ্বে অত্যন্ত বিখ্যাত। একটা পাহাড়ের চারি পার্শ্বে দিঁড়ি গাঁথিয়া এমণ উচ্চ করা মুইয়াছে যে পুর্বে যে ভাষা পাছাড় ছিল ইছা বুঝিবার যো मारे ! कामन: डेळगामी धरे विखीर्ग माशानावनी व्यवनवन कतिश উপরে উঠিলে এক প্রকাণ্ড সরজা, পূর্মদিকের এই দরজা দিয়া প্রবেশ মাত্র এক ৰিত্তীৰ প্ৰান্তৱৰভিত প্ৰাঞ্চন, এক এক দিকে তিন তিন শত হাত, मधायान थक मार्क्सन किताका, जिन नित्क थिनान मध्युक खळायनी, ठांत्रि কোনে চারিকী নতবংখানার মত অফকোণ গৃহ, পশ্চিমদিকে মসজিদ, ममिक्षा मा अप्र ३७८ ७ व्याप्ट ४० हांछ, छेपात जिन है छेपहर गार्सन-নিশ্বিত সমুক্ষোপরি গিল্টি করা তাত্রদীর্ব, গৃহের সমুধক্ষাণে কিয়দংশ খেত मार्क्समपिक, कार्निम >> व्यक्तार्क विकल । व्यक्तार्क व कार्क ১৬ আছুৰ বাংগা ও ১ হাড ৮ আছুল প্ৰাণন্ত, তাহাতে কাল-মাৰ্কেন বসাৰ प्रकटन निर्मिष्ठ प्रारंह रव, ১৬২० धृः जरम नारकहान ১० नक्त छ।का दारत ১० ষ্ঠে এই মনজীয় নিৰ্মাণ কৰেন। মদক্ষিদের অভ্যন্তর ভাগ খেত-মার্মেল টালিতে ৰ্ডিড, অভোক টালি ২ হাত লছা ও ১ হাত চেড়ি, মূৰে কাল-মার্কেনের পাড় থাকাতে অতি স্থানর লাগিতেছে, ভিতরের ভিত্তির কতকটা भाषा-मार्ट्सरम जाइन । किनमा जनीव मका व्यवनिकाती मिरक धकरी ভুক্তর তাক আছে, ভাহার প্রভার শুলি এও স্থানররূপে খোদিত ও সংযো-

জিত যেন বোগ ছর ৪ ফিট উক্ল ও ৬ ফিট শ্রাণন্ড এক থণ্ড শাদা-মার্কেল কাটিয়া বাহির করা হইয়াছে। মগজীদের উভর পার্শ্বে থেড মার্কেল ও লোহিত-বালুকা প্রস্তার প্রথিত ৮ আ হাত লখা ছই বিশাল গুড় আছে জড়ের গাত্রে ঠিক সম সম মূরে তিনটা খেত-মার্কেলের আবরণ দেওরা বারান্দা, গুড়ের উঠিবার জন্ম সিঁড়ি গুড়ের মধ্য দিয়া আছে। ইছার উপর হইতে দূরে বছবিগ সময়ের ভয়াভয় হর্ম্যপূর্ণ দিল্লী দেখিতে যুগপৎ শোক ও আনন্দের উদয় হয়, প্রাতঃকালে সময়ের সময়ের বরকমণ্ডিত হিম্যালয়ের শীর্ষদেশের সামান্ত আভাও দেখা যায়। মসজীদের সকল অংশেই লোকে গমনাগমন করে, কেবল উত্তর পশ্চিমাংশে স্কল্ব মার্কেলের পর্মাণ দেওয়া কয়েকটা গৃহে মহম্মদের দাড়ির চুল প্রভৃতি ঐ প্রকারের করেকটা ক্রে থাকায় মুসলমানের। যাইতে কিঞ্চিৎ আপত্রি করে।

कालाममजीम। वृकीश हर्ज्यन नजाकीटज कारताज निर्मान करंत्रन, गाँथनि (माछ। अ मलान, मुजन मिल्लीत प्रिशांत छेशयुक्त धरे करतका বিষয় বৰ্নিত হইল। এই নগার ৭ বার লুগিত ছয়। এবং সাতবার এই নগর যোর ঢক্কার শব্দ করিতে করিতে জেতৃগণের ভীষণ প্রাবেশ দর্শন করিয়াছে। শাতবার শত্রুর সিংহনাদ, মহিলাগণের রোদনয়নি ও বধা-মান হতভাগ্যগণের চীৎকারে এই নগর প্রতিধনিত হইয়াছিল। পাছাড় ও ঘমুনার মধ্যস্থলে নৃতন দিল্লী। পাহাড়ের অপর পার্বে বিজ্ঞীর্থাও-বের বন ছিল, যাহা অর্জু ন ও কৃষ্ণ দ্যা করিয়াছিলেন। পাহাড়ের উপর দিয়া এক রাস্ত। চলিয়া সিয়াছে। কান্মীর গেটের বাছিরে অনেক স্থান ইংরেজেরা পাহাড়ে ভোপ রাখিরা ভয় করিরাছেন, ভাহার পর পাহাড়ে উঠিতে বাদদিকে দিল্লী দংলকারী সাহেবের কবর, তাহার পর নড়লো काहिल, यथात्न २ मर व्याविति वा कामान वनारेश रेश्टातावा व्यावित ভাষিয়া নগর প্রবেশের পথ করেব। আরু কিছু দূরে তাইনদিকে মেটকা-কের ভয়পুরী, বাননিকে পাছাড়ের দর্ক্সেডাগে জাগ, ক্রাঞ্চীউর का देश्टबार्जनिट्गंद शङ्का पन्तिक, अरे द्वाटन विट्यार्थकाटन देश्टबार्जना वाळप्र महेग्राहित्सन, मत्नी कतिशाहित्सन प्रित्र वहेर्छ माहाया शाह-বেন। ভাহার বিয়ন্ত্র পাহাডের উপর মহার। সীয় সেনাপতি হিন্দু-

वारण वेरक्के वंशि। देशक वंशित निक्छे अकी पाल्टरी कुल जारह, जिल्लिक किला कार्या कार्या वालित निक्छे कार्या कर्या वालित निक्छे क्रिके क्

 শ্বরুর প্রাচীব দিল্লী সহরের ভয়াবশেষ ও কৃত্ব দেখিতে যাজা कांबरल क्रेटन निली प्रवक्ता क्रेडा निलीजांग क्रियां। अरु राय निली হুইতে অভিন পুর্ব মূবে ভ্যায়ুনের করর ও ভোগলকাবাদ হইলা কুতব পিরাছে। আর এক পথ দিরী ২ইতে মকিল পশ্চিমে কুবত হইরা তোগ-লকাবাদ পিলাছে। কুষত হবতে তোকলকাবাদ ৫ মাইল পূর্বা। ভাল। শিলী দরকা হইরা দিলী ত্যাগ করিলে অধ্যে একটা ভালা বাড়ীর উপর अकड़े। ध्राच्या खर्च रक्षा वाता। नाम रक्षाताक मात्र लाहे, खरूकी मान মাজুকা আন্তরের । পেতিৰ সাভাইল হাত উচ্চ ও গোড়ার বেড় প্রায় ৭ ছাত আনক্ষে কিছু সক্ষ হইর। উঠিগছে। এটা অধ্যে দিলীর ৯ কোণ ভূরে ব্যুক্তার পশ্চিম জীরে পর্কতের নিকট জন্ম বা বর্তবান পাওটা নামক ছানে ছিল। ১৩%। শৃহ অংক কেরোজ আনয়ন করেন। অংশাক আপানার আৰা লিখিয়া এই সকল শিলাক্তত্ব গোধিত করেন। পেব ছত্তে লিখিয়া-ছেক। শিলাক্তৰে ও শিলাকলকে খোনিত আমার আঞ্চা যেন চির-क्षान विक्रमान बारक। व्यक्त ଓ छात्रा शानि। व्यत्मारकत छेगरत छ নিছে ১১৬৬ অনে চাত্ৰান কংশীর বিশাবের জয় প্রকাশ আছে। নিছে माना मगतात माना ल्यांका नाम। ३६२६ व्यक्त नागतीए७ देवांचिय लाही निक विवस्त लगावेडारम्न। खास्त गांव निमीत स्वे मारेन पूर्व ক্রান্তীল পাঠাকদিলের বিশ্বিত প্রাণ কেলা। অত্যেক কোনে এক এক (भिक्षाकात बुक्क अवस आरंडाक निटक अक अक मन्त्राता। मनकात शार्ष पूत्रे कृषे कवा । जीव विरक्ष्यभव कव छावाव गर्मा गर्मा हिन, ३६०४ जरू क्षांस्य केशांस मरकास कटतन । अहे क्षांत्मत नाग हेट्स शक्, जायमङ ल्यांत्क

পরিভার করিয়া অরং এই নগর পরিমাণ করেন। নৃতন দিরীর জ্ञান্তর করেয়া অরং এই নগর পরিমাণ করেন। নৃতন দিরীর জ্ञান্তর কেলতরে পুলের নিকট নিগমবেগ ঘাট। যেখানে মর্মাজ রাজস্থার মজ্জকালে আন করিয়াছিলেন। এখন একটা মন্দির মাত্র আছে, সোম-বারে জমাবস্তা ছইলে মেলা হইরা থাকে। কেরোজসাহ প্রাচীন ইস্ত্রাপ্তে কেরোজাবাদ নির্মাণ করেন এবং পাঠানেরণ মুখিন্তিরের কেলার উপর কেলা নির্মাণ করে। তাহাই এই পুরাণ কেলা। যমুনা কালায়রী ছইতে ত্যায়ুনের কালে পুরাণ কেলা ও কেরোজের কোটলার নিম্ন দিরা

কেলা মধ্যে কিলাখানা মসজীদ ও সের মঞ্জিল। কিলাখানা মসজীদের
গঠন ও খোদকারী চমৎকার। সের মঞ্জিল অতি উচ্চ অফকোণ ও বিতল
বিশিষ্ট, আকবরের পিতা ভ্যার্নের প্তকালর ছিলু। এই ছান হইতে
পড়িয়া আঘাত পাওয়াতে ভাঁছার মৃত্যু হয়। ইহার দেড় মাইল দক্ষিণে
ভ্যার্নের করে। কবর হর্যা এক উচ্চ প্রান্তনের উপর নির্মিত। প্রান্তন প্রতিদিকে ১৩০ হাত লঘা ও ১৬ হাত উচ্চ, প্রত্যেক পার্থই খিলান
বিশিষ্ট এবং উঠিবার জন্ম চারিদিকে প্রস্তরের সিঁড়িছে পোডিত। করর
হর্মাও বিলক্ষণ প্রশস্ত প্রায় ৬৬ হন্ত সমচতুকোণ। ভিত্তি গাত্রে তিন
প্রকাণ্ড খিলান, ত্যাধ্যে মার্কেল লাল-প্রস্তরের পোডা, উপরে এক প্রকাণ্ড
মার্কেল-গমুজ, তরিল্লে গোলাকার গৃহ মধ্যে ভ্যায়ুনের শ্বেত-মার্কেল নির্মিত
করের। এই গর্ভ গৃহহর পার্থে চারিটা অফকোণ গৃহ। এত যথে সক্রান্তের
মন্ত্রীয়র ও পরিবারসাণের কবর আছে। ভিত্তির পার্থ দিয়া উপরে উঠিবার সিঁড়ি, উপর হইতে বহুদুর পর্যন্ত নানাবিধ পদার্থ দুন্তিগোচর হয়,
ইহারই পার্থে দের সার দিল্লী ছিল।

ভদনন্তর আকবরকা সরাই নামক আম। প্রবেশ কালেই প্রসিদ্ধ ৬৪ খাষা নামক গৃহ, সমন্তই খেত-মার্কেল নির্মিত। ৬৪টা উৎকৃষ্ট সমচতুক্ষাণ খাষা আছে, তাহার মন্তক নানাবিধ খোদকারীতে পরিপূর্ণ, উপরে ২৫ খিলানা, তত্নপরি উৎকৃষ্ট গয়ুজ, চারিদিকে মার্কেল। ছিল এখন বিনষ্ট প্রায়,

गृहग्राम मार्किनाकामिक कठकक्षति करवा, हेशबरे अक्तीव ग्राम जाक-ৰৰের পাদক-শিতা অভিগাধার পুত্র আঞ্চিত নিহিত আছে। কিছু দুয় শক্তিৰে মাৰ্ক, কতকণ্ডলি কৰা ও একটা কুত্ৰ পৰিকাৰ মাৰ্কেল নিৰ্বিত बहासिक, श्रांतिक एक व्यापी, त्यांतकाती भून विनाम, भीर्यमा मार्व्यन श्रम् । रेशां बर्गा माजीगर्डकीन निर्देश, नाजीग प्रपृष्टन नेशामीएड धक्कम निष्क करीत हिटलन, धाथन प्रमुखमान यां कीता करत मर्गन करत । देखांबर निकृत थांछ-मार्सिन निर्धित जात अकी छेश्क्रके करत गृह, विजीव क्यांकबत गर्भामर्काय राज कविज्ञा व्यथ्य क्वांबिहतत ১৮৩२ जरम धरे करत নির্মাণ করেন। বিজ্ঞোহস্থচনা করাতে ত্রিদীশগর্গদেও ইহাকে নির্বাদিত कविहाकित्मन । धरे श्रांत्मरे वागवांशंत्र त्मथक थमकत्र, करत्र आहि । ১७৫७ আৰু তাঁহার মুড়া হয়, নিকটে মার্কেল পর্ফা বেন্ডিত আরও অনেক কবর, ধাকদীতে লিখিত আছে এই তৃণ মৃদ্ধিকাই জন্মত্বংখিনী, অনিতাদেছা বীষ্টি-শিষা সাজেহান করা জেহানার উপযুক্ত কবরাবরণ। জেহানারার উদেঘা-ধেই দিলীর জ্বামসজীদ হয়, এবং সাজেহান কারাক্ত হইলে পিতার ख्यांचा जब क्यांनावाड चत्रश् कांबांगांव गमन करता खना गांव मार्क-ছানের মৃত্যুর পর হুরাজা আরংকেব এ নিরীহাকেও বিষদান করে। এই কররস্থানের সমিকটে ৬০০ বর্ষ পুর্ব্বের ভোগলক নির্মিত মসজিদ, দোছিত ধ্ব হরময় উপরে এক: গয়ুজ, ডছপরি আরবী লিখিত, ইহার নিকটে এক আৰাত ৰাউনী ৰা কূপ প্ৰায় ৪০ ফীট আয়ত, উপর হইতে জন পর্যান্ত এই ছাত এবং জলের গভীরতা ২৬ ছাত, চারিদিকে হর্মা থাকার ইহার জল অভ্যন্ত শীতল। পয়সার লোভে বালকেরা ইহার মধ্যে কাম্পা দের এবং डेशात डेडिश दक्तिम कार्यना करत ।

আজ্বীর দরজা নিয়া দিরী তাায় করিলে বামে জয়পুররাজ জয়নিংহের
বিজ্ঞান হিন কাশীর মানমন্দিরেরভায় এখানেও এই এছবেধ প্রস্তুত
করিয়াছিলের। রহুৎ ছ্যাটীর নাম সভাট যন্ত্র। এটা একটা প্রকাশ শঙ্কুরা স্থামজীকা। ইহার সমকোণের সমুখন্থ বাছ বা ভিত্তির পরিমাণ ১৯৮ কীট ৫ ইঞি, ভূজ ১০৪ কীট ও লবে ৫৬ কীটা। একণে ইহার ভ্রমানিকা অনতিভ্রের এই লাতীয় লাম একটা হ্যা। সধ্য নিয়া উপরি উঠি-

বার সিঁড়ি আছে। ইহার পার্শের ভিত্তিগুলি সমকেন্দ্রিক বৃত্তার্দ্ধ লছু-হের লয় অরপ। এতদারা দিলীর যাখ্যোতর রেখার সহিত আপর चारमव यारमाहित तथात अहत जाना गारेछ । वाहिरतत शूर्स शिकास विख् उ ভिত्তि সকল অংশাদিতে বিভক্ত রুত্তপাদের লখকরপ হইরাছে। অপর এক ভিত্তিয়ার চারি লয় সংযোজিত আছে। ইহারই উভরে আছ-গণের প্রাক্তান্থিক উচ্চতা জানিবার জন্ত চারিভাগে বিভক্ত একটা রভার্ম। मञाष्ठे याख्य मिक्तन अक्की शूक्तज्ञाता । अक्की शिक्तमज्ञाता इरेनित्क ছুইটা মাধা থোলা, গোলাকার গৃহ আছে, তাছার কেন্দ্র ২ইতে এক একটা ভঙ উঠিরাছে, ভণ্ডের মূল হইতে ত্রিশটী প্রভারের ব্যাদার্দ্ধ ভূমির সমান্ত-রাল ভাবে ক্রমে বিস্তু ত হইরা আসিয়াছে। ইহাদের প্রত্যেকের পরিমাণ ७ वर्ग। वामाई मस्टब्ड मधावर्जी छान मकन याकिए हरेल माकरना ७७० जश्म हहेरत । वामिक ७ जम्हदात मधावर्जी जाता जिति गाउँ পর্ব্যবেক্ষণ কল পড়িয়া দইবার জম্ম রীতিমত ছানে,চতুকোণ ছিদ্র সমূহ আছে। প্রত্যেক অন্তরে হইটা করিয়া জানালা বা খোলা স্থান ছিল। অন্তরে অথাভাগে সুর্ব্যের উচ্চতায় জ্যাপিও জানিবার চিছ আছেন শুন্তের ছায়া ধারা ১ হইতে ৪৫ অংশ পর্যান্ত জানিবার উপায় আছে, তদশেকা অধিক ছইলে ব্যাসার্দ্ধের অঙ্ক গণনা করিয়া ৯০ ছইতে উচ্চতার विद्यांगं कम जाना याहे । जश्म नकम कमात्र विख्क जाए । देशरे छ ছায়া পড়িলে দিলীর যাম্যোত্তর রেখা হইতে স্বর্ণের Azimuth প্রাত্তিক আৰম্ভিতি স্থানের অন্তর জানা ঘাইত। আহ নক্তেরও এইরুপ করিয়া শ্লেশা करेंछ।

চন্দ্রয় তিন মাইল দক্ষিণে ভাইনদিকে সক্ষরজন্দের ক্বর। ইনি ১৭৪৮ অন্দে দিল্লীর সদ্রাট আছমদ সার উজ্ঞীর ছিলেন। ইনিই অন্যো-ধ্যার অ্বাদার বংশের আদি পুরুষ। ইহাঁর পুরু এই কবর নির্মাণ করে। প্রেরেশযার প্রাণন্ত, ও উৎকৃতী, প্রেরেশ করিয়াই একটা বাগান, চারিনিকে লালপাধ্যের প্রাচীর। এখন লোকে সরাই করিয়া বাগানের ছ্রবছা করিয়াছে। এই উদ্যানের মধ্যে ক্বর ছ্বা, প্রতিনিকে প্রার ৬৬ ছাত ক্ষা, চারিকোণে লীর্থশোভিত চারিভন্ত, মধ্যত্তে এক মার্কেল চর্তরা, তন্ত্রপরি অতি উৎকৃষ্ট শেতমার্কেশের গৃষুজবিশিষ্ট কবর হয়। ভিতিশুলি লাগন পাগরের। কিছু শিলান সমূহ মার্কেল মতিত। জানালা হই লারি আছে। চারিজিকেকারিটী শিলান করা প্রবেশবার। মধ্যে শেকটী প্রশন্ত ও চারিটী ক্ষুক্ত বৃহ্ন প্রশন্ত গৃহ মধ্যে খোদকারীতে পূর্ণ মার্কেশের জবার বা নকল করে। বিষয়ানে বস্তু ও প্রশাস্তিত মৃতিকার যথার্থ করে।

্কুতবের তির দাইল মূরে রাজার বাদদিকে খিরকীআম। ইহাতে কেলা ও প্রকৃষ্টী বসজীদ আছে। কেরোজের উজীর শান দেহান ১৯৮০ অবে এই ममजीम निर्धां करतन। देनि अकलन रेटलकी विका विभाव अस्ति। मारतत जरनत जस रासूना ७ भेडजन थोन हैनिहे थेनन कतिशाहन। শিরকীর মনজীন অতি প্রকাশ্ত এবং উচ্চ ভূমির উপর সংস্থিত। সমগুভাগ কুক্ষর্ব আনাইট থান্তরে নির্মিত হইয়াছে। গৃহটা দিতদ এবং চারিদিকে সমাম। কোণের শুভগুলি ০০ ছন্ত উচ্চ। উপরে ৮৯ টী কুত্র কুত্র গযুক্ত, बिह्म बिनान क्या 308 में श्रांकांक, श्रांटाक श्रांक हांत्रिमिटक ७ वांत्र। ब्राह्यद ७ हुण्डा नित्म ७ এक अकति धारकार्ष जारह, माकरमा ১১२ धारकार्ष । উপত্তে হাইতে তিন্দী স্থার আছে,উত্তরদিকেরটী কেবল এখন খোলা আছে। া ইহার পর বিধাত কুতা দিনার, কুতবভূমি ও তরিকটছ, ছান সক্ষ ভয়ভূপ নিকৃষ্ণৰ ও লতাবিতান অশোভিত। নৃতন দিলী ছইতে এই ছান ১০ মাইল অন্তর। কুত্রমিনার একটা প্রকাণ্ড উচ্চ ন্তর, গোড়াটা বোটা, ক্রমে কিছু সৰু ছইয়া উঠিয়াছে। গোড়ার বেড় ৯৪ ছাত ৮ আছুল, ৰাজ্য বেড় ১৯ হাত। াগায়ে পাঁচতলায় পাঁচলী ৰাৱান্দা লাগান। বারা-শাশুলি সমান মুরে নাই, যত উপরে উঠিয়াছে ততই ক্রমে কাছাকাছি। ওতের অবস্কার ভিনতনা লালপাধরে গাঁধা, তহুপরি হুইতলায় যার্কেল মিলিত আছে। প্রথম তলার গাতে বড় বড় পারদী অকরে হয় ছব লেখা আছাত বেক্টন করিয়াছে। ৬৬ ছত্র কোরাণ তরিম প্রক্রম হত্ত ঈশবের ১০ नाम छित्रक करूर्व इव कितिस छेकीन आवृत नित्रकांकत मध्यन दिनमार्यस क्षांन्याः जीवस्य त्वांत्रानं, जीवस्य जे विननात्मव क्षानंशनां, जिवस्य প্রথম ছত্তে আমীর উল ওমরা বই আর পড়া বার না। ভত্তের বিতীয় ভালায় উপর ২ হল ৩০ তৃতীর তলের উপর এক হল সাছে, পত্যান

তীত ভাজের আমূলাতা গান্তী সমন্তই বিট কটি।। কুতৰ্মিনার পৃথি बीब मुर्क्ताळ खर्ख । ১৭৯७ जारक रेबाब फेळडा ১৬१ राज रू जबून हिन्द्र এখন উপরিকার বর্তকা ভালিয়া পড়াতে ১৫৮ হাত ১৬ অসুন উচ্চ আছে। কুজৰে উঠিবার জন্ত ভিতরে ৩৭৯ টা সিঁড়ি আছে। কুভবের পতন ১৷০ হাত তহপরি প্রথমতদা প্রায় ৬০ হাত দিতীয়তদা ৩৪ হাত তৃতীয়তদা ২৭ ছাত চুহুৰ্তলা ১৭ ছাত পঞ্চতলা ১৫ ছাত ও তত্নপরি ভয়ভাগ ১৫০ হাত উচ্চ। কুতবের উপর উঠিবার জন্ম ভিতর দিয়া ৯৭১ সিঁড়ি আছে। গুল্লের প্রবেশ, বারে লেখা আছে যে ফুলতান সমস্ভদ্দীন আলভামদের তত্ত জগমী হইলে বেহলদ পূজ সেকেন্দর সার রাজ্যকালে পাদ্ধার পূজ कुछ। या देवा विकरी २०२ अर्थाए देश्टबिक २००० अरम मध्याब किन লেন। দ্বিতীয় তলের দারে লিখিত আছে আলতামন এই জন্ম সম্পূর্ণ করিতে আজা করিলেন। তমিন্ন ছত্তে আলতামদের প্রশংসা, ভবিত্তে শুক্রবারে ভক্তনাক্তয় কোরাণের আদেশ, তৃতীয়তদের দারে আলতা মদের প্রশংসা। চতুর্বতলের ছারে আছে আলতামদের রাজ্যকালে ভাঙ বিশ্বাপ করিতে আদেশ করা হইরাছিল, পঞ্চমতলের মারে আছে এই শুস্ত বন্ধাহত হইলে সমাট ফেরোজ সাহ ৭৭০ ছিজরী অর্থাৎ ১৩৬৮ थृঃ षाटक मश्यक्षात कत्रान । हेश्टतक्षात्मत मग्रातः ১৮०० षाटकत्र ५ना प्यागितक ভরানক ভূমিকশ্পে কৃতরের মাধা ভালিয়া পড়ে এবং শুস্ত জ্বধ্য ছয়। পরে ১৮২৮ অবে ইনজিনিয়ার রবার্ট মিথ সাহেব ১৭ হাজার টাকা ব্যয়ে ইছার সংখ্যার করেন। চারিদিকের ভাঙ্গা ইমারত পরিষ্কার করিন্তে জারও পাঁচ ছাজার টাক। লাগিয়াছিল। কুতৰ কে নির্মাণ করিয়াছিল তরিষয়ে নানা মতামত আছে, কেছু বলেন, কোন ক্কীর আলতামদের সম্ভান ছইবে বলেন, ভাঁছার মাঞার্থে আলভাষ্য ৪০ বর্ষে ইছা নির্মাণ করিয়াছেন। কেছ বলেন পৃথী-রাজকভা উপরে উঠিরা প্রভাছ ব্যুনা-মর্পন ও সমার উপাসনার জন্ম ইহা নির্মিত হয়। কেছ কলেন, মূল-তान मममजेकीन चीत खरतत चातनार्थ अक ममजीन मिर्चान मनक करतन, তাহারই দরজার একটা ভন্ত, অপরটা নির্মিত হইতেছিল, কিছু অপ बड़ी देशक रहाका इदेरजहिला कि कबिशा यहा गाँदरव शे क्रिज्य

২৮০ হাত উক্তরে এইটি আছে। ইহার বেড় কুতবের বিশুণ এবং এখন ২৬ হাত উক্তঃ মুসলমানেরা যোড়া এত মিলাইরা করে বে চেনা ভার। মাহা হউক কুতব হিছু কি মুসলমানের নির্বিত তবিষয়ে আনেক মতামত আছে। এখনও জীমুক্ত কনিংহাম ও জীমুক্ত বোলার সাহেবে বিবাদ ভঞ্জন হয় নাই।

. कुठविषमात्र शार्षिके कुठव जिम्हीत्मत क्रमा ममकीन। ১১৯० जल्म পুরুকে জয় করিয়া ২৭টা ছিল্ম যদির ভগ্ন করিয়া কুতবউদীন তিন बरमात्र अरे गमकीम निर्याण करतम । गमकीरमत मश्रूरथत ভिত्তित तथ ৫। ছাত। ভাহার ৭টা খিলানবিশিষ্ট দরজা। মধাকার দরজালি পোনে পদর হাত বিভ্ত ও ৩০।০ হাত উজ। পার্শের দরজাগুলি চাত ছাত বিশ্বত ৫.১৬ ছাত উচ্চ। এই দার দিয়া প্রথমে দিলীর मूनमयान्त्रा ভाরতবর্ষের দর্ব অধম মদজীদে প্রবেশ করে। মদজীদ ষর ৯০ হাত লয়। ২০১০ হাত বিজ্ ত ও দেখিতে জম্কাল। যরে পাঁচলি অতি রমনীয় উচ্চ ব্যন্ত আছে। সমস্ত ওলিই হিন্দু মন্দিরের স্তস্ত। আ্বান্থন চারিদিকে যেরা, পূর্ব্ব পশ্চিমে ৯৬ ছাত ও উত্তর দক্ষিণে ৬৪ ৰাভ প্ৰশাস্ত। এই প্ৰাঙ্গনের পশ্চিমার্চ্চে বিখ্যাত শেহতত ১৪।০ হাত क्र हरेश। मुशासमान आह्र। खर्खण क्रमवर्ग, ताथ इस जाकेशापु নিৰ্মিত, ইহার বেড় পোনে তিন হাত। ৪২ হাত খুঁড়িয়াও ইহার তলা পাওয়া যায় নাই। ইংরাজের। আশ্চর্য হইয়াছেন যে, এত বড় খান किशाल निर्मान कविन बदर कि अल्पेर ता गृष्टिका मध्या ध्यांचिड করিল। নাদীর সাহা এই শুরুণী ভয় করিবার জন্ত কয়েক্টী গোলা মারিয়াছিলেন অভাপি ভাছার দাগ আছে। লোকে বলে রাজা চির-ছায়ী করিবার জন্ম বেলাম্ট্রেব বক্ত করিয়া বাহ্যকী মন্তক পর্যাভ এই कुल महस्त्रीय कटतम । शदर मछकशशास यात्र मार महस्त्र कतिया भूमबाह देशमाछ कतिहा मिलिनन, वायकीव मख्यकत तक अविशादक। ভাষার পর আর সংশ্পরিপ বসিল না ১৪॥। হস্ত উল ইইয়া বহিল। পুজারার ও ইড়ান লিখিয়াছেন যে, বিশাখানক্ষতে রুঞাত্রোদশীতে ৭৯২ সমতে চল্ল অভিজ্ঞিং গত কুইলে ভোমররাজ রাজা রক্ষার্থ ইছা প্রোধিত

করেন। ভরগাতে ১১০৯ সমতে অনন্দ্রপাল, ১৮৮০ সমতে প্রীরাজের উনত্তিংশ পুরুষ বৈহিন ছত্তসিংছ ইজানির নাম খোদিত আছে।

^{২০০} লেছিভান্তের নিকট প্রাদেশ মধ্যে হিন্দানোর আরও কতক্ষালি व्यक्तिन खन्न व्यादह। देशरमंत्र गठन व्यनानी व त्यामकाती व्यक्ति हमर-কার। প্রাঞ্জন প্রবেশ করিবার তিনটা ভার আছে। পূর্বনিকের ভারই ध्यशंब, मन्मिर्गत बाति विश्वके इहेमारह। कूठव क्रायां जा जानकायन धहे প্রাক্তনের উত্তর দক্ষিণ পার্শ্ব রুদ্ধি করেন, এবং প্রথম প্রাক্তন অপেকা হয় গুণ বিস্তৃত আর এক প্রাচীর বেটিত প্রাঙ্গন প্রস্তুত করিয়াছিলেন গ কুঁতববাদীর উত্তর পশ্চিমে ১২৩৬ খৃঃ অব্দে মৃত সম্রাট আলতামসের কবর গৃহ। গৃহের অভ্যন্তর ভাগ ২০ ছাত প্রশন্ত ও উত্তমরূপ সঞ্জিত। निकटिर मक्तिन शन्तिम शिनकीवश्मीय कृठीय महाहे जानाखेमीत्मव वाणि। देनिहे मर्वाध्यथम मान्मिनाजा मुक्तेन करत्रन धवः जाननारक गर्स করিয়া বিতীয় সেকেন্দর বলিতেন। বাদীর দরজাদী প্রকাণ্ড। আর-ৰীতে ছই তিন দরজায় দেকেন্দর ছানি পদবী সহ আলাউন্ধীনের নাম लियां जारह। जातिय हिज्जती १३० दा थुः ১७३०। ध्वधान इवाणि नम-চড়ুকোণ, অভ্যন্তরভাগ ২০ হাত প্রশন্ত, বহির্ভাগ ৩৭০০ হাত ও ভিত্তির ৰেষ ৭।০ হাত। প্ৰতিপাৰ্ষে এক এক উচ্চ খিলান ছার। খিলান খোড়া-খুরে বাহিরের কিনারা যসা। অভ্যন্তরে পতর আটার স্থায়, কোন, क्लानमान कात्र बीककांका व्यक्ति कार्त्य इरे क्लाना, किन्छ मार्स्यत्नत জাকরীতে আরতঃ বাহিরের ভিত্তি মার্কেলের পতরবিশিষ্ট দেখিতে অতি অন্দর। উপরে মার্কেলের অন্ধরতাকার গমুজ, এই হর্মাটী খিলিজি পাঠানের আদর্শ অরপ। যোড়াগুরে খিলামবিশিষ্ট এইরপ হর্বা ১২৯০ অধ্যি ১৩২০ পর্যান্ত থিলিজীকালে নির্মিত হয়।

আনিদরজার নিকটে ইমামজামিনার কবর, কুতবের দক্ষিণ পশ্চিমে আক্বরের পালক-পিতার ব্যকারী আজাম ধার কবর, কুতরের নিকট বেলে পাধরের গাঁখা কতকগুলি আশ্চর্যা রকম কুপ আছে। মিরোলি আমের কুপ আর ৫৫ ছাত গভীর, বালকেরা সামান্ত পুরস্কারের লোভে তাছাতে লাক্ষ্ দিয়া পড়ে। এই আমে কতকগুলি মার্কেল-প্রক্রীরমতিত স্কল্পর কবর আছে। বিকটে বেটকান্ধ ছাউদ, এটি আকবরের বাদাকালের শাদনকারী আডাগা মহমান থাঁর কবর। দিলীর শেব সভাটের বেদিডেন্ট ঘেটকাক লাছের লইনা আশানার কুটী করেন। কুডব ভূমির উত্তর পশ্চিমে ১০৬০ খৃঃ অলে বিত্তীর অনকপান নির্মিত লাককট নামক তুর্ণ, বেড় থা০ নাইল, ভারতের শেব বিশ্বরাজা পৃথুরাজ ইহাতে বাস করিতেন। কেবল গৃহবিজেদে দেই বীর ১৯৯০ আনে মহমান বেব শাম বা যোরী কর্তৃক পরাজিত হইরা বিহত হইলোন। কুডবের নিকট ইহার কুলদেবতা মারা দেবীর মন্দির। এখন একটী দিন্দুর দেবরা ভারতির, হর্মের ভিত্তিমূল অভ্যন্ত দৃচ এবং ভয়াবছাতেও ভারাবহ, ইহার বাহিরে ৪ মাইল আরভ করিয়া আর এক স্থর্মের ভিত্তি ইহান রই অভ্যন্তরে পৃথুর রাজধানী প্রাচীন দিলী ছিল।

কুতবের শাঁচ মাইল পুর্বেতোগলকাবাদ। তোগলক বংশের বিতীর দ্বাজা অর্দ্ধোশত তোগলক এই নগর নির্মাণ করেন, সহরটী ষট কোণ ক্ষেত্রের অন্ধ্রভাগের মত ছিল। তিন বাছ প্রত্যেকে প্রায় পৌনে এক মাইল ললা। চহুৰ্বতি দেও মাইল। বেড় কিঞ্ছিন চারি মাইল। কেলা পাহা-ড়ের উপর সংস্থিত, প্রাচীরের পাথর এত বড় যে বোধ হয় ঐ পাছড়ি ছইতে পাধর কাটিয়া ছিল। এক এক পাধর ১ হাত লখা ১।০ হাত চৌড়া এক হাত ৫ অসুস পুৰু ও প্ৰায় ১৮০ মণ ভারী। উত্তর, পঞ্চিম ও পূর্বে গভীর পরিবা। এবং প্রালন্ত দক্ষিণদিকে বিস্তীর্ণ জলরাশি। এই পাছাড়ের উপর দিকের প্রধান প্রাচীর ২৬ হাত উচ্চ, তাহার অগ্রভাগে ৫ হাত উচ্চ এবং তাহার পশ্চাতে ১০ হাত উচ্চ আর এক প্রাচীর। ভূমি হইতে প্রাচী-बाह का में का के का के के कहें दा। अरे इत्रीय मिकन पिक्तिय कारने नक-বের মড্ভাগের ভাগ আরত করিবা রাজবাদীর ভগ্নাবশেষ। হুর্গ প্রাচীরের शार्ष बक्षांकाबी टेमकातब एकां छ छा वहा । ভिভिन्न मधा निमा जातमा ৰাইবার এবং উপরিভাগ দিরা তীর চলিবার ছিত্র আছে। প্রাচীর অভ্যন্ত-রের দিকে জামে ঢাল হইয়াছে। তোগলক পাঠানদের নির্মিত প্রাচীন প্রাচীর माजरे छाना (कनांत्र ১७ मतला व जाकरांनित जिन मतला (मर्थ) यात्र। आठीन महरदात जनलाराज मरा भी शुक्तिनी कमायमकीन ७ दीवीक मन्मित क्षकुछ करतकत्री उम्म श्रिम (ब्रह्म) याय ।

के बर्ट जमा स हत , रशास्त्री सकत अमित्र कियों के लेके तम महा अधिकार रकान पूर्व र्त्तान जानात सामानी अधानाना मतन किन पर ने स्व वेदिन मा वामिना श्रमकात कितिका चारण, उंत्रांत कंशीक किन्ने वारे । विजीव जनकर গোনা বিকাশ যাইতে বিলয় মইয়াজিল বলিয়া ডামার লায়ে বাজি বিয়া ৪৮৬ रामान केरिया करेशा वाट्या इस । काहिरवाई बाविर अविवासिकक अस्त्री वक बरना अवे क्वीएकतः करते। एकतात महिन्द ४०० वाक नका २१ विमान विभिन्ने म्पृतादा मर्याञ्च चार्छ। ठाविभिन्द वर्ष धावीवविभिन्ने उ বিতাত কঠিব ও প্রাপত ভিত্তিত্ত তোলালকের ভারতর করন, সরোধর নামা দেখিলে বোধ হয় যেন যথাৰ্থই কোন বীরপুক্ব নিছিত আছে। ভোগান্ধকের প্ৰশ্ন আই কৰর নিৰ্বাণ করিখাছিলেন। কৰৱগৃত সৰ্বভত্তকোৰ ভিতৰে ২৬ ষ্ঠত ও বাহিত্র ৪১ হাত লহা। ভিভি ২৬ হাত উচ্চ কিছু প্রতি কুটে ৯. केंक्र एांन बरेबारह। माथा बरेरड शांजागर्वास व बांड छान। यह सम्र सन-রের ভিত্তিরের ২৯০ **হাত, নিছে ৭।০ হাত। উপরের ভিত্তি সমুজের ক্র** विकामन मून । शबूरकार कार्याकेन २२१० मात्र विकासकेन २७५० म्राज ক উক্তভা ১০।০ ছাত্র। কবরমন্দির শীর্ষপর্যান্ত ৫০।০ আনত উক্তণ গ্রন্থের ফারিনিকে বোড়ায়ুরে বিলানবিলিক ১৬ হাত উক্ত চারি দরজা। দর্জা बहर्सन व्यानकीरण, गांका। श्रास्त्रांत खब्र ६ गांच जांव त्यांका व्याहक। विकारमंत्र मृत्ये करमक विख-मार्किम कार्र्छ । बिह्न महत्रम उदर्शकी स सह-ইক জোগাখার করন। নিষ্ঠুর সক্ষণ ভোগলক মন্তলোকের প্রাণ বর ও আমে-ক্ষের উপর অক্তান্তার করেন। কর্মানের নিকট এই সকল পারপার কালামী কর্ম অত্যাহার এই ব্যক্তিগণের পুত্র পোতালের বিকট ক্রিটে হার্কনালিত বেধাইয়া করর বারেঃ নিহিত করা হুইরাছে, ইবার ভ্রুল করিলেই ভিত্তি নেই करक शासिक कविका पानांश क्येंदल ।' योगनांची मुक्ट बटल' र पंच्या 'रक्षेत्रसन् दक्षत्रसम्बद्धानारमा प्रक्रित भूकी क्षितिनीत्रामें क्षेत्रमात्रात्र सक् के CHAT WERE ! " BUIL WE BUILT TO "THE " TO THE CONTROL OF THE WEE त्सेर नर्पतंत्र कर्पाति रमन्दिक रमेंबाक मिली किकिएन है तिन त्मक केले हैंके एके किसिया > मारेन नाटस सीटमंड सांका बाँदेश कारीनामा के किसे लिए

देक्टबोक्टब्रह्मच प्रका निवा संसाहंद्रसंत्र टक्लांच प्रकिटन गित्रा क्ष्मम निर्मन निर्मन निर्मन निर्मन निर्मन निर्मन

নিম্পি আৰম্যে বুলিউন্নের বাজনানী ছিল। তাহার পার লেবিভাতে বব নাজনি নাম বৈনিত লেকা বার। বিক্রমানিতোর পার হইতে প্রায় ৭০০ বর্ণ ক্লা বালে। ইহার পার কানাকুল্ল হইতে পূন্বংশীরেরা বিয়া রাজনানী কায়ের। তন্ত্রভার মুসলমান কর্তৃক জনিকৃত হয়। নিলী হইতে এক বেল নালিকীপুথে ভরতপুরে নিজা জনপুর রোলের সহিত মিলিত হইলাছে। ' দিলীর আগার, কালাবসুর কাজ, অর্ণাল্কার, গ্রান্ডের তাবা, মৃতিকা-তাবা, অইকার তাবা, গুলগুড়ির নল উত্তম।

দিল্লী হইতে শেশোধার।

আমরা দিল্লী হইতে বিদাব প্রহণ করিলাম। গাড়ীর বেগের সাক্ষ সংক্ষ গৃহৈর পর গৃহ অন্তর্হিত হইতে লাগিল। অবশেষে যে লেষাংশ লক্ষিত হইতে-হিন্দ ভাষাও দিক্প্রান্তে বিলীম হইয়া গোল। দিল্লীর আর কিছুই দৃক্তিগোচর হর্ষ মা। কেবল নিবিড় রক্ষ ও নীলবর্গ আকাশ। কিয়ংকাল পরে পুনরায় গাল্লীয়াবানে উপস্থিত। গাল্লিয়ানাল পার হইয়া ট্রেন উত্তর মুখে বিয়টের নিক্ষে চলিতে লাগিল। আমরাও ক্রমে অন্তর্কেনীর উক্ত বিভাগে আরো-হল করিতে লাগিলাম। উত্তর লাগ্রের ভূমি নিভান্ত উর্করা। বর্ষাকালে যে ক্ষম ক্রের প্রচুর নীলপ্রস্ব করিয়াছিল তাহাই একণে গোধ্যের হরিত-লোভা বিজ্ঞার করিয়াছে। স্থানের জল বান্ধু একল উৎকৃত্ত যে, বি প্রৌত্ম কি ক্রমেন ক্রমানিই ভূরি পরিয়াণে উৎপর হয়। যেম ইংলগ্র ও ভারতি ক্রম্মানিই হুরা চেয়ারা সকলেই বলিও, সকলেই প্রস্কানিত ক্রমেন ক্রমানিই ভূমি নিয়াহালা ক্রমেন বিলিও, সকলেই প্রস্কানিত ক্রমানিক ক্রমানিক হুরানের ভারতি ইন্সায়া সকলেই বলিও, সকলেই প্রস্কানিত ক্রমানিক ক্রমানিক ভ্রমান ক্রমানিক বিলাভিত হুইলাম। এই সকল প্রকান ক্রমানের ভারিনিকে ক্রমান আনক্রা নির্মি ক্রমানে উপস্থিত হুইলাম। নির্মি নগ্রের ভারিনিকে ক্রমানিক। আনক্রা নির্মি ক্রেমনে উপস্থিত হুইলাম। বিরম্ব নগরের ভারিনিকে ক্রমানিক। আনকা নির্মি ক্রমানে উপস্থিত হুইলাম। বিরম্ব নগারের ভারিনিকে ইয়ার শেক্তি বিনয় হবরাহে। সহরের এক ক্রোল ইবারে হাউনী সার্বার হাউনী সার্বার হাউনী বার্বার হাউনী করিবার। পূর্বে পার্বির পার্বার সকল দেখিরা প্রিম্নেই আলান বোর হাইও উপাত্ত কিল শহরে উভিন্তাহ, নিয়ে ব্রুয়ে শক্ত করিবার হাই উঠি বাহ, ভিন্তাক বানসামা দেখিনা করিবার হাই করিবার, ভিন্তাক বানসামা দেখিনা করিবারে, এই সকল দেখিরা বোর হাইল ইংরেজনের আবাসের সমীপ্রত্তী হরিয়াছ। যিই হাউনী প্রকাশ্ত দেনানিবেল হান ও মুক্তমান্ত্রী করিবার পূর্বি রয়েল হরহ আর্টিনবির হিছু সকল চার্ত্রিক্তিক লাক্তির হাইতে আলাল। এখানকার গিল্লা অতি প্রকাশ্ত। গলাখালের ইঞ্জিনিরার দুই হানেই অব্যাহিত করেন। ১৮৫৭ অলের সিপাই। বিভ্রোহ সর্ব্ব প্রথমেন বিরটেই হইয়াছিল।

নিরটের ২৫ মাইল মলান কোনে গলার ডাইনতটে স্থানিক হতিনান নগর। হতিনার মাঠ দৃতিখনে পতিত্যাত্র মহাভারতের দেই পুন্নান স্থৃতিপথে উদিত হইল। হার রে কাল! আজ সে দকল কোপার কোল! আজ কেন হতিনার সে কোলাহল কর্ণগোচর হর না। আহা! এই ছানে ব্যারটাহ বৃথিচিরকে বঞ্জনা করিবার জন্য হর্ণোগনেরা কত বজানা করিয়াছিল। সেই পারাংপর বাক্ল ছাল্যে এই ছানে স্থান্তিজনা কত উল্লোগ করিয়াছিলেন। যে নগারের জন্য এত ভরহর কাও হইয়াছিল, আজ একটা লগালত লে হান প্রার্থনা করে না। আজ সে হতিনার ঐ যান্ত্র এই ব্যারিক ও চুরে গলা ব্যার্থনা করে না। আজ সে হতিনার ঐ যান্ত্র এই ব্যারিক ও চুরে গলা ব্যার্থনা করে না। আজ সে হতিনার ঐ যান্ত্র এই ব্যার্থনা করেন।

বাছা হউক দিয়েই হাউনী পায় হইবা নয়েইব টেনন। বোণ নোৰ্কের প্রাণোক্তির করত ও এক প্রকাশ বিশ্বী এই বান পোড়িত করিয়াটে। বাই এর কালোট্রের কোন ক্ষরীন সেনাগতি রিনহার্থ হা ব্যেরহার বিশ্বর কবিলা ধনপানী হন। বাহীত মুহার শহু তিনি সক্রবাই ভাক্ষানী নিয়ের ব্যাহাটীর সংক্রমণ নিয়া আহ্রের ক্ষর প্রহাত করিয়া মাইসান্তর নার নার করেন। রোনার কার্যাল্য নোট্র প্রকাশ বিশ্বী হয়েনা মান্তর করিয়া। CALL TOTA PERSONAL AND CARROL ACTIONS AND ACTION AND ACTION OF THE PARTY.

THE SHE SHE SHE SHE WITH SURVEY SHE THE HERO AND SHIP SHIP AND SHEET AND SHEET SHIPS WHAT familiarly also as at a services come attended of a familiar and the कार कार्यनामा सीह महस्राधिक उपयोजित पहेरियक गाउँन 🗢 हेर्रा BIBLE HER CHIEF I A SIGNA GOOD TO BETTE ST. WHITEH व्यक्तिको तक गर्द । अध्यक जाद्रश्यातक क्षत्रात कीवगुर्वि निर्देशीय विकास करत । माननभूव वरेश्य करनी १० काल, जानगांकी जांका का ठीको बका किरोपा, नेविकार किरायक सार्ग । कदनी गाम व विवास ममानीत शराह क्रिक विकिशासित निला क्रिकेट क्रिमी धार्मरमा कब्रिक देश । करूकी हरेट दिवात ३- द्वान, अका जाका जिन्हींका । बह्मिक धक्यांनि मार्थाक धार्म । ध्यादन गमा दिस्तात्वर निर्माणक ৰেষ্ট্ৰিক পাৰ্বে বাৰিয়া পাৰ্বভীয় প্ৰদেশ ত্যাগ বৰত ভাৰতেৰ পৰ্বভশ্স नयान कारतन कारतन कविरुद्ध । जागारत वरे गांग करेन विकास व्यवस्थित र क्षारं केन्द्राव स्थाप्त अन्ती सीन कविशाह । निकास मानाव कीरत कीर्यामि । किनु केकम्याना विकल करेगाव खेगाव विक्रमन माहेश बारोह के लिए, अपर राण श्री काठ करनर राम कर बाक विकास वामानिक कुछ श्रम पांचे कुछ किन । देनक व देवकव मधानीया वारमक क्षक विवास करिया वदासाम विनास करता अवका सम्बद्धके अध्यान वार्षे वर्षेत्राम् याचे कविका विकासन स्वाकित कविका निवारक्य । বিশ্বাস বাটে গানাৰ বিভাৱ ৯৭০ হাত ৷ যাটের উপর অনেক বালির ড बक्रा कि पुत्र महिल्ल बक्की सभी ग्रंभीय निक्तिक । जनाव सर्वसाय effect. Affice state and alloying the filter print state at escurie alune attended by the state of the s THE RE MINTE TORN NIME CONTRACTOR HELICARY THE PROPERTY AND A COME PARTIE MICELAN TORE MINIMARY, MINIMA COURT & THE A still at 18 fort a 70 for by 10 fort

PARTY OF THE STATE OF WHICH THEFT ! TISTECT क्रीएड मनायान गांकन नांकास कड़को (बहाएक) नाल ७०का सबी TTI AR TICE MINING MAIN MINING IN ARRIVE AND ARTIS OF DISC निर्देश वर्ष वर्ष वर्षित प्रमुख शुक्त । जिन्हों हे ०० वर्ष नगरवृहस्तान (वर्ष (क्या १) अ नकम (संविद्ध केव्हा या इसेल गाम्यू दह अकिए। साम आग-তের ছাতে থাক পার ছইনা কিছু দুর মনিবল নাউবে। নেখানে শুর্জোঞ্জ Dai का कीरनाव रमान भूकानित्तव बादा करेल अक्षाका व्यक्तिका मिकक यातीतः विकिछ प्रेशास्त्र । विकास प्राप्त जानत विकास क्षेत्र सम्बद्धाः देशन मिक्टिंग ग्रंथिमक कर्ममा ठीकी। यह शाम मिन मक्ताक नक করিয়াছিলেন। এবানে সভীকৃত ও দক্ষেত্র শিব আছেন। প্রাচীন ৰশির বটরকে ভয় হওরার বৃত্য মন্দির ১৭৭০ শকে প্রিমিত ছইরাছে। मकास्त कर त्रणान अवस् पर्छ। विकृतन वाहे दरे कर्यन शर्मस मिक काम भव । इतिहासक विद्यालक नाम निवानिक भर्ति प्रवाहन रेश्तरे मात्र कनर्यन (अते । कनर्यन भवाउत उनत (प्रधियाद आनक গুলি বিষয় আছে। বাতীয়া সচরাচর বে পর্বতে উঠে ভাষার পূর্ব र्देश्वरहरू नित्क एकि। किन्न जानगा बार्षि के अन्तर्यक बाकांत्र आवरात्व উঠিতে হয়। পর্যন্তের উপর বেদী মধ্যে ১ হাত উচ্চ এক প্রভর্তনাত্রল ्थाबिङ ब्यारह । मृत्नद छेन्द्र क**ल स्वामृति व मुनम्द** गरमेन । निय कारण श्रुक्तिक कालिका रमयी ७ श्रीकारम अनुमान मुर्कि। मीलकारन इतिकारक मा भी के बडक राज्य । यह भी के ति लाशांव बिनिय किह्नांत न्तर्भ कवित्व शत कांवा करवे। देश्वमध्कान्तिक चारमद कांगा शामना वर्गात्व वृक्तमां कृष्टवानि वारम कवित्य वर्ष (मना वर्ष । उन्हर्स क ১৯০० देखानि नहत्त हाना व्यवहित । ह्याना योगा नवस्तिह यह ह्यान । neces inwas not upon to wisostin timbe a ges dini जालवारतः नामानीयन् विज्ञक एरेसः चाम-नद्धाः वयन **वर्षो** केराद्ध प्रवास e laur pulses element son mit receit, son ber element. राक्षाकारी, द्वाराष्ट्रकी, जाना जानि कांगरका अवस्था संख्यानामा वर्गक्य,

ছবিছারের অপ্রাণস্ক পথদিয়া বিশ্বুপদ যাটে গমন করিতে থাকে ও ধখন উত্তর পার্শে গ্রাপ্রেটের সহিত রক্ষকগণ সাবধানের শব্দ করিতে থাকে তথ্য মনে কি অনির্কাচনীয় ভাবের উদ্য হয়। কতকণ্ডলা হরে হরে ব্যা হয় করিতে করিতে গিয়া জালে পড়িল। তাছার পর আর এক দল হরে নারারণ হরে নারায়ণ করিতে করিতে অপ্রাদর হইল। আর এক দল জয় শিব শাস্তা জয় শিব শস্তো করিয়া আসিতে লাগিল। প্রাদ সন্ধ্যাপর্যন্ত এইকপ ভীত থাকে। ছরিছারের নিকট মাঠ ও পর্কাত না থাকিলে এই দকল অসংখ্য সৈনিক ও সন্ধ্যাদীর বাসন্থান পাওয়া ভার

াকাদারে প্রায় ১৫ কোশ দক্ষিণে প্রাচীন মধাবার নগর। পৃথুরাজের প্রস্তর নির্দিত দেবালয় ভয় করিয়া একজন ঘোরী স্থলতান বর্তমান
জমামসঙ্কীদ নির্মাণ করিয়া গিয়াছে। এখনক,র অর্জমাইল বিস্তৃত পিরালি
ভলাও বৌদ্ধদের বিমলমিত্রের স্বোবর ছিল। হোযানথসঙ্গের সময়ে এখানে
বৌদ্ধদের দ্বাদশ ও আক্ষাণদের পঞ্চাশৎ মন্দির ছিল। মধাবারের স্থই
মাইল দূরে স্থাসিদ্ধা মালিনী। নদী। ঘাহার তীত্র কণ্যে আলম ছিল
এবং বেশানে শকুন্তুল। মুক্তিলাভ করেন। মালিনীর তীরে
এখনও চক্তবাক ভাকে, কিন্তু আর'নে শকুন্তলা নাই।

সারনপুর হইতে লোকে মদেরি ও লাওর যায়। ৪৮ মাইল দুরে পর্বত প্রান্তের পর্বান্ত পর্বান্ত লোক প্রতি অমনিবস গাড়ীভাড়া এগার টাকা। পথে শাল জন্মলপুরিত দেশ মধ্যে ডেহারা। এখান হইতে গলা ও যমুনার দীলা দেখিতে বড় স্থান্তর, উত্তর পর্বাত্তর মধ্যন্ত সমতল ক্ষেত্রের নাম হন বলিয়া লোকে এই ভাগকে দেরাহ্ন কহে। ডেহারা শীকদের শক্ষারা। হিমালয়ের নিকট ২৪০০ কীট উদ্ধে সংস্থিত বলিয়া এখানে গ্রীম্ম ও শীতপ্রধান উভয় দেশের শক্ষানি উৎপন্ন হয়। চাও জন্মিয়া থাকে। 'দেহারার ৬ মাইল পর রাজপুর। রাজপুর হইতে লাওর ১৭ মাইল। মর্দোরি ও লাওর বরক্ষতিত হিমালয়ের সায়িধ্যে ৬ হাজার ফীট উচ্চ পর্বাহোপারি ইংরেজনৈক্যাণের স্বান্তরক্ষার্থ সংস্থাপিত হইরাছে। পাহাডের গাড়ীর খার্ট্তর উপর পর্বাতপ্রান্ত মদলা জ্বমাট করিয়া ইহার

অনৈক ভাগ নিৰ্মিত। কিন্তু আশ্চাৰ্যার বিষয় যে উন্মন্ত ব্ৰিটিশ সৈৱাৰ विविद्याक्ति विविध्य कामिनीइर्ग उथाय केवलीलाक्त्य दक्ष बन कदिशे विकास ্ এই সকল দেখিয়া সারনপুরে ফিরিবে। সারনপুর পার হইয়া সিরসা ক্টেমন। পাঁচ মাইল দুরে ৭০ হাত অন্তর ২৪ গ্রুবিশিষ্ট যমুনার আর এক পুল। পুলের ইউকন্তভ সকল জল হইতে ৩০।৫২ ছাত নিমে প্রোখিত। অধানহইতে হিমবানের রূপ স্পান্টভাবে প্রতীয়মান হয়। দর্শক **দুরবীক্ষণ** ধারণ কর, আমি গিরি দকলের পরিচয় দিব। মুজাফর নগর হইতে দেখিতে আরম্ভ করিয়াছ এবং লুধিরান। পর্যান্ত দেখিবে। সমুশে এ যে গিরি দেখিতেছ, যাহার উপর ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র গৃহ রহিয়াছে, উহাই মধ্যেরি ও লাপ্তরের পাছাড়। উহার ডাইনদিকে, পশ্চাতে যে সকল শিশ্বর রহিরাছে, ঐ গুলি স্থানীত ডেরালিতে গলার ডাইনতটে অবস্থিত। औ নকল গিরি ইইতে গঙ্গা কলার দিয়া পতিত হইতেছে। 'ঐ গিরিল নিকটই ভাগীরখা ও জাহ্রবার ভয়াবহ সঙ্গা। প্রথমে শ্রীকঠ, তৎপার্যে শিব-যুক্ত, তৎপার্শ্বে কদ্র হিমালয় ও তদমন্তর গঙ্গোতী শৃল। গলেতীর ৫ জ্ঞোশ দুরে গোমুপাকৃতি বরদগুহ। হইতে ভাগীরখী নির্গত হইতেছে। বানে কেদারক) ও তৎপশ্চাতে মনুনোত্রী শিশর। তথার আক্ষর্যা উঞ্চ প্রস্ত্রবণ দিবানিশি প্রধূমিত হইতেছে। উহার তাপে বিগলিত বরক বমুনারূপে উদ্দত হইতেছে। ঐ সকল শৃদ্ধ পঁচিশ ছাবিশে সাজার ফীট डेक्ट। उँहात उपांत शागीत नाम माज नाहे। करन अक जाकान उ ঐশীভাব বিরাজ করিতেছে। ২০ হাজার কীটের উদ্ধে আর মন্তব্য উষ্ঠিতে পারে না। নিখাদ আকর্ষণ অদাদ্য হয়। এদিকে পুলের প্রতি দৃষ্টিপাত কর। আমরা ব্যুমাপুল পার হইলাম। ব্যুমাপুল হইতে শতক্রপর্যন্ত হিমালর নিস্ত নদী সকল পার হইতে বিভর সেতু নির্মাণ कदिए बहेबार्छ। उचार्या ४० की है जलद २ वटल एक मि नामकीन नमी o महत्रकी, जिनशत्क किंवि लुविशामा के दूधक, ७ शत् जारिक जनर ৮ भट দশ্রতী বা যাগর ও ১১১ কীট অন্তর একাদশ থতে নির্মিত মার্কঞা दहें कर्मकी नमीत रमकू अधान। जल इहेर्ड २०१२ की है भिन्नभूमां स खड (शाबिक जारह। मार्श रेक कामना गर्मेना शान रहेना करत

मात ग्राम मूर्य स्मानिताम द्वार जदानांत में किनाय। जदानार योर्ड मक्न समउन जन्मजनानी, किन्नू खीणकारमद्र स्थात खीरच कृषि विभव दंवरक वहेंका। महत्र कमपूर्व, खानीत स्वक्तित क मश्लीर्म मनानी. स्मान मन्द्रत केवन मूर्कानित ज्ञाबिक। जदाना द्वेरक केवर मिमना कंपाकित सुकरकराव मध।

া আৰম্ভা অস্থালা ছইতে হয় ঘণ্টাৰ ভাকসাভীতে কুৰুক্ষেত্ৰ বা গানেশ্বর नीक विनाम । सांबु डी व बहेट अर्टन बाद मांच बहेगार । गारेट शांत शांत आरिय मिक्स पश्चिमात्व मानिक वस । मासाव ध्यामात्म कांग्रेस गाउ मारे । व्यक्ति जावन डेरहके महर। भान इवृता। व्यक्ति बाटनवंद्रीनगरीनम खरे कंद्र हरेश शिशाद्य । जासाबरे जेनदा वर्तकान नहीं निर्मित । बात्मव रतन निकटि कूनरफाउव विखीर्ग बार्ड मृ म् कतिए उत्तर उत्तर अकी व्यकाश मरमाबन ।- जाबान पातिनिक बीबाम ड मानामविनिक । मरनोबनकी শূর্ব শক্তিমে ২০৬৪ ছাত দীর্ঘ ও উত্তর দক্ষিণে ১২৬৬ ছাত প্রালস্ত। মহা-হলে এক হাত বিশ্বীৰ্ণ একটা চতুকোন দ্বীপ। উত্তর,দক্ষিণ হইতে ১৮ হাত ৰিজ্ঞ কৰুৰ ভাগ বস্তু কহাৰ ছইনিক লাৰ্শ কৰিলাছ। দ্বীণের চারিলার্থ व्यक्तिकाइक क स्वयंश निक्य विजातन हत्त्वकृत्र, यह महाराज्य महाजीर्थ। স্থাতাহণে বিশুর বামী সান্ত তীরে লাভ করে'। আকবরের কালে বীরবল ইরার চছ্রনিক আখিত করেন। আরংজের ইহার অনেক বিনট্ট করিবাছে भवर बीण स्केट सारवद याद्वीगगरक श्रीत क्विट जारमण निप्ताहिल। সবোৰর হইতে উত্তর ও পরে প কামে বাম্ম করিলে তিন্টা পথ মিলিত स्मया यात्र । वाटमक नाय देकबरण, यटमान नाय शृष्मरक अवः छाइटनत नाथ মরশ্বতীর আযুজন ঘাটে গিরাছে। সর্শ্বতী ওক্তরার জল নিতান্ত অংশ। লাভিজ্ঞোতা সরস্থতী অবসম্বন করিবা গখন করিলে আয়ুজাসের উভারে অভি-न्द्रं नावम यात्र । ७०१ मा चारम (इ.जानपमर बनारन क्रांक क्रांक क्रांक क्रांक मिनिया विकार हन । व्यक्तिश्वाय के काद माशुरमद मानार्थ की बवाम या है, उन्नक्त निभाव हार्जीर्व, उर्नात गमाजीर्व हेजानि कात्रका वाहे हहें उ मार्यकरतम केखन मृत्यं बंद्रमक नावास व बाहन माना ५५ कीर्य । रूमजीत्यंत मञ्चारणका व तकः विक्रवृत्ति मकावी कर क्षित्राहि । महावरत्रत केत्रत

অষালা রাভার পার্শ্বে দিলীপাগড়ের সমস্ত হিন্দুকীর্তি মন্ট করিয়া মুসলমা-নেরা মাক্রাদা প্রস্তর মদজীদ, দৈরদ জেলালী ও জমামসজীদ নির্মাণ করিয়াছে।

সরোবরের আড়াই ক্রোশ দক্ষিণ পূর্বের আমীনা বা অভিমন্তা বধের স্থান। কিছুদুর দক্ষিণে পাতারা অমন্ত পঞ্চকের আর চারি ব্রদ দেখাইয়া দেয়। সরোবরের এক মাইল দক্ষিণ পশ্চিমে কর্ণগড়। ইহার ভিত্তি নিমেণ্ডেও ছাত ও উপরে ৩২০ হাত লম্বা। ভিত্তির উচ্চতা ২৬ হাত। মধাম্বলে ৩৬ হাত গভীর ও ২৬ হাত বেষ্টন এক শুক্ষ কূপ। নিকটে কুক্ষ্মজ তীর্থ ও ভগ্ন মন্দিরাদি। ইহার ইট অতি প্রশস্ত। কুৰু:ক্ষত্রের সীমা নির্দ্ধেশ করা সহজ নহে। মহুমতে সরস্বতী ও দুশ্বতী মধ্যে ব্রহ্মাবর্ত্ত। দুশ্বতী বর্ত্তমান যাগর। মহাভারতে লিখিত আছে যে, তরস্তুক, অরস্তুক, রামহ্রদ ও সমচক্রুক মধ্যে পঞ্যোজন বিস্তীর্ণ পিতামহের উত্তর বেদী। ঝিল্সের রাজা বলেন, রামহ্রদ এমত পবিত্র স্থান অবশ্যুই আমার রাজ্য মধ্যে আছে। এইরূপে রাজা ও পাগ্রারা অমত স্থা-পন করিতে গিয়া সমস্তই গোল করিয়াছে। অরম্ভুক একমতে উত্তর পাশ্চম কোণে পিছোর ছই কোশ পশ্চিম। মতান্তরে ইহারই নাম বহর যক্ষ। ইহা সরস্বতী তটে পিছে৷ হইতে ১১ ক্রোশ এবং রত্নযক্ষ হইতে ২০ ক্রোশ পশ্চিম। রামন্ত্রদ একমতে ঝিন্দের ছই ক্রোশ নিকট অপর মতে পুষ্ঠী বা পুওরীক তীর্থের সমীপস্থ। পাঙারা রত্নয়ক্ষ বছর্যক্ষ ও ভ্কয়কাদি দ্বারা সীমা নির্দেশ করে। দর্শক এখন পাতার গোলোযোগ পরিত্যাগ করুন। কুৰুক্ষেত্ৰ এক বিজ্ঞীৰ্ণ স্থান। পূৰ্বের এই স্থানে বহু দূর ব্যাপক কুৰুজ্ঞান্ধল নামে জঙ্গল ছিল। মছাভারতে লিখিত আছে, যমুনা কুৰুক্টের মধ্য দিয়া প্রবা-হিত। জীক্ষ যে হিরম্বতী তীরে পাওবদের শিবির স্থাপন করিয়াছিলেন তাহাও কুক্লেরের মধাবতী। উত্তরে সরস্বতী ও দক্ষিণে দুশদ্বতী, ইহার মধ্যে যে কুৰুক্তেত্ৰ তাহার নাম ব্রহ্মাবর্ত্ত বিনশন প্রদেশ অর্থাৎ যেখানে সর-ষতী লুপ্ত হইয়াছে তাহার পূর্বস্থ কুরুকেত্রমধ্য দেশের অন্তত্ন ত। এবং মণ্ড ত পাঞালের সহিত সংলিপ্ত যে কুৰুক্তে তাহ। ব্রহ্মর্যি দেশ মধ্যে প্রত হয়। স্থান ভেদে পুণ্যভার ভেদ আছে। রুষ্ণ ও ভীম দেনানিবেশ করিবার কালে ধ্যা দেবিত ভীর্যন্থান সকল পরিত্যাগ কান্ধতে লাগিলেন।

ছউক ধানেশ্বর পানীপথ ও কর্ণাল আদি লইয়া এই বিস্তার্থ স্থান একটা মহাক্ষেত্র। ইহাতে কভশভ ঘটনা ঘটিয়া গিয়াছে। যজের কোলাছল, যুদ্ধের ভীমরব ও গোমায়ুর চীৎকারে কুকতবার এই মাঠ কম্পিত হইয়াছে। ছয়জ্জন ভারত আমার বলিয়া এই মাঠে উলাদ করিয়াছে, ছয়জন ভারত আমার গেল বলিয়া রোদন করিয়াছে। এই মাঠে আমাদের পূর্বর পুক্ষগণ ভার-তের জন্ম ভয়ঙ্কর যুদ্ধে প্রাণদান করিয়াছেন। আজ সেই বীরগণের অস্থির উপর দিয়া ত্রমণ করিতে মন চ≮ল হইতেছে। আহমদ সা আবদা-লীর বিক্ষে ও পাঁচ লক্ষ মহারাজীয় বীর একত্রিত হয়। এখনও যেন তবরারির ঝঞ্জা ও সদাশিবের কণ্ঠস্বর অবণ করিতেছি। এখনও যেন সদাশিব কছিতেছেন, অরে বীরগণ! অনন্তকালের জন্ম তোদের সন্তানদের দাসত্ব শৃঞ্জল শত্রুহত্তে অবলোকন কর। পরের কার্য্যের জন্ম এ বাত্র সৃষ্টি হয় নাই, লোহভার বহন জন্মও আমরা তরবারি ধারণ করি নাই। মৃত্তিকার নিম হইতে ভীম ও দ্রোণের অন্থি,উৎসাহিত করিতেছে। এ कुक्टक्ट बार्छ। इस क्या, नस चर्ग कत्र उनम् इहेरा। आमता मूख इहेगा বহুদুর ভ্রমণ করিতে লাগিলাম। এই সরস্বতীর তীরে আর্ব্যেরা প্রথমে বাস ক্রিয়াছিলেন এবং এই স্থান হইতেই রাজ্য বিভার করিয়াছিলেন। এই নদী ইহার তীরে কতবার ঋষিমুখনিসূত বেদ গান শ্রবণ করিয়াছে ও কতবার উৎসাহপূর্ণ বীরগণের মুখকান্তি দর্শন করিয়াছে। এই জলের গুণেই নিখিল বেদ অসংখ্য পুরাণ ও ভূরি দর্শন আবিভূতি হইয়াছিল। এ জল পান করিলে কি আর সে ভাব উদয় হইবে, না সে তেজ আবিভূ ত হইবে। वीत्रभूकिं जा मत्रयं वी अथन कर्म विलुख इरेटिह। या हार्डेक अरे व्याप-শের দক্ষিণ পশ্চিমে ছিসার বা ছরিয়ানার জঙ্গলে সিংছ পাওয়া যায়। এখানকার গাভী বৃহৎ, স্থুন্দর ও হুম্মবতী। এক এক বাঁড় চারি ছাত পর্যান্ত উচ্চ হয়। পানিপথের পিত্তলের বাদন মন্দ নহে।

অস্থানা, ইইতে উত্তর মুখে শিমলার পথ। কালকা পর্যান্ত ৩৮ মাইলে ভাকগাড়ী ভাড়া চারি টাকা। পথে ২১ মাইল পরে স্থাগর নদী। তদ-নন্তর কালকার নিকট উৎস' ও নিকুঞ্জ শোভিত পতিয়ালা রাজের বিখ্যাত পিঞ্জার উজ্ঞান। কালকার পর পাছাড়ের উপার নৃতন পথে ৫৬ ও প্রাচীন পথে ৪১ মাইল যোড়া ঝাঁপান ডাণ্ডী বা টোন্ধার যাওয়া যার। ঝাঁপান ভাড়া নৃত্তন পথে ১৭ ৩ প্রাচীনে ১০ টাকা। গবর্ণমেণ্টের হর্মাদি শিমলার শোভা। এখানকার পার্ব্বতীয় ও আরণা সৌন্ধ্যা অতি চমৎকার। উত্তরে হিমালয়ের উচ্চ শৃক্ষ সকল ক্রমে বর্দ্ধিত হইয়া স্থন্দর ভাবে সিব্ধিত। দন্দিণে অসিতবর্ণ গিরির মধ্যে মধ্যে গভীর খাত। দন্ধিণ পশ্চিমে স্থাতুর পাহাড়। দূরে শতদ্র সমতল ক্ষেত্রে প্রবাহিত হইতেছে। নিকটে চারিদিকেই পর্বত। তহুপরি অতি প্রকাণ্ড প্রকাণ্ড রক্ষ সকল বিশাল শীর্ধ উন্নত করিয়া হরিত শোভা বিস্তার করিয়াছে। তাহার শাখার অতি স্থন্দর পক্ষী সকল গান করিতেছে। শিমলা প্রায় ৭ হাজার ফীট উচ্চ। এখানে গ্রীম্মকালেও শীত। এবং শীতকালের খাত্তাদি গ্রীম্মে পাওয়া যায়। কিন্তু বালালীর খাত্ত অতি হুর্ম্মুলা। পূর্ব্বের ক্রায় শিমলা আর সাস্থাপ্রদান নাই। এখানকার পার্ব্বতীয় মধু অতি উৎকৃষ্ট। এখানকার পার্ব্বতীয় জ্রীলোকের। দেখিতে মন্দ নহে। পয়সা পাইলে পতি ও পিতা জ্রী কন্সা হাড়িয়া দেয়। বহু স্থামিও ইহাদের পক্ষে দোবাবহ নহে।

প্রালা হইতে কুক্লেতে বা লিমলা না গিয়া অগ্রসর হইলে রাজ্পরা ফৌনন। এখানে মোগোল সমাট দিগের প্রাসাদ চূড়া ও বুক্জ বিশিষ্ট,পাস্থুশালা ও জেলখানা আছে। এখান হইতে পতিয়ালা ২০ মাইল ছুরে থাকে। তদনন্তর ভয় সহর সরহিন্দ। তাহার পর শাল ও পশমী কাপড়ের "প্রধান স্থান লুধিয়ানা। কাশ্মীরী কারিকর আছে কিন্তু, কাশ্মীরের জুল্য শাল হয় না। নগরে বিস্তর লোদী মুসলমান থাকার লোদীয়ানা নাম। লুধিয়ানা পার হইয়া নিম্ন ও সমতল ভূমির উপর দিয়া ঘাইতে ঘাইতে ফিলোর কেলার নিকট সতলনের বিস্তৃত সেতু। গ্রীম্মকালে শতক্র ৫০০ হাত বিস্তৃত ও ৫ হাত গভীর থাকে। বর্ষায় পুলের নিকট প্রায় দেড় মাইল বিস্তৃত হয়। ভয়ন্বর গ্রাহসকুল ভীমরূপ, পূর্বে এই নদের নাম হৈমবতী ছিল। প্রাণত্যাগার্থ বিশিষ্ঠ নদীতে মাঁপ দিলে, শত ধারায় ক্রত হয় বলিয়া শতক্র নাম হইয়াছে। সেতুর কয়েক মাইল পাল্যমে শীক্ত ও ইংরেজদিগের ভয়াবহ যুক্জুমি আলিওয়াল ও সোব্রায়ন। হাদশ দিবস রক্তমাবী যুদ্ধের পর শীকের। সোব্রায়ন ভাগা করিয়া শতক্র পার

হয়। সেতুর কিছুদূর পরে সেনানিবেশ স্থান জলন্দর। জলন্দর নগরে लामीगापद धकां धकां ध मनजीन मकन ठाशामत भूक ताक्रशानीत সাক্ষা প্রদান করিতেছে। এ প্রদেশের ভূমি উর্বারণ ও মৃত্তিকার নিল্লে হুই ভিন ছাত খুঁড়িলেই জল পাওয়া যায়। জলন্দর ছইতে ভশিয়ারপুর ২৫ **श्टबाई** ১৮ श्टब्राह्मन ১৬ (महादा ১৬ कामादा २० ७ धर्मामामा इंडिनी ১৬ মাইল। একা ভাড়া সাড়ে সাভটাকা। কালারা বা নগরকোট তুর্গ এক কুত্র পর্বতাপরি সংস্থাপিত। এখানে ছিম্ফদিগের তীর্থ মছামায়ার মন্দির আছে। পুর্বের এই স্থানে বিজ্ঞর অর্থ সঞ্চিত ছিল। মছমাদ গ্রজনবী আসিয়া সেই সকল অর্থ লুগুন ও তীর্থ মন্দির ভগ্ন করিয়া যান। এ প্রদেশ পর্বতময় সত্য কিন্তু নিম্ন ছানে বিশুর ধান্ত জম্মে। কালারার ৭০ মাইল **ঈশান কোনে মনিকর্ণি তপ্তকুগু। ইহার জল এত উত্তপ্ত যে বন্ত্রে তণ্ডুল বাঁধিয়া** দিলে দেখিতে দেখিতে অন হয়। কালারার ২৫ মাইল ও বড় ব্যাস নদীর १ मारेल पृत्त ज्ञानागूकी जीर्थ। পर्वाताभित्र ज्ञानागूकी व मनित, निरानश, নানাদের মন্দির ও নির্মাল সলিলপূর্ণ কুও। জ্বালামুখীর মন্দিরের গায়ুজ ও কলস স্থবৰ্ণৰ জাজ্বামান। সভামতপে নেপালরাজ্বত প্রকাণ্ড ঘণী বুলিতেছে। দ্বারটী রেপ্যামগ্রিত। অভ্যন্তরে ৩ হাত লহা ১॥• হাত প্রস্থ ও ২ ছাত গভীর এক কুও। কুণ্ডের মধ্যে বায়ুকোণে ৪।৫ অসুল ছিদ্র হইতে ১ হাত উচ্চ অগ্নিশিখা নিৰ্গত হইতেছে। কুণ্ডের আর কয়েকটী ছিদ্র ছইতেও অগ্নিশিখা বাহির হয়। কুও ব্যতীত মন্দির ভিত্তির কোণ হইতেও একছাত অগ্নিশিখা বাহির হইতেছে। পশ্চিম ও উত্তর ভিত্তির স্থানে স্থানে ছিত্ৰ দিয়া দীপশিখার স্থায় কখন কখন অগ্নি জ্বলিয়া থাকে। স্ক্রির রায়কোণে শীতলজনপূর্ণ কুণ্ড। কুণ্ডের নাম গোরখডিকি। সভীর জিহ্বা পত্ন স্থান, এই পীঠাদি দর্শন করিয়া জলন্দর ফিরিবে বা কুলু উপ-ত্যকা দিয়া কোকসল দেখিতে যাইবে। জলন্দরের পর কপুরিতলার নিকট কিরভারপুর ফেসন। ইহার পর ১৪ মাইল দূরে ৬৬ হাত অন্তর ২৯ খণ্ড যোজিত বেরা বা বিপাশার দেতু। পাছে পুলের নিকট বালুকা কাটিয়া বেগ পরিবর্ত্তন করে এজন্ম স্রোত ঠিক পথে রাধিবার নিমিত্ত বহুদূর হইতে বাঁধা হইয়াছে। জলের, নিমে ২৮ হাত পর্যন্ত ভন্ত পোৰিত আছে।

পাশবন্ধ বশিষ্ঠ এই জলে পতিত হইয়৷ পাশহীন হন, এজস্ত নদীর নাম বিপাশা হইয়াছে ৷

বিপাশার পর ২৭ মাইল সমতল ভূমি অতিক্রম করিয়া অনুতসর। নগরের চারিদিকে প্রাচীর পথগুলি পরিষ্কৃত প্রশস্ত ও জনাকীর্ণ। বিলাতী কাপড় আ্থা দিলীর জবা চিনি শশু ও পখাদি বিক্রীত হইতেছে। শাল ও পশমী কাপড়ের কারখানার সহর পূর্ণ। অমৃতসর শীকদিগের মহা-তীর্থ। পূর্বেই ইহার নাম চক ছিল। পরে শীকগুৰু রামদাস ১৫৮১ অব্দে অমৃতসর নামে প্রকাণ্ড তীর্থ পুক্ষরিণী খাত করে। পুক্ষরিণী চতুকোণ। এক এক দিকে প্রায় ১৩৫ কদ্মা। রঞ্জিভদিংছ ১৭ ক্রোল এক থাত দ্বারা ইছাব সহিত ইরাবতী নদীর যোগ করিয়া দিয়াছেন। পুক্ষরিণী মধ্যে দ্বীপ। তমধ্যে ৩০ হাত সমচভূকোণ ২০ হাত উচ্চ ও অর্ণবর্ণে জাজুলামান গুৰু গোবিন্দের মন্দির। মন্দির মধ্যে উৎকৃষ্ট চন্দ্রাতপ, নিম্নে গুক নানকের ধর্ম পুস্তক। পাচানরাজ নিষ্ঠুর হোদেন আবদানী এই মন্দির ভগ্ন ও হুই বার গোরতে দুবিত করে। শীকেরা যবন রক্তে ধেতি করিয়া শুদ্ধ করিয়া লইয়াছে। মন্দিরের পার্শ্বন্থ জন্মের উপর হইতে নগর শোভা দেখিতে অতি স্থনর। পুষ্করিণীর অনতিদূরে একটা উৎকৃষ্ট ঘটকা-শুস্ত আছে। অমৃতসঙ্গের রামৰাগ দেখিবার যোগা। নগরের ৩ মাইল দূরে রঞ্জিত দিংছের স্থাসিদ্ধ গোবিদ্দগড়। এখন পঞ্জাব মধ্যে অমৃতসর নগর উৎকৃষ্ট বলিয়া বোধ হয়। অমৃতদর পার হইয়া লাছোরের ছাউনী মিয়ানমিয়ার। अक मिन मात्र ठानम तिरिष्ठत तिष्ठाहेट गित्रा चौत्र नाम चात्रनार्थ जनशैन, রক্ষীন, নীরস বালুকাময় এই কবর-কেত্রে সহর নির্মাণ মানস করিলেন! তদৰ্ধি ইছার উৎপত্তি ছইল। श्किमन ছইতে ৩ মাইল দুরে গির্জা, গবর্ণ-মেণ্ট ছাউস লরেন্স মণ্টগমরি হল ও পর্যাদি পুরিত লরেন্স উদ্যান দেখিবার যোগা। তাছার পর উন্থান ও হর্ম্যাদি শোভিত আনারকুলি। রাজ্ঞার-তমা আনারকুলি ভ্রম্টা হওয়ায় জীবিতাবস্থায় তাহাকে প্রোথিত করা হয়। ইংরাজেরা তাহার অন্ধি, শুম্ব নিম্নে প্রোথিত করিয়া তদীয় কবর হর্ম্যে গির্জা করিয়াছেন।

আনারকুলির পার রাভী নদীর ১ মাইল পুর্বের পঞ্জাবের রাজধাণী লাছোর। ফৌদনটী হুরন্দিত। বিপক্ষ আক্রমণ করিলে চতুর্দ্দিক রোধ করিয়া তোপ সাজান যাইতে পারে। ফেসনের ৪০০ গজ পরেই লাছো-রের দিল্লী দরজা। লাহোর অতি প্রকাণ্ড সহর, চারিদিকে স্থরক্ষিত ভিত্তি প্রায় ২০ ছাত উচ্চ। নগরের উত্তর পশ্চিমে ইরাবতীর দক্ষিণ ৭ মাইল বিশুত কেলা। কেলা মধ্যে রঞ্জিতের উৎকৃষ্ট ভগ্ন গৃহ। পার্ষে তাঁহার মার্শেল শেভিত কর্ববালয়। তদনন্তর আরংজের নির্মিত বাদসাহ মস-জীদ। এক প্রকাও দার দিয়া প্রবেশ করিলে এক বিস্তীর্ণ প্রাদনে লাল-প্রস্তর নির্মিত ও গায়ুজ্ঞত্রয় ভূষিত এই মসজীদ নয়নগোচর হয়। মসজীদের শুশু হইতে লাহোর দেখিতে অতি সুন্দর। উক্তীর খার কবর হর্মা শীকেরা শৃকররক্তে দূষিত করিয়া অশ্বশালা করিয়াছে। লাহোরের সনারা মসজীদ**্র** মন্দ নছে। নেকি। সেতুতে ইরাবতী পার হইয়া লাহোরের ২ মাইল উভরে সাহাত্রা বা জেহাজিরের কবর। প্রবেশ দ্বারের পর চারিদিকে ভিত্তি-विभिक्षे नाताकी त्रक्लृतिङ এकी मत्नाक्त डेष्ठान मुकित्गान्त इत। তমধ্যে লালপ্রস্তরে অথিত, মার্কেল লোভায় শোভিত ও চারিকোণে ৪৬ হস্ত স্তস্তবিশিষ্ট একটী স্থন্দর হর্মা। শ্বেত-মার্কেলের উপর কাল অক্ষরে জেহাজিরের নাম ও নানাস্থানে ঈখরের নাম লেখা আছে। কিছু অনেক প্রস্তর উৎশাত হওয়ার সৌন্দর্য্যের ছ্রাস হইয়াছে। অম্প দূরেই ইহার জবাব হর্মা। রাভী নদীর গাকায় এখন উত্থান প্রাচীর বিনষ্ট হইতেছে। লাহোরের ০ মাইল উত্তর পুর্বের জয়ের বাদী, সাজেহানের সলিমাবাগ। উজ্ঞানটী-অৰ্দ্ধমাইল লখা। মধ্যে ৪৫০ ফোয়ারা 🗷 তিন প্রশস্ত উচ্চ বেদী উপযুৰ্গেরি উঠিয়াছে। রঞ্জিত সিংহ ইহার মার্কেল খুলিয়া অমৃতদর শোভিত করেন। মত্থানয়ি হল ও মিউজিয়ম দেখিবার যোগ্য। রণজি-তের সময় লাহোর জীর্দ্ধিশালী ছিল। পরে তাঁহার বংশাবলীর গৃহ বিকেদে উপদ্রব আরম্ভ হইলে বহুলোক অমৃতসর ও জীনগরে পলায়ন করে। ১৮৪৬ অব্দে ছার্ডিঞ্ এই নপর অধিকার করেন। লাছোরে অমৃত-সর বর্মিত সমস্ত ভ্রব্যাদি পাত্রা যায় এবং অন্ত শত্রাদি প্রস্তুত ছইয়া থাকে ৷ পঞ্জাব অতি নীরদ ভূমি, ত্রীখে ভয়ঙ্কর ত্রীখ। জোয়ার বাজরা আদি শশ্য হয়। কিন্তু এখানকার গোধ্য অতি উৎকৃষ্ট। মধ্য এসিয়ার অনেক দ্রব্য এই প্রদেশে বিক্রীত হয়। এখনত পঞ্জাবের আচার প্রাচীন মদ্র আচারের স্থার নিন্দনীর। কর্ণ মহাভারতের মদ্রদিগের বিশেষ নিন্দা করিয়াছেন। প্রাতঃকালে কি জ্রী কি পুরুষ সকলে ছাদের উপর উঠিয়া প্রকাশ্যভাবে মল মূত্র ত্যাগ করে। কেহ কেছ শুক্ত হইলে সে গুলি বিক্রয়ত করেন। পাক পাত্রের উপরে কালি থাকুক ক্ষতি নাই, অভ্যন্তর পরিক্রত হইলেই শুদ্ধ। এক জনের চুলা বা তন্ত্ররা থাকিলে পাড়ার লোকের কটি হয়। যদি লাঠির মন্তকে কটি বাঁধা থাকে পথ দিয়া যাত মুসলমানে ম্পার্শ করিলে দোষ নাই। জ্রীলোকের স্থানপ্রথা অতি জ্বন্য। ভিন্তীর জলে দোষ নাই, লোটায় চর্ম ঠেকিলেই দোষ। এইরপ জনেক প্রথা পঞ্জাব ও রাজপুতানায় দেখা যায়। শীকেরা নথ দাড়ি রাখিয়া থাকে। নাপিতের সহিত সম্বন্ধ নাই। এখানকার ভয়ম্বর চামচিকা জ্ঞাতীয় জন্তু দেখিবার যোগ্য।

লাছেরে হইতে এক রেল মূলতান ও অপর রেল পেশোয়ারের দিকে ঝেলম গিয়াছে। পশ্চিম দক্ষিণগামী বামরেলে ডাইনে ইরাবতীর ক্ষেত্র দেখিতে দেখিতে বহু ফৌনন পার হইয়া মূলতান। পৃথিবীতে এরূপ সমতল ক্ষেত্রের উপর দিয়া এত অধিক দূর রেল অতি অস্প গিয়াছে। ২১৯ মাইল প্রায়ই সরল রেখা। কেবল বর্ষায় প্লাবিত হয় বলিয়া উপযুক্ত হানে বাঁধ বাঁধা হইয়াছে। মূলতান চক্রভাগা ইরাবতী ও বিভন্ত। মিল্রিত ত্রিমারের ও মাইল পূর্বের অবস্থিত। কিন্তু বর্ষায় এই নদী হুই হাজার হন্ত বিস্তৃত হয় ও ব্যা হইলে মূলতানে জল প্রবেশ করে। মূলতানের চারিদিকে খাজর গাছ ও উল্লান। কিন্তু গ্রীম্মকালে অতিশর গ্রীম্ম হয়। এখানকার দুর্গ অত্যন্ত দৃঢ় ছিল। দুর্গের পরিখাবিস্তৃত ও গভীর, তৎপরে ২৬ হাত উচ্চ ভিত্তি, তত্বপরি ৩৭ শৃক্ষ ছিল। ২২০০ বর্ষ পূর্বের পৃথিবীর অন্বিতীয় বীর আলেকজাণ্ডার এই নগর দখল করিয়া আপনাকে ক্তার্থ জ্ঞান করেন। ২৭ দিন অবরোধের পর ১৮৪৯ খৃঃ অক্ষে এই নগর ইংরেজদিগের হন্তগত হয়। ৪ লাক্ষ পাউণ্ড বাক্ষদ দ্বারা ইংরেজেরা ইহার ভিত্তি ভেদ করেন।

ও দেবালয়ের অনেক ভগাবশেষ আছে। উত্তরে সামতাক্রেজির কবর। ক্ষিত আছে সামৃতান্ত্রেজিকে বধ করিলে সূর্য্য তাঁহার জল্পনায় মূলতানে অধিকতর ভাপ দিতে আরম্ভ করেন। মুদতান ও সিম্বুদেশে হিং উৎপন্ন इस । शक्कारवर मर्भा वह द्वारनर जाज छेरकुके वदर वह थरमरमह जरनक कूल कल छे९भन्न इत्। विभिक्त भूति च मूलजारन दिनभी भागी ७ कार्शास्त्र व বজাদি বিশুর উৎপন্ন হয়। যুকতানে এীখের সময় ভুরি গোলাপের পাক-ড়ীর উপর স্থান চাদর বিস্তৃত করিয়া শয়ন করিতে বড় আরাম বোগ হয়। লাছোর ছইতে বামরেলে মুলতান গমন না করিলে ডাইনরেলে ইরাবতী ও চক্রভাগা পার হইয়া গুলুরাট টেসন। গুলুরাটে নামিয়া কাশ্মীরের পথ। বৈশাখ অবধিঃ কার্ত্তিক পর্যন্তে পথ বর্দশৃশ্ব থাকে। ওজরাট হইতে ৩০ মাইল দুরে ভিম্বরের সমগ্র গাড়ী ভাড়া ১১ টাকা। পরে সয়দাবাদ ১৫ মাইল, মেনিরা ১২॥০ চান্ধা সরাই ১৩০ রাজেরি রামপুর ১৪ খানামতি ১৪ বরমগালা ১০া০ পোদিয়ানা ৮ আলাবাদ সরাই ১১ হিরপুর ১২ সাপিয়ন ৮ রামু ১১ ও জীনগর বা কাশ্মীর নগর ১৮ মাইল। সাকলো ভিশ্বর হইতে ১৪খা মাইল। আড্ডা প্রতি কুলিভাড়া চারি আনা, বেহারা হয় আনা, গাগা আট আনা ও যোড়া এক টাকা। কুলি ২৫ দের, ও গাধা ছই মন বোঝাই মাত্র লইবে। চৈত্তের শেষে পীরপনজল পর্বতে অধিক বরফ দেখিলে অনেকে থানামণ্ডি ছইতে পঞ্চ ভ হাজিপীর ও উরী-मिया याता किन्छ अरे शरण जीनगत ১৮৭ माहेन स्टेरन। काम्पीत अरव-**শের কোটলি, পঞ্চ, উরি, বরমুলা দিয়া একপথ, আবতাবাদ, মুক্তঃফরাবাদ,** বরমুলা দিয়া এক পথ ও মুরী, কোহালা, বরমুলা দিয়া একপথ ইত্যাদি ভারত হইতে সর্বশুদ্ধ ছয়পথ আছে। তিবাত ও তাতার হইতে উত্তরে প্রবেশের আর হয় পথ আছে। এখন আমরা গুজরাটে উপস্থিত। গুজ-রাটে ভয়মর তীম। সকলেই জল জল করিয়া বাস্ত। কঠ ভফ, শরীর মান, সৰ্বাঞ্চ দশ্বপ্ৰায়। সুৰ্বোর কি নিৰ্দয় তাপ, বায়ুর কি অগ্নিসম বাঞ্বা,। অন্বরত আকাশে সেরিতেজ কম্পিত ও ভূমির উফখাস নির্গত ছইভেছে। জগৎ নীরব ! প্রকৃতি মৃতপ্রায়। কণে কণে যুণাবায় ও অগ্নিক লিলের স্থায় কর্মর বর্ষণ। বিকট তেজে জগৎ পরিব্যাপ্ত। চক্ষ উন্থীলন করে

কাছার সাধা? যেন শত শত তেজ স্চিকার স্বায় চক্ষে প্রবেশ করে। রদের লেশ নাই, ভূণের দম্পর্ক নাই, ছরিতের নাম নাই, শৃত্র জগতের চারিদিকে যেন ততাশন ত ত করিতেছে। নিদাকণ দিবার সকলেই সম্ভপ্ত, সকলেই এন্ত, সকলেই খন খন খাস পড়িতেছে। স্তরাং রাত্তিকালে যাত্রা করিতে হইল। যাইতে যাইতে যামিনী শেষে নিবিড় নীরদখণ্ড দিক্ প্রান্তে লম্মান। বোধ হইল যোর রৃষ্টি হইবে। বস্তুতঃ তাহা মেখ নছে। হিমালয়ের রূপ আকাশে আবির্ভ। অনতিকাল পরেই আমরা ভীম্বরে উপস্থিত। পর্বতক্রোড়ে ভীম্বর এক থানি কুক্ত আম। মর-গুলি ছোট ছোট মাটি ও প্রস্তর নির্মিত। চটার লোক যে রূপ হৃষ্ট দে পক্ষে ভীম্বরবাদীগন কিঞ্ছিৎ বেশী বই কম নহেন। ভীম্বর পার হইয়। জঙ্গলপূর্ণ পর্ব্যতের পাকে পাকে পথ উঠিয়াছে। কিছু দূর পরেই আদাতক পর্বতের উচ্চ শৃষ্ণ। শীতল স্থদেব্য সমীরণ দেবিত এই পর্স্মতশৃত্ব হইতে অবরোহণ মাত্র সয়দাবাদ আম দৃষ্টিগোচর হয়। আদা-তকের উচ্চ শৃঞ্চে দক্ষিণের ঝঞ্ঝা বারিত হওয়ায় এই স্থান হইতে এীম-মগুলের ভাব পরিবর্ত্তিও প্রায়। বায়ু অপেকাকত অভ্যন্ধ। পর্যত-গাত্রস্থ বনরাজির নিবিড্তা আর নাই। উচ্চতারও বিলক্ষণ ভিন্ন ভেদ। বনমধ্যম্ব প্রকাণ্ড প্রস্তুর সকল স্কুম্পান্ত ভাবে লক্ষিত। সয়দাবাদ ভ্যাস করিয়া পুনরায় আদাতকের ভাষ আর এক শৃঙ্গ। ইছার গাত্তে কেলুরক্ দকল বায়ু ভরে উচ্চ শির কম্পিত করিয়া শোঁ। শেল করিতেছে। এই গিরি পার হইয়া উপত্যকা মধ্যে নেদিরা আম। নেদিরা অতি মনোহর ছান। চারিদিকে গিরি সকল বিরল পাদপ সমুহে ভূষিত। উপত্যকার মধ্যে মধ্যে ছলক্ষিত ক্ষেত্র। পল্লী পার্ছে পিচ, লেরু, নাণপতি প্রভৃতি রক্ষ ভূরি ভূরি কলপ্রসব করিয়াছে। এবং নানা-রিধ পক্ষীয়ণ পত্তের অন্তরালে ৰদিয়া মধুর স্বরে কূজন করিতেছে। নৌসির। হইতে উপত্যকা ভূমি ক্রমে বিস্তৃ ত হইয়া নামা শোভার আধার হইয়াছে। কোন ছলে শত্তপূর্ণ ধাত্তকেত্র, কোথাও বা পর্বত পার্শ্ব থাকে থাকে হরিত শোভার মণ্ডিত। তাহার মধ্য দিয়া জলপ্রবাহ যুক্তামালার হায় এক এক করিতেছে। এই স্নীর্ণ উপতাক। ভূমি পার क्रेवांत कात्मके हाम्। मन्नारे ଓ नामभूत मुखिरगाहन क्रेरव । अथन मनारे-য়ের নিতান্ত মলিনাবস্থা। মোগোল সমাটেরা কাশ্বীর যাতায়াত কালে 80 बाकांब बक्क, 8 नक्त रेगक, मिछ नक्त कर्यातंत्री ७ अक नक्त छेड्डे गंदानि সহ এখানে কিয়ৎকাল বিজ্ঞান করিতেন। আমহা ক্রেমাত চলিতে লাগি-লাম, উপত্যকাও দ্রুম হইয়া নিবিড প্রবৃত্তে অন্তর্হিত ছইল। আমরাও त्रजनशीर शर्मजथाएँ धानामुकी धारम शैरु हिनाम। धानामुकीर शर পর্বত নিতান্ত উচ্চ ও তাহার প্রস্তদেশ কাননপূর্ণ। বহুকটে বনভাগ পার হইয়া ৮০০০ ফীট উচ্চে উপস্থিত। এখানকার দুখা অতি চমৎকার। নয়ন বিক্ষারিত হয়, হৃদয় প্রসারিত হয়। পর্বতের শিশরদেশ অসিতবর্ণ উরত কারলমালার ভূষিত। নিম্ন দেশে নিবিড় অরণ্যানি। সমুখে গভীর পাত ও দুরে ছুহিনরাশি। কফে উত্তরঢাল দিয়া নামিবার সময় সত্তেজ ব্নরাজির সরল মন্তক, প্রকাণ্ড প্রকাণ্ড কায়ল রক্ষ্য, দোহলামান লডা ভূৱি ভূবি বস্তুকল ও ঝাঁকে ঝাঁকে বানর দেখিয়া মন পুলকিত হয়। নিম্নে গভীর খাতদারা যেন পর্কত দিধা ছইয়াছে। তথায় বরমগালা আম। ব্রুষ্ণালার পার একটা জোতন্ত্রী বাতেরিত্যালার স্থায় বক্রভাবে পর্বত মধ্যে শিলাতটের পার্শ্ব দিয়া তীত্রবেগে প্রবাহিত হইতেছে। বারম্বার म्बद्धारा अहे ननी शांत हरेश जामका क्रमागठ छेट्ह छेठिएं नागिनाम, কিছুদুর পরে পর্বত গাতে পোদিয়ানা। পোদিয়ানার ক্ষুদ্র গৃহগুলি পর্বভগাত্তে এরপ সংলগ্ন যে, ছাদের উপর স্বেচ্ছামত পর্বতে চরিতে চ্বিতে ছাগ সকল বিচরণ করিতেছে। পোনিয়ানা পার ছইয়া পথের বিষ্ণাটতা ক্রমে বুদ্ধি হইতে লাগিল। কিছু দূর পরে পর্বতগাত লম্বভাবে हेब्रक। महत्र की हि निष्म धक गर्ब्बनकारी ननी क्लार्बान केली देन कदि-তেছে। পদে পদে খলন मस्त्र ७ मध्य मध्य दहक द्रांति, जिं मादशादन নিতান্ত ভীতমনে আন্তে আন্তে এই ভাগে আরোহণ করিয়া আমরা পীর-পঞ্জল উপস্থিত ছইলাম। পীরপঞ্জল দাগর ছইতে প্রায় দাতে এগার ভাজার ফীট উচ্চ। ইহার দক্ষিণে পর্বত সকল থাপে গাপে নিম্ন হইরা ক্ষেত্রের সহিত দুরে মিলিত। উত্তর ভাগ ক্রমে নিম্ন ছইয়া কাশ্মীরের সহি-ছিত হইরাছে। পথের উভর পার্শে বরফমণ্ডিত শিংর। পর্কতের স্থানে ছানে পুলারক। কুল গুলি এত কুন্দর যে, আমাদের সমতল ভূমিতে ভাদুর্দা উচ্ছুদ বর্ণ পাওরা মিতান্ত হর্লভ। পর্মতের উপরিছিত পূস্প মাত্তেরই রং পৃথিবীর নিম্ন ও সমতল ভাগস্থ পুংস্পার অপেক্ষা অনেক উক্ষ্বল চ পীরপঞ্জন পার হইরা আলাবাদ সরাই। ইহার চারিদিকে উচ্চ উচ্চ শৃষ। এক একটা একবারে চেদি হাজার ফীট উচ্চ হইয়াছে। পর্বান্তর অধোভাগ কারলরকে বেষ্টিত, তদুর্দ্ধ ভাগে ভূক্তক্র বেষ্টন, তদুর্দ্ধে इरे अकठा मामाय त्रकृ, उष्ट्राक्क वत्रकथित निश्वत कार्यरे छेक्किगामी रूरे-शास्त्र। उथाव दक्त नारे, रीक्ष नारे, जून नारे, नजा नारे, धानी नारे, কেবল বরক ধক ধক করিতেছে। এই সকল দেখিতে দেখিতে আমরা ক্রমে অগ্রসর ছইতে লাগিলাম। প্রকাণ্ড দেবদারু ও ভূর্ম্মবনের নিম্ন দিয়া যাইতে যাইতে পৰ্বত খাত ক্ৰমে বিস্তৃত হইয়া যে কাশ্মীর রূপে পরিণত ছইৰে তাৰার পূৰ্ব্ব লক্ষণ সকল দক্ষিত ছইতে দাগিল। কিছু দূর পরেই সাপিয়নে কাশীর সম্পূর্ণজ্পে প্রকাশিত। সাপিয়ন ছইতে কাশীরপর্যান্ত ১৫ ক্রোশ সরল পথ। পাঁচ মাইল দূর থাকিতে পথের উভয় পার্শ্বে মোগল সমাটদিগের রোপিত অতি হন্দর রক্ষরাজি। বিস্তর লোক গমন করি-তেছে। দেখিরা বোধ হইল, আমরা কোন মহানগরের সমীপবর্তী হই-তেছি। কাশ্মীর দেশের অভাব শোভা অতি মনোহর। কিবা নৰদুর্বা-দল, কিবা খ্রাম তৰতল, কিবা ভটিনীর মনোহর রূপ, ঝাঁকে ঝাঁকে ফুল ছে কত কুটিয়াছে তাহার সংখ্যা নাই, কত গোলাপ, কত জাতি, কত যুখি, কত রলের কত কুল কতরূপে কত দিক আকীর্ণ করিয়াছে। ফলভরে অবৰত গাছ ভূরি ভূরি। পদে পদে পম কুমুদ কহলার পুরিত সয়োবর। মিকুঞ্জ লভাবিতান ও বিটপীর শেষ নাই। তাহারই মধা দিয়া কুলু কুলু রবে কলোলিনী সকল প্রবাহিত। জমরের গঞ্জন, পক্ষীকুলের কলরব ত শশুণালের সাহলাদ ধনি নিরস্তর কর্ণগোচর হয়। শীত বাতীত ষড়ধারুর ক্লেদায়ক কোন ভাব নাই। যেন ঋহুরাজ সদা বিরাজ করিতেছেন। कि মাঠ, কি বন, কি আরাম যেখানে ইচ্ছা বিহার কর, শরন কর, ভোজন কর, গড়াগড়ি দেও, কি বাজে, কি দর্প, কোন হিংজ জন্তুর ভর নাই। বনে ণাছভরা আছুর, বত ছেঁড যত খাত, কাছারও কোন আপতি নাই।

নদীতে পরস্থা নামক নেকি। বোগে লোক অধিক গমনাগমন করে। নৌকা শুলি ছোট ছোট শু হুন্দর। তাছাতে বসিয়া তীরের ফল ছিঁড়িয়া পাইতে পাইতে গাছের ছায়ায় লোকে চলিয়া যায়। হিমালয় যেন কামী-রকে জনতে ধারণ করিয়। অত্যক্ত শব্দ ছারা বেক্টন করিয়া আছেন। শব্দ স্কল বরফারত ও লখমান মেঘমালায় স্থাোভিত। স্র্রোর উদয় ও অস্ত সময়ে ইহার সৌন্দর্য়া বর্নিত হইবার নয়। স্থল শোভা, জল শোভা, পর্ব্বত শোভা, বন শোভা, সর্বশোভায় কাশীর শোভান্তি। প্রকৃতি সমন্ত সৌন্দর্যা একত্রিত করিয়া যেন কান্দীরে বিক্ষিত ছইয়াছে। সামান্ত কটে শক্তাদি হয় ও বিনা ক্লেশে ফুল ফল জবো। আমরা দীর্ঘে ৫৫ ও প্রস্থে ৩০ ক্রোশ এই রূপ দেশের ঐরূপ দুখা দেখিতে দেখিতে কাশ্মীর নগার পত-ছিলাম। জীনগর বা কাশ্মীর নগর বিতস্তার উত্তর তীরে ৪ মাইল লক্ষা। ভূকল্প ভারে গৃছের অধিকাংশ ভাগ কার্ড নির্মিত কিন্তু তিন চারিতল বিশিক। লোকে গুলরেজি মেলার জন্ম ছাদের উপর মৃত্তিকা দিয়া পুষ্পা-ব্লক্ষ রোপণ করে। গ্রাক্ষ হার সকল স্থানর কার্চণচিত, শীতে শীতভয়ে স্থাম কাগজে মণ্ডিত থাকে। পথ সকল সঙ্কীর্ণ ও জনাবত। নৌকার অধিক ৰাৰহার জন্ম নদীও লোকাচ্ছন। নদীতে ভক্ত জীলোকদের স্থানের জন্ত নিজুকের ভার এক একটা কার্ছের ঘর ভানিরা থাকে। কোন উৎপাত নাই। নদীর উপর সাতটা কার্ছের সেড়। গৃহ সকল নদীর এত নিকট যে, লোকে বারান্দা হইতে জল তুলিয়া লয়। নগরের উতরত্ব ২৫০ কীট উচ্চ হরি পর্বতের কেলার উপর উঠিলে জীনগর দেখিতে অভি স্থার বোধ হয়। দক্ষিণে সেরগড় প্রধানদের বাসস্থান। দিল্লীর মোগল সমাটদের সময় কাশ্মীর অধিকতর শোভাশালী ছিল। বর্মিয়ার সাহেব শে ভ্রমাদির বর্ণন করিয়াছেন তাহা আর নাই। এখন জাহালিরের দৌৰতসরা ধান্তকেত হইয়াছে। নদীম বাগের নিতান্ত মলিনাবস্থা, কেবল ছাজার খানেক চনার রক্ষ আছে মাত্র। যে নশাত ও সালমার বাগে জেহাজির মুরজেহানের গলদেশে হন্তার্পণ করিয়া বিহার করিতেন এবং মাহাকে অর্গের নমুনা বলিতেন, আজ দে থানে ভালাবাড়ী, শুক কোরারা महोगोह कारमद क्का कीनगरदद विकास मम्बद मरनाहत देखारन

পূর্ব। বিতক্তঃ পার্শ্বে বছভূব পরম শোভা। বাদগাছের পূর্বেকাক্ত উচ্চানের निकछेरे कांगीरतत मर्वाराका गरनाहत एन नारम विनान मरतावत । আয় ১০ মাইল বিস্তৃত। পার্শের স্থানে স্থানে পর্বত। কোণা ভ কোণা ভ জলের উপর যাস ঝোপ জলল কাষ্ঠ ও তক্তা বাঁধিয়া তাহার উপর মাটি দিয়া ছারি পাঁচ হাত বিজ্ঞ স্দীর্ষ কৃত্রিম দ্বীণ করত: নোকে ভরমুজ 🔊 শরমুক্তাদি বনিয়াছে। মধ্যে কলমীর দামের মত এক একটা কাঠি পোতা। জুমার দিন এই সরোবরে নেকিবোগে, কখন বা পদ্মবনের মধ্য দিয়া, কখন ৰা আন্তর ও বেদমজত্ম কুঞ্জের নিম্ন দিয়া বিশাদীর। আহার ও গান করিতে করিতে আহলদে করিয়া বেড়ায়। দেখিলে মন ও ন্যন পরিত্প ছয়। नोकारगार्ग विज्ञां विकारित इहान नगद्रशास छेशहिल इहेरव। তথায় একদিকে ভুঁত ঝাউ চনার ও সফেদ বৃক্ষ সকল জালের প্রাস্তর্গান্ত বিস্তত। অপর্নিকে উন্নত পর্মতশৃঙ্গ সকল অর্দ্ধ আকাশ আছেন করি: রাছে। মধান্তলে বিভন্তার সলিল প্রায় তিনশত হস্ত বিজ্ত। নৌকায় আবোহণ করিয়া ডাইনদিকে দুফিপাত কর। সাহেবদের জন্ম করেকখান দ্বিতল গৃহ। নিকুঞ্জ নিম্নে ইংরেজদের বিশুর তামু। কিয়ৎকাল পরে विभिन्ति क्रायकथान उरकृष्ठे गृह। उननखर अथम राष्ट्र। राष्ट्र कार्छ-জল হইতে যত উচ্চ হইয়াছে তত অভের পরিবর্তে কার্ছের থাক ক্রমে বিস্তৃত হইয়। পরস্পরকে স্পর্শ করিয়া সেতৃরূপ হইয়াছে। প্রথমা-ৰধি চতুৰ্ব সেতু পৰ্যান্ত মৎশুধরা নিষিদ্ধ। ইছার পর বাদদিকে রাজবাদী। কতকঞ্চলি উৎকুট হর ও মধ্যন্তলে অর্থবর্ণ গমুক্ত আক অক করিভেছে। ষাটে প্রস্তারের সিঁডি। উপরে উঠিলে এক বিস্তীর্ণ গৃহ। ইছার প্রত্যেক ইঞ্জি কাফকার্যো শোক্তিত ও বিচিত্র অর্ণবর্ণে রঞ্জিত। দেখিলে বেপি ছয় यम काम्बीदात निष्परिनपूना अहे चात्महे श्रकान भाहेशाहा। बाखवानी পার হইয়া ক্রমশঃ উভয়তীরে ভূরি ভূরি গৃহ। তাহার কত শত অংশ নদীর দিকে বিস্তৃত ছইয়াছে। কাঠদগুৰারা এই সকল অংশ হার-क्षिक्त। (य मिटक मुक्किभाउ क्या यात्र करन कासकार्या वह परे।। " उनन-স্তর বিস্তর ঘাট। ভানে ছানে খোদিত প্রস্তরগণ্ড। এই ছানে নদী ত্যাগ করিয়া থালে প্রবেশ করিলে কৃতকগুলা ভয়বাসী ও এক প্রকৃতি জ্যামসজীক

লোকে বলে এককালে এই মসজীদে ৬০ ছাজার লোক একত্তিত হইত। চারিবার দম্ভ ছঙ্যার পার আ্রংজ্যের সংখ্যার করেন। এখান ছইতে পুন-রায় নদীতে আসিয়া কিছুদুর গমন করিলে মহারাজার ৰাজার, ৰাজারের সন্মুখভাগ নদীর দিকে অনারত থাকায় অতি অপূর্বে শোভা বিস্তার করিয়াছে। বাজারের পর করেকট। মন্দির ও সেতু পার হইয়া গামন করিতে করিতে নগর শেষ হইল। নগরের উত্তর পূর্বে ভাগ খালে খালে বিশিহর। কাশ্মীর রাজ্যের চারিদিক হইতে পর্বত কলর বিজ্ত হইয়া এই উপত্যকা উৎপাদন করিয়াছে। এই সকল দরীকন্দরে উপবেশন করিলে বিস্থাধর ও কিন্নরগণের জীড়াভূমি স্মৃতিপথে উদিত হয়। করেক পদ উপরে উঠিয়া পৃথিবীর অতীত বিষরণ আলোচন। করাও প্রীতিপ্রদ। তথার খাতের মুখে প্রকাণ্ড প্রকাণ্ড প্রস্তরের বাঁধ দৃষ্টিগোচর ছইবে। প্রস্তুর গুলি খাতের উভয় পার্যের পর্বতগাত্রন্থ বলিয়া বোধ হয়। কিন্ত কে আনিয়া রশৌকৃত করিল? খাতের উভয় পার্যত ঘদা। অহ্যুচ্চ হিমালয়ের এই দকল উন্নত বিভাগে কে আদিয়া খাত ঘৰণ করিল! সমস্ত হিম্পারিতেই দেখা বায় যে, যেমন পর্বত হইতে নিম্ন স্থানে নদী নামিয়া থাকে, দেইরূপ নিম্নস্থান পাইয়া খালদিয়া রাশীকৃত বরক ও নামিতে शास्त । अर बद्धक नमी जाल्या जाल्या यारेवात कात्म मसूर्य या ध्यावत পার ঠেলিয়া লইয়া যাইতে থাকে। পরে যথন কোন উঞ্চেশ প্রাপ্ত হয় তখন বরক নদীর সমুখভাগ গলির। যার। প্রস্তরগুলি বাঁধের স্থার পড়ির। থাকে। বরফ নদার গাত্র ঘর্ষণে খালের তীক্ষ্ণ অংশ সকল ক্ষ পাইয়া সমার হয়। প্রথম বাঁধের কিছু দূর পশ্চাতে আর এক বাঁধ, পরে আর এक देंथि। धरेक्रभ वक्रक नमीत छेरभामक शर्वक भशास स्थान स्थान বাঁধ দেখা যায়। এতদ্বার। বোধ ছইবে যে, দেশ ক্রমে যত উষ্ণ হইরাছে তত ৰরকেরনদী অপ্পদ্ধ আসিতেই গলিয়া গিয়াছে। এখন কাশীর পূর্বা-(भक्ता अंक देक, य दबक नमीब देश्यामक क्षे श्रवीत्वत मस्तक श्रवास्त । ৰৱফ পড়িৰে গৰিয়। যায়। এক ছানে হুই জাতীয় প্ৰস্তৱ একত্ৰীভূত मिलित वान बहेरव (य, छे छत्र नमीत मिलित छ। य वहक नमीत मिलिन इरेमां हिन। भूटर्क आत्नक इत निम्न भेशंख हिमानत वित्रदेत्रक आक्टम

ছিল। কি নেপাল, কি দারজিলিং সর্বত্ত এইরপ চিক্ত পাওরা যায়। যাহা হউক এই প্রকারে চারিদিকের বরফালাজ্ঞলে কাশীর এককালে সরোবর হইগাছিল। প্রাচীন ছিল্মপ্রস্থেত আছে কান্মীর সতীদর নামে সরোবর ছিল। কখাপ ঋষি জল নির্গত করিয়া দেশ স্থাপন করেন, পর্বাতের আর এক অংশে যে খাতের পার্শ্ব তীক্ষ্ব আছে এবং গর্ভে কয়-যুক্ত নামাজাতীয় প্রস্তর বিক্ষিপ্ত এবং জলপ্রবাহের অপরাপর লকণ (मय। याहेरव (मिक मित्रा नमी हिल। जलात (वर्ग गर्डम् धाखतशिन বিলোড়নে ক্ষ পাইয়াছে। আমাদের দেশে নদীর জল কমিয়া গেলে তীরস্থ কুটাকাটার শ্রেণী দেখিলা জানা যায় যে কতদূর রুদ্ধি হইয়াছিল। পর্বতে ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র প্রস্তারের সারি দেখিয়া জানা যাইবে যে ঐ নদীর জল কভদুর বিশু ত হইত। এইরূপ কভম্বানে কভ পরিবর্তনের চিহ্ন বছিয়াছে। কোধাও বা বিদীর্ণ পর্মত খণ্ড, কোথাও বা ভূকম্পে চালিত প্রস্তর, কোধাও বা চুৰ্ণীকৃত শিশর, কোষাও বা প্রস্তরসহ প্রকাণ্ড তুহিনপাত, কোষাও বা প্রবল বাতাায় পতিত রাশি রাশি উপলংও ইত্যাদি নানাস্থানে নানা চিচ্চ যুগ যুগান্তরীর অবস্থা সকল প্রকাশ করিতেছে। এ দেবালয় নয় যে মুসল-মানেরা চুর্ণ করিবে, অন্থণ্ড নয় যে ভস্মদাৎ করিবে। ছির নেত্রে ছিমালরের একখণ্ড শিলার উপর দৃষ্টিপাত করিলে মন চিন্তা করিতে করিতে অনাদি কালের গভীর অন্তরে প্রবেশ করিয়া বিশ্বরে ও মোহে অভিভূত হয়। নর-নারায়ণ আশ্রম, যুধিভিরের ফছিল দর্শন, ভগীরখের গলানয়ন ইত্যাদি সহ হিমালয়ের পূর্বে অবস্থা তৃতীয়খণে হিমবৎবর্ণনে প্রকাশিত হইবে।

কাশীর রাজ্যের নানাছানে নানাতীর্থ আছে। জীনগরের ৮ মজিল ব উত্তরে কাশীরের প্রধান তীর্থ অমরনাথ। বর্ষধার প্রাবণীপূর্বিমার মেলা ও দর্শন হয়। পথ অতি ছুর্গম। শেষ ৭৮ ক্রোণ অত্যন্ত বরক। এক মজিল থাকিতে লোকে উলঙ্গ বা ভূর্জপত্র কেশীণ লইয়া গমন করে। পর্কতে ছইতে শিবলিন্দের ঝায় বরক পিগুকার ছইরা গহুরে পড়ে। শুনা যায় এই গহুরর তিক্রতপর্যান্ত বিস্তৃত আছে, শুক্লাত্রয়োদশী ছইতে বরক জমিয়া ৭ দিন মধ্যে প্রক্রপ মুর্তি হয়। এবং তাহার পর কৃষ্ণশক্ষে গলিয়া অদৃশ্য হয়। তাহার ভিতর হইতে কখন কখন পায়রা বাহির হয়।

গছবর নিকটে নদীর কর্দম খেতবর্ণ। জীনগর হইতে ৩৫ মাইল দুরে ইন্ল-মাবাদ নগরের নিকট বিভক্তা ভীরে যার্ভগু স্থান বা ঘটন সাহের। এখানে যাত্রীর। কুণ্ডে আদ্ধাদি করে। পাত্তব নির্মিত এই মার্ত্ত মন্দির মুদলমা-নেরা দখল করিয়াছিল। ইহারা গভীর কুপটীকে বাবলকুপ বলে। ইহার মার্ক্তমর্চ পৃথিবীর মধ্যে এক অন্ধুত ভগ্নাবশেষ। ইয়েরোপীয় মতে দূর ছইতে এই হর্মা দেখিলে ভুরকের বালবেক ও পালমিরা, নিকটের ভগ্নাৰশেষ দেখিলে ইরানের পারদিপালিদ এবং মধাস্থ ভাগ দেখিলে একিদিগের সর্ব্বোৎকৃষ্ট পারখেনন স্মৃতিপথে উদিত হয়। ট্রিবেক বলিয়াছেন যে, ইজিপ্টের পিরামিড গঠনের গাঢ়তায় ইহার নিকট পরা-ভূত হইয়াছে। কনিংহাম মন্দিরে হিন্দুদেবমূর্ত্তি খোদিত [দেখিয়া বৌদ্ধ-দের পূর্ববর্তী বলিয়াছেন। তাঁহার মতি জ্ঞীনপরের ৩ মাইল দূরে সরো-বর মধান্ত হর্মা ও প্রাচীন হিন্দ্র্মন্দির এবং কাশ্মীর নিকটন্ত তক্তি সলিমান ২২০ পূ: খৃঃ মলে:করাজ নিমিত। জীনগরের ৬০ মাইল *দু*রে বিতন্তার উৎপত্তি ছান। স্থানটা বড় মনোরম, পর্বতের অন্তরে চারিদিকে কল পুর্পোপশোভিত ২৫০ ছাত বিস্তুত ও ১৬ ছাত গভীর নির্মলজন ও মং-স্থাদি পূর্ণ কুম্ব হইতে বিভক্তা নিগতি হইতেছে। নিকটে প্রাচীন দেব-মন্দির সম্রাটদিগের বাটীর অবশেষ, আরও অনেক কুণ্ড। জীনগরের ১৮ কোশ পুর্বে বীরান্স নগরের নিকট পর্বতোপরি ১৬ ছাত এক কুণ্ড আছে। खन। यात्र छेइ। ১১ यान एक थात्क। त्कवन देखार्छमात्म व्यञाह भून इत्र ও শুষ্ক হয়। উহার নিকট ৬ মাস শুষ্ক থাকে এ৯প আর এক কুও। লোকে বলে কুষ্কেরা জলের জন্ম ঐ কুণ্ডের আরাধনা করিলে উছার প্রত্রবণে যথেষ্ট জল হইয়া মাঠ প্লাবিত করে। আর একটুকুও কৃণর নামে খ্যাত ভরিকটে আর ছই কুগু। জীনগরের বায়ুকোণে তিনদিনের পথে ৰুসলু-আমে এক রুগু আছে। পর্বতের বরফ গলিয়া নীচে নীচে জল আসিয়া উহার মধ্যে এমত আবর্ত্ত উপস্থিত করে যে, 'দেখিলে চমৎকৃত হই:ত হয় ৷ জীনগরের ৪০ মাইল বায়ুকোণে নিছীহমা আমের নিকট স্থহোয়ম নামে এক খণ্ড ভূমি অভ্যন্ত উত্তপ্ত। কাশীরের পঞ্চন্ত্র। নগরে সপ্তদের মন্দির

ও হার্ভা ননী নার্থ প্রান্তর। , কুছু মের উৎপতি ছান পর্ণপুর নগর ও কেব-ন্যারত পুণ্য তীর্থ। তনা যায়, মাড়োয়ার ধুনের নিকট সর্পপুরিত ছজ-कां हे शर्का करता मत्या कहिक लिख्न कथन मुख ३ कथन ३ जम्ब इत्। গুণর নগরের কুণ্ডের জল ছাস হইলে তথাগ্যে এক চন্দন কার্ছের শিবলিজ দৃষ্ট হয় ৷ কাওড়া পাড়ার শব্দায়মান নিবার ও বাজোয়াল আনে শালা-মার নির্মার দেখিবার যোগ্য। তিহাদ নগরে সপ্তসরিতের সদম আছে। ইছার জল এীমে শীতদ ও শীতে হ্রখোঞ হয়। আশাবলারি স্থানে দোরিসর নামে এক কুও ও প্রস্তর-মন্দির আছে। শুনা যায়, শুক্রবারে মানের नवम निवम इहेल के कूट जन इस, त्मव मद्यावद वाला हात्न क्लूनारा कूछ এবং নিগম নগরে ৪০ বিঘা বিভীর্ণ নীলনাগ কুও। এই কুও হইতে কাশী-রের তীর্থ গ্রহ নীলমত পুরাণ উৎপন্ন হয়। কোঠার স্থানে এক কুও আছে। লেংকে বলে যে, ১১ বর্ষ রারিশ্য থাকিরা ব্রহস্পতি সিংহরাশি গত হইলে প্রতি শুক্রবারে ঐ কুতে জল দেখা যায়। মহাযু ছানের নিকট এক উপ-দ্বীপ আছে। তাহার উপরিষ্ঠিত রক্ষ বায়ুতে নড়িলে উপদ্বীপ নড়িতে थारक। कान्यीरत करलंद्र माधा मिड, नांनेशाडी, विहि, निनान, वानाम, পেতা, আছুর, আলুচা, আলুবোগারা, শাহাদানা, শকতালু, শহছুত, कर्मान ७ वांश्रदां विष् उत्था। हिमानव शास्त्र कमायून वानि चारन এ সকল ফল পাওয়া যায়। কিন্তু কাশ্মীরের গিলাস ও চন্ধার শকতালু অতি উৎকৃষ্ট। কাথীরের পামপুর পরগণায় কেশর জবে। মুল পিঁয়া-জের মতঃ পাতা কুশতুলা, রক্ষ লখে অর্দ্ধন্ত, পুষ্পা ছয়দল ভাহারই কেশরে কেশর কুসুন বা জাফরান হয়। অধানকার শাল,বাফত, পশমী কাপড়, কাগজ, কল্মদান, গিল্টি কুজা ও রূপার জিনিম উৎকৃষ্ট। কাশীরের ১৬ হাজার শাল यस इरेट वर्ष ५० হাজার শাল জয়ে। সর্বেশংকৃষ্ট শাল मूना १ महत्र है। के इहेट शांता। छे दक्क लाल अकरार्व, मधाम १।८ मारन ও অধ্য ২ মানে হয়। তিকাত দেশীয় ছাগালের পেটের বড় লোমের গোড়ার যে তুলার আয় লোম থাকে তাহাই পাকাইরা হত্ত করে। এক জন श्रु प्रकृत माणे बाह्य, ध्वकन निर्माणांत श्रुष्ठ (मागारेश प्रमु, ध्वकन বোনে ও একজন নী'চ বিষয়া দেখে এজক নিমতল পরিষ্ঠ হয়। কতক

লান বাঁপে তোলা কতক সুইকার। কডক থও খণ্ড বুনিয়া পরে যোগা एत्र अ**भारत (अक्), विकान, कुकूद्रव (साम भर्गा**स विभान करते। अथनः महात्राकाः दिलम् मिलाल निर्छह्म। अना गात्र दर्द माठे १०।৮० मन छेश्क्रके श्रमम जिसा करेराज महा का की। का बीदा व किमानराद बदाक ছানে মনাল, জोছভানা, ছৱী, বাঁধছা, এছার প্রভৃতি অতি অনর পকী পাওরা যায়। কাশীরের অধিকাংশ লোক মুদলমান। কাশীরের বাক্ষ-लिहा सुमसारमंत्र थाञ्च कहा क्की थान, मुमलमारमंत्र मरक आहात करवन, মুসলমানী দলে ব্যবহার করেন, কেবল সিমুভটছ দেশের ভায় ছিছ মুসল-মানে বিশ্বাহটা চলে না। আবার ইই:র। কলিকাভার আদিয়া বলিয়াছিলেন বে বাজান। ভটাচার হইয়াছে। এখানকার অনেক জীলোক স্থানী সতা কিন্তু মাজামোটা, ছুক্তরিত্রা, উচ্চু খল ও কলছপ্রিয়। পোদাক গলা करेट अकछे। कृष्ठि, माथाम क्रमान देशि, भनाम अकछे। जासनद कार्रि ঝোলে। কাপড় এত ঢিল যে উহার মধাদিয়া আগুনের উত্তাপ সর্বত যাইতে পারে। জীলোকের যেমন বাবহার পুক্ষদেরত তজপ। বাজারে গেলে যেন কেরীওয়ালার। ফেউ লাগে।। এত সাবধানে ক্রবা বাছির করে যেৰ ক্লৱ্যটা কত বছমূল্য। কলিকাভার অনেক অপকৃষ্ট বেলোর তথায় রত্ব বিলয়া প্রচারিত। অতথ্য সাবধান হওয়া কর্তবা। রাজার ভূমির আর ১২ লক, শালের আর ৮ লক, মাহল আদিতে অবলিক্ট টাকা হুইয়া স্থান্ত আয় কোটি টাকা আয় হয়। টাকায় এত খাদ যে কাশী-রের টাক। প্রায় গবর্ণনেটের টাকার অর্দ্ধেক। রাজা বেখাবৃত্তিরও মাত্রল मन्। काबीदात व्यक्ति कथां एवं मार्ग।

পেশোয়ার চারিদিকে পর্বত বেউত। কিন্তু ছান আশ্চর্যা উর্বরা।

এমন কি এখানকার তুলা উৎকৃষ্ট ততুল পৃথিবীতে হয় না। পোলায়ের

পক্ষে বড় উৎকৃষ্ট। একদের ততুল একদের হত শোষণ করিয়া কুলিরা

চারিলের ভূল্য হয়। পেশোয়ারের অধিবাসীগণ ক্রুর ও পার্শ্বহ পার্বকীয়গণ নিতান্ত অবিধাপী। অভগ্র একাকী যথার তথার গমন নিতান্ত নিবিদ্ধ।

এখানে বড় শীত। আকবর এই নগর নির্মাণ করিয়াছিলেন। পেশোয়ারের
পদ্ধ প্রবিত ময়াহ দকীর্ণ ধাইবর পথ। এই পথ দিয়া ভারতের যত শক্ষ

প্রবেশ করিয়ছিল। খাইবার পার হইয়া কিছু দূর পরে কাবুল নগর। কাবুল লয় ৪০ মাইল উত্তরে ৪০০ ফীট উচ্চ এক পর্যত পার্থে ২৫০ গজ উচ্চ ও
১০০ গজ বিজ্ ত এক আচ্চর্য বালুকা কের আছে। উহার উপরে উঠিলে
বা উগতে প্রবল বায় লগিলে উহার অভান্তরে বাছধনি হইতে থাকে।
নিশাকালে বা মধ্যাক্ষ সময়ে হটাৎ খৃক্ত মাঠমধ্য বাল্লখনি প্রবণ করিয়া
পথিকেরা চকিত হইয়া উঠে। কাবুল রাজ্যে সেউ, নালপাতি, খোবানি,
আক্লুর, দাড়িম, সর্কে, আঁজির, আখরোট প্রভৃতি অখাত্য ফল, উৎকৃষ্ট
জিরা, ধাণ সের ভারি লাকুলবিশিন্ট ভেড়া, দীর্ঘ লোমযুক্ত বিড়াল ও কুক্লুর
প্রভৃতি জন্ত এবং পন্তিন প্রভৃতি লীতবন্ত্র জ্বো। পূর্ব্বে এই দেশকে
কাষোজ ও গারার রাজ্যাদি কহিত। এখন কোন কোন ছানে হিন্দুক্তাতির
বাস ও কোথাও কোধাও হিন্দু ও বেদ্ধি মন্দিরের চিচ্চ পাওয়া যার। এ প্রদেশন রবাব বাত্য অতি স্থমিষ্ট।

ব্ৰে গ্ৰন।

দক্ষিণাপথ দেখিতে ইচ্ছা হইলে নৈনিতে আরোহণ করিবে। বৈনি
কলিকাতা হইতে ৫৬০ দাইল ও এলাহাবাদ হইতে ৫ মাইল। মুগের
নাড় প্রভৃতি কিছুকাল ছারী খাজাদি এই ছানে সংগ্রহ করিবে। জব্দলপুর পর্যন্ত পথে খাজ প্রায় কিছুই পাওয়া যায় না। ভীষণ বিদ্যাট্রী
পার হইতে হইবে। আর আর্যাবর্ত্তর হুখ প্রাপ্ত হইবে না। দওকারণ্য
ও পঞ্চবলির দিকে যাত্রা করিতে হুইবে। যায় বালে
দীতাসহ রছ্নাথও চঞ্চল হইলাছিলেন। নৈনির পর ছানে ছানে রজকুল, কোথাও বা হলকবিত ক্ষেত্র ও মধ্যে হুইলা ছুত্র আম। তাহার
পার জনারা ভৌনন। জনারা পায় হইলা হোট হোট পাহাড়, জন্দল,
ক্রিনপ্রস্তর, উচ্চাব্চ ভূমি ও রক্ষানি শুক্ত জনারত প্রদেশ। জনভিকাল
দ্যোই কঠোর পাহাড়ের খাত আনিরা উপস্থিত। ভূরে বিহন্ধর বিশাল
ভোনী। তদনন্তর মাণিকপুরের নিকট করেকথান শক্তক্ষেত্র। তাহার

পরেই প্ররায় বামে ও সমুখে পর্মত্যালা। কোন পর্মতের তৃণাক্ষাদিত গাত্র হইতে ছরিতশোভা নির্গত হইতেছে। কোনটা বা সৌর কিরণে উক্ল হইয়াছে: ও কোনটা কা ছারার ঘার হইয়া ত্যোময় মূর্তি ধারণ করিয়া আছে। ইহার পর মারকুণা ফৌনন। চারিদিকে পাহাড় ও জলল, এক একটা পাহাড়ের গাত্তে প্রকাণ্ড প্রস্তর থও শিথিল ছইয়া রহিয়াছে। এই ফৌদন হইতেই ৬ ক্রোশ চুরে ছামীরপুরে চিত্রকূট গমন করিতে ছয়। চিত্রকুট পর্বতের বনশোভা অতি অন্দর। এক দিকে মন্দাকিনী প্রবাহিত হইতেছে। ততীরে তীর্থ মন্দির পর্বতোপরি রাম সীতা ও লক্ষণের পাষাপ্ৰয় মূর্তি। এখানে লোকে রাম্ছাট, দেবজন্না, হনুমানধরা, ফটিকশিলা, গুপ্ত গোদাবরী, পর্বতে অনস্থয় প্রতিমা, ভরতকুণ্ড, কামাখ্যানাথ शक्ता, शरमाकी ननी, नाम श्नुमानशान, शीद श्नुमान शान, उ वाला-দিবাকর গক হনুমানস্থান আদি দর্শন করিয়া থাকে। মারকুতা পার ছইয়া যোরদর্শন গিরিপ্রাপ্ত ও বনোপশোভিত পাদদেশ সকল দৃষ্টি গোচর হইতে থাকে। এই ছানে এক প্রবৃত্ত্রেণী উপশ্যিত হইয়াছে। কিন্তু বামদিকে অনতিদূরেই আর এক শ্রেণী। দেখিতে দেখিতে গাড়ী ঐ শ্রেণীর সমিক্ট হইল। পাকে পাকে এই গিরি পার হইবার সময় বন শোভিত বিষ্কাপৃষ্ঠ, কাননপূর্ণ উপত্যকা ভূমি অদৃশ্য গিরিকন্দর ও ক্ষুদ্র কুত্র তিনি দেখিয়া নয়ন আহলাদে নৃত্য করিতে থাকে। কিয়ৎকাল পরে উচ্চস্থান মুজ্ঞান, চারিদিকে পাহাড়, অবতরণ কালে এক অনারত क्किं मरश मरश बांफ ए कमन, मग्रूर कर प्रकृति विनान मृत्र, जा हा-इंदे बांग मिशा गाड़ी छलिए आरके। क्रमान शहर कुछ क्र वन ७ इंदे এক খান ছলকবিত ক্ষেত্র, তাহার পর জিতোয়ার আম। দূরে পুন-রায় পর্বত অেণী, এ অেণীর বিকটাকার শৃক্ষ কয়েকটা পার হইয়া রেওয়া বাইবার সতনা ফেসন। সতনার এক মাইল পরে সতনা নদীর তিৰ খণ্ড ফুক্ত সৈত্ব, খামে মোচার ভায় একটা আশ্চর্যা পাহাড়, উহার উপরিভাগে সমতন ও সমুখের শ্লসমূহদার। কিঞিৎ লুকারিত। অন-ভর দাকিগতিতার প্রবেশ পথ মাহিরি, ডাইনদিকে পিরামিডের ভুল্য এক সদুত পর্বত, অহপরি একখানি গৃহ, ইহার পর চুই বিস্তীর্ণ পর্বত

শ্রেণীর মধ্যন্থিত এক ফুন্দর উপত্যকা দিয়া ক্রমাগত ৩০ মাইল রেল চলিরাছে। বামে কাইমুর শ্রেণীর শৃন্ধ সকল সমোচ্চ ও উপত্যকার দিকে
ক্রমে ঢাল হইয়াছে। দক্ষিণে বুন্দিরার শ্রেণী যেন প্রকাণ্ড বুন্সজের স্থার
বিজ্ ত রহিয়াছে। অনস্তর জকাই ক্রেনন। এখানে শৈলসমূহ অন্তর্হিত
প্রায়। কিন্তু তথাপিও বছ চুর উচ্চ ভূমি দেখিতে পাত্রগ যায়। জকাই
হইতে কটনি পর্যান্ত তিনটী পার্স্মতীয় নদী, তদনন্তর দিলিমাবাদ পথ,
পথে জন্দন অতি ক্রন্সর, মধ্যে মধ্যে থাক ছাড়া পাহাড়, এক একটা বনরাজি
হইতে হটাও উচ্চ হইয়াছে। কিছু চুরে কঠিন প্রামাইট চুর্গ প্রস্তর ও
কর্মন প্রস্তর উৎখাত করিয়া রেল চলিয়াছে। এই সকল কাটিতে বড়
কন্ট হইয়াছিল। প্রস্তর সকল বর্ষায় ভন্দপ্রবণ ও গ্রীমে ভয়ন্সর কঠিন
হইয়া উঠে। এই সকল পার হইয়া জবলপুর স্টেসন।

জবলপুর এলাহাবাদ হইতে ২২৯ মাইল ও সাগর হইতে সহস্র ফীট উচ্চ। দেটসন নিকটে পথিকদের ধর্মশালা। ভূমি বালুকাময়। চারি-দিকে শ্রেণীভঙ্গ পাহাড। পাহাডের উপরিভাগ ভূতত্ত্ব সম্বন্ধীর পঞ্জিত-দিগের নিতান্ত প্রীতিপ্রদ। কত জাতীয় প্রানাইট নিইছ হরনব্রেড 🕏 ক্ষিটোন পড়িয়া রহিয়াছে। কোথাও এসব ও রত্নজাতীয় লোহিতাদি বর্ণের ভূরি ভূরি প্রস্তর, কোণাত পুরাকালিক হস্ত হাড় প্রস্তরে পরিণত ও কোথাও বা আদিম অসভাদিগের চকমকীর প্রস্তর নির্মিত অস্ত্র। পুর একটা প্রকাণ্ড সহর। ইহার মহাজনপদী অতি প্রশস্ত। প্রকাণ্ড দার দিয়া প্রবেশ মাত্র পরিষ্কৃত পথপ্রান্তে সক্ষীভূত নানা ক্রব্য দেখিতে অতি স্বন্দর। নিকটে বিপণি মধ্যে অষ্টকোণ পর্দা বেফিত উৎকৃষ্ট কূপ কিয়দূরে গির্জা, তন্নিকটে শিম্পবিছালয়। তদনন্তর ঠগজাতীয় কয়েদী ও তাছাদের পরস্পর বিবাহোৎপর মহ্যাদিগের কার্পেট ভায়ু ও সভরঞ বুনিবার স্থান। তাহার পর লাকার কারখানা। সূমান সাহেবের যত্নে এই নগর শোভাশালী হয়। তিনিই ইহার ময়দানে বংশরক রোপিত করিয়া যান। সহরের বাহিরে দাক্ষিণাতোর রাস্তার দিকে কতক-গুলি পাৰাড় কাটিয়া উঠিয়াছে ও গলিতেছে। সমীপের উদ্ভান মৰু নছে। ছাউনী ভ নাটাশালার নিকট দিয়া-নাগপুরের পথ। জব্দ ল-

প্রের ৪ মাইল ফুরে নর্মন। তথায় গো যান ব। অথ যানে যাইতে পথের বাদদিকে উচ্চ উচ্চ প্রিভুগুঞ্জ। ডাইনদিকের আনাইট পর্বভোপরি একটী কুত্র মন্দির। আরও কিছু দুর পরে আর কডকগুলি মন্দির, ৰুপ্ত অভি অন্ধর। পথ পাকে পাকে পাছাডের মধা দিয়া চলিরাছে। তাহার পর গোরারিহাটে পর্বতপ্রান্তে নর্মা নদী। তীর উচ্চ, জল পরিষ্ঠ ও শ্রোভ ভীব্র। বিস্তার কাল বিশেষ ১০০ হইতে ৮০০ হস্ত হয়। যাটের পার্যে মঞ্চার বন হইতে আনীত কাঠ ও তীর্থ মন্দির। নর্মদার বিযোজন পুণ্যক্ষেত্র। মর্মদার তীর পরীক্ষা করিলে বোধ হইবে र व के बाहीना नमी मूर्व्य जारशत उपभार विमक्षे श्रेताहिन। जारात পর পাংশুর উপর দিয়া পুনরার প্রবাহিত হইয়াছে। জ্বলপুরের পূর্বে অমরকটকে নর্মদা ও শোণের উৎপত্তি ছান। ঐ ছান ছইতে শিব बिश्रंत मध कतिशाष्ट्रित्सन । भिरवत बिश्रंत मध कताह ठिक इडेक वर्ष हेश्ट्राज-দিশের আয়ের গিরির উপত্রবই ঠিক হউক এখানে এক কালে ভীষণ पारंगत उभाव पंतिकां हिन। नर्मात आ छाक चानहे महाजीर्थ। कमत কটক ছইতে সাগর পর্যান্ত দশকোটিতীর্থ আছে। নর্মদার তীরে যেখানে मियात वाननिक निव था थ इड्या गाया ()।

জন্মপশুরের ১০ মাইল দন্দিণে খেতবর্ণ মার্কেল পাছাড়। গোরারিঘাট শার হইলা নর্মদা চূর্ণ শুস্তরের মধ্য দিয়া মর মর শন্দ করিতে করিতে
ধূলানধারের নিকটবর্তী হইলাছে। তথায় ইহার প্রপাত দেখিতে অতি
আন্দর্যা। তদনন্তর ২০০ হস্ত হইতে প্রকরারে ৪০ হাত হ্রন্ম হইলা পর্বত বিদীর্ণ করত ১ জোল অতি তীব্রবেশে প্রবাহিত হইলাছে। তাহার পরই
আন্দর্যা মার্কেল পাহাড় মধ্যে প্রবিষ্ট। মার্কেল পাহাড় নর্মদার ত্বই পার্শ্বে প্রাচীরের ন্যায় ৪০০০ হাত উচ্চ হইলছে। প্রধানে নদী নিতান্ত

⁽১) মানঃ পুণাজলে কাল্যে নমঃ সাগরগামিন। নমক্তে পাপশাধনি নহা পেৰি বরান্দে। নহোজতে খবিগণ নিজ সেবিতে। নগোজতে লক্ষর কেছ নিস্তে। নংগাজতে ধর্মভূতাং বরঞ্চান। নগোজতে সর্বা পারিত্র পাকনে। ইতি ক্ষানকালে গুরু।

অপ্রশন্ত ও অতান্ত গভীর। প্রস্তারের আভার জল কোথাও বা সবুজ, কোথাও বা নীলাভ ও কোধাও বা নিতান্ত শুক্র। পর্ব্বতের প্রতিবিশ্ব পতিত হওয়াতে উৰ্দ্ধ ও অধোভাগে মুই পৰ্বত দুফ হইতেছে। নিকটের অপেকাৰুত কুত্ৰ পর্ব্বতে ছিম্মদিশের দেব মন্দির ও আরংজেব চূর্নিত মুর্ক্তি। পর্ববত নিম্নে বেছরা ঘাটে রাদের সময় মেল। হইয়া থাকে। ভাইন তীরের অপ্প দুরে প্রানাইট পাছাড় ভূরিরূপে উত্থিত হইয়াছে। ৫ মাইল গমন করিলে পর পর্বতো-পরি গোন্দরাজের বাটী, একটীর নাম মদন মহল। মদন মহলের প্রাঞ্জন ছইতে সৌধমালা শোভিত জবলপুর দূরে লক্ষিত হয় । পর্বতের সারিখ্যে করেকটা পুক্ষরিণী ও অসংখ্য আম বন। অনতি দূরে কুরশ্বেল নামক স্থান প্রাচীন ত্রিপুরপুর নগর। ইহার সমস্তই ভূমিমধ্যে প্রোধিত কেবল ছুইটা ক্তম্ম বর্ত্তমান আছে। কেছে বলে যে মুদলমানের। রাণী ত্র্গাবতীকে ছরণ করিবার জন্ম নগর আক্রমণ করে। রাণী বিষপানে প্রাণ ভাগে করেন। মুদলমানেরা নগরে অগ্নিপ্রদান ও অনেক দেবমু উ চূর্ণ করে। ভাছারা যে দকল আমু খাইয়। ফেলিয়াছিল তাহাতেই আমু বন হইয়াছে। কিন্তু অনেকে কছেন যে, শতবর্ষ হইল নগর ভূমিকম্পে ভূমিসাৎ হইয়াছে। ৫০০ বর্ষ পূর্বের এখানে স্থপতি কার্যোর বিলক্ষণ প্রায়ন্তাব ছিল। বৈতুল নামক স্থানে এক উচ্চ মন্দিরের ছাদ এত বড় বড় পাথর তুলিয়া গাঁথা হইরাছে যে, বর্ত্তথান কালে বস্তু যোগেও তাহ। তোলা অসম্ভব। এই স্থানের খোদিত প্রস্তর লইয়া এখন ২০ মাইল পর্যান্ত লোকের কার্যা ও রেলওয়ের ্বিক্তর উপকার ছইতেছে। কিছু দিন গত ছইল এখানে কতকগুলি প্রাচীন মুদ্রা ও উৎক্রট খোদা দরজা সকল উত্থিত হইয়াছে।

জক্ষনপুরের পর নর্মদার সেতু পার হইয়। ত্রন্ত দক্ষিণাপথে প্রবেশ করিবে। পথে মীরগঞ্জ ঊেদনে অবতরণ করিলে মার্ক্সেল পাছাড় সমীপবর্তী হয়। নর্মদার নিকট বিদ্যোর স্ফীত ভাব হক্ষিৎ অদৃশ্য হওয়াতে নর্মদা বিদ্যোর ক্রোড় দিয়া প্রবিহিত। কিন্তু নর্মদা পার হইয়া পুনরার ভারত স্ফীত হইয়াছে। জব্ফনপুর হইতে থাণ্ডায়া পর্যন্ত রেল প্রায় নর্মদার সমীপবর্তী হইয়া চলিয়াছে। জব্ফনপুর পার হইয়া বর্ধি দৃশ্য সকল আরণা সৌন্দর্ব্যে শোভিত। অধিবাদীর সংখ্যা এ প্রাদেশে নিতান্ত অস্প।

ভেদন গুলি কুত্র ও লভাজালে জড়িত। গাড়ী ও আর্থাবর্তের গাড়ী তুলা স্থপ্রদ্ধ নছে। জি, আই, পি, রেলতরের ভৌদনে জল পাওয়া ভার। ভৌদন মাই কি কি মহারালীয়। মাথায় একটা গাড়ীর চাকার মত প্রকাণ্ড পাক। পারে একখান ময়লা ধুতি। গারে একটা পাতলা শাদা চাপকান। পারে এক জোড়া চটাকুতা। কাণ হুটী মাকড়ী দেওয়া। কপালে একটা লালটিপ, বলে—'' টিকিট বিভাও,,। ভৌদনের বাহিরে বাষের উৎপাত। রেলত্ত্রের টাপাল গাড়ী অর্থাৎ মেল টেন বাতীত বাইবার বড় অসুবিধা। অপর গাড়ীর রাত্রি হইলেই বিশ্রাম। এজন্ম অজ্ঞ পথিকের অজ্ঞানিত স্থানে অবতরণ করিয়া অপকৃষ্ট ধর্মালালায় বাস বা নিকৃষ্ট দোকানে রাত্রি বাপন মরণতুলা। যদি ছুই আনায় এক খানা খাটিয়া পাওয়া যায় তবে মহা সোভাগা। খাজের মধ্যে "দক্ষিণদেশতারিণী লঙ্কা, ছাড়ু, চুড়া, 'চুরমুরা পুরী, পেড়া ও তুর্গন্ধ জিলিপি ছুই এক খান মিলিলে ইখরকে ধন্মবাদ দেওয়া উচিত। দাক্ষিণাতা ভ্রমণে পথিকের সময়মত খাড়া ও জল সংগ্রন্থ করিয়া রাখা কর্ত্বা। তৃতীয়বার ভ্রমণে দেখিলাম ক্রমে

জবলপুর হইতে ৬২ মাইল দূরে কুলেরী। এখান ২ইতে লোকে সাগর
নগর যায়। কুরেলীর পর শৃকর নদী পার হইরা গাড়াওয়ার। ফেসন।
তাহার পর পাঁচমারীর ফেসন পাপারিয়া। তদনন্তর সোহাগপুরে অগন
নদী পার। কিছু দূর পরে ত্সলাবাদের ফেসন ইটারছি। নর্মদার বামতটে প্রাচীন ত্সলাবাদ নগর। ইহার পর হর্দা। এই জেলার সিদ্ধিয়া
ধার ও হোলকার রাজ্য মিলিত। অনন্তর জোয়ারা ফেসনে মালব দেশত্ত
জোয়ারের নবাবের রাজ্যে প্রবেশ ও পিরিয়া নদী পার। তদনন্তর জব্বলপুরের ২৬৪ মাইল দূরে থপ্রোয়া ফেসন। এই ছান সাতপুর ও মহাদেব
পাহাড়ের মধ্যবর্তী সমতল ক্ষেত্রে অবন্থিত। এখানে খাত্যাদি কতক
কতক পার্রা যার। সময়ে সময়ে দেশীয় আত্রব্র পাওয়া গিয়া থাকে। এই
ছান হইতে হোলকারের রাজধানী ইন্দোর উজ্জ্বিনী ও ওঁকারেশ্বর আদি
দেখিতে ইক্ষা হইলে বস্বেগামী রেল ছাড়িয়া ডাইনিদিকের হোলকার ফেট্রেলে তারোহণ করিবে। এই পথে পার্বতীয় দৃশ্য অতি স্থান ও দর্শবের

নিডান্ত প্রীতিপ্রদ। নর্মদার লীলাও চমৎকার। মরটাকা ফেসন পঞ্জেই नर्यमा शात । जमनकातीत रेण्डा बरेल निकार नर्यमात जारेनजार वामन মহালিকের এক লিক হঞাসিজ, উকারেশর শিবও নিকটবর্তী, অভাব শোভা দেখিয়া পরম তৃপ্তি লাভ করিবেন। ভঁকারেশ্বর মন্দির নিম্নে উৎ-কৃষ্ট ঘাট ও অভূরে পর্বতোপরি মাদ্ধাতা ও মুচুকুন্দের কেলা। কেলা মধ্যে ও বাহিত্রে অনেক দূরপর্যান্ত ব্যাপিয়া বিভর খাষা চৌকাঠ ও দেবমুর্ভি পড়িয়া রহিয়াছে। এই ছানের অপ্প দূর পশ্চিমে পণ্য-ক্সব্য-পূর্ণ মওলে-শ্বর নগর। ইহার পাঁচ মাইল পশ্চিমে নর্মদার ডাইন তটে প্রপ্রাসদ মাহিত্মতী পুরী, চুলি মহেশ্বর বা সহঅবাত্কা বস্তি। এই স্থানে সহঅবাত্ কার্তবীর্যার্চ্ছুনের রাজধানী ছিল। ইহারই অনতি দূরে জমদগ্রির আশুম ছিল। ইছারই নিকটে চাবন, শর্যাতির যজ্ঞ করিয়া ইন্দ্রের বাত্ত শুভিত করেন। এখন মাহিল্বতী পুরীতে অহল্যাবাইয়ের কেল্লা, তল্পধ্যে তাঁহার বাসবাটী ও নর্মদার সুত্রন্দর ঘাট দেথিবার ্যোগ্য। এসকল দেখিবার ইচ্ছা ना इहेटन मत्रहोका इहेट जिनानित्वन शादन मो छिन्दन हिनाम बाहेरत। মে পার হইয়া কিছু দূর পরে ঢালু ময়দান মধ্যে বৃক্ষ-বেষ্টিত হোলকারের রাজধানী ইন্দোর নগর। রাজার বাটী দেখিতে একরূপ মন্দ নছে, কিন্তু বেরূপ নাম সেরূপ শোভা নাই। সহরে অধিকাংশই কাঠের কার্যা। মহারাজার জমীর আয় ২২ লক্ষ টাকা। এখানে বিশুর আফিম হয়। খিচুড়ির উপর থালিভরা ছত ও বাটী হইলে এখানকার ব্রাক্ষণেরা বড় খুসী ছইয়া ভোজন করেন।

ইন্দোর পার হইরা কয়েক ফেনন পরেই আমরা স্থাবিখাত উজ্জানী নগার প্রবেশ করিলাম, এই স্থানে বিন্দ অন্তবিন্দের রাজধানী ছিল। বর্তমান উজ্জানী নগার প্রস্তার প্রাচীরে বেফিত, মধ্যে মধ্যে চূড়া, বেড় প্রার ও মাইল। সহরে বিস্তর অধিবাদী, পথ সকল পাযাণময়, হরগুলি দ্বিতল, নিম্নতল প্রস্তার নির্মিত বিস্ত উপরতলে অধিকাংশই কাঠের কার্জা। এখামে চারি মদজীদ ও বিস্তর মন্দির আছে। যবন বিন্দ্ত মহাকালের মন্দির পুন্রার অহলাবাই কর্তৃক শোভিত হইয়াছে। সহরের বাহিরে অক্ষপাতে কৃষ্ণমন্দির। লোকে বলে এখানে কৃষ্ণ বলদের প্রথম পাঠাভ্যাদ করেন।

নিকটে এবর সিড়িবিশিষ্ট একটা উত্তম পুক্রিনী। ইহার কিরৎভাগ আর্ড করিয়া প্রায় ৫৪ বর্ষ পূর্বের রজরায় আপা ছই মন্দির নির্মাণ করিয়া-ছেবঃ ডাইন দিকের মন্দিরে খেত-মার্কেল নির্মিত রাম সীতা ও লক্ষণ विक्षां । वारमञ्ज मिन्द्र कृष-शाख्द कृष ७ (वंड-माटर्करन त्राधामृर्डि। ৰুৰ্জি ঞলি অতি হুণ ঠিত। এখানকার বহৰাটী বেন্ডিত নিষ্কিয়ার প্রাদাদ সম্পূর্ণ গান্তীয় হীন। কেবল নিকটছ অতি প্রাচীন ভুগদারের গঠন শ্রপাদী দেখিবার যোগ্য। সহরের পূর্কদিকে এক উচ্চ পর্বতাপরি মহা-দেবের মন্দির ও যোগা দেহিদ ফকীরের কবর। ইহার উপরে উঠিয়া চারিদিক দেখিতে অতি হুন্দর। 'আমরা প্রথমে উত্তরদিকে দৃষ্টিপাত করিলাম। ছই জ্রোশ দূরে শিপার দ্বীপ মধ্যে কালিয়দহ নামক এক প্রাচীন প্রাদাদ। স্পষ্টভাবে ছুইটী ফুলর সমচতুকোণ বাটী দূরে লক্ষিত হয়। নিম্নভাগ অটবি ভাগে বিভক্ত ও উপরিভাগে গজয়ু শোভিত। শিপ্রার এক শাখার উপর দিয়া যাইবার সেতু ইছিয়াছে। সেতু নিম্নে কল্পেকট। যুদ্ধ দেখা যায়। এই ছানে শিপ্ৰা ছপতির কেশিলে নানাদীপ উৎপাদন করত আছা! কি স্থানজণে প্রস্তারের উপর দিয়া প্রবাহিত হইতেছে। পশ্চিমদিকে দুক্তিপাত করিয়া দেখি, ফল পুষ্প শোভিত শিলাতটে অর্পোয়া বিভীর্ণ ভৈঁরোগড় মধ্যে এক প্রাচীন মন্দির। কিয়ন্ত্র অভচিত্তানবিশ ও রানাখাঁর উত্থান। একটাতে শিপ্পের ও অপুরতীতে অভাবের সেন্দির্গ দেখা যায়। তিন মাইল দূরে আনাইট পৰ্বত দ্বারা দৃষ্টি সংকর হইয়া পড়ে। তদনতর দক্ষিণ পশ্চিমে দুষ্টি-পাত কর। ছই ঘাইল বিভীর্ণ মিকুঞ্জ শেষে চিন্তামণি নামক গণেশের मिक्ति । मगरत्र मिक्ति विधा। धरे निर्क व्याकरत्वत कालीन देख-शिबीत स्वानात कम्भूतित कम्भिरह ताकात मानमस्ति। भूर्यमित भण-প্রিত সমজন ক্ষেত্র মধ্যে এক মোচাত্রের কার পর্বত। তরিকটে এক ছদ ও দিভিয়ার ছবিণ পুরিত রমনা। এইনপে নৃতন উজ্জানী দেশিয়া আম্বা বিক্রমাদিতোর প্রাচীন উচ্ছায়নীর দিকে অপ্রাসর হইলাম। এই ল্যার কোন দৈবী উৎপাতে ভন্মাক্ষাদিত হইয়া ভূগর্ডমধ্যে নিহিত আছে। ১০া১২ ছাত তুমি খনন করিলে সম্পূর্ণ প্রাচীর, প্রতর, শুত্র ওকঠিন

कार्कान भा अप्रा यात । विक्रमानित्जात काटन डेव्बानी यक्षे हिन अर्थने उ ভাছা দেখিলে দেখা যায়। এক ছান খনন করাতে প্রস্তুর স্তস্তু, পচাগো-श्य ७ कुछकात (माकात्मद्र जनामि भाउरा गिराहि। अहे (थाविक नम রের পার্থ দিয়া এক প্রকাশ্ত খাত আছে। দৈবী উৎপাতের প্রভাবে শিপ্রা এ খাত ভাগ করিয়া নৃতন পথে প্রবাহিত ছইতেছে। শিপার বর্জনান বেগে প্রাচীন প্রোথিত উজ্জারনীর কিয়দংশ ভালিয়া যাওয়াতে নিম্নে একটা প্রকাও বাটা বাহির হইয়াছে। দরজার সমুখে উত্তর হইতে দক্ষিণ ও পূর্ব হইতে পশ্চিম ছই থাক গুৱ। দক্ষিণমূখে প্রবেশ করিলে ছই বাটী একটী সদর ং একটী অন্তঃপুর। অন্তঃপুরে প্রস্তর স্তম্ভ ও প্রস্তারের কড়ি এবং পশ্চিমদিকে এক ত্রিকোণাকার গহরর বা হুড়ম। বামে আর হুই ষর প্রায়৬ হাত বিস্তৃত। দক্ষিণে মৃত্তিকাপুরিত আর এক দরজা। সন্ন্যাসীরা বলে যে, কালী ও ছরিদার ঘাইবার এখান ছইতে দুই কুড়ল ছিল। ल्यारक श्वास्त्रां कथरम शब्द विनाश वन्न कता इहेग्राह। এই यहाक (कह ভর্তৃহরির বাটী ও কেছ বা গমর্বসেনের গুছা বলিয়া থাকে। কালিদানের বর্নিত সেই উজ্বিনীর আজ এইরূপ দশা। আজ্ঞ অবস্তী পার্শ্বে পিক ভাকিয়া থাকে. আজও দেই বদন্ত, দেই বর্ধা উদিত হয়। কিন্তু ঘেষদ্বতের দে সরদ লেখনী আজ কোণায়? যাহাইউক এখন বর্তমান উল্লেরিনীতে দাকিণাতোর অপরাপর মুদলমানের ভাষ বোরা বা ইসাইল দল্ভ মুদল-মান বাস করে। এখানকার সাধারণ লোকে বাজরা শতের কটী ধার। উৰ্জ্বানীর মৃত্তিকা বর্ষায় যেমন কর্মশক্ত, এীখে তজপ কঠিন হয় ও বিশ্বত काहीन काटि। अथाटन वृत्रहानशूद्वत जामनानी जानूत उ कनमा छेए-কুষ্ট। উক্সরিনী বা অবস্তি হিন্দ্রদিণের মহাতীর্থ ও মহাকালের আবাসস্থান। भूगात्कव) (योजन। वर्णात्न ৮৪ मिक निक, ৮ रेड्जर, ३३ कम, ३६ जानिडा, ७ विनामक ७ २८ मां ए आहिन। धाम ५५० वर्ष गठ इरेन अथारन निनी-बाज जानगम जानक विधाद छा करतन। निधा, भववणी, नवमनी क নীলগৰা দলমে স্থান অত্যন্ত কলপ্ৰদ।

मानटर श्रादम क्रिया और नकन मिरिड देव्हा ने हरेटन पाटिशा हरेड ब्रायगामी जिल्ल हामानी स्मिनन याहेटन। जम्म मृद्य बागनिटक আশীরগড় কেলা। উত্তর ভারত হইতে দক্ষিণ ভারত প্রবেশের মুখে সাতপুরার ৭৫০ ফীট উচ্চ শীর্ষোপরি এই স্থদূচ হুর্গ সংস্থাপিত। একে অভাৰতঃ হৰ্মম তাহাতে আবার প্রাচীরাদি বেন্টিত। পর্বত গাত্র ছান ছানে ৫০ হইতে ৮০ হাত পৰ্যন্ত লম্বভাবে উন্নত হইয়াছে। এবং তাহাও এত চাঁচা যে, কোনদিকে কোন জপে উঠিবার উপায় নাই। কেবল হুইটী মাত্র প্রবৈশের পথ আছে। এ পণ সিন্ধিয়ার প্রকাণ্ড কামান ছার। উত্তম-রপ সুরকিত। বুরহানপুরের বাজার ৭ কোশ দূর হইলেও লোকে বলে একটার গোলা বুরছানপুর পর্যান্ত যায়। আদীর গড়কে কেছ কেছ অশ্বশামাগড় কহিয়া থাকে এবং লোকে বলে যে, সন্ধাকালে অশ্বশামা মন্তকের বেদনা নিবারণ জন্ম তৈলভিক্ষা করেন। চতুর্দ্দশ শতাব্দীতে এই হুর্গের বড় প্রতাপ ছিল। ১৮১৯ অব্দে জেনেরেল ডভটন কর্তৃক অধিকৃত হওনবিধি ইহা ইংরেজদিগের হত্তে আছে। তুর্গ হইতে চতুঃপার্শ্ব-বভী জন্মারত ভূমি দেখিতে বড় স্থলর। পূর্বে খান্দেশে মহারাষ্ট্র সমষ্যে এত কেলা ছিল যে একস্থানে দণ্ডায়মান ছইয়া এক দিনের পথে বিশ কেলা গণা যহিত। দহার আত্রয় ছওয়াতে ব্রিটিশ গ্রণ্মেট সমস্ত ভর্ম করির টেব।

এতদনন্তর খান্দেশের প্রাচীন রাজধানী ব্রহানপুর। ১৪১৪ অবদ এই নগার সংখাপিত হয়, এবং ১৫৯৯ অবদ আকবর সত্রাটের অধীনস্থ হল্মার পূর্বে ইহা অত্যন্ত প্রতাপশালী ছিল। এখন সিদ্ধিয়ার রাজ্যের অন্তর্ভুত। ইহার চতুর্দ্ধিকে প্রাচীর মধ্যে প্রায় তিনহাজার বোরা মুসল-নান বাস করে। তাপী বা তাপ্তীর ডাইন তটে ৪৬ হাত উচ্চ আকবরের লালকেলা। এখানে আরংজেব নির্মিত মসজীদ ও আকবরকালীন ভয় হর্মাদি দেখিবার যোগ্য। এখানকার স্তর্বস্ত্র, রেশমী কুল ও জরীর কাজ থান্দেশ ও মালবে প্রসিদ্ধা।

বুরহানপুর ছাড়িয়া নিষোরার পর তাপীনদী পার। তদনস্তর প্রকাণ্ড ভোছায়ল টেসন। এই ছান ছইতে বামরেলে লোক নাগপুর যায়। নাগ-পুর বা বিদর্ভরাজ্যে তাপীর প্রঅবণ, গোন্দাবাস ভয়ত্বক গিরিসমূহ, অম রা- ৰতী, ইলিচপুর, নাগপুর, বজ্ঞেরস্থান, কামটা প্রভৃতি দর্শনগোগ্য। কিছু স্থান নীরদ, কর্কণ ও দৃষ্টির অপ্রীতিকর, ভাষাও অপত্রুক্ট।

নাগপুর দর্শনে অনিক্ছা হইলে বছোগামী রেলে পাচোরা টেনন যাইবে।
এই ছান হইতে অনেকে আজাটার-গুহা আরালাবাদ ও ইলোরার গুহা
দর্শন করিয়া থাকে। পাচোরার মামলভদারের নিকট প্রাপ্ত গোষানে ৮
ঘণ্টার ৩০ মাইল, পরে কর্দাপুর পাঙরা যায়। এখানে একজন দর্শক সঙ্গে
করিয়া নিকটছ আজাণ্টা বা অজস্তী পর্বত গুহা দর্শন করিবে। খান্দেশের দক্ষিণ সীমায় চান্দর নামে এই পর্বত শ্রেণী তাপ্তী ও গোদাবরীর
ক্ষেত্র পৃথক করিতেছে। অজস্তী প্রামের ৬ মাইল দূরন্থিত এই সকল
গুহার খোদকারী এত চমৎকার যে এরপ খোদকারীযুক্ত গুহা অতি
হর্লত। ২৯ গুহার মধ্যে ১, ২, ৬, ৯, ১০, ১১, ১৬, ১৭, ১৯, ও ২০ নম্বরের
গুহার প্রাচীন চিত্রের কিছু কিছু অবশেষ দেখা যায়। যৎকালে ভারতে
বেজিধর্ম প্রবল ছিল, এই সকল চিত্রে তৎকালীন লোকের পরিক্ছদ কর্ষ্যি ও
অবস্থাদি চিত্রিত দেখিয়া মন গাডীর কালের মধ্যে নিম্ম হয়। আহা!
ছই দহস্রবর্ষ পূর্বে ভারতের যে ভার ছিল, আজ তাছাই দর্শন করিতেছি।

কর্দাপুর হইতে সিহলদ পলী ও কুলমারী পার হইরা আরাশাবাদ নগর।
পূর্বে আরালাবাদ এ প্রদেশের রাজধানী ছিল, এখন তাছার ভয়াবছা।
নগরের জলের জন্ম পাহাড় কাটা প্রকাণ্ড প্রভাপালী ও কোরারা
সকল এখনও বিজ্ঞমান রহিরাছে। একদিকে প্রশস্ত বাজার ও সম্রাট
আরংজেবের ভয় গৃহ। জনতিদুরে আরংজেব কন্সা রাবিয়া হ্রানীর মার্বেল
কবর। এটা তাজমহলের অপকৃষ্ট জন্নকরণ মাত্র। এখান হইতে ৭
মাইল দুরে প্রপ্রসিদ্ধ দেবগিরি বা দেলিতাবাদের কেলা। ৫০০ কীট উচ্চ
এক প্রকাণ্ড পাহাড়ের অধাভাগ ১২০ কীট পর্যান্ত চাঁচিয়া চারিদিকে ঠিক
প্রাচীরের মত সরল করা হইরাছে। কোন দিকে কোনক্রণে উঠিবার
উপার নাই। ইহারই চারিদিকে ভয়ন্বর গড়খাই তাহার পর প্রাচীর,
তাহার পর প্ররায় গড়খাই, তাহার পর প্ররায় প্রাচীর। এই তিন
প্রাচীর ও গড়খাই অতিক্রম করিয়া পাহাড়ের নিকটবর্তী হইবার অতি
সক্ষীণ অধচ দৃঢ়রূপে রক্ষিত একটী মাত্র সেড় আছে। সেড় দিরা গেলে

পর্কাত মধ্যে একটা মাত্র লোকের প্রবেশ যোগা এক প্রড়ক আছে। পর্কাতর অভান্তরে পাত অক্কার্যয়, ঐ হুড়ক দিয়া ক্রমে অধিকতর অভান্তরে প্রবেশ করিলে ও গাল্ল ভিড়া ওও গাল্ল উচ্চ এক স্থান পাওয়া যায়। ঐ স্থান করিছে পূর্কবন্ত ভিতরে ভিতরে পাহাড় কাটিয়া থাপে থাপে এক সিঁছি পাহাড়ের শীর্ষপর্বান্ত উত্তিয়াছে। মাঝে মাঝে জলআনিবার খাই পর্বান্ত এক প্রড়ক আছে। প্রড়ক মুখে প্রকাশ্ত লোহের কটাই আছে। নৈবান ঐ পরে পাল্ল আগিলে কটাহের নিমন্ত অধির তাপে ভালা হইত, বাহাছকৈ এইরপ বিকটাকার পথ দিয়া উঠিলে পর্বতোপরিত্ব কেলার উঠা যায়। কেলামধ্যে একটা জলের কুণ্ড আছে। নিকটে ১৬০ কীট উচ্চ এক গুল্ত। যেখানে নবাবের নিশান খাড়া থাকে তথার ১৮ কীট ললা ও ১২ সের গোলার উপযুক্ত এক পিত্রলের কামান আছে। এই ভয়ন্বর কেলা এই অচিন্তনীয় পরিশ্রম করিয়া যে কে নির্মাণ করিয়াছিল তাহার নির্ণয় নাই। আই আচন্তনীয় পরিশ্রম করিয়া যে কে নির্মাণ করিয়াছিল তাহার নির্ণয় নাই। আই আচন্তনীয় সহাট মহম্ম তোগালক একবার এই স্থানে কয়েকদিন রাজধানী করিয়াছিলেন। এই কেলা দেখিতে হইলে আরাক্ষাবাদের আগিটাণ্ট এড-কটেন্ট জেনেরেলের নিকট পাদ লইতে হয়।

দেশিতাবাদের ৭ মাইল দূরে জগৰিখাত ইলোরার গুরা। গোগানে নাইবার কালে উচ্চ পর্জতের উপরিছিত প্রশান্ত ছান মধ্যে দিল্লীস্থ করীর নিজামউদ্দীন শিখ্যের করন দেশিবার যোগা। অনতি দূরে রোজাপ্রাম মধ্যে সৈল্লনজ্বল জাবিদীনত খেত-মার্কেলারত ও কাঠ চল্লাতপ্রিশিষ্ট সম্রাষ্ট আরংজ্বের শোভাবিত করন। মহারাজীয়দের সহিত যুদ্ধ করিতে আসিরা তিনি এই ছানে প্রাণত্যাগ করেন। এই কর্রের সলে সঙ্গে ভারতে মুন্দমান ক্ষতা ও ক্রর প্রাপ্ত হবল।

বাহা হউক কিয়ন্ত্র পরে প্রাচীন ইলুক্, ইলোরা বা ভিকল নগরের নিকট ঘূর হইতে এক অর্জ চন্দ্রকার পাহাড়ের দেড় মাইল ব্যাপ্ত করিয়া কড়কণ্ডলি প্রিচমাভিমুখী গুহা লক্ষিত হয়। নিকটে গোলে দেখা বার এ হালি প্রকাশ দরজা। এই দরজা দিয়া প্রবেশ করিলে দেখা খায় যে বিকটাকার পাহাড় কাটিয়া মন্দির ও হর্য্যাদির অব্যব বাহির করা হই-রাছে। এই সকল মন্দিরের কি ভীষণ অব্যব! আশ্চর্যা খোদকারী! ও কি অচিন্তানীয় নির্দাণ কেশিল ! দেখিলে বিশায় ও হব যুগপত উদয় হয়।
আমরা উত্তর প্রান্ত হইতে দেখিতে আরম্ভ করিলাম। কোন কোন মন্দিরের অভ্যন্তরহ কোন কোন মুর্ভি দেখিয়া কেছ কেছ বলেন যে, এই ৬০
গুছার মধ্যে উত্তরদিকের প্রথম ৬ অর্দ্ধ জৈন, মধ্যে ১৪ হিন্দু ও দক্ষিণ
প্রান্তর্মণ শেষ ১০ বেলি সমন্তীয়।

উত্তর প্রান্তে প্রথমে জাগনাথ সভা গুহায় প্রবেশ করিলাম। ইহার
বামদিকে আদিনাপ সভার গুহাও দক্ষিণে আর কতকগুলি ক্ষুত্র গুহা।
প্রবেশ মুখে ধ্যাননিময় ২০০ হাত এক মুর্ভি, নাম জগনাথ, পার্থে জয়
ও বিজয়ের প্রতিরূপ। গুহার মধ্যে মুইটি প্রশস্ত ঘর, অভ্যন্তরের ঘরটী
ঘাদশ শুল্প হুল। ভাইনদিকের কোণ দিয়া উপরে উঠিবার পথ। গুহা
গৃহের সর্ক্রভাগ উত্তমরূপ খোদিত ও চিত্রিত। এক দিকে কতকগুলি গায়ক
ও নর্তকীর প্রতিরূপ। ইহাদের হল্তে বর্তমান কালীন বাছ্যান্ত দেখিয়া
বোদ হর গুহা নির্মাণের বহুপরে চিত্রিত হইয়ছে। কড়ির নিকট্ম ছান
সকলে কোথাও চক্রে, কোথাও পাগড়ী হীন মন্থ্য ও কোথাও জীমুর্ভি।
জপ করিতেছে এরুপ সারি সারি মুর্ভি বিস্তর আছে। হন্তার উপর মন্থ্য
মুর্ভি ভন্নপরি কড়ি। যাহা হউক এই গুহার ভাব বিলক্ষণ গাড়ীর। ইহার
প্রবেশ ঘার ৩৫ কটি বিস্তৃত, অভ্যন্তর ৫৭ কটি লঘা ও ৪৭ কটি ৭ ইঞ্চি
বিস্তৃত। শুল্র ১১ কটি ৪ ইফি উচ্চও প্রায় ৯ কটি ৭৯০ ইফি স্কুল।
প্রস্তুর কড়ে ২ ফটি মোটা। অভ্যন্তরের গৃহ ৩৪ কটি লঘা ও ২০ কটি
বিস্তৃত।

অনন্তর আমরা আদিনাথ সভা গুহায় প্রবেশ করিলাম। এই গুহার প্রবেশ ঘারের কার্যা অসম্পূর্ণ অবস্থায় আছে। উপত্রে হুই পরিচারক সহ লক্ষ্যানারায়ণ মৃতি। বাত র্ফিতে ক্ষয় হুইয়াছে। অভ্যন্তবে প্রকোষ্ঠ মধ্যে ২০০ ছাত আদিনাথ মৃতি। বাদে আর একটা কুলে গুহা মাটা পড়িয়া বুজিয়া আছে। স্তম্ব মন্তক জগরাথ সভার স্তম্ব মন্তকের স্থায় শোজাশালী। এই ওহার দৈর্ঘা ৩০ হাত, বিস্তার ১৯ ছাত উচ্চতা ৬ ছাত এবং চতুকোণ স্তাক্তর এক এক দিক হুই ছাত।

जनसर देखनडा कहा । देखनडा कहार्यक जांक उपरकार । अर्बाउ-गांद्र विविधाकांद्र (शांतिक अक द्रम्नीय बाद निया श्राद्रम कविलाम । सिथ-লায় আমূলাতা প্রকৃষ্টি পূর্বাত স্থার মনির মণ খোদিত হইয়াছে। তাহার भीर्वको वकार्यहे विभारमनीत । मधायस्म स्थानिक मिश्यामानाशित अक-ধ্যায়ী মুর্তি বিরাজিত। মন্দিরের বামপা: র্ম্ মুগঠিত ভভোপরি কয়েকটা মূর্তি উপৰিক্ট আছে। ডাইনদিকে আরোহীপুর এক প্রস্তরহন্তী। এই প্রান্থনের বামে খ্যায়ীমূর্ত্তিবিশিষ্ট ও উপরিভাগে চিত্রিত আর এক গুছা ৷ এই গুলি অতিক্রম করিয়া ইন্দ্রসভা নামক গুছার নিম্ন তলের প্রবেশ बात। मिस्रज्दन धकथाात्री मृद्धि, छारेनिमित्क छेशदत छेठिबात गांशान। উপরের গৃহমধ্যে প্রকাণ্ড ইস্রমূর্তি বসান হন্তীর উপর উপবিষ্ট। ই:स্র মন্তকে মুকুট, গলে উপৰীত, পশ্চাতে মন্ত্র গোভিত ব্লক ও পার্থে চামর হক্তে হুই চর। অপর দিকে ৪ সহচরীযুত। ইম্রাণী বাদক ক্রোড়ে করিয়া আত্রতলে শরান দিংহোপরি উপবিষ্ঠা। গৃহটী দাদশ ভরদারা হুই চত্তকে বিভক্ত ক্ষরাছে। অভাস্তরের চতুক মধ্যে সমচতুকোণ বেদী। शृंद्धक व्यक्तार्क मत्था ० हां ज अक्थांत्री मृद्धि । शृंद्धत त्य जश्म नित्रीचन করা যায় কত মূর্ত্তি, কতরূপে কি চমৎকারই খোদিত হইয়াছে। ইন্দ্রসভা গুৰার প্রবেশ দারের উচ্চতা ৫০ ছাত বিস্তার ৪ হাত, প্রাঙ্গনের দৈর্ঘ্য ৩৬ ছাত বিস্তার ৩০ ছাত মন্দিরের প্রত্যেক পার্শ্ব ১২ ছাত, উচ্চতা ১৮ ছাত পাৰ্শের শুস্ত উপরিছিত মৃত্তি সহ ১৬ হাত, তাহার বেটন ৮ হাত, ডাইনের হতী লাম ৯ হাত উচ্চতায় ৬ হাত, বাদদিকের গুহার গভীরতা ২১ হাত বিভার :৮ হাত উচ্চতা ৮ হাত, এ দিকে আর এক গুহার গভীরতা ১০ ছাত, বিস্তার ৫ ছাত উচ্চতা ৪া০ ছাত। ইন্দ্র সভা গুছার নিম্নতলের গভীরতা ৫২ হাত বিস্তার ২৫॥০ হাত উচ্চতা ৯৷০ হাত সমকোণ ভল্লের প্রক্রেক পার্ছ ২০০ ছাত উপরতদের গৃহের গভীরতা বারান্দাপর্যন্ত ৫২ হাত বিজ্ঞান ৪৪ ছাত উচ্চতা ১া০ হাত।

অনন্তর প্রারশুরাম গুছা। ইন্দ্র সভার উচ্চতলের বামদিকে এই গুছা আর্থিত। নিম্পনিপুনা প্রায় ইন্দ্র সভার তুলা। এই গুছা হইতে ক্ষা-রাথ সভার উপর তলে ঘাইবার এক পথ আছে। গুছার গভীরতা ২৪ ছাত বিভার ১৭ হাত, উচ্চতা ৬ হাত, সমুখের প্রকোষ্ঠছ ধারী **গৃভি** ২ হাত ৷

জনস্তর তুমারলেনা গুছা। পদ্ধন্তরাম গুছা ছইতে প্রার আবংশায়া
ছুর, কঠোর পর্কভের মধ্যে থাত এক গলি, গলির বামে ইছিকাপুরিত
এক গহ্বর, গলির শেষে এক প্রশন্ত স্থান তাছার সন্মুখে এক কুলে গুছা।
প্রশন্ত ছানের তাইন পার্থে ছই দিকে সিংছ্যুক্ত এক প্রকাণ্ড গুছার প্রথেশ
ঘার, প্রবেশমুখে বারান্দা। বারান্দার বানে যকি ইন্ত প্রকাণ্ড থর্মের
মুর্তি। ডাইনদিকে বিশেষরের নন্দী ও প্রেতসহ তাগুর নৃত্যা বারান্দার পর গুছা খণ্ডে খণ্ডে ক্রমে বিন্তৃত ছইয়াছে। চতুর্ব বা মধ্য খণ্ডের
বামে একটী সমচতুক্ষোণ মন্দিরের দার। তাহার ডাইনদিকে চক্র ও
ভবানী এবং বামে পরন ও লক্ষ্মীর মূর্ত্ত। এই মন্দিরের মানাদিকে নানা
মূর্তি ও মধ্যছলে শিবলিন্দ।

অন্তর জনবাস বা বিবাহ গুহা। গ্রাক্ষযুক্ত বারান্দা ছারা গুহার অভ্যন্তর আলোকিত। দ্বারের বামে মহাদেব বিষ্ণু ও ব্রহ্মা মূর্ত্তি, ভাইনে লক্ষীনারায়ণ। বাদের প্রাস্তভাগে বরাছ অবতারের দশনাত্রে পৃথিবী উদ্ধার। দক্ষিণদিকের প্রান্তে নিজিত কৃত্তকর্ণের উদরে একটা জ্রীলোক হাত বুলাইতেছে। বারান্দার দৈর্ঘ্য ৪২ হাত, বিস্তার ৫।০ হাত, উচ্চতা ৮ হাত, দারের বিভার ৩০ হাত, উচ্চতা ৫০ হাত, গৃহের দৈখা ৪৪ হাত, ছুই পার্শ্বের প্রকোষ্টের দৈর্ঘ্য ৪ হাত, গৃছের বিস্তার ১০ হাত, উচ্চত। গা॰ হাত ও অভ্যন্তরত্ব গর্ভগ্রের গভীরতা ১৫ হাত, বিস্তার ৮ হাত এবং উচ্চতা গাত হাত। এই গুহার কয়েক হস্ত ভূরে আর এক জনাবাদ। সমুখে ৮ হাত উচ্চ চারি জন্ত ও ভূই ভিত্তিলয় জন্তযুক্ত বারান্দা। ভাহার পর মুই দিকে প্ৰকোষ্ঠ সমন্বিত ৭৪ ছাত লম্বা, ১৪ ছাত বিজ্ঞ ত ৩০ ছাত উচ্চ এক গৃহ। তদনভর২৬ হাত দীর্ঘ, ২৪ হাত প্রস্থ গর্ভগৃহ স্থান। গর্ভগৃহের সমূধে ছইটা ভন্ত ও ছইটা ভিত্তিলয় ভন্ত। ভন্তের পৌন্দর্যা অতি চমৎ-কার। তিনটা ধারী মূর্তির উপর উপরিভাগে ধৃত্রা প্রেপর ভার খোদিত গুলু উপিত হইয়াছে। তুই পাৰ্যে জন্ত সম উচ্চ হুইটা আৰ্ছ উলল জীলোক এক হাতে সূত্যকারী ছুইটা বালকের হস্ত ধারণ ও আর এক হতে চাইর

উল্লিড করিয়া দতারদান। গর্ভগৃহ স্থানে সমচভূকোণ গৃহ মধ্যে উচ্চ বেদীর উপর শিবলিক। দারের পার্যে পুক্ষ ও জীলোকের দৃতি।

শনতর কুমারবর শুহা। চারি ভত্তবারা এই গৃহ চারি ভাগে বিভক্ত। গর্ভক্তের মারের উভর পার্থে হন্দর প্রকাণ্ড মূর্তি। বিভু উপরকার প্রভর ভারিয়া পড়াতে প্রবেশদার কম্ম প্রায়।

জনস্তর বানী বা তৈলযক্ত গুছা। এখানে কতকগুলি কুত্র কুত্র গুছা লেখা গেল। মধ্যে গণেল ও মহাদেবের মূর্ত্তি আছে। নিকটে এরপ জার কতকগুলি গুছা।

অনস্তর নীলকণ্ঠ মহাদেব গুছা। প্রবেশমুখে বাঁড়ের মূর্ত্ত। কালে
কর হইরাছে। করেকটা লিঁড়ি উঠিরা ভিত্তিশেবে ছুই সৈনিকের প্রতিরূপ। অভান্তরের প্রকোঠ মধ্যে উৎকৃষ্ট প্রত্তর নির্মিত শিবলিল। গৃহের
ভিত্তির ছুই দিকে কার্ত্তিক ও শণেশমূর্ত্তি। গণেশ নিকটে সরস্বতী।
প্রকোঠঘার পার্শ্বে দক্ষনীর নানারপ। গুছার গভীরতা ২৯ ছাত, প্রবেশ
মুশের দৈর্মা ৪৫ ছাত ও উচ্চতা ৮ ছাত। প্রকোঠ ১৯ ছাত লঘা ও ১১ ছাত
প্রশান্ত। ইছাতে ভার ও ভিত্তিলয় ভার ১৫ টা আছে।

শনন্তর রামেশর গুছা। প্রবেশ মুখে শয়ান য়াঁড়ের মুর্তি। তাহার বাদে চারিদিকে গাঁথান ও পরিষ্কৃত জলপূর্ণ একটা কুও। গুছা প্রবেশের পূর্কে উজয় প্রান্তে শামিনীর প্রতিরূপ, প্রবেশ বার অতি উত্তমরূপ থোদিত চারি প্রধান ক্ষর ও অর্ক ক্তম্ভে শোভিত। অর্ক ক্তম্ভ অর্থাণ ভিত্তিলয় ক্তম্ভোপরি খোদিত জীলোকের মুর্ভিটা বড় মনোহর। গুছার অভ্যন্তরে শিবনিল। গুছাটা প্রকোষ্ঠ সমাযুক্ত একটা প্রকাণ্ড গৃছ। প্রকোষ্ঠ গুলি খোদিত মুর্ভিতে পরিপূর্ণ হইয়াছে। নওছনা নামক প্রকোষ্ঠ ডাইনদিকে অবস্থিত। ইয়ার ভাইন ভাগে কঙ্কালমাত্র অর্থান্ত এবং ছই জন চার তাহার অর্থ ক্রিকান্তি প্রকার সহ বলিয়া আছে এবং ছই জন চার তাহার অর্থ ক্রিকারতেছে। ইয়ার অপ্রদিকে কালভিত্রব নৃত্য করিতেছে এবং ভূত প্রেক্ত করতালি দিতেছে। প্রকোষ্ঠ হইতে প্রেরার গৃহে আসিয়া ভাইনদিকে গেলে দেখা বার বে, হরপার্বান্তী ক্রীড়া করিতেছেন ও নারদ বিবাদ লাগাই-বার্ক কর বর্ণান্ত উৎসাহ দিতেছেন। নিমে বিবাদ লাগিয়াছে ও একটা

विज शंभाष (मण कुलिय़) विवादम तक कित्र छहि। शृह्यत क्षांद**स** साम-मिरकत व्यक्तारक जारेनशार्य त्मव त्मवी मह जनानी अ बामशार्य महत সহ কার্ত্তিক। প্রকোষ্টের মধ্যে ডিভির উপর জনকের বাটীতে বিবাহ खेरमद । अक सन अकहे। कल श्रिका मध्येत्रमान अनिश्च गर्गम जनाहि দেৰগণ ৰদিয়া আছেন। এখান হইতে বাহির হইয়া পুনরায় গছে প্রেশ क्रिल वांमित्क अक मत्नांच्य मृर्खि। किलामा निश्हांमत्नां पदि हर्ड्छ শিব অৰ্দ্ধ উলন্থ পাৰ্বভীকে ক্রোড়ে করিয়া উপবিষ্ট। এক হাত আপন উৰুদেশে, আর এক হাত পার্কতীর গলে ও তৃতীয় হন্ত দারা পার্কতীর গীন স্তানের নিম্নভাগ ধরিয়া সহাত্যমুখে মর্কন করিতেছেন। ছই পার্খের হুই প্রমথ চামর হত্তে তাহ। দেখিয়। লজ্জার অধোমুখ হইয়া আছে। দিংহা-সনের সিঁড়িতে বসিয়া ছইটা বানর বা ভূত হস্ত নাড়িয়া কাহাকে ডাকি-তেছে। ভীষণ মূর্ত্তি রাবণ বীরদর্পে উপবিষ্ট ছইয়া কৈলাস সহ এই সিংহাসন উত্তোলন করিতেছে। তাহার অবশিষ্ট ছই হাত সাহকার ভাবে ছুই উক্তে সংস্থাপিত। এই গুহার কতদিকে কতরূপ কত মুর্ত্তি। প্রকোষ্ঠ সহ গৃহের দৈর্ঘতা ৬০ হাত, গভীরতা ৪৮ হাত ও উচ্চতা ১০ হাত। কৈলাদ शक्। अरेही मर्साएनका ब्रह्द उम्प्रसादक्र । ध्यावम बारबब मग्रूर्य এক প্ৰশস্ত স্থান। ৩২ হাত উচ্চ পাহাড় কাটিয়া ৯২ হাত দীৰ্ঘ ৫৮ হাত বিস্তু ত এই স্থান করা হইয়াছে। প্রবেশ দ্বারের তাইন পার্শ্বে একটা জল-. পূर्व कुछ **पदर উভ**য় পার্শ্বে উৎরুষ্টর প খোদিত, भीर्व সমাযুক্ত ও একতদা সম উচ্চ ছুইটা বিভাগ অধাসর হুইয়া আছে। প্রবেশ্বার অতি প্রশৃত্ত, উচ্চতা ৯ হাত, বিস্তার ৯ হাত ও গভীরতা ২৮ হাত। যারে প্রবেশ করিয়া এই ২৮ হাত পার হইবার কালে ছই পার্ষে ১০ হাত দীর্ষ ও ৬ হাত বিজ্ঞ ছই যর। দরজার উপর নওপতথানা ৯ হাত লখা ৫ হাত চৌড়া ও ৫ ছাত উচ্চ। দরজার দোতলার গৃছের বাছিরে এীকজাতীয় চমংকার স্তমালা। দরজার পথে অউতুজা ভবানী ও গণেশের হন্দর মৃধি। যাহা হটক দরজা পার হইয়া এক বিত্তীর্ণ প্রান্ধনে পড়িতে হয়। ৬৬ ছাত উচ্চ পাছাড় কাটিয়া ১৬৪ ছাত দীৰ্ঘ ও ১০০ ছাত প্ৰস্ত এই বিশাল স্থান প্রস্তুত হইয়াছে। প্রাঙ্গনের চারিধারে চকমিলান বাটীর ন্যায় সঞ্জীউত

বর, প্রং প্রাক্ষনের মধ্য আরো এক বিশাল মর্মা। প্রকাশ পাছাড় কার্দ্ধিক বাহিন করা এই মুম্ব প্রাক্তির তাহিন আরু আরু জনমন, নানাকণ মঠন, মুক্তা মুক্ত প্রাক্তির তাহিন ছানে বিবিধকণ কণানার বর্ণন
করা ছুরে পাকুক দেখিলে ভক্তিত হইতে হয়। প্রকি দৈতোর করা! কি
মান্ত্রের কার্মা। প্রকল্পন ইউরোপীয় প্রভিত লিখিয়াছেন, প্রাকালে শত্তশালিনী ভারতের প্রজাগণ সাম্বাত্ত কটে দকল বিষয় উপভোগ করিত।
আহারান্তে ভাহাদের কোন কাজ ছিল না, এই জন্ত দেখের লোক প্রক্ বিত হইয়া ভূমগুলের বিশ্বয়ন্তনক এই দকল অন্ত কীর্তি করিয়াছে।
এই শুহা প্রস্তুত করিতে এক দলে যে কত লোকের প্রয়োজন হইয়াছিল
ভাহার সংখ্যা করা যায় না।

্যাহা হউক মধ্যত্তলের বিশাল হর্ষ্যের উপরতলে ঘাইবার জন্ত মধ্য-श्रुतमञ्ज वर्षा अधार अके छेल्दान मधा गाँग धान्य छेलन अकी सूज ষিত্রল গৃহ আছে। এই গৃহের এক পার্ম দারের উপরতলার সহিত **ও** অপুর পৃশ্বিধান্ত প্রধান হর্ম্যের উপর তলের সহিত হুই খণ্ড সেতু দারা मध्यक । मध्यक्षान व्यक्षान द्वान जारेन ७ वामितक द्वानद्वात अक अक्टे। विकाध दास्त्र इस्काटह। क्षांबर छारेटन ७ वार्य छेखत शार्क इस्के। यह ইছার গাতে লগ্ন। কিছু দুর পরে উতর পার্শ্বে এরপ আর ছইটা বিভাগ। অংশ দুর পরে এরপ আর ছই গৃহ প্রধান হর্ষ্যে সংযোজিত ও পালাত फिल्ड अन्द्री यत महिल्ल प्राप्त । वर्षत्र में प्रारंश महिल्ल अदेश দুল্ল নেত্রপথে পতিত হয়। এখন আমরা অর্থে নিহতল দর্শন করিব। প্রাপ্তার ছার কুইড়ে অবতরণ করিলাম। মন্তকের উপর পূর্ব বর্নিত সেডু। मिल्लि अ बार्स व्यक्ति महारा इंदेने। क्रीनिकारिका इंदर इंडी मधारमान । সম্বাধে ভক্ত এ নানা ছতিযুক্ত পূর্বে রার্নিত বিতৰ গছের নিমভাগা বিতৰ গ্ৰেৰ ছই পাৰ্ষে ৭ ছাত অন্তৱে প্ৰাদন মধ্যে হুনাৰ পোদিত চুইটা প্ৰকাত थान्यसम् 🛵 देशतः, पेकको ६०, बाउः 🗢 निवसार्ग १ हाउ म्यान्यस्थानः। বোম হয় মাজকে বিংক ছিল ৷ বিতল গ্ৰেছের বিশ্বতাৰ্গা পাত্ৰ হইয়া বিভীয় লাকা নিমে উপাছত হইলাম।। ইহার এক পার্শে সভাসদস্য প্রাকাশ ক্রোক্সরাক্স ক্রিয়া আছেন, আরু এক পার্যে দুর্লহাত এক: ভরসর মূর্তি।

দৈত্ব শেষে মধ্যত বিশাল হর্ম্যের গাত্রদেশ। উপরে উঠিবার জন্ম সাজের দক্ষিণে ওবানে ৬৬ থাপে হুইটা সিঁড়ি। তদনন্তর আগরা মধ্যত্ত বিশাল হর্ম্যের ডেইনদিকের গাত্র সংলগ্ন প্রথম গৃহে প্রবেশ করিলাম। প্রবেশ মাত্র সন্মুখেরাম রাবণের ভীবন যুক্ষের প্রতিরূপ। ইহার মধ্যে হনুমান মুর্ভিটিই চমৎকার। আর এক পার্থে সিংহ, হন্তী ও অপরাশের ভরম্বর অভুর মন্তক বহির্গত। যেন তাহারা ক্ষত্রে করিয়া হর্ম্য বহন করিতেছে। ইহার কিছু দূর পরে বিশাল হর্ম্যের গাত্রলগ্ন ছিতীয় গৃহ, পরে তৃতীর ও পঞ্চাতের গৃহ। ইহাতে বিশেষ দেখিবার কিছুই নাই। বামদিকের প্রথম গৃহে কুক্লেত্রের যুক্ষ। দ্বিতীয় ও তৃতীয় গৃহে বিশেষ কিছু নাই।

এখন আমর। প্রধান হরোর উপরিভাগ দর্শন করিব। পুনরার প্রবেশ দারে প্রভাগত হইরা দারের উপরতলে উঠিনাম। দারের উপর সমুধ্যে সারি সারি তিন হর, মধাকার গৃহের ছই পার্শ্বে আর ছই হর। সন্মুখের ষর প্রত্যেকে দীর্ঘ প্রস্থ ও উচ্চতায় ৬ হাত। পার্শের গৃহ প্রত্যেকে ১৫ হাত লম্বা ও ১০ হাত বিজ্ঞ । সমুধের তিন যর পার হইরা সেতু। সেতুর দৈর্ঘ্য ১০ ছাত, বিস্তার ১২ ছাত ও উভর পার্শের প্রাচীর ২া০ উচ্চ। তাছার পর ৯টা ধাপ উঠিয়া দ্বিতল গৃহে প্রবেশ। দ্বিতল গৃহ প্রতিদিকে দশহাত । रेशात मधाष्ट्रल नकीनामक धाकाश घाँएएत मूर्खि। विजन गृह भार सरेक्षा দিতীয় সেতু ২৫ হাত লয়। ও ১৪ হাত বিজ্ত। এই সেতু শেবে হুই পার্ষে মুই গুল্ক তাহার উপরে সিংছ ও নিম্নে সিংহকং মূর্ত্তি, আর মুইটা অন্ধ্র গুল্ক বিশাল ছর্ম্মের গাভে সংলগ্ন। বারান্দা লকে ১২ ছাত বিভারে ১০ ছাত ও ইহার পার্যন্ত প্রাচীর ১১ হাত উচ্চ। বারান্দার থা০ হাত উচ্চ ও থা০ হাত বিভৃত বসিবার প্রভাববেঞ। পূর্বে বর্নিত নিমের হুই পার্থের সিঁড়ি নিয়াও একানে উঠা যায়। বায়ান্দা হইতে চারিটী উৎকৃষ্ট ধাপের শর বিশাল মন্দি-রের ছারদেশ। ছারের উভরপার্থে ভরত্তর মৃতি। ছার্ডী ৮ ছাত উচ্চ ভ ৪ ছাত বিভূত। দার পার হইয়া বিভীর্ণ মণ্ডগগৃহ ও তৎপরে আর্দ্ধনত্তপ ওতিংশরে ৫ ধাপের উপর গর্ভ গৃহ, তথাধো নিক্ষুর্ভি মহাদেব। বার হৰতে গাৰ্ডগ্ৰের ভিত্তিপৰ্যান্ত মন্দিরের দৈখা এই হাত, বিভার ৪০ হাত ও कच्छि निक्छे नशास छेछठा ३२ ছाँछ। मध्याने मेर्या इवकी करिया इव

থাকে ছত্তিশ ভক্ত আছে। ভিত্তির নিকটছ ভঙ্গমূহ ভিত্তিতে সংলগ্ন। ৰাজ অৰ্থাৎ কজিব নিকটন্থ ভাগ চূৰ্বে আৱত ও নানা চিত্তে শোভিত। স্বার দেশের উভয় পার্থে ভূরি ভূরি মূর্ত। তিন থাক শুভের পর এই মওশের मिन्द्रमें ७ वरिम इने वोबोन्ता । अने वोबोन्तावत निम्न छोटाव बोम बोबन छ কুক্তে যুদ্ধ গৃহের উপরে সংস্থিত। ডাইনদিকের বারানা ইইতে প্রাক্তনের তাইন আন্তত্ম গৃহে মাইবার দেড়ু ছিল। এখন ভালিয়া পভাতে যাত্রা कां । महारमत्वत्र मिरक मधः शत हरे कारगत मिकछे हरे बात । हरे मिरकत ছুই ছার দিয়া থাবেশ করিলে হুই প্রশস্ত ছান। উভয়দিকের প্রশস্ত ছানের इरे शार्त्य इरे धाकां अ मिलत। मर्था निव नारे। मिल्ला इरे मिर्कत ভিজি সংলগ্ন দিতীয় বিভাগ ধরের উপর এই মন্দির্দ্ধ সংখিত। এই মন্দ্রিরন্তবের পার্শ্বে প্রধান মন্দ্রির পশ্চাত ভাগন্থ প্রশস্ত স্থানে আর তিন মন্দির। হুইটা হুই পার্শ্বে ও একটা মধাস্থানে অবস্থিত। পার্শ্বের হুইটা নিম্নের ছুই দিকের তৃতীয় ভাগদয়ের উপর এবং মধ্যকারটী পশ্চাৎদিশের বহির্গত ভাগের উপর সংস্থাপিত আছে। ইহাদের মধ্যেত শিব নাই। শিব-মুক্ত প্রাধান মন্দিরের পশ্চাৎ দেশ হইতে পশ্চাতত মন্দিরের ভিত্তি পর্যান্ত ২৬ ছাত। 'এই সকল মন্দিরের শীর্ষটা ও অভান্তরন্থ চিত্র অতি চনৎ-কার। কিন্তু অভ্যন্তরের অনেক ভাগ ধূদে ধূদরিত, হইয়াছে। ছরাত্মা আরংজ্যের কোনরপে ইহার ক্ষতি করিতে সমর্থ না হইয়া অভান্তর ভাগ পড়পূর্ণ করিয়া অগ্নি প্রদান করে। তাহারই জন্ম কোন কোন স্থান ধুসরিত। ষাছা হউক মধ্যত্ব এই বিশাল হর্মোর শীর্ষপর্যান্ত উচ্চতা ৬০ হাত, পার্শ্বন্থ আপরাপর মন্দিরের উচ্চতা প্রায় ৩৪ হস্ত।

এইকপে মধ্যভাগের বিশাল হথা পরিদর্শন করিয়। আমরা প্রাঞ্চন প্রাঞ্জন হান্ত ছাত্র চকমিলানের স্থায় গৃহাবলী দর্শন করিতে অপ্রসর হই-লাখা। অথ্যে উত্তর বা বামদিকের নিম্নতন দর্শন করা যাউক। প্রথমে একটী শুহা, সমুপ প্রান্তে হুইটী শুস্ত ও তিনটী শ্রীমৃত্তি চূর্নিত প্রশুরে অর্থনিম্বা। গুহার দৈর্ঘা ১৪ হাত, বিশুরে হ হাত ও উচ্চতা ও হাত। অনন্তর আর এক গ্রহা। ইহার সমুপে ৫ শুস্ত। এই গুংনে উপরতলে উঠিবার সিঁড়ি। ভাহার ৪ হাত ও উচ্চতা ৭ হাত। এই খানে উপরতলে উঠিবার সিঁড়ি। ভাহার

পার কিছুদুর গুছা নাই। তদনস্তর মুই রহৎ সমচতুলোণ স্তয় ও আভাজার বেশীযুক্ত ৯৬ ছাত লয়া, ৮ ছাত চৌড়া ও ১০ ছাত উচ্চ এক গুছা। তাহার পার ৪ হাত উচ্চ ও ১৪০ হাত বিস্তৃত এক হার দিয়া প্রায় ২ হাত সম-ভতুকোণ একাদশ ভন্ত শোভিত এক বারান্দ। ইহার দৈয়া ৭৮ হাত, বিস্তার ৮ হাত ও উচ্চতা ৮ হাত। অনন্তর আমরা বিশাল হর্মোর পশ্চাতে পুর্ব-निकष्ट निष्ठ उत्तर बादानांत्र धाराना कदिनाम। এই विकीर्ग वादानां नर्ष ১২৪ ছাত, বিস্তারে ৮ হাত এবং দারি দারি দপ্তদশ ক্তম্ভে বিভূষিত। ইহার পর প্রান্তনের ডাইন প্রান্তন্ত দক্ষিণদিকের গৃহ সমূহ। প্রথমে পূর্কদিকের ৰারান্দার সহিত সংলগ্ন বারান্দা ১০ শুস্তে সচ্ছিত। আরংজেৰ তিনটী ভগ্ন করিয়াছে। বারান্দার প্রবেশদার ৪ হাত উচ্চ ও ১॥০, হাত প্রশস্ত। ইছার দৈর্ঘা ৪০ ছাত, বিস্তার ১১ ছাত ও উচ্চতা ৮ হাত। এই বারান্দার মধ্যে ৪০ হাত লখা, ১৪ হাত চৌড়া ও ৮ হাত উচ্চ কতক খোদিত এক গৃহ। নিকটে ১০ ছাত দীৰ্ঘ, ৮ ছাত বিজ্ ত ও ৪ ছাত উচ্চ এক গৃহ কতকঞ্চল উৎকৃষ্ট মূর্ত্তিতে পূর্ণ হইয়া বাহির ২ইয়া আছে। ৮ হাত উচ্চ ছানোপরি ২৪ ছাত লম্বা, ১০ ছাত গভীর ও ৮ হাত উচ্চ এক গুরা। ইহার অভ্যন্তরে ভিত্তি হইতে বিসৃষ্ট ভূরি মূর্ত্তি। কঙ্কালমাত্র অবশিষ্ট একটা প্রকাণ্ড মূর্ত্তি। আর একটা বৃহৎ মূর্ত্তি শয়ান এক উলঙ্গ মূর্তির উপর পা দিয়া বসিয়া আছে। ৪া০ হাত লম্বা, ৪ হাত বিজ্ ত ও ৫ হাত উচ্চ এক প্রকোষ্ঠ বিশিষ্ট ১৬ হাত লম্বা, ১২ হাত গভীর ও ৬ হাত উচ্চ এক গুহা। অনস্তর দক্ষিণ দিকের শেষ প্রান্তে ১৬ হাত লয়া, ৬ হাত বিজ্ ও ৩৮ হাত উচ্চ এক গুয়া। এইরপে চতুষ্পার্শবন্ধ গৃহের নিম্নতল দর্শন করিয়া আমরা তত্ত্পর তল দেখি-ৰার জন্ম উপরে উঠিয়া পুনরায় বাদদিক ২ইতে দর্শন আরম্ভ করি। প্রথম শুছার উপার কতক খোদিত একটা গৃহ। দিতীয় গুছার উপার পুর লক্ষা নামক গৃহ। আমর। সিড়ির ২৫ ধাপ দিয়া উপরে উঠিলাম। ছারের जेशन शुंख ध्वर इहिन्दिक भनात जेशन इहेनी जेखन पूर्जि। शृद्धन व्याव्स গর্ভগৃত্ত নিক মৃত্তি মহাদেব। মণ্ডণের ভত্ত সকল অভান্ত ছূল। মণ্ডণী উত্তম খোদিত ও চিত্তিত ভূবি ভূবি দেব দেবীর মূর্ত্তিতে পরিপুরিত। ধুমাতে িকিঞিৎ মলিন ছইয়াছে। এই মন্দিরের দৈর্ঘ্য ৪৬ ছাত, প্রস্থ ৪০ ছাত এবং

উচ্চতা ৯া০ হাত, তাইনদিনের বিতলের মধ্যে প্রথম বিতল ৪০ হাত দীর্ঘ, ১৬ হাত উচ্চ জ ১২ হাত গভীর। ইহার সহিত সংযুক্ত আর এক অন্ধনার গৃহ। এই গৃহের গভীরতা ১৯ হাত, দৈর্ঘা ২৪ হাত ও উচ্চতা ৮ হাত। বিভীর বিতল দীতে উঠিবার সিঁড়ির ২৪ বাপ। ইহার পরিমাণ নিম্নতলের গৃহের সন্দা। এই গৃহের সংলগ্ন আর এক গৃহে পর্বত ধসিরা পড়িতেছে।

्थापन कामेना वानामात गाटकन मृख्धिन क्रमान्दन वर्गन करिना रेकनान গুৰা শেষ করিব। বারান্দার অভান্তরতী দেবদেবীর মূর্ত্তিতে পূরিত। প্রথবে বিকটাকার মূর্ত্তি রাবণ মহাদেবকে ধারণ করিয়া আছে। তদনন্তর পার্ন্ধতী। তৎপরে রাবন বদিয়া কি লিখিতেছে। তাহার পর খাঁড়ের উপর মহাদেব ও পার্মতী, তদনন্তর আর এক ঐ মৃত্তি, তাহার পর বিষ্ণু, তদনন্তর পাৰ্বতী। তৎপরে বিষ্ণুভক্ত পদে, শৃথানজড়িত করিয়া আছে। তাহার পর পুনরায় পার্বতী। পার্বতীর এই সকল মূর্ত্তি ভিন্ন ভিন্ন। তদনস্তর দুইবার বিষ্ণু ও লক্ষী যুর্ত্তি। তদনস্তর পিও হইতে বলভদ্র নির্গত হইতেছে। তংপারে পুর্বাদিকের বারান্দা/আরন্ত। ইছার প্রথমেই পার্বাতী। তাহার পর ভৈরব এক জনকে শুলে বিদ্ধ করিয়া দণ্ডায়মান। তাহার পর রংখ এক দৈত্য ধন্ত আকর্ষণ করিতেছে। ইহার পর পার্বাতী ও কালতৈরব। তদনস্তর নরসিংছ অবতার শুশু হইতে বহির্গত হইতেছে। তাহার পর जांद्र इहे टेडक्ंद । शद्र विक्रू, (गाविन, जक्ती, नक्ती, महारमव, नाजांशन ভৈত্তৰ গোৰিক, কালভৈত্তৰ গোবিক, লক্ষ্মী ও কৃষ্ণ ছতিতে পূৰ্বৰ বাহানা त्मच । देशक भन्न मिक्तिनंत वाद्यामास महारमव ७ देखनमाम । **छा**द्यां भन ধর্মসাজ এক জনকে আলিকন করিতেছেন। তদনস্তর নর্দিংছ অবভারের হিরণাকশিপু বর্ষ, তাহার পর শেষনাগের উপর শরান বিষ্ণুর নাভিপদ্মে बचा उभविके। इंश्व भव शावर्कन, इयस्ख्यूक वनि, भक्रफ्त छेभन কৃষ্ণ, বরাহ অবতার, কালীয় নাগোপরি চতুত্ জ কৃষ্ণ বলদেব ও অরপুর্ণ। । প্রভাক মৃতি পার্শ্বে তলীলা প্রকাশক নানা মৃতি। ইতি কৈলান গুছা।

আমন্তর দল অবতার গ্রহা। পূর্বে প্রবেশ দার সংকল। এ জন্য কর্বল প্রশ্নের উপর দিয়া কট করিয়া উঠিতে হয়। প্রবেশ করিয়া এক প্রশন্ত স্থান। তথ্যা এক সমচভূকোণ গৃহ, বারান্দা ভয় হইয়া পড়িয়াছে, এক নিকে এনটা শুক্ক জনাদায়ত অপরদিকে জনপূর্ব এক ক্ষুদ্র কুও। গৃহে প্রজ্ব জাফরী, জাফরীর ছই পার্থে রহণ মূর্তি এবং উপরিভাগে বহুদ্রতি । গৃহতী নামে ২০ হাত বিভারে ১৭ হাত ও উচ্চতার ৬। হাত। ইহার পর উপর ও নিজে ৬ সমচভূজোব স্তম্ভ ও ছই অর্জন্তম্বনিক্তি এক দ্বিতন গৃহ। উপরে ঘাইবার রাজা বক্ষ। উপরিভাগের গৃহ মধ্যে ৮ থাক চকুকোব স্তম্ভ আহে। গৃহের প্রকোঠ মধ্যে মহাদেব এবং মহাদেবের দ্বারদেশে দশ অবতারাদির মূর্তি। নিজের গৃহ দৈর্ঘো ৬৮ হাত, বিভারে ২০ হাত, উচ্চতায় ৯ হাত এবং উপরের গৃহ দৈর্ঘো ৬৪ হাত, গতীরতায় ৬৬ হাত, উচ্চতায় ৯ হাত এবং উপরের গৃহ দৈর্ঘো ৬৪ হাত, গতীরতায় ৬৬ হাত, উচ্চতায় ৯ হাত এবং উপরের গৃহ দৈর্ঘো ৬৪ হাত, গতীরতায় ৬৬ হাত, উচ্চতায় ৯

অনন্তর ত্রিভলগুহা। দার দিয়া প্রবেশ করিলে সমূথে প্রতিতলে দশটী চহুকোণ শুস্ত শোভিত এক ত্রিতন গৃহ। পার্শ্বের স্ইটী শুস্ত ভিত্তি-नग्न थवर निम्नज्दन मभाकात इरेण (यो पिछ। ध्याक्रान्त वाम कार्तन একটা জনপুৰ্ব কুও। নিম্ন তলের গৃহ ৬ জ্ঞান্ত তিনভাগে বিভক্ত। মধ্য ভাগের সন্মুধ প্রকোষ্ঠে শেষ নাগের প্রকাণ্ড মূর্ত্তি। চতুর্থ ভক্ত ছাইতে গৃহ ক্রমে স্কাইণ্ডাতে ছই পার্বে আরও ছইটা প্রকোষ্ঠ জমিয়াছে। ইহার এক দিকে শক্ষরাচার্যা, অপর দিকে আদিনাথের মুর্জি। ঘারের পার্শেও বড় বড় মূর্তি। এই গৃহের গভীরতা,২৭ হাত, দৈখা ৭৮ হাত, উচ্চতা ৭ হাত, প্রকোষ্টের গভীরতা ২৯ হাত। মধ্যম গৃহের গভী-রভা ৮ হাত, বিস্তার ১২ হাত, উচ্চতা ৯ হাত। মূর্তির উচ্চতা ৭।০ হাত। ভদনস্তর জাইনদিকের ২৪ ধাপ দিয়া দিতলে উঠিতে হয়। উঠিবার কালে দুরে পাছাড়ের গাত্তে মূর্তিবিশিষ্ট এক গুছা দর্শন হয়। বিতলের श्राद्रभाष्ट्रश्च वक्की छेरकुक्के वाजामा । वाजामात्र मञ्जूरम यम विमान आहरू । বারাকার প্রত্যেক পার্থে এক দরজা। তখাধ্য দিয়া প্রবেশ করিলে পর্বত প্রান্তে চারিটা হর। মধাস্থ গৃহনধ্যে লক্ষণ ব্যাহা কাছেন এবং ভাহার ছই শাৰ্ষে হুই প্ৰকাণ্ড মূৰ্ত্তি। বারান্দার দৈখ্য ৭৬ ছাত গভীরতা প্রকোষ্ঠ সহ ৪৪ ছাত, উচ্চতা ৮ হাত এবং থাকোষ্ঠ ১০ হাত। বারান্দার বিশরীত পার্শের দরজা দিয়া ২৪ খাপ উঠিবার পর তৃতীয় তলের বারান্দা। ইছাতে প্রকাত স্থদের তৎপরে নকুল ভীন অর্জন ও ধর্মরাজের মূর্ত্তি। বিপরীত

দিকে উদ্ধান, লাগৰ ত জীলাদাদির দুর্তি । বর্চ ততের পর হইতে বারাজা ক্রেন্দ হত্যাতে হই পার্বে ইইটা অকোর্ড জিলাহে। ইহাতে কুজিত-কেল্যুক্ত চতুর্জনা মুর্তি বলিরা আছে। আর একটা ছানে কতক গুলি মুর্তি, কতক বলিয়া ভ কতক নভায়মান আছে। ইহারই নিকট তিনটা নিঁড়ি দিরা একটা অপেকারত নির ছানে গেলে গৃহ মধ্যে সিংহাননোপরি আড় সহ আকাশুরাম উপবিষ্টা। সীভার মুর্তি অপারদিকে আছে। এই বিস্তৃত গুহার পারিপাটা অভি চমংকার। কড়ির নিকট চিত্রের দাগ পাত্যা মারা। ত্রিতলের বারালার দৈর্ঘ্য ৭০ হাত, গাতীরতা প্রকোর্চ সহ ৪৪ হাত, প্রকোর্চ গভীরতা ১১ হাত ও উচ্চতা ৮ হাত।

ক্ষানন্তর ভারত শালার গুছা। ইছার ছুই তলা বর্তমান আছে, অবশি-ক্টাংশ ভয়প্রভারে পূরিত। নিম্নতালর দৈর্ঘা ৬৮ ছাত, গভীরতা ১৬ ছাত ও বারান্দার বিস্তার ৫ ছাত। ১৬ ধাপ দিয়া উপরে উঠিলে এক প্রকোষ্ঠ শম্মিক বারান্দা। ইছার দৈর্ঘা ৬৮ ছাত, গভীরতা ২৯ ছাত ও উচ্চতা ৬ ছাত।

বিশ্বকর্মা গুছা। ইছার প্রবেশ দার রাজবালীর প্রবেশদারের স্থার প্রতিশোভাকর। প্রথমে সারি সারি ভাষ্যুক্ত এক বিভার্শ বারান্দা দেখা যার। উহার উপরিভাগে কার্লিস ছানে হল্তী পূঠে, অর্থ পূঠে, নানা খোদিত মুর্ভি। তাহার উপর করেকটা বিটকাটা। তাহার উপর শোভমান নানাচিত্রযুক্ত বিকোগাকার দারমন্তক, দারমন্তকের মধ্যোভাগ নওপথশানার জন্ম শোলা ছইতেছিল। মন্তকের চুই পার্শ্বে খোদকারীপূর্ণ ও মুর্ভি স্থাযুক্ত চুইলি প্রকাণ মন্দিরের অগ্রভাগ সংখাপিত। বারান্দার মধ্যান্দ দার দিয়া আমরা প্রবেশ করিলাম। বিশ্বকর্মার মন্দির এক বিন্তীণ গুছা, ইছা দক্ষিণ ও বাবে সুই ভারশ্রেনীয়ার তিন ভাগে বিভক্ত ছুইয়াছে। উপরিভাগ শিলান করার স্থার কারী। কার্নিসের নিকটে সারি সারি মুর্ভি উপরিভাগ শিলান করার স্থার কারী। কার্নিসের নিকটে সারি সারি মুর্ভি উপরিভা গ হিলান করার স্থার কারী। বান্ধকর্মার চুইপার্থে স্থান্ধরের মন্ত্র প্রক্রের করের ছুই মুর্ভি বর্ত্ত্রমান। লোকে বলে হিশ্বকর্মা হয়মান্ধ রাত্রিতে প্রই সকল গুহা রান্ধের জন্ম প্রস্তুত করিতেছিলেন। তাহার

কার্য্য শেষ ছইতে না ছইতে কুকুট ডাকাতে ভোর ছইরা গোল। তিনিও তাড়াতাড়ি রন্ধ অন্ধূলি কাটিয়া ফেলিলেন। তাছাই ধরিয়া রক্ত থামাইতেও ছেন। ইথরেজেরা এই গুছার গান্তীর্য ও চমৎকারিত। দেখিয়া বলেন যে, এই শুলস্ক ছান দর্যোপালনার মন্দিরের যোগা। এবং জগৎ নির্মাতা ইশ্বর যেন বিশ্বকর্যা রূপে বেদীর উপর উপবিষ্ট ছইরা আছেন। গুছাজের প্রত্যেক দিকে ৩২ ছাত, ১৪ শুলুক্ত বাছিরের বারান্দা ৯ ছাত বিশ্বত ও কড়ি পর্যান্ত ৭ ছাত উচ্চ। ঘার ৫ ছাত উচ্চ ও থাত ছাত প্রশান্ত । মন্দিরের দৈর্ঘ্য ৫২ ছাত বিশুর ২৯ ছাত ও পিলানের খাতসছ উচ্চতা ২৪ ছাত, খাত ত্যাগ করিয়া উচ্চতা ২০ ছাত। এক এক পার্শের ভিত্তি ছইতে মধ্যন্ত গুলুমালার অন্তর ৫ ছাত। অন্টাবিংশতি অন্টকোণ ও ২ চতুক্ষোণ শুন্তের বৈন্দান ৫ ছাত। বেদীর উচ্চতা ২৬ ছাত।

পের গুরারা বা মেথরের গুছা। এই গুছা শেষ গুছা। ইহা জগলাধ সভা ছইতে ১ মাইল দূর। নামের কারণে কেছ এ গুছার প্রবেশ করে না। এখান ছইতে দূরের ইলুক্নগার দেখিতে অতি স্থলর। বোধ ছয় এই গুছাতে বর্ষাকালে জল দাঁড়োর।

ইলোরা আন্মের এক মাইল ছুরস্থিত এই সকল গুছা দশন করিয়া গোষানে দেওগাঁ হইয়া নাঁদগাও ফৌদনে রেলগাড়ী প্রাপ্ত হইবে। ইলোরা দর্শনেক্ছ্র ব্যার বারিরা নাদগাঁ হইতে এই পথে ডাকগাড়ীতে ইলোরা ও আরাজাধাদ ধায়। আরাজাবাদ পর্যান্ত জনপ্রতি ভাড়া দশটাকা।

নাদগাঁ হইতে রেল ক্রনে সম্থাটের দিকে দক্ষিণ পশ্চিমে গ্রমন করিয়াছে। ডাইনদিকে শর্কতোপরি চন্দহারির কেলা দেখা যায়। খাটের এই সকল শৃত্ব পুর্বেই স্থালায়ুখী বা জায়েয় গিরি ছিল।

নাদগাঁর পর করেক ছান পার ছইয়া নাসিকরোড। জেইন ছইডে নাসিক নগর উভর পশ্চিমে ও মাইল। নিকটেই চারিজনের মসিবার উপযুক্ত ঘণ্টার ৭ মাইলগানী টোলা নামক: আর্ভ:গাড়ী দৈনিক খাও টাকা ভাড়ার পাওয়া যায়। নাসিক নগর দেবিয়া কালীর ভাব মনে ছইল। বিভূত অগভীর ও ধরকোভা গোদাব্রী ডটে আয় অন্ধনাইন পর্যান্ত ঘাট ও মন্দিরের শোভা। পুলিনদেশে কৈছ সান করিতেছে,

কেছ জপ করিতেছে, কেছু মারাগনি গারিকার করিতেছে ওংকেছ বা '' ডিয়-वकः क्रिकाट्य (गीजमध्यम्मानिमिन, दनिया शामारबीत खन क्रिएक्र । উপরে কেছামনিরে হেডিটেটেই, কেই পূজা করিডেটে ও কেই যা সৌর-किराय मन्द्रश्मिक विश्वि भाषा अवामि कर कर्रिकार । योवरनाय अ कामिनीकुल नगंद कन्भित थात्र । विनश् विदय कानि जननकांत्री कविग्राहिन, नाजिएक वर्ग । छात्र कामिनीया (ब उदर्ग) देवतालीत कामिनी जरलका गरमात्रमा । अर्थात्म श्रीतिण काळात्र (लाटकत बाग, उचामा मण काळात প্রাক্ষণ। গ্রেডিমীর উত্তরভট্টিত এই নগরে প্রবেশ করিয়া আমরা পঞ্চতীতে রছুনাথের মন্দিরে প্রবেশ করিলাম ৷ পঞ্চবটে পঞ্চবটা বিছমান এতথাতীত এগন আৰু কোন বন নাই। নামিক হিন্দ্রদিণার মহাতীর্থ। এই ছানে লক্ষ্যণ শূর্পবধার নাসিক। ছেদন করেন বলির। নাম নাসিক হুইয়াছে। এই স্থানে রাম সীতার জল্প বিলাপ করিয়াছিলেন। এই श्वास्त्र वर्गत्य बाल्बीकी जागर मुक्त कित्राहिन । स्मारक वरल अथान स्टेड বহুদুরে কিড়ি কালুতে মারীচ বধ হইয়ছিল। সতা হউক বা মিখ্যা হউক ঐ ছানে ধাবদান হরিণের পদচিহ্ন প্রস্তরোপরি স্পার্ট লক্ষিত হয়। যাহা হউক এখান হইতে ২০ মাইল দুবছিত গোদাৰবীর উৎপত্তি স্থান দর্শন अकास व्योजिश्यत। व्यक्तिवाका शामावती व्यवनयन कतिता ৮ महिल पृत्त शकाशूरत अकनि ख्याद जनअङाण उ नहीं मनिव (मर्थ) यात् । ए माहेल पूरत नकी उर्छ अकी उध कला। २० माहेल पूरत डेक लर्का छ। পরি গোদার্বীর উৎপত্তি স্থান তাম্বকনাথ। স্থান অতি মনোর্য ও রক্ষ-লক্তা কুঞ্জে; শোভিড ৷ পত পত লোক ভাষকৰাথ মহাদেবের পূজা कविटिक्ट । श्रीमांबबीत छे दक्के उम थहे. जीर इतिबादक आहा मानमा वर्षाटक विका याजी जिलाहिक इत। श्रीक्रमतः लालनात्मत कव गर्मा (भाक्षावदी क्षेत्रा मान्निनाट्य ध्याक्य इस्ताट्न। नामिट्क द यारेन দ্বৰিত প্ৰিচৰে চতুৰ প্ৰতাকীতে খোৰিত বুক্ৰিটোৰ পাওলিনা নামক मखमण कको । नमखब र मारेन देवत्र शूर्व कामात्रानन कहा । याकात ক্ষা এক পৰ্যবেশিক্স কিয়ন্ত্ৰ কটা কৰিয়া উঠিলে আয় তিনশত প্ৰকাণ মিভির পর এই আশ্রহণ গ্রহা দেখা যায়। যাহা হউক নালিকরোড় টেসনে গোদাবরী পার ছইয়া ছায়াবান ব্লক, উচ্চ পাছাড় ও ছান্তকারী উপত্যকা শোভিত দওকারণা দেখিতে দেখিতে চলিয়া গোলাম।

जामनखर देशहेशूना (केमन। ककालश्र ६देए ७०) गाहेल उ नांगिक রোড ছইতে ৩১ মাইল। সন্মুখে প্রকাণ্ড ঘাট গিরিপথ রোগ করিয়া দণ্ডায়-মান। শ্লের শ=চাতে ভীষণ শ্ল সকল বত্ত্র সমূখিত। বন, ঝোড়, कमन, मीदम, कर्कन, डेक ७ धलुद्रमय ज्या। धन्नद्र दित्रिन (कीनन! ইহার উপর দিয়া ট্রেন চলিবে। এনজিন্হইতে বারস্রে তইসেল্ উঠিতে नागिन। गार्डगंप मठर्क स्रेलिन। दुर्ग्म गिविमक्रके डेमब्रिज, गास्नी ধীরে ধীরে পাহাড়ের কাকে ফাকে প্রবেশ করিতে লাগিল। কিছু দুর প্রবেশ করিয়া কি ভয়কর দৃশ্য, দক্ষিণে চূড়া, বামে চূড়া, সমুধে চূড়া, পশ্চাতে চূড়া, গহ্বর, দরীকন্দর ও শৃঙ্গ সমূছের মধাস্থ গভীর খাত, নদীগণের ঝন্ধার শব্দ, গিরি পরস্পারায় সুর্যোর মুখ সমাচ্ছন, কোন ন্থানে ৰিকটাকার শৃত্তহায়া, কোন স্থানে ব। আলোকিত পর্বতি পার্য। এক একটা খাত এত ভয়মর, এত গভীর যে দেখিলে ছতকম্পা হয়। শুক সমূহের [ঢাল পার্ম যেন ভাষাতে ধনিয়া পড়িতেছে। এইরপ খাতের উপরিভাগে এরপ ঢাল অবলম্বন করিয়া পাকে পাকে পর্বতোপরি গাড়ী উঠিতে नागिन। यश्य मस्य गर्गनर्डमी गुत्र मधायुक्त विकड़ाकाद अर्व्यक ভাগ বভদুর ব্যাপ্ত করিয়া সন্মুখে দণ্ডারমান ৷ এই সকল শৃক্ষ ভেদ করিয়া সুড়ক হইয়াছে। ভূর হইতে দেখিতে যেন পর্বত গাতে শৃগালের গক্ষর। কিন্তু নিকটে গোলে অতি প্রশস্ত গুৰা। যোর অন্ধকারময় গুৰার অভ্যস্তরে গাড়ী প্রবেশ করিয়া চলিতে লাগিল। কিয়ৎকণ পরে পুনরায় বাড, পুন-রায় গ্রহা, এই রূপে গুহার পর গ্রহা, খাতের পর খাত, ঢালের পর ঢাক, সেতুর পার সেতু দিরা গাড়ী চলিতে থাকে। স্থারে কিছুই স্থুট হয় না কেংল श्वांगरेखनी गृक मकल या बक्क डेरिया ममूख उदालब आव की का किताउ করিতে বে দিকে ইক্ষা চলিয়া গিয়াছে। নাখের কোন দিকে দৈখা কোন নিকে বিভার, অভান্তরে প্রবেশ করিয়া কিছুই বুঝিবার যোঁ নাই। এই मकन जीवन धारमा बांबरनंत अञ्चतान अवनीनांकरम श्रीतज्ञान कति । देशात्रे जेशत्र मित्रा याक्रें ज त्वाध दत्र त्रधुमांत्थत विरागम कके दहेशाहिल।

যাহা হউক এই এশে কাছারা ভেননে পতিছিলে সহলৈলের উপরিভাগ গমন শেষ হয়। মাজীর খাতের নিম্নে রেল দেখিয়া বোগ হয় যে পাতাল-তলে কে কোৰ পাভিয়াছে। কিন্তু কে জানে যে অপাশৰ পায়ে এবেল দিয়া গাড়ী চলিবে। কাছারা ছটতে গাড়ী বছের দিকে ক্রমে অবভরণ করিতে থাকে। এই সময়ে সংখ্য দুখ্য বড ফুলর। পর্কতের প্রস্থানেশ কান্যে পরিপূর্ব। চতুর্দ্ধিকে যেখ্যালা লম্ব্যান। পলাল, ভেলা, তাল, তম্ল * ও উচ্চ শেগুৰে বনভাগ আরুত। পক্ষিণ। শাধার বসির। গান क्रिटिंग्डिं। यशा मध्या छइ। विराद कल थलाएउद व्यञ्जित ममूल्यिङ इरे-তেছে। পাनদেশে নিঝ'রিণী সকল সঞ্রণ করিতেছে। মৃগ্রথ ইতজ্ঞতঃ ধাৰৱান। ৰক্তপুষ্পের দেগিকে চারিদিক আমোদিত। কোন ছানে ব। ত্লাচ্ছাদিত পর্মত পৃষ্ঠের ছবিত শোভা কোথাওব। লতাহত দরীমুখ। काम छान का ब्रहर ब्रहर उरुशनशत् मीलवर्ग, कान खाग नानाविध धाडू-होता दक्षित । काथा वा नियदिगीत तमनीय मीमा, काथा व वा वादि-ध्यवारम्ब कुनु कुनु बनि । अने कर्ण माज्यान गिविनवी, विज्यिक विभान পাদদেশ ও অভায়ত শৃক্ষ সকল দর্শন করিতে করিতে আমর। সহশৈল পার ছইয়া গেলাম। অনন্তর কলাণী জংসন। জব্ব নপুর ছইতে ৫-> মাইল। এখানকার পর্কতের উপর হইতে পশ্চিম সাগর দৃষ্ঠিগোচর হয়। হুই সহস্রহার পূর্বে ত্রীক ও ইজিপ্টের জাহাজ সকল বাণিজ্যার্থ कमानीत रव्यत्व जाशमय कदिछ। कनाानी करेए अक दिन वास मास्टा-**रखन किट क छ अक दल्ल छ। देन शार्य क्**ष्ण गंगन कविशार्छ। अथानकाव হুর মন্দ নতে। কল্যানীর পর কিছু দূর পরে সাল্যিট দ্বীপ। ত্রুপ্ত সেডু ৰাৱা সাগ্ৰ পাৰ হইয়া গাড়ী বন উপবন ও পৰ্বত শেভিত স্থান অভিক্ৰম করিতে করিতে টানাম উপস্থিত হইন। উপতাকার স্থানেশ্বরী নদীর পার্শ্বে भार्ष कि स्मार्क रतम हिम्बार्छ। है। नाग विख्य भारत शीरकार वाम हिम् । अथम । जाहारमंत्र वाही । निक्रीमि आहि। बीत्मत्र मेमाजात्मे नक्षेत्र মধ্যে বুৰুষ্ঠি শোভিত গ্ৰহা।

^{*} **এখন রেলওয়ে কোম্পানি অনেক দয় করি**তেছে।

होना लात रहेश क्रमांगठ नीह समजन ७ डेक्रवार्ड्य वार्य मार्य নিবিভ আ্যাত্রন, নারিকেল ও তালের ঘট।। তাল গাছ দেখিতে দেখিতে गाज़ी कोनाइनभून छाइबाना किमरम खारमन कदिना हासिमिरक रहाई হাই শব্ধ পাপ্ মাল নামিতেছে। বড বড় ওজরাটী পাগড়ীর ভিড়, **ह्वाटेब इर्जक ७ भावती गाए**डाबारमब हीरकाब नका धहेलाम आंत्रज्ञ वर्ष वा यूषारे पॅल्डिनाय। ভारेशानांद्र श्रेत प्रमाजीनं अ उपनस्तत (कलांद्र উত্তরস্থ বড়ীবন্দর ভৌদন। কেলা বলে দ্বীপের দক্ষিণ পশ্চিম প্রান্তে অবস্থিত ছিল। ববে দীপ দীর্ষে ৮ মাইল ও প্রস্থেত মাইন। এবং উত্তর পূর্ম হইতে দক্ষিণ পশ্চিম পর্যান্ত লম্বা হইয়া সংস্থিত আছে। এই দ্বীপের অব্যবহিত দক্ষিণে ওল্ড ওমানছ নামে এক দ্বীপ ও তৎপারে কলাবা নামে আর এক দ্বীপ আছে। ব্যের উত্তরে সলসিট দ্বীপ। এই দ্বীপসমূহ পরত্পর বাঁন ও দেওুরারা সংযোজিত। বস্বে দীপের পশ্চিমে মালাবার ও পুর্বে চিক্সিপ্লী নামে হই দিকে হই পর্বত আছে। ইহার মধাস্থ ভূমি নিতান্ত নিম্ন এবং কোন কোন স্থান এত নিম্ন যে বৰ্ষাকালে জলে প্লাবিত হয়। এই সকল দীপের পুর্বে ও ভারতের পশ্চিমে বম্বের রমনীয় বন্দর। প্রায় ৫০ বর্গ মাইল বিস্তীর্ণ, এই জলভাগের বক্ষয়লে পর্বত ভূষিত এলি-ফাণ্টা কারাং ও ঘিরবতী নামে দীপত্রর পর্য শোভা বিভার করিয়াছে। যাহা হউক কেল্লার স্থান ব্যে ঘীপের প্রধান দৃশ্য। পূর্বে এই কেলা ছুই মাইল বিস্ত ও বিভার কুত্র গৃহে জড়ীভুত ছিল। এখন কিয়ৎভাগ পরিষ্কৃত করিয়া উৎকৃষ্ট উৎকৃষ্ট ছর্ম্যাদি নির্মাণ করাতে অতি শোভাশালী इस्माह्य । वाक्ष विविक्तिरात विश्वति । गवर्गमणे गृहामि अरे प्राप्त সংস্থাপিত। উত্তর পশ্চিমে সাগরকূলে এছপ্লানেডের শোভা। কিছু দ্বুর উক্তরে ব্যবসাদি পুরিত দেশীয় লোকের বিভাগ, বন্দর তীর আঞ্চর করিয়া আছে। ইহার কিছুমুর উত্তর পূর্বে ম্যাজাগনে পি এও ও কোম্পা-नित्र कियात जाशीम ७ फक्रेग्राफ् । अभारम मार्गरतत याजिका जारबारन छ অবরোহণ করিতেছে।

বছে নগরের দর্শকি ইংরেজ ও দেশীয় লোকেরা সংমিত্রিত হইয়া বাদ করে। মালাবার পাছাড় ও ভাইশালায় বিলাসী ইংরেজগণের বাদ ছান। কেলার ও মাইন উত্তরে প্যারেশ নামক ছানে গ্রণ্টেশট ছাউস।
কলিকাতার ভার বংশ নগর গানের আলোতে আলোকিত এবং চুই ঘণ্টার
পথ বিহারপ্রাক্তিত জল আসির। ঘারে ঘারে এইণ করে। বংশর পথগুলিকারিক তা, অনোভিত ও রুক্ষ ছারার অনী ওল। এখানে মহারাজীর
অনোকা গুলুরালী ভাষার অধিক ব্যবহার। বংশু নগরে বিজ্ঞর পার্নী
লোকের বান। ইহারা পারত্য দেশ হইতে আগ্রামন করিয়াছে। পার্নীরা
ছ্র্যান্ত অনির উপাদনা করিয়া ঘাকে। ইহাদের মৃত দেহের জন্ম বংশ
নগরে গুলু বিদ্যান অর্থাৎ চারিদিকে বাঁধান অভি গভীর কূপ আছে।
বড়টার বের প্রার ৫০ গল হইবে। ক্পের উপার মৃত দেহ রাখিয়া
আনিক্ষে উহাপিকীতে জক্ষণ করে এবং উহার হাড় কূপে খনিরা পড়িতে
থাকে। মৃত্তর মুখে যে ফটী দেওরা হয়, যদি কুকুর অ্যো গিয়া উহা খায়
তবে পার্নীদিন্যের মতে ঐ মৃত্তের নিক্ষর অর্গ হইবে। আক্রম্যের বিষয়
এই যে দৈবাৎ কঠাগত প্রান কোন ব্যক্তি বাঁচিয়া উঠিলে পার্নীর। ভাহাকে
গ্রেহ না লইয়া হত্যা করিবার চেট্টা করে।

বাবে নগারে স্তব্যাদি শত্যন্ত তুর্নুলা। এক টাকা ব্যয় করিলে ও নিউল্লাদিতে উদর পূর্ণ হয় না। লুচি অতি তুর্লভ পদার্থ। কিন্তু এখানে বার মাল, আন্ত পাওয়া যায় এবং উহা অতি অনিউ। এখানে নানাবিধ ফল দেশ্য যায়। বাবে নগারে সাড়ে ছয় লক্ষ লোকের বাস, সহর প্রকাশু বটে কিন্তু কলিকাতার তুলা শোভা ও গাভীর্যা নাই। কেবল বাণিজ্যের কোলাহকে ও বলিকদের গৃহে পূর্ণ। বাবে নগারর অভান্তার প্রতিষ্টার তুই যোজার শিক্ষাম ভাড়া এগার আনা, এক যোজার কাবে ভাড়া সাত আনা, বামী ভাড়া লাচ আনা ও গোযান ভাড়া তিন আনা। এওঘাতাত সহবের মাল দিয়া ট্রামতরে চলিতেছে। বাবে নগারে সচরাচর লোকে নিয় লিক্সিত প্রান লেশিয়া থাকে। একজন মেঘারের সাহাযো টাউনহল মধ্যে মৃত প্রানীবালা ও প্রকাশার, মিণ্ট মান্টারের অভ্যাতিকমে টাইনহল সরিয়ানে টাকশাল, তক ও কাকটির এছপ্লানেতের প্রাক্ষ ওয়ার্ক টেলি-

^{*} মুদলমান ভয়ে ইহার। ৭৮৫ খৃঃ অব্দে অদেশ ত্যাগ করিয়া আদিয়াছে।

আৰু, সেকেটেরিয়ট পোট আফিল ও ক্রেডি বাছার, এলফিবটন गांत्र कि छे छान, माञ्चन मिकानिक देनछि छि छै, शिन्मिश्न अ मानुकानन अञ्चर्याञ्चरमः थाके मिष्ट्रकल कलक क बाबरमहेकि इंगिगालान, शादनन রাজ্ঞার আনবার্ট নিউজিয়ন ও ডিক্টোরিয়। উত্থান, কার্লে হত ব্যক্তিদের শ্বৰণাৰ্থ কৰাবা থিকা, সেকেটবীৰ অহুমতিক্ৰমে চুৱাবাদীতে তেভিড गाष्ट्रत्व देखून, नगीवत्यांनली मानकजीत मुर्जिगर होत्रिए शाह्यत अ গিরগাঁতর হতার কল, ধোবিতলাত মধ্যে কৃমিজি কাতলসজি ইনটিটিউট ভোলেখারের পিঁজরা পেল, এছপ্লানেডে মহারাণীর মূর্ত্তি এবং প্রাঞ্জিরাডে नर्यक्रक উम्राम। धनिएककी दा त्यादाभूदी पीन वस्त्र इरेट ७ मार्डम। ম্যাজাগন পাইর হইতে স্থবাতাদে ২ ঘণ্টায় প্তছান যায়। বন্ধর বোটে हार घणे। विभन्न इत्र । स्थिमात ७ जांशाला वन्नदात कलीत्वा स्विभाकत । थिन(कंछ। याहेटल) जक्टोवित इहेटल ०) या शर्याख ख्वालांटम ३० छन আরোহীর বোগা নোকাভাড়া ছয় টাকা ও ১ জুন হইতে ২০ সেপ্টেম্বর পর্যান্ত কুবাতাদে ভাড়া আট টাকা। সাত জনের যোগ্য নেকিছোড়া স্থবাতালে ৩ টাকা ও বুবাতালে ৫ টাকা। ডিলিভাড়া প্রতিনিন স্থা-তাদে ২ টাকা ও কুবাতালে ৩ টাকা। টনিতে অর্জেক। ৫ জনের यांगा अनीताति द्वांजात २ वर्णात जाए। वात जाना, ठरलाधिक ममरत्र ঘণ্টা প্রতি তিন আনা। কুবাতানে হই ঘণ্টায় এক টাকা, ততোধিক সময়ে ঘণ্টাপ্রতি চারি আনা। যাছাছউক এলিকেন্টা দ্বীপে রক্ষ শোভিত ছইটা লয়া পাছাত আছে তথাে এক সমীৰ্ উপত্যকা। ঘাট হইতে ২৫০ মাইল ডাইনদিকে একটা প্রকাণ বিকটাকার হত্তী পাছাত হইতে খুঁ দিয়া वाहित कता इरेगाए। याहे इरेट वर्षायांन पृत्त धर दी पष विथाव मिन्न जर्वाक्ठ जारक। थारमपूर्य थारुत मिं कि जातक। मतकात इरे-ধারে হুই প্রকাণ্ড ভার ও হুই ভিতিলয় ভার । মন্দির অতি প্রশাস্ত ১৩০ कोडे मधा ১००॥० कीडे थमंख ७ १० कीडे डेक । मिला मानामर्ग খোদিত মন্তকবিশিষ্ট অতি দীর্ঘাকার শুস্তরাজির উপর ছাদ বিভ্রমান। এই সমস্ত গুলি পাছাড় কাটিয়া বাহির করা হইয়াছে। মন্দির মধ্যে ত্রি-

मजक पृष्टि काणितम्य भवास विदालिक । नानासात्म व्यवश्या स्वरमयीव पृष्टि स्थामिक स्वेगार्छ।

ার্থে হার্ডেও বেদিন দেখিতে যাতরা প্রীতিপ্রদ। টানা হার্ডে বেদিন পর্যান্ত নদী দিয়া যাইবার কালে তীরের শোকা দেখিরা ঘটনতের কাইড্ কার্যান্তর বর্ণন মনে পর্যক্ত। শোক্ গীজেরা ১৫০১ অলে এই নগর ছাপন করিয়াহিল। ইহার চারিদিক গড়বন্ধ। ১৭৫০ অলে মহারাজীয়েরা এই ছালা অধিকার করিয়াহিল। এখন বেদিন পরিত্যক্ত ভূমি। গাউটা প্রকাণ্ড গিরজা ও কড়কণ্ডলা ভয়াবশেষে ইতন্ততঃ দেখা যায়। লতাজাল বেন্ডিত দেউপল ও দেউ ফাল্সিস এই ছুইটা গিরজা সর্কোৎকৃত্ত।

নামের ছইতে নিমার যোগে উত্তর পশ্চিম মুখে লোকে সোমনাথ ও

যারকা গমন করে। জ্নাগড়ের অন্তর্ভূতি সোমনাথ বা প্রভাগক্তে

এখন অংল্যাবাই নির্মিত মন্দির ও তংপ্রতিন্তিত সোমনাথ আছেন। ১০২৫

অব্দে মহম্মন গজনবী যে প্রাচীন মন্দির ভগ্ন করেন তাহা এখন পড়িয়া

আছে। ঐ মন্দিরে রত্ত্তভিত ও৬ ক্তম্ভ, অর্ণনির্মিত দীপদান অর্ণভূত্তল

শুহুবিধ রত্তপ্রভূতি দল কোটি টাকার দ্রব্য ছিল। (১) সোমনাথের

আন্তরে সেই মাঠ রহিয়াছে, যে খানে যাদবগণ মুসল্যুক্তে প্রাণত্যাগ করিয়াছিলেন। সরস্বতী তীরে বেখানে অশ্বন্থ গাহু দেখা যায়, লোকে বলে যে

ঐ স্থানে ভগবান প্রক্রম্ভ অন্তর্খনি হইয়াছিলেন। সোমনাথের ৪০ মাইল

উত্তরে গিরনার বা বৈবতাচল পর্বত। তথার হিন্তু ও জৈনেয়া তীর্থ

করিয়া থাকে। সোমনাথ বা প্রতাদক্তের হিন্তুদিগের মহাতীর্থ। এই

ক্রেক্তের উত্তরে রবি পুলী, দক্ষিণে সাগর, পুর্বেষ ক্রিমী ও পশ্চিমে ভগু

তোরা। ইহার গর্ভাহ্ গর্ডিমাত্র, ক্রেন্সীঠ পঞ্চ যোজন ও প্রথম ক্রেত্র

ফান্দা বোজন। বাড্রানল সংযুক্ত অগ্নিতীর্থ, পদ্ধক, সমুদ্র, কপর্দ্ধি, সোমন

^{ে (}১) কেন্দ্রেন্তার ইতিহাস অফ্নারে ইংরেন্ডি ইতিহাসে প্রকাশ আছে যে, মহম্মন সোমনাথের প্রকাশ নরাকৃতি মূর্তি ভয় করেন। কিন্তু পুরাণে প্রকাশ মূর্তির উল্লেখ নাই। সোমনাথ কুকুটাও সম জ্যোতির্নিক ছিলেন। প্রকৃটাওকমানং তংভূমি মধ্যে বাবছিতং ,,। ইতি সান্দে প্রভামধণে।

নাথ আদি প্রভাগের প্রধান ছান। এই ছানে সর্বাতী সাগর সভ্তম ত সর্বাতী ছরণ। কপ্রসাসক্ষ।

ं दमामनाथ (मिर्यशा किमारक बाबका रामन कतिरव । बादकां शांक्की ध्यमान मिन्त्र आह्म। यूक्काटनद टांगानाम चारन चारन जग्न बहेगाए । अदे शक मित्र मत्था तथरहा कुछीत 580 कृष्ठे छक्र छग् १ व नासक मिन्त्र সৰ্ব্য প্ৰধান। কিছু বৰ্তমান নবমূতি প্ৰায় ১৫০ বৰ্ব ছইল ভাপিত ছইয়াছে। मूमनमानिर्गित मित्रारचा भागाता भूक्षपृष्ठि नहेशा अथरम छर्डोरण्य महि-ষানে যোষা বন্দরে লুকাইয়া রাখে। : তাহার পর সমুক্তর শকুভার ভীপে লইয়া যায়। ভারকার গোমতীর সভিত সাগর সক্ষম হইয়াছে। ভারকার यांबीगंग अथान इरेट ३৮ मारेल मृद्र द्रामठाए। नामक ছात्न नंध हकानि উত্তপ্ত করিয়া গাতে চিহ্ন লয়। এই ছানের এক পুক্ষরিণী হইতে লোকে (गाभीहम्मन नामक जिनकमृक्ति। धादन करत्र। बातकाम रागमजी, हक्कडीर्य, সাগর গোমতী সক্ষ, মপ্তকুণ্ড, নৃগকুণ, গন্ধা ও গোপ্রচারাদি তীর্থ প্রধান। এখানে बाबभान क्काभान ও যোগিঞাদি বিশুর আছে। উএদেন, অর্জুন, (मवकी, क्रिकानी, छेक्कव, मछाछामा, लायमधा आमि विखब छीर्थमक बाब-कांत अधिकाश्म जांग मगूरा मग्न इहेगारह । दात्रका इहेरा अरनरक कथ्य দেৰোও দেখিতে যায়। কছে এক বিন্তীৰ্ণ লবণ ক্ষেত্ৰ। কোথাও বিল, কোষাও বিল, কোষাও জনা, কোষাও তৃণায়ত ক্ষেত্ৰ ও কোষাও নৰণেয় मम्मान धक वक कब्रिटिंड। जुन मकन आत्मानिङ स्टेल मृखिविकान भारतात्र नित्रमाञ्चनारत्र मञ्देशात हरक नवरनत छेनत कथन कथन छेपक्रक इद्या. कथन वा रेग्रामन, कथन वा युक्त जामि मानाज्ञ अस् उ मर्गन नशन গোচর হয়। লোকে ইহাকে गत्रवर्ष नगत कहिता चारक। किছुनिन इरेन छत्रानक ভূমিकरम्भ এर विভारमत जाम्बर्ग शतिवर्जन राष्ट्रितारह। কছে ও রণে আরণা গর্মজ বিচরণ করে। উৎকৃষ্ট আরব দেশীয় অখণ इंदाम कुना (दर्शनानी नरह, किंदू भीर मार्टन मा। (देनदानि क्वरणाव नगरत निक्कु (मनीत र्याहिक अ गर्फरखंत थानरमा कतिहार्हिन। अवहरकते রথের অশ্ব ভাসর দেশীর ছিল 🕽

উত্তর মুখে রেল পথে গুজরাট দর্শন ইচ্ছা হইলে বছে দ্বীপছ আণ্ট রোডে

আবোহণ করিবে। আণ্টরোড হইতে সাগরের তীরে তীরে রেল মাহিম भर्गाञ्च विनिष्ठारक । याहिरयत मयीशवर्जी बहेरन जात्रव मागरतत विभाग वक-सन् नत्रनामान्त्र स्टेट्र । बायत ७० की हे जलत ० थल म्हिल माहिस धार्मानी পার ছইরা আঘরা সলমিট দীপে উপনীত ছইনাম। সলসিটের পশ্চিম পার্শ্ব দিয়া পশ্চিম সাগর দেখিতে দেখিতে বাছিন প্রণানীতে উপস্থিত। বাছিনে সাগর জলের গভীয়তা ১৬ কীট এবং তাহার অভান্তর ভাগ বালুকাপূর্ণ। জোরারের কালেই তথার কিঞিৎ জোত বহিয়া থাকে। ৬০ ফীট অন্তর ২০ পঞ্জ, প্রথম ৬৬ পঞ্জ, দিতীয় ২০ পঞ্জ, তৃতীরও ২০ পঞ্জুল, চতুর্ব সেতু পরস্পর বাঁধ ছারা সংযোজিত হওয়াতে আমরা দেড় মাইল বিচ্ছত এই সাগর জাগ পার হইয়। ভারতে প্রবেশ করিলাম। পশ্চিম ব। **জারৰ সাগবের তীর** দিয়া গমন করিতে গাড়ী অসংখ্য সেতু পার হ**ই**তে লাগিল i বাদিন ছইতে তাপীতীরপর্বান্ত এই সমস্ত দেড় একত্রিত করিলে প্রায় ২ মাইল বিক্ত ছইবে। এই সকল সেতুর মধ্যে দামায়নের ১৫ সেতু, সমজাদের ৯ সেতু, जावका ७ जांशीमात्र ১৪সেড, পূর্ণার ১৩সেডু ও মগুলার দেছ ১২ থণ্ড বিশিক্ট। এই সকল দেছু পার হইয়। দেরিছে বা হুরট নগরে উপস্থিত ঘইলাম। হয়টের তিনদিকে প্রাচীর ও একদিকে তাপী প্রবাহিত, চাশী তীরে ক্ষুদ্র কেলা। দুইশত বর্ষ পুর্বের তাশী সাগর সঙ্গদম্ভ এই नमंत्र दरवत कुना चन्पत हिन । अथन मागरतत मूथ राजुकांत्र भूर्ग इहेरल्ट । স্থাতের পুর্বের মত আর সে গোরব নাই, এখন কার্পাদ বজের পরিবর্তে बक्त प्रमात्र शूर्व। अवारन शक्ष शकी की हो नित्र श्राहिशानन जन्न रेकन-দিশের একটা পিঁজরা পোল আছে। প্রদার লোভে ছঃখিরা ছারপোকা পূর্ণ শ্যার শরন করিয়া তাহাদের উদর পূর্ণ করিতেছে। স্থরটে দেখিবার मर्था आहीन * रेश्ट्रक ७ कनमांकनिर्धित करत्रश्वान, किला ७ मृछन श्वान-শাভাল অধান। গুজরালী ভাষা ছর্কোধ্য নছে, কেবল ইথি নিধি প্রাঞ্জতি

^{*} ইংরেজেরা আহারের সময় বে কাটা চামচা ব্যবহার করেন ১৬১১ আন্দৈ করিয়েট ইহারই সেই কাঁটা ইংলতে চলিত করেন। ইহার কবর সূত্রটে আছে।

কতকগুলি ক্রিয়ার প্রতি লক্ষ্য রাখিতে হয়। এখানকার মর্নার জিনিস অপকৃতি এবং লবণহীন দাউ ও চুরমুরা বালালীর পক্ষে প্রতিপ্রদ নছে"। গুজরালীয়া বালালীদের বত পাতলা কটা এবং তংগছ ভাত তরকারি আচার, দবি ও খিরনির চাটনী এবং পাঁপরভাতাদি খাইয়া খাকে।

যানত প্রীযাকালে স্থানে স্থানে লোক পার হয় তথাপিও প্রধানে তালীর বিভার মই সহজ্ঞ কটি এবং বর্ধাকালে এই নদী অতীব ভয়মর হইনা উঠে। এমন কি সময়ে সময়ে এক রাত্রিতে ৩০ কটি জল হৃদ্ধি হয়। এবং প্রবন্ধ বেগে প্রকাশু প্রকাশু হক্ষা করে কালিতে ৩০ কটি জল হৃদ্ধি হয়। এবং প্রবন্ধ বেগে প্রকাশু প্রকাশু হৃদ্ধা তীর জ্যোতের সহিত ভয়ানক তেজে আসিতে থাকে, এদিকে জোরারের সময় প্রবল সাগরবেগা প্রতিকূলে উপস্থিত। একদিকে সাগর বেগা অপর্যাদকে নদীর জ্যোত ও ভাসমান হক্ষের ধান্ধা দেখিরা রেলভয়ে কোম্পানি অতীব সাবধানে পুল নির্মাণ আরম্ভ করেন। ৩০ খণ্ডে ১৮৯১ ফটি বিভাত এই সেতু নির্মাণ করিতে এক বর্ষে ৪ লক্ষ্য টাকা ব্যয়ে ছইয়াছে।

তালী পার হইয়া গাড়ী কিন ও আমা নদী অতিক্রম করত নর্মানহ
নাগর সলমের নিকট উপস্থিত হইল। জলের গভীরভার আেতের তীবভার বালুকার আধিকো ও বর্ধার উপত্রবে নর্মান ভালী অপেকা সর্কাংশে
ভরকর। আেত এত তীব্র যে ঘণ্টার দশ মাইল চলে। জলের গভীরভা ৪০
ফীট, তিন্নিম্নে ৪৫ ফীট বালুকা ভেদ করিয়াও মৃত্তিকা পাওয়া মুর্লভ। ৬০ কীট
বিস্তু ও৬০ খণ্ডে এগার লক্ষ্য টাকা ব্যারে পূল করিলেও ভাষা মুইবার ভয়
হয়। ১৮৮১ খং অলে ৩০ লক্ষ্যাকা ব্যারে প্রিবীর মধ্যে এক লেছিমর মূর্চ
পূল প্রস্তুত ইর্মাছে, নর্মানর অপর পারেই ভড়েচি নগর। পুলের অনতিদূরে ভৃত্তবির্বি ঘাট। ভার্গরজ হইতে ভড়েচি নাম হইমাছে। কোকে
মান কালে "নর্মদে পাপনির্কোদে, বলিয়া মন্ত্র পাঠ করিভেছে। ঘাটে
জারারের জলে যথেই কালা। জীলোকেরা হাঁছার ছার মুইটা কল্সী
উপযুপারি মন্তব্দে করিয়া হাত ছাড়িয়া, দ্বরা অক্ষ্যেন নর্মানর উল্ল তীরে
আরোহণ করিভেছে। ভড়েচি নগর দেখিতে পলীর স্থায় গ পথলান্তে
অসংখ্য তাঁতী সূত্র পার্কার করিভেছে। নর্মানর তীরভাগ পাতিত ভিটায়

পূর্ণ। ছই দহল বর্গ পূর্বে ভড়েচ নগর, ববের নায় পশ্চিম ভারতের প্রধান করার ছিল। ইইছি জাচীন রোমানদিনের বিখাত বাইরগাজা রুমর বিনানক প্রীকেরা এই নগরে কাঁচ, মদির। ও অদেশীয় ফুল্রী করা আনিয়াবিজ্ঞাক করিও। ভড়েচি ইইডে ১২ মাইল ছুর জগারিখাত কবীর বটন ইহার তুলা প্রকাশু বট রুক্ত পৃথিবীতে লার নাই। খের চিক্ষণত হাত। প্রকাশু নামাল বা শাখা নিগত কাও সংখ্যা তিনসহল্ল। এত ছাল আক্ষান্তি যে নিমে ৭ হাজার লোক অক্ষদে থাকিতে পারে। বটতল হইতে সাড়ে-সাভ-জোল ভূরে অকীক প্রশুরের খনি। কাথের বাজারে এই সকল রত্ন বিক্রীত হয়। ভড়েচিও জৈনদিনের একটা শিজ্ঞানের অই সকল রত্ন বিক্রীত হয়। ভড়েচিও জৈনদিনের একটা শিজ্ঞানের আই

্ ভড়োচ ইইতে রেল সাগরতীর তাাগ করিয়া ক্রমে ভারতের অভান্তর-গামী হইরাছে। আমরা প্রত্যেক তিন্পত্রিশিষ্ট সেতুতে তিন নদী পার इरेश गारेकवार्ष्कृत बाजधानी वर्ष्कामा सगात प्रविक्तिमा (यमन मक दांखात नाम सक्तात वा मार्जातात, कांति द्रारखात नाम कांतियात वा कांति-য়োয়ার, দেইরূপ বর্তমান রাজবংশের আদি পুরুষ মহারাষ্ট্রপতির গাই চরাইতেন বলিয়া রাজ্যের নাম গাইকরার বা গাইকোয়াড় অর্থাৎ গোরক-কের রাজ্য ছইয়াছে। ইন্দোরের রাজার আদি পুক্ষ মলহার রাও, হোল-কার মহারাষ্ট্র শতির মেবপালক ছিলেন। এখন ও এক দিবলে রাজা : চাস कंतिरङ बान बदर हानी थाछ मखरक कंदिहा शूर्व विवदन न्यादन करतन। শোলালিরত্বের নহারাজার পূর্বে পুৰুষ মহারাজীর রাজখনের একজন নাপিত ছিলেন ও জ্তা রকা করিতেন। ইহারাই রাজা অধিকার করিয়া এক এক রাজবংশের দংখাপক ছইয়াছে। যেনন অথথ গাছে ধারো লতা জবিয়া गोहरक निरक्षक केतिक निरक धरन इत, तनदेवन देवादा ध्यवन दरेवा निया-জির সাতরার বংশ নিজের করিলেন। গাইকবাড়ের আয় ৭০ লক টাকা এবং বাজোর অধিকাংশ ভাগ প্তনি বিলির আম কুত্র কৃত্র বাজার হস্তগত আছে। श्रव्यादम देशादक व्यामात्र कतिए ना निशा निरक्ष व्यामात्र कतिशा রাজার অংশ ফেলিয়া দেব। বাহা হউক বড়োদা নগর ধূলার আকীণ। সম্ভান্ত পুৰুষ ও জীলোকের। শিতাম নামক গোষানে গমনাগমন করি-

उत्ह । शक्रदार्षेत्र गरू कठि द्रहर जबर कठान्छ मदम । त्यापुदि जमाधा উচ্চ ছানে অনায়াদে গাড়ী টানিয়া ভূলিতে পারে। এখানকার গভীর কূপ সকলই লোকের অধান অবলম্বন। সহরের নিয়ে সামান্ত খালের काम विश्वामिक मनी ध्यवाहिङ इहेटल्डा मनीत छेपत ध्यल्यतत पून। वर्षाना दिलाए सम्म नरह किसु परिकाश्महे कार्छत गृह। आहीन वाणि ত্যাগ করিয়া মলহর বাও বে হর্মাদী প্রস্তুত করিতেছিলেন, প্রস্তুত হও-য়াতে দেটা দম্পুৰ্বঃপ সমাধা হয় নাই। ইছার নিম্নতল সৃত্তিকার অভ্য-স্তরে খোনিত। বড়োদার প্রচণ্ড গ্রীম হইতে মুক্ত পাইবার আশায় রাজা धरेक्रण कदिएउছिलन। भवगनित्र शनित वामावस छेडम वाहे, किसु নির্মাণ প্রথা উৎকৃষ্ট নহে। বন্ধে প্রেসিডেন্সিতে ইট প্রস্তুতের উপযুক্ত মৃতিকা প্রায়ই পাত্রা যায় না। এমন কি রেলঙয়ে কোম্পানি পর্যান্ত है छिद्र जा छाट्य विशास अह अह अहित्सन। अहे नकस काइन वणकः का के उ প্রস্তর দ্বারা লোকে গৃহ নির্মাণ করিয়া থাকে। কাষ্টের ভাগ বছল ছইলে তাছার উপর রং দিয়। চিত্র বিচিত্র করে। দশ অবতার, জীক্তফের লীলা, কাছা দেওয়া ছুর্গা, রাম ও হনুমানের কাও, শিবছুর্গা এই গরুলই অধিক চিক্রিত थारक। मृतनमारमञ्ज छेणज्ञव कम अवश निर्माणाश्यामी जरबाद छविषा खन्न मिन्दिकाइ मर्या जिन्दिक (मर्गरे ध्वकां धवां धवां मिन्द्र नक्त रहन গোচর হয়। দক্ষিণ ভারতে জীকুফের রাগিকাসহ ত্রিভঙ্গভঙ্গিমাযুক্ত রন্ধাবন রূপ বড় দেখা যায় না। কৃষ্ণিনী হরণকালে রণ ছাড়িয়া যান এজন্ত কৃষ্ণিনী मह बातकात त्रनाहाज्कीत **ভावरे जिसक। याजानात्र रेकन ७ रेरक**र १ सीव-লঘী লোক অধিকঃ মিক্টালের মধ্যে বরফি রা কালাকন্দ প্রধান। উত্তর পদিচমাঞ্চলের লোকেরা ছানার সলেশ অশুদ্ধ বলিয়া হণা করে, অগ্রচ वम्त्रिकाळारमञ्ज्ञ रम्लास हिमालास ममल्डरे कीरतन शतिवर्ध हासान मान्यन धरः मिक्ना । इति शहेर् लाकित वार्षि स्थिनाम मा। यास হউক প্রাচীর ও গেট সমন্বিত এই নগার দেখিয়া আমরা রেনিভেন্সিতে গমন कदिलाम। दितिएक्जिद वर्षानि व्यानको। विक्रामिक ननीत छे०शिक স্থানের নিকট ব্যাতি অর্গলোক জ্রুট হইয়াছিলেন, এজম্ব উহা ব্যাতি পত्न श्राम नारम श्रीमका। अरे श्रारनत निकंते रेरप्रश्री शर्सछ।

ে বড়োলা হইতে উত্তর প্রক্রিয়াক হইরা রেল কাষে বা খাঘাত খাড়ীর মন্তক ৰেক্টন ক্ৰিয়া নাহীতীকে উপছিত হুইয়াছে ৷ তাপীৰ তুলা ৬০ कींग्रे अकड़, २० गटक मकोत साकु मिर्चित्र। एक मनी निर्म ०२ कींग्रे त्थाभित क्यारक । महीमाश्रतमणय विरूपक जीर्च वित्रश श्रीतिष्ठ । श्रूर्व्स धरे जान धककी व्यथान अकत हिला। मागरतत सल ble मारेल पाणगुउ इत्याप्त देशात जात त्म त्मीयच माहे। यादा इंडेक मदी भाव इदेश करतक (मृक् शांत्रदे भांकतमती मनी। **এই ममीत जीत्त (क्मत्रदीन क्रा**क्रत मिश्ट স্কল বিচরণ করে। আমরা ইছার ভীরত অহমদাবাদ নগর পতি ছিলান। अशास तिश्वास मात्रा जास्यनमार समायमकीन, यकाउँपात ममस्रीन, গজদুত্ত মনজীদ, কোকারিয়া সরোবর ও সাহাবাগ প্রধান। আহমদ সার জমামসজীদ অতি প্রকাশ। স্কর্মীর মসজীদ নানাবিধ পারিপাটো ভূষিত। কিন্তু গঞ্জনত মসজীন দেখিতে অতি হুনর। খেত-মার্কেলের আজাধক ধক করিতেছে, তত্ত্পরি স্থানে ছানে গজদত্তের পাড় দেওয়া ধাৰং গান্তে ভাজের ভার রত্ন জড়িত হইয়া পুস্পের প্রতিরূপ নির্মিত হই-ষ্লাছে। এই সকল পুশেষ পত্ৰ শুক্তি ও রৌপ্য মঞ্জিত। কোকরিয়া সরো-বরের পরিমর প্রার ১ মাইল বিস্তু চতুর্দিক গুলুর সোপানে আফাদিত। ষয়ন্তলে স্বন্ধ্য হর্ম্য শোভিত একটা দীপ। নগরের এককোশ দূরে শান্তর-মতী তীরে রাজকীয় উল্লাশ সাহাবাগ। চতুর্দশ শতাকীতে আহমদ নাহ **धरे नश्रत निर्वाल करतम । अक्नांटन देश श्रक्रतार्टित त्राक्रशानी हिल!** এখন ভয়াবলেবে পূর্ব। পূর্বে এখানকার রেশমীবন্ধ কার্পাসবন্ধ অর্ণ ও রেচ্পার অনমার, শক্তিনিহিত জবা, কাগজ, কাঠের কার্যা ও চিত্র কার্যা প্রান্ত হল। একরাটের পুৰুব জাতি অপেকা জীজাতি সবল ও সুতী। ঞ্জরাটে ৮৪ লেণীছ বান্ধণ আছে। গুজুর বাদী হিছুরা ডিভির জল পান कर्द्धा कन जिल्लाह मध्य कन्म न्थर्म कविरम मांच किंदु कनरमञ মুখানর। সাঞ্জিকা ছারা শ্রিমা কইলে দোব মাই। কেছ কালতালে পতিত হুইলে কাঁদিকার জন্ম আন্ধা করিয়া জীলোক আনে। উত্তর পশ্চিমাঞ্লের অনেক ছানে বিশেষতঃ ৰূপিক জাতি মধ্যে ধনী বিশেষে পাঁচ সাত টাকার উপযুক্ত কাঁদাইয়া থাকে। কাঁদিবার সময় জীলোকেরা আলুলায়িত কেশে

বুকে কাপড় বাঁথিয়া শির বুক ও হাঁটুতে আঘাত দারা তাগ দিয়া হায় হায়, হার হায়, হায় শব্দ শীত্র শীক্ত উচ্চারণ করিয়া নানা হবে কাঁদিতে থাকে। ভটিনি বজ্ঞানের বাতী আসিয়া দক্ষিণা অক্সারে নানা হাঁদে কাঁদান।

আহামদাবাদ হইতে ধেল রাজপুতানার আবু পাহাড়ের মধা দিয়া অবশেষে আজনীরে গিয়া মিলিয়াছে। শিরোহি রাজান্থ আবু বাইতে হইলে পথে প্রধান স্থান পালহানপুর টেসন প্রয়া ষ্ট্রে। পালহানপুরের পর ক্ষেত্ৰ সমতল ও বালুকাময়। আনাদ্ৰা ছইতে ভূমি ক্লেমে উচ্চ ছইয়া শেষে 8 मारेन मर्था शर्या २००० की है जेक इरेग्नाइ। निमल्याना नामक श्रांत ভ্ৰয়োদশ শতাব্দীতে লিখিত জৈনদিগের বিখ্যাত বিমলাসা ও তেজপাল বাস্ত্রপালজীর মন্দির দেখা যায়। মার্কেল শোভার শোভিত ও বিবিধ খোদকারীতে পরিপূর্ব, এই মন্দির শিশ্পনৈপুণ্যের জক্ত বিশেষ বিখ্যাত। শুনা যায় এই মন্দিরের এক এক তাক সত্যালক টাকা বায়ে নির্মিত এবং সৰ্বশুদ্ধ ইহাতে এক কোটী টাকা বায় হইয়াছে, এত প্ৰম ও বায় বাত্ৰো মিন্দির জগতে ছলভ। আরুজীর পাহাড়ের বেড় প্রায় ৫০ মাইল এবং সাগর হইতে উচ্চতা প্রায় ৪৫০০ ফীট। অর্থনী হইতে বিচ্ছিন্ন, এই পর্যন্তের জল বায়ু অতি স্বাস্থ্যাল। এজন্ত ইংরেজের। এখানে বিস্তর আবাদস্থান নির্মাণ করিয়াছেন, এখানকার নাধীতালাও অভাস্ত কুন্দর। আরুজী হিন্দুদিশের প্রাচীন অর্ব্দাচন তীর্থ। এখনও অচলেশ্বর মহাদেব আছেন। অর্ব্ দাচল পৃথিবীর ছিজ ছিল। এই ছানে মার্ক্তগ্রেশনিবলিক পতন ছান হাটকেশ্বর মাহাত্ম বর্ণন করেন। আনর্ত্ত দেশস্থ হাটকেশ্বর নিকট চন্দ্ৰ-কার পুর সংস্থিত ছিল।

বল্বে হইতে সেতৃবন্ধ গমন।

ৰবে আদি দেখিয়া পুনরার কল্যাণীতে কিরির। আদিতে হইছে।
কল্যাণী হইতে দক্ষিণ পূর্বসূথে মহারাষ্ট্র ও কর্ণাট পার ইইরা মান্দ্রাজ্ঞের
দিকে রেল চলিরাছে। মহারাষ্ট্রীয় ভাষা সংস্কৃতজ্ঞাত বলিয়া বুঝা খায় এবং
তাহারাও হিন্দীর ভাষ প্রহণ করিতে পারে। কিন্তু ইকড়ে পাণ্ডু প্রভৃতি

रय मकन रेउनम ভाষার कथा मिळिउ इहेग्राह्ट छोडा दुका याहेरत मा। जामना (यथारन वाय, वायरक, वायबाना, वायहरेटा, वार्यन, वार्यट कहिया थाकि, उथात महाता जिल्लामा बायाम, वाबारन, बायाम, वाबाहन बाबाह उ বাষাৎ কহিয়া থাকে। আমি ভূমি তিনি প্রভৃতি ছানে বর্তমান কালে হওরা ধাতুতে মী অনতো, তু অনতোন, তো অনতো, আমী অনতো, তুমী অসতা, তে অসতাত, অতীত কালে ছোঁতে, হোতাস, হোতা, হোতো, (इाएडड, (इाएड, खरिवारकारन जरमन, जमनीन, जरमन, जञ्च, जमान, जम-তীল হয়। করা ধাতু মি করবিতো ইত্যাদি। এইরপ সংক্ষত জাত কথার উপর বিভক্তি প্রয়োগের লক্ষ্য রাখিলেই বুঝা চলে। মহারাজীয় প্রাক্ষণ মাত্র গোরবর্ণ। জ্রীলোকেরা প্রকাশ্র থাকে এবং কাছা দেয়। ভোজের সময় জ্রী পুক্ষে একত্র ভৈজিন করে। জ্রীলোকে কেশ অভান্ত টানিয়া বাঁধার জন্ম ঘাড়ের উপর টাক পড়ামত বোগ হয়। দাক্ষিণতোর মধ্যে মহাজীয়েরা উন্নতিশীল। মহারাজীয় ভাষা মহারাষ্ট্র ত্যাগ করিয়াও বভদুর बां छ ७द॰ जानबनीय। याश इडेक अक्तरन जामना कनानीन शन डेनू-সার কেত্র দেখিতে দেখিতে অসংখ্য সেতু পার হইয়া নারেল ফেসনে পঁত-ছিলাম। নারেলের নিকট সহু শৈলোপরি অদৃশ্য মাথিরন নগর। ছই ঘণ্টার হয় বেহারায় যাইতে পাল্কী ভাড়া দেড় টাকা। স্থপারিণ্টেঞেট সাহেবের সহিত অংশ্রে বন্দোবন্ত করিতে হয়। মাথিরন নগর ১৬৪০ হাত উচ্চ। এই পর্বত বিবিধ লতাকুঞ্জে ও নানারকে বিভূষিত। বন্স পুল্পের স্থাত্তে বায়ু আমোদিত হইয়াছে। ভাষর সকল চতুর্দিকে সমাকীর্ণ রহি-রাছে। রুক্ত সকল মস্তক উন্নত করিয়া গেন জলদগণকে স্পর্শ করিতেছে। পক্ষী কলরবে গিরিবর নিরম্ভর শব্দিত হইতেছে। গাঁয়বট পইটে গ্রমন করিলে সহের বিশাল পাদদেশ ও অভারত শৃল একল দর্শন করিয়া মন विचात्रद्राम निमध इत। शारिनाद्रामा शहरणे गमन कदिता स्र्वाद जल गमन এবং বীপবিভূষিত তর্জ্মালা সকুল পশ্চিম সাগর অবলোকন করিলে আহলাদের দীমা থাকে না। সোধমালা বিভূষিত ববে নগর তাহার বত-पूर्व दिखीर्ग भागवञीत मानावात दिन, मार्कामन माहिम জाहाक ভূমিত दस्पत এবং ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র দ্বীপ পুঞ্জ এক কালে নেত্রপথে পতিত হইয়া কি অপূর্ব্ব

শোভাই বিস্তার করে। পর্কতের যে দিকে যাও দেই দিকেই শোভা, যে ছানে দণ্ডায়মান হও দেই ছানেই প্রতি। নয়ন ও মন পরিত্ত হয়। স্থারিটেতেটের নিকট একখানি নক্ষা লইয়া হার্ট, পরকুপাইন লুইমা, একো, ল্যাওস্ক্রেপ, বটল, মিম, এেট ও লিটল চেকিও আলেকজাপ্রা পাইট দর্শন করা অতীব স্থাকর। পূর্ব্ব পার্শ্বে আলেকজাপ্রা ও ক্ষুদ্র চেকি মধ্যে স্থান্ধ নিকুঞ্জ বন। ইহার নাম আমরেরি বা রামবাগ।

অনম্ভৱ নারেল পার ছইয়া লানে।লির দিকে গাড়ী গমন করিতে থাকে। পুনারায় সভের শৃক পরস্পর। শীজ শীজ আদিয়া উপস্থিত হয়। পুনরায় সেই কাননপূর্ণ প্রস্থদেশ, বিশাল প্রস্তুর মতিত বিস্তৃত পাদদেশ, সাত্র মধ্যে শকায়মান নিঝারিণী সকল, শৈবাল শোভিত শিখরদেশ, ব্যুপুপে হুশো-ভিত শাখীনিচয় তৃণাদিতে সমাচ্ছন ব্ৰহ্মণুত্ত ভূমি, রমনীয় দরীকন্দর ধাব-মান মৃগযুথ ও পক্ষী কলরবে পরিপুরিত বিবিধ স্থান নেত্রপথে পতিত হয়। পুনরায় ত্রিটিশগণের আশ্চর্য্য শিশ্প কৌশল। কি কৌশলেই পুনরায় রেল সম্ভের ভোরহাট পার হইয়াছে। নারেলের পর কুরজত হইতে প্রতি পঞ্চাশে এক ফীট উচ্চে গাড়ী উঠিতে লাগিল। অতি কটে শোণগিরির পার্শ্ব দিয়া ৬৬, ১০২, ১২১, ২৯, ১৩৬, ১৪০, গজ স্বড়ক দারা ছয় শক ভেদ করিয়া বিপরীত দিকে বাহির হইল। তাহার পর উত্তর পার্শ্ব দিয়া মৌকীমুলি শ্লে উঠিবার উভ্তম করিতে লাগিল। এই হুই মাইল ষাইতে २৮७, २৯১, २৮२, ८৯, ১৪०, ৫०, ८०१, ७ ১०৫ गङ मीर्थ आहे स्पृत्म ৮ শৃঙ্গ ভেদ ও পাঁচ দেডুতে শৃঙ্গমধাস্থ পাঁচ ভয়ন্তর খাত পার হইয়া উঠিবা-মাত্র সন্মূর্থে গান্তানাথ শৃক্ষ দণ্ডায়মান। ছই সেতৃতে গান্তানাথের ছই ভয়-কর কন্দর পার ছইবা মাত্র এক কোল মধ্যে শৃক্ষের উপর ক্রমাণত শৃক্ষ। ৮১, ১৯৮, ৫৫, ৬০, ১२৬, १৯, १১,२৮० ७ ১२১ गंज गंबीह à स्फ्र्ल परे ১ গিরি অতিক্রম করিয়া নাথকাডুকর নামে ভীষণ শৃক্ষ প্রান্তে উপস্থিত। अधन दियन गस्रहे। अब आह अठि माँदेजिए अक की हे डेका। धन दा! বাৰ্কলে কি কৌশলেই পথ করিয়াছ। ভুজগের আয় গতিতে গাড়ী পাকে পাকে পর্বতোপরি উঠিতে নাগিন। কি আশ্রেকা ! ইহার উপরও আর এক শৃক। ৩৪৬ গল সুভুক ছারা গাড়ী ইহাও অতিক্রম করিল। তদ-

নন্তর থাণ্ডালার নিকট গিরিপৃষ্ঠ ভরতর ঢাল ও নিমে গভীর খাত। অংশে অংশে এই স্থান পার হইরা গাড়ী সংখ্যা সংবাচন শিখনে উঠিরা বেন मस महकादा इरेशन मिटि नाशिन। जामबा नार्मिन क्रिम्स शैरु हि-नाम । अहेक्ट्र कृत्रक्रां हरेट कथन डिट्रां, कथन नित्स, कथन निर्म, कथन विषय, कथन प्रांत्म, कथन शूल, कथन छाहेरन, कथन वार्य, शारक शारक, বাঁকে বাঁকে, কি চমৎকারে শীর্ষে উঠিলাম, এই সকল পর্যত নিতান্ত কঠোর এবং এককালে আ্রের পর্বত ছিল। যোর পরিজ্ঞম করিরা রেল যেরপ বক্র ভাবে পতিত ছইয়াছে ভাষাতে খনেক চক্তের ব্যাসার্দ্ধপ্রায় ১৫ চেন ছইবে। আবার গারি পৃষ্ঠত রুহৎ রুহৎ উপলখণ্ড পথে পতিত হওয়ার সম্ভব হওরাতে ভাষাও পরিষ্কার করিতে বিশুর টাকা বার হইয়াছে। লানো-नित्र 8 मरिन सूरत विथा क कातनित छहा। जामना निक्कारतित मधा निता **धकी भिर मन्मिर्द्रद ममीशव्य इहेनाम। धाम ৮०० ছाउ नवजार उ**क्र এক প্রকাশ্ত নিরির ছই ভৃতীয়াংশ ভাগ পরিষ্ঠ করিয়া ৫২ ফীট প্রশস্ত এক দরজা নির্বিত হইয়াছে। ঐ দরজার চারিত্তম্ব, তথাবো হুই ভম্ব ভিত্তি গাত্তে সংলগ্ন। ভারের উপরিভাগ পদ্দার আরত এবং তত্ত্পরিছ খিলান ষ্ঠি প্রকাণ্ড। পর্নায় খোদিত উলঙ্গ স্ত্রী পুরুষের মৃত্তি জীবিত মহুযা-পেকাত রহণ। ভিত্তি গাত্র হইতে তিনটা হাতির মুখ বাহির হইয়াছে, তাছাদের আকারই বা কি প্রকাণ্ড! অভান্তরের মন্দির ১২৬ কীট লখা ও ৪৫ ফীট প্রশন্ত। ছাদের খিলান গোলাকার এবং তাছা ৪১ ভাঙে হার-কিত। এ ভাষের নিয়ভাগ অতি প্রকাণ, তহপরি অন্টকোণ ভাষ, তহ-পরি অতি উৎকৃষ্টরপ খোদিত গুরু মন্তক, তত্তপরি ছই প্রকাশু হন্তী উপবিষ্ট। इन्हीत উপর এক মহুবা ও এক জীলোকের মৃতি। কোন कांनिहार इने खोलांक चारह। धने शनि धन समदक्षण (थानिन स ইকার তুল্য স্থগঠিত গুৰু ভারতে আর নাই। মন্দিরের দেবভানের মধ্যে নিক বুর্তি মহাদেব, তহুপরি একটা ছিদ্রা দিয়া সমস্ত আলোক পতিত হত-রাতে অতি, ছব্দর দেখাইতেছে। এই প্রধান দক্ষির বাতীত পার্শে অতি উৎকৃত্তীরূপ খোদিত আমত অনেক গৃহ আছে। ইংরেজেরা ছির করিয়া-हिन (य, भरे श्रदा धार्यम भकात्मात मानियाहरमत नगत त्यानि इरेग्राइ।

কারলির ৫ মাইল ভূরে ইছা অপেকাও আচীন বেদিদের বাদজা ও ৯ মাইল ভূরে বেদছা গুড়া ৮

যাহা হউক আমরা লানেলি হইতে জনে অবতরণ করিতে লাগিলাম। অভান্তরে সমুদ্র তরক্ষের স্থায় যেন সহশ্লের ঢেউ খেলিয়াছে। চারি-নিকেই অকাণ্ড অকাণ্ড শৃদ। আমরা পর্বত খাত ও উচ্চাব্চ ভূমি পার वरेट वरेट रेखानी और बेंगिक वरेनाय। रेखानीय शार्थ शर्म किशक इ अधन कतिका भूना नगरद शैक्षिकाम । अहे रक्षकाश द्रात्कद छात्र অতি কম। নগরের পার্শে পর্বত। নিম্ন দিয়া মৃতানদী প্রবাহিত হইতেছে। এই সকল পর্বতে শিবাজি গোচারণ করিতেন। এবং এই নদীর জল পান ও এই মৃত্তিকার শতা ভোজন করিয়াই মহারাজীয় দের মেই হুৰ্দ্ধৰ তেজ আৰিভুত হইরাছিল। এই না সেই নদী! এই না সেই মাঠ! তবে মহারাষ্ট্রায়গণ ইহার অয় কিয়পে এতাবে জীর্ণ করিতেছে। প্রজা-বংসল ইংরেজনের এত যত্ত্বেও কিমপে এরুপ হইন! অসংখ্য ত্রিটিশ দৈত মধ্যে মহারাষ্ট্রীয় ভাগা এত অপা কেন? এ বে জীলোকেরা জল আছরণ করিতেছে। হাবীর প্রস্থিমীগণ! এখন কেন সন্তানদের এরপ দশা! যে পর্বাতের গহবর জয়োলানে প্রতিপ্রনিত ছইত, আজ তাহাই আমার বিলাপখন প্রতিধ্বনিত করিতেছে। এই প্রস্তরফলকে কত শত তরবারি শাণিত হইয়া থাকিবে, আজ ইহার উপর কিরুপে পাছকা দহ ভ্রমণ করিব। যে নগরের জারচকায় গাগণ বিক্ষারিত হইত, আজ শেই নগর বারাজনাপূর্ব ও ডাছাদের ছাত্তে ও ইজিতে কলুষিত দেখিয়া ছদর বিদীৰ হইতেছে। এ কোখায় আদিয়া পড়িলাম! এ কি মেখিতেছি! একি সতা সতাই সেই বীরদের জন্মভূমি! যাহারা দিলীর দাবন প্রতাপ অবলীলংক্রমে বিনাশ করিয়াছিল। তারে মহারজীয়গণ! রাইগরে শিবজির মৃত দেহ ভবাসাৎ হইয়াছিল। তাহার कি একটা পর্যাণুও এখন বর্তমান নাই? আদলা নিতাত হৃংখের দাছিত পুনরায় কার্কনির্মিত গৃহ সকল त्मिश्य माणिनाम । अर्थात्म त्मिश्यात्र मत्या वाँच उपमित्रकर्छे क्यानित्र বাসান, কির্ফিশ্বে মৌসারি কেলা, গবেশখতে গাবর্ণমেট ছাউল ও শার্ক-ीत मिना अहे करतकी ध्रमान । भूगांत विख्य देश्तक रेगक बान करते।

এখানকার এক জাতীর ভূষুর বা আঁজির উৎকৃষ্ট। গুরা পাউছর ও অনেক জ্বারের আরক পাওয়া যায়। পুনায় সংকৃত বিভার বিলকণ আলোচনা আছে। নিকটবর্জী পর্বতে এক জাতীয় সোমলতা জ্মিয়া

আমরা রেল ভাগে করিয়া পুনা হইতে ৬৮ মাইল দূরে সাভারা বাতা করিলাম। পথে কাড়বাজখাট ও স্কুল পার হইয়া সিরোয়াল নগর। তথা হইতে কামাচকি ঘাট অভিক্রম করিলে কিছু দুর পরে দেখা যার যে, সে অৰুলে পথ বিভক্ত হইয়া একটা সেডারা ও আর একটা বাইপাছারনি शांवे ७ शक्षानि बरेश महाबत्मबंद शैक्षिशाहि । এर विভाग मक् वा शांवे পর্বিতের শৃক্ষ সকল অভাস্ত উচ্চ। সাভারা নগর পর্বভিদমুছের মধান্থিত এক নিম্ন স্থলে অবস্থিত। তিননিকে পাহাড় ও অপর দিকে ইনা, কৃষ্ণা, ও উরমুরি নদী। কেলা প্রায় ৮০০ ফীট উচ্চ পর্বতের উপর সংস্থিত। हेहां देनकी ১১०० गंक ७ ध्यन्न ४०० गंका। धहे नगत किंद्रकांन बहाता हीत দিশের রাজ্যধানী ছিল। এখানে রাজাগণের কীর্তিগুলি দেখিবার যোগ্য। দেবমন্দির অতি বিশাল ও শোভাশালী। সাতারা হইতে ৬ মাইল দূরে আমরা মছাবলেশ্বর পর্বতে গমন কৈরিলাম। বস্তের গাবর্ণর ও প্রধান কৰ্মচারীগণ প্রায়ই এই ছানে গ্রীম্বকাল অতিবাহিত করেন। তাঁহা-দের গৃহাদি সাগর হট্বতে ৪৫০০ ফীট উচ্চে পর্মতগাতে অবস্থিত। এখানে মুদ্ধের বড কর্ক কিন্তু এখানকার গোলআলু ভারতের মধ্যে উৎরুষ্ট। প্রতি মনের মূলা দেড় টাকা। চুরট ও পাঁওফটার তুর্গন্ধ ত্যাগ করিয়া আমরা আমাদের তীর্ম কৃষ্ণার উৎপত্তিস্থান দর্শন করিতে গমন করিলাম। একাকী প্রজ্ঞরণের পার্ষে বসিয়া ঈশ্বরের চিন্তা করা পরম প্রতিকর। একটী অন্তর প্রাচীরের মধ্যে পাঁচটী ফুকর আছে তাছার মধ্য দিয়া রুঞ্চা, বেণা, कूछना, शांत्रजी, उ जाविजी अरे शांत नभी विश्वां रहेटल्ट । धकमित्क বেন্দারি ও তদক্ষিণে বেদগিরি, পশ্চাতে আমলকী বন। কিছু দূরে कृषा । देशात मिलन साम मध्यगादनीया छीर्थ। এই साम गावती कार्भ महायम। निकार काराजीर्थ । जमाजीर्थाम। क्रमात प्रकारत সাগারপর্যান্ত এক যোজন পুণাকেত। কত স্থানে কত লোক স্থান ত

আদ্ধ করিতেছে। কেহ বা "স্থপাদোদ্ধনা দেবি জিলৈলে তুলগামিনি। ক্ষমবেণীতি বিখ্যাতা সর্বপাশ প্রধাশিনি ,,। বলিয়া আন্মন্ত বলাই-তেছে।

যাহা হউক পুনা পার হইয়া রেল দক্ষিণ পূর্ব্বমূপে সুরা নদীর ক্ষেত্র দিয়া हिन्दि नाशिन। किन्नरक्त शद्य इन्ना ७ छोगा मह्नदम छेशस्छि। शर्दि পুগুরপুর তীর্থ পড়িয়া রহিল। তথায় ভীমন্মেদ সমুদ্র তা ভৈমী ভগবত-প্রিয়া বলিয়া লোকে স্নান করিতেছে। ইচ্ছা ২ইলে পথিক ভীমায় স্নান ত এখানকার বিফুমন্দির দর্শন করিতে পারে। আমরা প্রত্যেক ৪০ ফীট বিকৃত অক্টাবিংশতিখণ্ডযুক্ত সেতৃতে ভীমা পার হইলাম। ইংর এक এक खख ५० की है डेक उचार्या था। १५ की है नगरम् नगरम जनभन्न হয়। তদনভর দাদশ খিলানযুক্ত সেডুতে দিনা নদী পার হইয়া সোলা-পুর প্রবেশ করিলাম। সহরের চারিদিকে প্রাচীর। কেলা স্থায় 😎 ছাউনী বৃহৎ। ইহার অধিকাংশ ভাবই পুনার আয়। সোলাপুরে রেল ত্যাগ করিয়া ৫৮ মাইল দূরে স্থানিদ বীজাপুর নগর। দিলীর সায় ইহার চারিদিকে ভয়স্কর ভ্রাবশেষ সকল পড়িয়া আছে। ভর্মাবস্থাতেও वीकाशूत गाञ्चीशानानी। मध्यात्मत करत, जनाममजीन, देवाहित्मत ममजीन ও কবর, সভাগৃহ, আসমমুব।রক, মেথরমহল ও মক্ক। মসজীদ যথার্থই এক এক অন্তুত দৃশ্য। মহমদ সাছের মকবরার গদ্ধুজের ব্যাস ১২৪ ফীট এবং ইছার প্রতিপ্রনি অবিকল স্বরের প্রতিরূপ। ইত্রাহিম আদিল সাহের কবর হর্মো কোরান অতি স্থন্মর রূপ চিত্রিত আছে। বাজারের অবশি-ফ্রাংশ এখনও তিন মাইল লখা ও ৫০ ফুট চৌড়া। কেলার মধাস্থ মলি-কুল মৈদান নামক পিজলেয় ভোপের তুলা রহৎ তোপ পৃথিবীতে আছে কি না সন্দেহ। ইহাতে তেজিশ মোণ তিন দের ওজনের গোলা চলিয়া शार्क। अरे नगरतत (यत क्षांत्र > मारेल अवर रेष्ट्र त न नताना। ১৪৮৯ খৃঃ অব্য অবধি ২০০ বর্ষ এই নগর স্বাধীন রাজাদের রাজধানী ছিল। পরে দিলীশ্বর আবিংজেব বিমষ্ট করেন।

শোলাপুর ২ইতে রেল ভীমা ও এক শর্কত খেণী এই উভায়ের মধ্য

নিরা গুলবর্গা পর্বাস্ত চলিক্ষাছে। পর্বাক্ত হইতে ভীমাতে বছ কুলে কুলে নদী পতিত হইতেছে। তথাবো প্রত্যেকে ৩০ কীট বিস্তৃত পঞ্চদশ বিলানের বারি নদীর সেতু ও বাদশ বিলানে বিভক্ত মুরিগি ছল নদীর সেতুই প্রধান । স্থানে স্থানে পর্বাতের অংশ সকল নদীপর্বাস্ত বিস্তৃত হওয়ায় কোপাও কোথাও পথ প্রতি পতে ১ কীট উচ্চ হইয়াছে। তথাবো তিন শৃক্ত অতিক্রমই কটকর।

্ গুলবর্গার ২৪ মাইল পরে প্রত্যেকে ৬০ কীট বিজ্ত ২৪ খিলানে काननी नमी शांत इरेश मादावान, जननखत अशांक जनमन। अरे शांन হইতে বামদিকে এক শাখা রেল নীরস, কর্মশ প্রান্তরময় ও উচ্চাবচ ভূমি निया निकारमञ्ज जाकशानी बाहेनजावादन गिशास्त्र। शास्त्र शास्त्र सारवेज প্রস্তারের থনিও দেখা যায়। ছাইদরাবাদ নগর জলপুত মুসা নদীতটে অবস্থিত। নগরের চতুর্দিকের প্রাচীর ভালা। রাজবাদী ও মন্ত্রীর বাটীর সমুখে বাজার, দেখিলে অত্যন্ধা জয়ে। কিন্তু বাটীর অভ্যন্তরে একে একে দরজা দিয়া প্রবেশ করিতে থাকিলে প্রশস্ত প্রশস্ত প্রাদন रमशा यात्र। मखोद वाणेद मरभा जात्रनाचाना मिथिबाद योगा। लांत्र ममञ्जूरे कार्छ निर्मित्, ले मकन कार्छ दर कदा अ खात्म खात्म शिल्हि করা। সহরের ছানে ছানে পাহাড়ের প্রস্তর সমূহ উরত হইয়াছে এবং করেক হক্ত মৃত্তিকা উৎখাত করিলেই জনাট প্রস্তর বাহির হইয়া পড়ে। এ সকল প্রস্তর বাৰুদ স্থারা ক্রমে ক্রমে কাটাইয়া অতি কটে কুপ খাত ছইয়াছে। ভাছার জল অভি ছল ও। এখানে বেধিবার মধ্যে চার্মিনা-(बंब बांकाब, बम्कीम, किनन निकार वागान ଓ कुक मिलब, निकामित्राव ক্ষর স্থান ও করেকটা স্বাভাষিক সরোধর বা তালাও প্রধান। ইংরেজেরা হাইজাবাদের সমিকটে ভূরি দৈত রাখিয়া রাজ্যের বক্ষপুল অরপা বসিয়া আছেন। এথানকার মৃত্তিকা প্রতারের গ্রুড়া মাত্র, তাহাই বিষ্ঠা ক্রয় করিয়া क्रम एन्डेन कवित्रा कथिक्ष छर्मदा करता छिनिएमत बर्था लोहात ভার্তরা দেভারের ভার, ও কলী প্রধান। সময়ে সময়ে অভি উৎকৃত आरमत आयमानी इस। शिक्षात्रक्ति, ब्रांबिक्न, शिक्षक, यश्चित भाक, किकांति कन जर्भका किছू तुरू (वर्शन, इत्रमतावादमत वाखांदत जामदत्त

সহিত বিক্রীত হয়। গৰুতে মন্ত্রের বিষ্ঠা ও মহিষে ঘোড়ার বিষ্ঠা খায়। অতএব হ্ন্ধের স্থাদের কথ। আর কি কহিব। নগরের অধিকাংশ ছানে ছনুমান বা মহাবীরের মন্দির বা ভান আছে। আলাণ বাতীত জাতিরাত নারিকেল ভাঙ্গিয়া ও কপূ'রে অভিণ দিয়া পূজা সমাপন করে। এখামে মাংস এবং নানাবিধ কলের আরক লোকে প্রস্তুত করে এবং অনেকে সেঁদী নামক খর্জ্জর হক্জাত মদ্য পান করিয়া থাকে। এখানকার রেসিডেণ্টের কুঠী অনেকাংশে গবর্ণমেণ্ট ছাউদের মত শোভাশালী। এদেশীয় পীড়া মধ্যে নাড়ু অর্থাৎ গিনিওয়ারমই অধিক। জলের দোধ ইহার মূল কারণ, এজন্ম উফজনে স্থান বিধেয়। হাইদ্রাবাদ রাজ্য গোদাবরী হইতে কৃষ্ণা তীর পর্যান্ত বিভীপ। জায়গীর বাদে নিজামের আয় প্রায় তিন কোটি हे कि। निकारमत होका गवर्गरमण्डेत होका अर्थका आड़ाई आमा कम। রোপ্যের দর অন্থলারে ইহার হ্রান রিদ্ধি হয়। হাইদ্রাবাদের মুদলমানের। এক প্রকার হিন্দী ব্যবহার করে সত্য কিন্তু এখানকার ভাষা তৈলঙ্গী। উত্তরে গঞ্জাম, দক্ষিণে মাজ্রাজ ও পশ্চিমে হাইদ্রাবাদ বা অরুরাজ্যের किश्रमः नहेश रिजनम जाश थहलिए। रेटनमी, कर्गाण, प्राविड़ी, डूनवी ও মলয়ালম এক জেণীর ভাষা বলিয়া একটা শিক্ষা করিলে অপরটা কয়েট এক রূপ বুঝা চলে। কিন্তু সংস্কৃতের সহিত কিছুই ঐক্য নাই। পুরা কালের অসভা ভাষা ২ইতে এই ভাষা উদূত ২ইয়াছে। রাম হনুমানের দহিত সংস্কৃত ভাষায় আলাপ করেন। তিনি কহেন, দেখ লক্ষ্মণ! হনুমান কেমন সংস্ত শিক্ষা করিয়াছে। রাক্ষম ইলুল বাতাপি সংস্ত কথা কহিয়া ব্রাহ্মণাগণকে ঠকাইত। তৈলন্দীরা সমস্ত মলল জিজ্ঞাসা করিতে হইলে অন্দর বাগুণা কহিয়া থাকে। আমি যাই, তুমি যাও, আমরা যাই স্থানে, নান পোতাল্ল, লু পোতায়ু, ওয়াড়ু পোতাড়ু ব্যবহার করে। জাবি-ভীয়ের। ইরগেল অভৃতি বিভক্তি অয়োগ করে। স্তরাং বুঝা ভার। এজন্ম জলকে নীল্ল, এ দিকে আইসকে ইকড়ারা, এক প্রসাকে কল আনা, হুই পয়সাকে আরা আনা, তিন পয়সাকে যুকাল আনা, টাকাকে রূপেয়া, কোনদিকে পথকে এদোয়া, সরাইকে সয়ম, তণ্ডুলকে বিয়ম, ছ্গ্ধকে পালু, ফলকে পাণ্ডু, বেগুণকে ওঙ্কাইলু, তেঁতুলকে চিফ্রীপাণ্ডু, তরমুজকে কলিংড়ি

কৰিবে। সংস্কৃতক ৰাজ্যিক সংস্কৃততে ও ইংবাজিভাগতিক বাজিকে बेरदा कि करिया कार्या केवाब कवि:व । गृहत्वत खीएनरेकार रेजनरफ आजाव বট পদাশ্দির পাতা মেলাই করিয়া ভোজনপাত এপানপাত প্রস্তুত করিয়া भारक। क्षेत्रक रगामात्र छेलेब सकाहुई एानिया (य लाहिन्समी रेटग्राब क्य जीहार यात्र निश्च जारमरकत्र जारात हत्न। रेजनकी जीतनारनमा अकाश्र খাকে, কনিষ্ঠে জ্যেতের জীকে ভাগাদা করিতে পারে না, কিন্তু জ্যেষ্ঠ কনিষ্ঠের खरेक छाण्यम कहिय। थारक। अरमानद्व जासकारण लाक रेणव। याजद মিছুতি কিন্তু ৰস্তাতঃ পড়িমাজী নিয়া লোকে ত্রিপুণ্ডু করে। ছলুন চুণ কট-कि बि छ ल्वूत तम ि है। य कभी देखाती इव छाड़। निश्र । जात्तक जिन् छ করিয়া খাকে। হৈলভের নীচ লোক মধ্যে বিধব। বিবাহ প্রচলিত আছে। (माकाममाद्राभाक (गठ विका जाक्यांन कहिरल वस पूर्णे। अभवा खीरमारक माथाम कार्राष्ट्र तम मा। यान्। इंडेक इम्मबादारमञ्जू श्रीय जिलारमा ইংশ্লেক্স রেলিডেন্সির অন্তর্ভুত করিয়াছেন। সেকেক্সাবাদে যদিও हैमझ शार्क किन्न उथा कहेट उर माहेल सूद्र दालांत्रय नामक शार्व के धानान প্রধান অফিস জাছে। এই ভান অপেকারত মনোরৰ শীতল ও ইছার জলও উৎকৃষ্ট। হাইনরাবাদের ওতিন ক্রোশ দূরে প্রাচীন রাজধানী গোলকঙা। কেলাব পার্শ্ব স্থান্ত পর্বাতাপরি পুর্বে রাজগণের প্রকাণ্ড ध्यका । इसा मकन विश्वयान । (कलांत अकास त राहेमतावात्मत मन् सि-ৰংশীয় বন্দীগৰ কৰু খাকে। টাভৱনিষারের বর্ণিত গে বিংশতি ছীরক ধ্নি জার নাই। সাঙা ছুই এনটা আছে ভাছাত বন্ধ। এই সকল খনির श्चीक क्षणीवशां । शानकशांत जुना छे दक्के शानिविभिक्के की सा कि हुर्संख । इन्हिन ब्रावान शमन देण्या ना इदेरल कीमात एक किया शमन করিতে করিতে ইহার দক্ষম স্থানের কিছু দু:র রকা তীরে উপস্থিত হই ব। আীছাক লে কুকা বেণার জ্বল অতি কম। নেবির বাবহার সংপ। বাঁশের होक्बाब प्रमिष्ठा जारबन निवर भावाभारतज्ञ कार्या प्रस्ता कार्या करणांत त्यापु प्रम भर्त विक्रकः, श्रारकाक चल ४० की है विख् छ। नित्त आख्व यानाम अने শেছু বিলক্ষণ বৃচ্ ১ইলা ছ। ক্লকার উত্তর তীতে নানাবিধ রাজুর থনি। अंखेल देवा(क रहेशकी विनातन के के एक एक मा। वाश के के राष्ट्र भारत

ছইলা কিছু যুৱ পৰে বাইছোৰ, বাইছোৰ কটতে কানাড়ি ভাগা আক্লি। अथन क्षत्रदक नीक, ब्राकेटक सामान, अनितक अविशतक देशिया, सूरे शतनाहिक व्यक्षा, जिन भग्नतहरू यूकांन व्याना, गाँछेतीत्क उन्ना, त्नान निर्फ श्यादकं मा श्रामाद्र, जेशरवश्य कन्नत्क कृष्ठ, हति।क म्रास्य, उक्ष्माक क्रम्का, ছ্কাকে হালু ও কলকে হারু কছিবে। ইংরেজের। পশ্চিম সাগরের উপ-कुलवर्की (म ज्ञानिक कामाणा बत्यम वस्रकः छाइ' (मज्जन (मन पादर छह्नो प्र কণাটী ভাষা বিরল প্রচার। ইংরেজের। পূর্বে ও পদ্বিমকুলের ইই পৰ্ণতকে ঘাট কৰিয়াছেৰ ৰম্ভতঃ তৈলজ ও কাৰাড়ী ভাষায় ঘাট, এটা, छज्। পर्वजाक करहा यमन मश्यका, वस्त्रधका, मरहस्त्रधका हेजानि। কৰ্ণাটী ভাষাটী কেবল অধিতাকায় প্ৰচালত। কৰ্ণাটে ৰুদ্ৰী ও লিজায়তী বলিয়া যে শৈব মশুদায় আছে তাছারা ব্রাখাণ অণোক্ষা শ্রেষ্ঠ, ভাল করিয়া ভাষাণের স্পর্শ করা জল পরাস্তত খায ন।। অথচ গান্ধবাণক তাহাদের क्षम । अक्षां । देशामित शलाश या काशास्त्र भूँ हे चिरेशन घरेट আনীত এক একটা ক্ষুদ্র প্রস্তর শিবলিক থাকে। তৈলক, কর্ণাট, ছাবি-ভাদি দান্দিণভোর মর্বত্ত জীলোকের। রেশঘের পাড় দেওয়া ও ন।না ধর্ণের সাড়ী পরাতে অতি স্কর দেখায়। অযোগার চিল পাজাম।, লাছোরের मझीन भाजाया, भाजियाकात्मत्र यसना यागदा ଓ कान्यीरदत गर्नातम १६८७ পা পর্যান্ত দোহেশ্যমান কুরতা ছইতে দাকিপাফোর জীদিণের সাড়ী দেখিতে কুজী। * তাখাদের কাপড় প্রায় আঠার বিশ হাত। পুরুবের স্থার কাছা দের এবং কতকট। কোঁচা করিরা কোঁচার অবশেষটা খুলিরা शादा (बड़ (मत्र । तुरक वक्षे कां हुनी थारक । किंचु लक्षात मण्यक नाहे, ৰোড়ায় চড়িয়া বেড়ায়। অনেকে বলেন, দাকিণভোৱ এই বাৰহার প্রচীন व्यक्तियात अव्यक्तिक कावराव, पूर्णणांव व्यक्तिराहित व्यक्ति । किंदु

^{*} আর ছবিব পারে সাহেব কহিয়াহেন ইংলণ্ডের ইতিহাস খুলিয়। দেখ ইংরেজেরা বার্মার পোনাক পরিবর্তন করিতেহে তথাপিও একটা হোগ্য বিদ্যা ঠিক হবল না। জ্ঞারতে পরিজ্ঞা জল বাহুর তান্ত্রণ ও উৎকৃষ্ট, এজন্ম একভারে আছে।

রাষ্ঠতঃ ভাষা নহে। প্রবধুরা খণ্ডরকে পর্যান্ত বে সঞ্চা করিত ভাষা ধ্বেদের ঐত্তরের ত্রাক্ষণে নিখিত আছে। যখন বিভীখণ সীতার শিবিকা-वांत क्य कृतिका वाजवित्रात्क जानाविक करतम जनम तांग कहिएनम, विक्रीका । दिशक, गीका, मध्याम, बहबह, यक ଓ विवाद अरे करतक विश्वत बीचालंड मर्नम मुक्नीम नटक। मक्तन क्योरवड व्यवःश्रंड व्यवन ना কৰাতে ভাষা আসিয়া কৰিল, তুমি স্থতীবের কমিষ্ঠ ভ্রাতা, অভএৰ স্থতীবের जीमिश्रदक मिथिट मांच कि ! जागांत्रन ଓ छात्रछत मांना ছात्न जर्ह्या-স্পাদারণা বলিয়া বিশেষণ আছে। মুসলমানদের ভারতে আনা ছুরে খাত্ৰু মহলদ অন্মের ৮০০ বৰ্ণ পুৰে আঁক মৃত নিগাছিনিস পাটনীপ্ৰজে থাকিয়া হিছ জীলোকগণের অন্তঃপুরে বাদ ও ভয়ন্তর আবরণের বিষয় निविद्याद्य । जन्नान्त विनया धक्या भवत जिल्लामा जारह, कियू দাকিণাতো অনেকের সে অন্তঃপ্র কোধার? মহরার এক জী বাদীর नकरनद मरनाडक्षन करडा, अकि आर्थारमत बावबात ? विमामत आरमरम এক জীৱ বছপত্তি আছে সত্য কিন্তু তাহা অসভ্য জাতি মধ্যে প্ৰচলিত। विका भार बरेश क्षीगार्भर कमें भूक्तवर छे भर करम हिंक बरेट बरेट অৰশেৰে কলা কুৰারীতে জীলোকেরাই সর্ব্বে সর্বা হইরাছে। কানাড়ার কুল লোকে রাগী শভের মণ্ড থাইর। দিনপাত করে।

বাহা হউক রাইচোর পার হইয়া আমরা কৃষ্ণবর্ণ যুক্তিকাপূর্ণ কার্পাসের ভূমি দকল অতিক্রম করিতে করিতে ভীষণ ভূমভারা তীরে উপস্থিত হই-লাম। এই মদীর বিস্তার প্রায় ৩২০০ কীট। এবং সময়ে সময়ে ইছার ক্রম হটাৎ ১৭ কটি ফ্রাপিয়া উঠে। তীরষর অতি বিপুল ও ভরমর। ক্রিছু নিম্নে প্রভার থাকার রেলওয়ের ভাল দকল দুচ় ইইরাছে। প্রভাকে ৬৪ কীট,বিজ্ ত ৪৮ শণ্ডের দৈছতে আমরা নদী পার হইলাম। ভূমভারা পান্ধ হইরা গাড়ী দক্ষিণ মুখে শত্যপূর্ণ ও ক্রমপূর্ণ ক্রের মধ্য দিয়া আমানী নথারে উপস্থিত হইল। আমানীর পর গুড়াকল পর্যান্ত পুনরার পার্কারীর ভ্রমর ভূমি। গুড়াকল হইতে ভাইন দিকে এক লাখা রেল ক্রমানী বিয়াছে। কিছিল্লা দর্শন মাননে আম্বান এ রেলে আরোহণ ক্রিলাম। ক্রিক্র প্রে হণারী নদী। ইহার বিষম ভীর অতি সামান্ত

मांक फेक्स विकास २०१० की है माता ७८ की है जावस ७८ बहर करे रम् भाव स्रेक्षा बलावी मशदा शैक्षिनाम। निकंष्ट छेळ ध्यानाइक পর্বতোপরি ত্রিবেইনযুক্ত কেলা ও পার্থে ইংরেজদের দেনানিবেশ ছান। धरे क्लांत चारन चारन छात्त्रत सनि चारह। बलावीत ७० क्लांन सुरव হান্দিও আমিগাছতে কিকিছাদি পৰ্বত। কিকিছাৰ প্ৰায় ৪ জোল ष्ट्रीय भवायुकः। अवायुक्तव भागत्यर्भ भष्मा महत्रावतः। भष्मा महत्रावतः এবং নদী উভয়ই। সরোবরের জল কুত্র নদীবোগে পার্শ্বর ভুক্তজ্রাতে পতিত হইতেছে। মতক সরোবর পশ্পার অংশ মাত্র। পশ্পার পশ্চিমে শবরীর আঞাম। অভুরে হ্রদ সমুখন্থ গুছার স্থাবাদি বানর চতুষ্টর বাদ করিত। কিছিদ্ধার অপরদিকে মাল্যবান পর্বত। এই ছানে রাছ বর্ধাকাল অতিবাহিত করিয়াছিলেন। ঈশাণদিকে সমুন্ত গুছার তাঁছার আবাদ স্থান ছিল। নিম্নে জ্যোত্ৰতী প্ৰবাহিত হুইতেছে। এই সকল পৰ্বত এখনও অভাব শোভার বিমণ্ডিত। সেই ভ্রমরের গুঞ্জন, সেই পুলিত বিটণী নতা, সেই পক্কিল্লের কনরব ও সেই জন প্রপাতের কলোলধনি। আছা! এখনও সেই নীরদনিকর গিরিবর আচ্ছর করিয়া থাকে। এখনও দেই শীতদ বায়ু প্রবাহিত হয়। এখনও পরিলান্ত পথি-কের মুখে রাম রাম শব্দ কর্ণগোচর হর। কিন্তু সে প্রত্যকন্থলী আর নাই। এখন যাত্রীরা পম্পার স্থান করিয়া জীরামের পূজা করিতেছে। কিছিলা দেখিতে আদিয়া প্রাচীন বিজয়নগরের আশ্চর্যা ভয়াবশেষ দর্শন করা অতীৰ প্ৰীতিপ্ৰদ। এই পরিতাক্ত নগরের বেউন প্রায় ৮ মাইল। ইছার ছানে ছানে ও পথপাতে এত রহৎ রহৎ প্রভর পড়িয়া আছে বে কছাক তাহার ছায়াতে গমনাগমন হয়। পথ পুকরিণী কূপ সমস্তই আছর মধ্যে খোনিত। গৃহ ভার মন্দির সমস্তই প্রস্তরে নির্মিত হইয়াছে। এক এক খান প্রস্তর এত বৃহৎ যে, কিন্তপে যে সেই প্রস্তর অত চুর উর্চ্চে উত্থা-শিত হইরাছে তাহা বোষণবা হয় না। এক এক বঙ দীর্ঘে প্রছে ও ৰেখে পাঞ্চল হত। বাজারের মধ্যক দশ খতে বিভক্ত ৯০ কীট বিজ্ঞ শিবালর প্রার ১৯০ ছাত্তভক্ত । বানচন্দ্রের বিশাল মন্দির ছ ভভের শোদ; कांदी निजासरे इमरकात । विक्रमित थात १०० की हे नम् ७ २०० क्रूडे

প্রাণক্ত। পার্শ্বে একথানি নিরেট পাথরের প্রকাশ্ত রংগর আম্লাম থোদকারীতে পূর্ণ। এই নগর প্রাচীন হিন্দুদিশের রাজধানী হল। এই ছানেই দেই বিখ্যাত বুক্রার রাজধানী করিলাছিলেন। এই ছানেই দেই ভরুত্রর পাঞ্জি মাধবাচার্যা বেদের চীকা ও অপেয় প্রস্তু রচনা করিলাছিলেন। ইইার ক্রত প্রস্তু এত আছে যে, ভূমওলে এক বাজির হস্ত হউতে এত অধিক প্রস্তু অপা বাহির হইয়াছে। এখানকার নিকটছ ছই এক জান লোক কছে যে এই নগর পূর্বে ভুক্তভার উভর তীরে ১২ জোশ বিজ্ঞীপ ছিল। এই ভুক্তভা। তীরে শৃক্ষণিরিতে শামরাচার্য্য সরস্বতী ছাপন করিলা 'আকম্পাহ ছিরাভব মদাল্লমে,, বলিয়া চলিয়া যান। গভীর প্রজ্ঞানীল সম্লাদীগণের সহিত আলাপ করিবার ইচ্ছা থাকিলে দর্শক ক্রেছাদি বাতীত শক্রাচার্য্যের যমুনাইক প্রভৃতি মোহমুন্যারের ভায় অনেক স্থালিত কবিতা আছে। শক্ষণিরি বা দিণ্ডার এই মঠ জনেক প্রাচান পাওয়া যাই ব। শক্ষরাচার্য্য হই তে এখন এইশব প্রশ্বেষ স্কান পাওয়া যাই ব। শক্ষরাচার্য্য হই তে এখন এইশব এইশব তা

বল্লারী গদন ইচ্ছা না হইলে গুড়াকল হইটে প্রধাণ রেলে সেনানিবেশ ছান গুটি চলিয়া যাইবে। পথে পাছাড় খাত করিয়। রাজ। সমান করা হইয়াছে। গুট হইতে পূর্বমুখে রেল গাড়ী পর্যতময় উচ্চাবচ ভূমি পার হইয়া পালার তীরে উপছিত হইল। ৬৪ ফাট অন্তর ২১ াথলানে পালার গুণ কীট অন্তর ৪০ থিলানে চিত্রাবতী পার হইয়। পলীপুরিত নীল ও কার্পাদের সমতল ক্ষেত্র সকল অতিক্রম করিতে করিতে কতবগুলি মুদ্র দুলী পার হইল। তাহার পর ২৪০০ ফটি বিজ্ঞাণ গাণায় নদী, তীর নিম্ন বিসম ও পরিবর্জনলীল। নদীবেগেয়ও ছিয়তা নাই, বর্ষে থাত পরিবর্জন করে। সময়ে সময়ে চেলি ফটি জল উঠিয়া দিক প্রাবিত করে। এই নদী পার হইয়া রোলাভঙ্কা নাল। অতিক্রম করত কড়প নগরে উপছিত হইলাম। কড়প বহুজনপূর্ণত, যাজাজের বাণিজ্যের প্রধান প্রবাহ ছান। প্রায় বার্ষিক ২৫ লক্ষ্যাকার জবা এখান হইডে মাজাজে প্রেরিত হয়। কার্পান, নীল, তামাক ও কুম্বম ক্রমাগত মাজাজে

চালান হটা লাস। কাপড়, কলল ও বিবিধ ধাছুদ্রবো দোকান পরিপুরিত। क्छना देव प्रिंगित नानाविध मृगुष्ठ शाव। ठान, दांशी, क्वांबाब, वाक्या শ্লা স্থানে গাদী করা বহিলাছে। সেগুণ, নারিকেল, খর্ল্ছুর, তাল, নিম, বাবলা এভূতি রক্ষ জেলায় বিশুর থাকায় ভক্ষাত দ্রব্যের অসম্ভাব নাই। क एम, जिलाद दोजधानी व देशदक एमद (मनानित्यम प्रांत । नश्द्रद १ মাইল ড ভর পূর্ণের গালার ভীবে হীরক খনি আছে। কড়প পার ছইলা তয়ার্রা এক দুদ্রে নদী। ৬০ দীট তাওর তাট খতে ঐ নদী পার ছইয়া প্রায় ২৭ মাইল বেল সমতল কেন্তের উপর দিয়া পূর্বসূথে সুন্দর ভাবে চল্লভো ভদনস্তর চেয়ার নদী। ভুক্তজা ও চিত্রার পর এই সেতু গণনার .শালা। ইছার ৩৮ বিভাগ এবং প্রত্যেক বিভাগ ৬৪ কীট অন্তর। চেম র ২২ ত ভূম পুররায় পার্কেডীয় ভাব ধারণ করিল, স্থানে স্থানে গভীর খাত। এই নকল সামান্ত খাত পার হইতে হইতে বালাপিলিতে পুর্বে ঘাট বা মহেন্দ্র পারত অতিক্রমের লক্ষণ লক্ষিত হইতে লাগিল। পথ ক্রমে উচ্চ হইমানে। কিষৎকাল পরে ত্রিপতি টেসন বা বালাজী। পর্বাহ ভোগরি বালাডির যনির মতি বিশাল সিংহাসনোপরি বালাজীর প্রস্তর-মন মুর্ত্ত উপবিনট। বন্দোবস্ত প্রায় জগলাথের আল। দাক্ষিণতোর মংপা এই ৩।প অতি প্রসিদ্ধা জগরাথ কেত্রের আয় বালাজীর প্রসাদ ভক্ষণেও লোকে ভাতিভেদ স্বীকার করে না। বর্ষে বর্ষে এখানে বিশুর মাত্রী উপস্থিত হম এবং প্রমাদ দেশ বিদেশে প্রেরিত হইয়া থাকে। উড়ি-ষারে জগন্থে ও দা দিন্দ্রোর বালনাথ প্রসিদ্ধ। পর্বতের উচ্চতার কারন বিপতি পার হট্য। নাগারীর নিকট পাছাড় কাটিয়া পথ সমান করিছে হখনাছে। নাণারির পর মপেকারত সমতল ভূমি। তদনভর আর্কন্য এই সান देवेट जिनमितक जिन दिस गियाएए। शूर्ति मास्यास, দাক্ষণে কানীপুৰ ও পশ্চিমে ভারতের মর্কা দক্ষিণ ও পশ্চিম দীম্য গিষাছে। পুদার্গাণী রেলে আরোহণ করিয়া ৪২ মাইল পরে মান্ত্রাজ পতি চিশা । মাৰু জের ফেসন রায়পুর্মে সাগর ত ট অবস্থিত। স্মুখে বাণিকোর মেল। মাজাজ নগর কল প্রেপাণণোভিত উল্লাম 👁 मुझ्न, श्रीमें ग्रेस नक्षा भागत छोटत छेखत मिल्टन श्राय र माहेन रिस्त्रीन ।

পূর্ব্ব পশ্চিমের বিভার কোন কোন ছানে আ• মাইল। সাগার তীরে विचारन गवर्गसरिक व्यक्तिनामि व्याह्य तारे द्वानी च मुखा। अथारन मिथ-बाब मर्था (कक्का, कर्गाटेव नवाद्यत गृंह, गित्रका, विवत नाट्यद्यत क्वत अ সিংছ ব্যাত্রাদি পূর্ণ শিপলছ গাও'ন প্রধান। কেলা মধ্যে টিপু হুলতানের ছুই ব্রহণ তোপ আছে। কেলার ভিত্তি সাগরে সংলয়। মাজাভের সমুত্র নিভান্ত অভির। ইহার ভীবণ তরক দেখিয়া হুংকম্প হয়। শীত-কালে মাজাজের সাগর যে দেখিয়াছে সেই জানে যে সাগর কি ভরঙ্কর। কাছার সাধা যে জাছাজ কি বেটি লইয়া তীরে অগ্রসর হয়। তক্তার নারিকেলের দড়ি বাঁধিয়া নোকার মত করিয়া দেশীয় লোক জাছাজে কর্মঞিৎ যাতায়াত করে। ইয়োরোপীয় বিছা বুদ্ধি এই সাগরে দেশীয় মাঝির নিকট পরাভূত হইয়াছে। বখন উদ্ধে ঘনঘটাচ্ছর আকাশে গভীর গর্জন, মধ্যস্থলে প্রবল বাত্যায় গম গম শব্দ, নিম্নে প্রচণ্ড মাক্ষত ক্ষুন্তিত সাগরের কলোলধনি, তীরে পর্বতাহতকেণপুঞ্জ ও দিকু পরিধির প্রান্তপর্যান্ত অন্ধকারময় সাগরের উত্তব্ধ তরঙ্গ এককালে ইন্দ্রিয়গোচর হয়, তখন বোধ হয় ঈশ্ব ! এ কোন্ সৃষ্টিতে উপস্থিত হইলাম। প্রকৃতি যে কি ভরকর ও মানব যে কত ক্ষুদ্র তাহা যূগপৎ অন্তরে উদিত ছওয়ায় চক্ষু আপনা হইতেই মুদিত হইয়া সেই অনস্ত পুৰুষের দিকে ধাবিত হয়। এইরপ সাগরের পার্য দিয়া আমরা মাজ্রাজ হইতে আর এক রেল অবলম্বন করিয়া দক্ষিণ মুখে চলিতে লাগিলাম। কিয়ন্ত্র পরে চেকলপট্র। मालाक वरेट टेजनक छात्र। त्मत बहेत। छामिन खाविकी वा बाकरे ভাষা আরম্ভ। মান্দ্রাজ হই:ত পশ্চিম ঘাট পর্যান্ত ভারতের সর্বা मिक्निष विভागে धरे ভाষা প্রচলিত। এখন হইতে জলকে নীক জলং का जाति, केकारक जरभारा, अक भारतारक कत जाना, इरे भारतारक जारत, তিন পরসাকে মুকাল আনা, চটাকে সরম, চাউলকে আরিসি, ভূমকে পাল, कन्तक शृक्षम, श्रुभादितक शाक्यद्रम, शानतक (विवित्त, लक्षामदिक्रतक मनागि, वर्क्त् द्वरक देश्म शानदे, अवारन जादेमरक देरकछत्रा, कान क्रिक शवरक ইন্সাবাড়ী কহিবে। তামিল ভাষায় বর্ণমালার বর্গের দিজীয় ভৃতীয় क इतूर्य दर्व नाहे। थ ग च इ देउलिम दर्गित मिस्र मन्द्र मन्द्र मन्द्र उ-

HELL AND GRANT PAR STEEL STATE TOTAL AND THE PARTY OF T STATE OF STREET STATE OF STATE अर्थ क्रांक क्रिएक कात केलावर कात । चत्रकीत राज्यात रेने रेक स्थाति केंब्रावरक मानव डी तक बड़े जनन बारन नाना बनाव बढ़े उ पर मानका अक्षा दक्ष प्रकामपाय नगरम मकदा शहा गरेण । कार्य व मानापि PROBERT THE TON COUNTY STATES SINT CONTRACTOR काल केल्लामा कर्मा कर केला कर मारेन निकार अके उन की महाबक । रक्ता जान बाह पूर्व । शक्ता वास्त्र पूर्व राजनाहे, मगरतक विकरि व विभागक महाविलग्रवक अख्य मन्तिक के क्या निर्मय ভাই পৰাত খোলিত কৰিয়া কি চনংকাৰ গুৰা ও মানৱ নিৰ্মাণ কৰিয়াছে। बीमार्स विक् मुखि अरकाणिय । व्याष्टीय यगरवन करनक कांग साधान विक्र इर्वारक वर्ष वर्षमाम मनिवानिक बारक कि ना मध्यर । CHENCE SPICE SPICE STREET DEPTH SOIT SESSION करीक कियन विकाश कार्यात । शिविद्दी कार्याती व जवाति मुख अवाटन क्यानि भावन्तरक्षेत्र वर्तानि मर्नायकार्गा । जाकित्यक्ष क्यानित्यत्र HOUR FOR SHEATH I COMPTE & SMITT ASMIT AND Constitution of the contract of the last the contract of the contract of THE PROPERTY OF THE PERSON NAMED IN THE PARTY. · formula sens to some sens afer also the order ("les") The Black of the State of the S COMPLET THE PLANSMAN WITH MAIN ASSURED TAILS. AND THE PERSON NAMED AND TAKEN AND PARTY.

ভিলাপুর পার হইরা দক্ষিণ পানার সঙ্গুরে দক্ষিণ আর্কাডুর রাজধানী কডালোর বন্দর। এখানে বিস্তর ইংরেজের বাঙ্গালা। ইহার পর প্রাচীন কডালুর নগর। ভাছার পর লৌছের কারখানা স্থান পোর্টনভো। পোর্টনভোর পর তীর্থস্থান ময়বরম। এখানকার মন্দির গুলি অতি শোভা-শালী। তদনস্তর কয়ুকোনম। ভারতের মধ্যে এই ভানে বেদের অধিক আলোচনা দেখিলাম। এখনত পুরোহিতেরা রীতিমত বজ্ঞ কুণ্ডাদি क्रिज्ञा थारकन । इंहाब व्यथान जर्भ नारगीत नगत मामूजिक दार्गिका ও জাহাজে পূর্ব। এখানে ১৫০ ফুট উচ্চ এক শুত্ত আছে, কে বে প্রস্তুত করিয়াছে এবং কেন যে করিয়াছে তাহার কিছুই ঠিক পাত্যা যার না। প্রাচীন কমুকোনম নগর কাবেরীর উভয় ধারার মধ্যভাগে সংস্থাপিত। এই স্থান প্রাচীন চোলবংশীয় রাজাদের রাজধানী ছিল। চক্রেখরের মন্দি-রের সমুখত কুণ্ডে ভাদশবর্ধান্তে মাঘ মেলা হইয়া থাকে। এই স্থান ছইতে মহাতীর্থ কাবেরী দাগর সঙ্গমে আন করা যায়। সময়ে সময়ে কাবেরীর মুখে সামুদ্রিক বিধাক্ত সর্প প্রবেশ করে। এজক্স সাবধান হত্যা উচিত। ক্ষুকোন্মের পর ক্ষেক ফেনন পার হইয়া এই রেল ক্রেন্যাগর তীর ছাড়িয়া কাবেরীর তীরে তীরে তিচুনাপলী ছইতে নিগাণটম গামী রেলের সহিত তান্জোরে গিয়া মিলিয়াছে। সাগর সমীপস্থ এই সকল বিভাগের দৃশ্য অতি মনোহর। পুণাসলিলা কাবেরী কলিকণ আদি শাখা বিস্তার করিয়া গঙ্গার জায় প্রবাহিত হইতেছে। ভাগীরখী তীরের ভার দেই শ্রামল শশুপূর্ণ ক্ষেত্র, সেই গাল্পের দোলায়মান মস্তক, সেই নারিকেলের নিকুঞ্বন ও দেই তালরাজির বিস্তীণ অেণী। গুবাক রক্ষ দকল ধেন প্রকৃতি ভূষণ মানসে রমণীয় কপ ধারণ করিয়াছে। কত শত কদলী ব্লক ফলভরে অবনত। মধ্যে মধ্যে বংশগুলা ও আফ্রের নিবিড় ছায়া। রাখালগণের দেই বংশীয়ব, কোমল পত্তে আত্মত পক্ষীর দূরব্যাপী শব্দ ও ৰটতলে জ্বীড়মান বালকগণের সাহলাদ ধনি হৃদয় আনন্দনীয়ে নিমগ্ন করে। নীরদ দাকিণাতো আদিয়া পুনরায় বে অদেশের দুখ্য অবলোকন করিব তাহা স্বপ্নেও জানিতাম না। তান্জোর বা তান্জবুর নগরও অতি উৎকৃষ্ট ও লোভাশালী। সরল পথ ও ফুল্ব গৃহরাজি। কেলা হুইটা অতি

স্থাত । রাজবাটী প্রশাস্ত ত মনোছর। কিন্তু ক্ষুদ্র কেলার মধ্যন্ত মন্দিরই অতি আশ্বর্ষণ এই মন্দির এত উৎকৃষ্ট যেইহার দুলা শীর্ষ শোভাযুক্ত উচ্চ ও স্থাঠিত মন্দির ভারতে অপা দেখা যায়। উচ্চতা প্রায় ২০০ ফীট এবং সর্ববাদ অতি উৎকৃষ্ট প্রস্তরে নির্মিত। ইহার সভামগুপের বাঁড় কৃষ্ণ প্রস্তরে এমন চমৎকার রূপে নির্মিত ছইয়াছে যে, ইহার গঠন দেখিয়াইংরেজরা ভূয়দী প্রশংসা করিয়াছেন। যাঁড়ের উচ্চতা ৮ হাত। নানাদ্রবা পূর্ণ তান্জোর নগরে রেশম ও কার্পাসের কারবার অনেক। কারেরীর দক্ষিণ তীরস্থ সহরতলী সমন্বিত এই নগর সংস্কৃত বিভার আলোচনায় পূর্ণ।

সার্কোনম হইতে মাজ্রাজ গমন ও তথা হইতে সাগরের তীরবর্তী রেল দিয়া তান্জোর গমন ইচ্ছা না হইলে দক্ষিণ শাথা রেলে ত্রাক্ষণ ও তাঁতিপূর্ণ কাল্লীপুর নগরে গমন করিবে। কাল্লিপুর নগর এখনও ' নগরের কাঞ্চি ,, নামের আর্থকতা করিতেছে। পথ পরিক্ষত ও বাজার অপ্রশস্ত । উতর দিকে প্রেণীবন্ধ নারিকেল রক্ষা। নগর মধ্যে মহাদেবের বিখ্যাত মন্দির। এই মন্দির এত রহৎ যে অভান্তরে হাজার স্তম্ভুক্ত ধর্মশালা বা অতিথিশালা আছে। সিঁড়ির হুই দিকে প্রস্তবের হুই হাতী রখসহ দণ্ডারমান। সিঁড়ে দিয়া উঠিবার কালে বহুদূর পর্যন্ত রাড়, জল্প, বিল, ও পাহাড় সকল নেত্র গোচর হয়। এইটার নাম শিবকাঞ্চি। ইহার এক ক্রোশ দূরে বিষ্ণুকাঞ্চি। এখানে বরদরাজ বিষ্ণুর মন্দির আছে। এই মন্দির আড্রারে ও সেন্দর্যো শিবমন্দির অপেক্ষাও অধিক। দরজার সম্মুশ্বে অর্ণবর্গে রঞ্জিত তাহ্যের গরুড় স্তম্ভ । কাঞ্চিতে প্রায় ১৫০ উৎকৃষ্ট মন্দির আছে। কাঞ্চিনগর হিছেদের মহাতীর্থ। ''অযোধ্যা মথুরা মায়া কাশ্রী কাঞ্চি অবস্তিক। পুরী ছারাবতীট্চব স্টিপ্ততা মোক্ষদায়িকা।,, এখানে চোলবংশীয় রাজ্যারা কিছুকাল রাজ্যানী করেন।

দক্ষিণের শাখা রেলে কাঞ্ছিপুর গমন ইচ্ছা না হইলে আর্কোনম ইইতে আর্কট গমন করিবে। মাস্তাজ হইতে আরকট আসিতে করতিলার নদীর ৩০ কীট অন্তর ২৬ খিলানযুক্ত উৎকৃষ্ট প্রস্তর গেডু। আরু ট প্রবেশ মুখেও ৫৬ খিলানযুক্ত পাইনি নদীর আনোইট নির্মিত গেডু। আর্কাডু

গমন কালে এই জেলায় চামের বিলক্ষণ প্রাত্তাব লক্ষিত হইবে। কূপ ও পুক্ষরিণীর সংখ্যা নাই। শুনা যায় ৩৫৯৯ আন মধ্যে চারিহাজার পুষ্করিণী ও ১৯ হাজার কুপ আছে। ইহার উপর নদী ও প্রস্তবণের জল थानायारा जानिएएए। अक कारवतीशाक शुक्रविगीरे मीर्स ৮ ७ आर छ ৩ মাইল। ধাক্ত কার্পান বিস্তর উৎপন্ন হয়। কিন্তু অধিকাংশ মৃত্তিকা বালুকাময় ও এীথকালে খোর এীথ। আরকট নগর ধাণাাুুুুুর্বাহনী পালার নদীর ডাইনতীরে অবস্থিত। মুসলমানদের সময় এই নগরের বড় ধুম ধাম ছিল। এখন কেবল ভগ্নকেলা নবাবের ভগ্নবাটী ও অপরাপর ভগ্নাবশেষ দেখিবার যোগ্য। আরুকট হইতে ১৫ মাইল পরে সেনানিবেশ স্থান ভিলোর বা বেল্লুক। ভিলোরের শিবমন্দির দর্শনযোগ্য। ভিলোর পার ছইয়া পথে গবিয়াটম নদী। ইছার ছই শাখার উপর ছই পুল। প্রথমটী ২৪ ও দ্বিতীয়টি পঞ শিলান বিশিষ্ট । গরিয়াটনের পর পথ ক্রমে আয়ান নাধ্য হইয়। উঠিয়াছে। পদে পদে মদী ও থাল। এমন কি ১১০ মাইল মধ্যে ৯৫ সেতু। পালায়ের সেতুর ১৪ খিলান ৩০ ফীট ও পাঁচ ধিলান ৬৪ ফীট বিস্তৃত। পানারের সেতু ১৮ থিলান প্রত্যেক ৩০ ফীট। পালার ও পানারে যে সকল নদী পড়িতেছে তাছাদের সকলেরই সেতুর খিলান ৩০ ফীট বিজ্ঞ ত। কেবল জন্তীপোরাণের a খিলান ১a ফীট ও গলারের ১২ থিলান ২০ ফীট বিস্তৃত। পালার ছইতে পানার পর্যান্ত অপরাপর নদীর মধ্যে কড়ারের ৫ গদারের আর এক স্থলে ৩ পালা-মদী নদীর ৭ ও মূর্ণপিটীর ৭ খিলান। প্রত্যেকে ৩০ ফীট বিজ্ঞ ত। পানার ২ইতে সালেম নদী যাইতে আহতুর নদীর সেতুর ৭ ও সিভরি নদীর ৪ খিলান। প্রত্যেক খিলান ৩০ ফীট। ষাহা হউক এই সকল সেতু পার इहेश। मालम याहेवात काल हेल्हा इहेल कलात्र ११ हेहे छ एहेन दिल (तक्त मूत्र याहेरत। अहे नगत मही मृत (मर मत्र मर्क ध्यक्षान छान। हेहात **७ पूर्वित नान्यु कि नाद था नीद्र । वाजाद को ज़ । वादित न दक्त पूर्व।** কেলা উচ্চ ও স্থৃঢ় ও পাহাড় খাত করিয়া পরিখাযুত করা ছইয়াছে। ইহার এক কোশ ভূরে সেনানিবেশ স্থান। দেখিবার মধ্যে গ্রপ্নেট হাউল, উপ্তান ও গ্রেগ্নেটের আর আর স্থান প্রধান। এখানে চিক্বাল-

পুরের আমলানী মিছরি উৎকৃষ্ট। বেল্লবুর হইতে ডাক গাড়ীতে ৭৫ মাইল দূরে অনেকে জীরদ্পত্তন ও তথা হইতে ১০ মাইল দূরে মহীশার নগর यांत्र, याहेट २८ घणी लात्म। পরে দেখিতে দেখিতে গেলে মহীশ্রকে এক বিজ্ঞীৰ্ণ অধিত্যক। বলিয়া বোধ হইবে। ভূমি সম বিষম ও স্থানে স্থানে এক একটা গওলৈল প্রকাণ্ড শির উন্নত করিয়া উঠিয়াছে। মাঝে মাঝে খাতা রাগী ভাষাক ও কাফর জমী। কোন কোন স্থানে লেট লেছ লবণ দোড। রূপা ও দোণা পাওয়াযায়। স্থান নীরুদ। নিম্ন স্থানস্থ আমে ৰুইপোকার বড় উপদ্রব। লোকের বাবহারও অদুত। কেহ বিবাদ করিয়া গাধা মারিয়া কোন আমে ফেলিয়া দিলে আমকে আম উঠিয়া যাইবে। স্থানে স্থানে শিবের চড়ক হয়। এখানকার রাজার আয় ৭০ লক্ষ होका। महौ मृद्र नगद्र मिक्टन मन माहेल हुद्र शक्टिक काटवदीद हीरामरधा ম্প্রসিদ্ধ জীবন্ধপত্তন নগর পাওয়া সায়। এই স্থানে হাইদর আলির রাজধানী ছিল। জীরঙ্গণভনের মধ্যে দেরা দেলত উত্থান, টিপু ও হাই-मरबंद करंद्र, मनक्षीन, हिशूद खन्नवाही, महीमारबंद वाख, जीदक्कीद मन्द्रि ও দেওয়ানের সেতু দর্শন যোগা। কাবেরীর ছই ধারার উপর নিরেট পাথরের পুল। ৬৬ স্তক্তে তিন তিন শ্রেণীর উপর পাথরের ভক্ত। পাডিয়া পুল হইয়াছে। জীরজপত্তনের পর মহীশুর নগর। মহীশুর লালমাটীর প্রাচীর বে ঠিত। কেলামপো রাজবাটী। নিকটে এজেটের উৎকৃষ্ট গৃহ। নগরের ৫ মাইল দূরে পর্বতোপরি সরোবর। পর্বত শীর্ষে এজেণ্টের সুদৃশ্য বান্ধালা। পাহাড় পার্শে ১৬ ফাট উচ্চ প্রস্তারের একটা নন্দী বা বাঁচ। জনভিদূরে রাজার প্রকাণ্ড হতীরথ। মহীশুরের ৪০ মাইল ঈশান কোনে শিবসমুদ্রে কাবেরী প্রপাত দেখিবার যোগ্য।

বেক্ষলুর ও মহীশূরাদি দেখিতে ইচ্ছা না ছইলে সালেম চলিয়া যাইবে।
নার পর্বতদ্বরের মধ্যে ৭ মাইল বিস্তৃত এক নিম্ন ভূমিতে অবক্ষিত। চড়ুঃপার্শ্বের মৃত্তিকা লাল ও কর্করযুক্ত। স্থানে স্থানে পাথর উঠিয়াছে। নগরের ৫ মাইল উত্তর পশ্চিমে এক থণ্ড উষরভূমি ম্যাগনিসিয়া পূর্ণ। ম্যাগনিসিয়ান সণ্ট ও ছিমেণ্ট এই মাটী হইতে প্রস্তুত হইতেছে। এখানকার

অধিকাংশ লোক কাপাদের ব্যবসায় রত। দাকিণাতের এই সকল বিভাগে নানঃ স্থানে ক্ষেত্র খনির চিচ্চ পাওয়া যায়।

দালেম টেসন ত্যাগ করিয়া চারিদিকেই সমতল কেত্র নয়ন গোচর रहेरत । किङ्कार भारत थुनाराज्या कारवत्री नमी व्यवादिक रहेराज्य । ७४ কীট অন্তর ২২ খণ্ডযুক্ত দেডুতে নদী পার হইয়া ইরোড জঙ্গদন। ইরোড इहेट अक नाशाद्रल পान्छम मूर्थ शिम्रा शीन्छम मागत म्लान कदिशाहि। পশ্চিম সাগর তীরত্ব মলয়গিরি দর্শন করিবার জন্ত আমরা ঐ রেলে আরো-হণ করিলাম। ক্রমাগত সমতল ক্ষেত্র ও মধ্যে মধ্যে সেড়া ২২ গেডু পার ২ইয়া কোয়ম্বাটুর নগর। কোয়ম্বাটুর নইল নদীর বামতীরে অব-স্থিত। এইটা টিপুর প্রধান সেনাসিবেশ স্থান ছিল। কোয়স্বাটুর জেলায় উৎকৃষ্ট তামাক ভূরি পরিমাণে উৎপন্ন হয়। চন্দনরক্ষ ভূরি ভূরি। স্থানে স্থানে লোহ ও গোদতের খনি, এখানকার লোক ঘাঁড়ের উপাদক। কোয়দাটুর ছইতে উত্তরমূথে এক শাখা রেল নীলগিরি পর্বতের প্রত্যম্ভ দেশ মিটাপোলিয়ম পর্যান্ত গিয়াছে। নীলগিরির শিথরন্থিত উটকামণ্ড-गांचीग्रान मिछार्र्भालिशम क्रेट्ड ज्लाइ महत्व ११४ मिहा ७ महिल पृत्त কুলার পর্যান্ত যায়। বুলারে পর্বত আরম্ভ । বুলার হইতে প্রাচীন পর্য দিয়া ৯ মাইল দুরে এবং নৃতন পথ দিয়া ১৬ মাইল দুরে কুনুর। প্রাতন পথে তঞ্জাম ভাড়া আট টাকা নৃতন পথে গাড়ী চলে এজন্ত খরচ অপ। এক পথে গমন ও অপর পথে' প্রত্যাগমন করিলে উত্য পক্ষের মনোরম সেন্দ্রির নেত্রগোচর হয়। টুকুত্বর ছইতে উটকামগুণর্যান্ত গাড়ী চলিবার योगा बाँधा श्रभ जाहि। ममय उरक्के, बाङ्गाड़ी डाङ्ग ममहोका। चा हा श्रम, उद्वेकाम क नगत मागत बहेट १००३ की है डेक्ट मश्बिछ । मार्बि-मित वां ही अवर शुक्र उ शिक्तम चार हेत्र मश्याकक खक्श नील शितित স্বাভাবিক ভাবই উটকামণ্ডের লোভা। এখানে এীমের প্রাত্তাব নাই। উপরে হয় সাত মাইল বিস্তীর্ণ এক সরোবর আছে। ইচ্ছা হইলে দর্শক পর্বতোপরি পাইকাড়া নদীর প্রপাত দেখিতে পারেন। কেহ কেহ বলে নীলগিরি রামারণের দর্মর পর্মত। উটকামণ্ড দর্শন ইস্ফা না হইলে কোয়খাট্র পার ছইয়া ক্রমাগত পশ্চিম রেলে চলিবে। উভয় পার্ষে

পার্বভীয় উচ্চাবচ ভূমি ও খাত। স্থানে স্থানে জন্মল। ওয়ালিয়রের জলল নিতান্ত অস্বাস্থাকর। ৩০ ফীট অন্তর পঞ্চসুকরবিশিক্ট সেতুতে ত্যালিয়র ও ১৫ খণ্ডবিশিক সেতুতে কোলিগাড পার হইয়া আমরা মলয় পর্বতের স্থানিদ্ধ থাত পান্দাটে প্রবেশ করিলাম। পান্ঘাট পার হইয়া রেল প্রানি নদীর পার্শ্বে পার্শ্বে তীরতলা পর্যান্ত গমন করিয়াছে। তীরতলা হইতে বেপুরের নিকটম্ব হইলে পশ্চিম সাগরের কল্লোলধনি কর্ণ গোচর ছইতে লাগিল। পালঘাট ছইতে বেপুর পর্যান্ত রেল বসাইতে বিশেষ কট হইয়াছে। মলয় হই ত ভূরি ভূরি জ্রোতমতী ভীরবেগে সাগরে পতিত হওয়ায় তত্ত্পরি অতি ফক্টে সেতু নির্মিত হইয়াছে। এই মলর পর্বতের বন শোভা অতি রমণীয়। ইহার বন দেখিলে রামায়ণের বৰ্ণন স্মৃতিপথে উদিত হয়। শাল তাল তমাল নীপ কিংশুক কদম্ব ভেলা বেতদ চম্পাক নক্তমাল, এক এক বেত ২২৫ ফীট লয়। ভূরি ভূরি চন্দন রক্ষ। কত জাতীয় কত্রপ কত বিশাল তক বিবটাকার শাখ্য বিস্তার করিয়া বহুদুর ব্যাপ্ত করিয়াছে। এক একটা দেগুণ ৩৩ ছাত উচ্চ। তালের ঘটাই বা কত এবং তাহার পত্রের বিস্তারই কি ভয়কর। নিধিড় নীলমেছের ম্বায় নানাবিধ রক্ষ অবিরলভাবে সজ্জিত রহিয়াছে। ভয়-কর লতা সকল ভীবন ভুজকের স্থায় তাহার তাল হইতে উৰ্দ্ধডালে যেন লম্ফ দিয়া উঠিতেছে। মাতদের রংছিত, ব্যাত্তের হুকার ও বানরের চীৎকারে বন দিবানিশি কম্পিত ছইতেছে। বত্ত মাতকের গাত ঘর্ষণে, দন্তাঘাতে ও শাখা ভগ্ন শব্দে কর্বকুহর ব্যারীকৃত। কোখাও ব্যুমহিষ ছুটিয়া যাইভেছে, কোথাও এক এক দলে অসংখ্য মাতদ ভ্ৰমণ করিতেছে, কোথাও ভল্ল,কে ভূমি বিদীৰ্ণ করিতেছে, কোথাও নানা জাতীয় হরিণ বিচরণ করিতেছে ও কোথাও কপিথুল লক্ষ ঝক্ষ প্রদান করিতেছে। নিবিড় অরনামধ্যে আরণার্য (গ্রাল) হুখেতে শ্রান রহিয়াছে। কোন ছানে নিস্তব্ধ বনে নিরন্তর ঝিলীরব, শুক্ষপত্রোপরি সর্পের গাত্র ঘর্ষণ ও ভূর শাখায় উপবিষ্ট পক্ষীর সময়ে সময়ে চিচিকুচি ধ্রনি, কথন কখন নিজেব পদশব্দে বন্ধজন্তু ভ্ৰমে নিজেই শক্ষিত হইতে হয়। কোথাও বা মাৰুত যোগে পুষ্পারেণু আদিয়া নামিকা ও চক্ষু আচ্ছন্ন করিতেছে ও কোধাও বা

কওক রক্তে গাত্র বস্তু আকর্ষণ করিতেছে। গছন বনের এই সকল ব্যাপার অবলোকন করিয়। মন ভয়েও বিশয়ে ভম্ভিত হয়। একেই পর্মত ভয়ন্তর, তাহাতে বন ভয়ন্তর, তহুপরি ভীষণ জন্তুর চীৎকার ও নদীগণের ঝকার শব্দ। নানাছানে কদলী কানন ও পর্বতপ্রান্তে এলা বন সকল স্থানীর্ঘ হরিজাবনের আয় জঙ্গলাবস্থায় বহুদুর ব্যাপ্ত করিয়াছে। নানাবিধ ফল, দাক্চিনি ও জায়ফল রুক্ষে নানা দিক শোভিত। সাগর প্রান্তে নারিকেল রক্তের দোলায়মান মন্তক সকল লক্ষিত হয়। লোকা-লয়ের নিকট আম্র ও কাঁটাল রক্ষোপরি গোলমরিচের * লতা উঠিতেছে। এধানকার লোকের। অভাবতই কেতামদো বাড়ী করিয়া থাকে। ইছাদের বাবহার অদ্ভত। সর্বদেশীয় আইনকর্তাদিগকে ইহারা মূত করিয়াছে। জীজাতি দশমবর্ষে বিবাহ করে। পতির নিকট আদাচ্ছাদন লয় বিত্ত পতির সহিত সাক্ষাৎ নাই। পথের লোক ডাকিয়া উপপতি করে। তাহার বিশেষ জাতি বিচার নাই। যে যত অধিক উচ্চ শ্রেণীর লোক উপপতি করিতে পারে দে তত সন্ধান্ত। পুত্রেরা বাপের নাম জানে না, মামার নামে পরিচয় দেয়। মাতা বাদীর দর্কে দর্কা এবং পথের পুরুষ আকর্ষণে কুল গরিমা রূদ্ধি করেন। তাঁখার মৃত্যুতে জ্যেষ্ঠা কন্সা বাটীর কর্নী। জ্রীলো-क्ति इश्रिश्च मालोक। गतित जागित्मस नाम माज माजूरल इ विवस्त कि কারী হয়। মলবারের প্রধান ত্রাক্ষণের নারর নামে খ্যাত। ঘরের বাব-হার ঐরপ কিন্তু তাক্ষণের। শৃক্ত স্পর্শ করে না। এ প্রদেশের মৃতিকা লাল, নদীতীর বালুকাময় এবং গৰুগুলি এত ক্ষুদ্র যে চাস চলে না। এক একটা গৰু দেখিতে ছাগলের মত। কোচিন মঙ্গলুর প্রভৃতি এই সকল चारन अस्तक श्रीकोन ७ किरनद राग। (मनीस ভाষা मनशालम। मझन्-রের অতি অপ্পালোক তুলবী কছে। মলবার উপকূলে সাগরে বছরূপ আক্রা মংশু পাওয়া যায়। এক জাতীয় মণ্ড ছইতে কড্লিভরের খায় তৈল প্রস্তুত হইয়া মাজাজে বিক্রীত হয়। সময়ে সময়ে মণ্ড এত ধরা পড়ে যে লোকে যোড়াকে পর্যান্ত মংস্ত খাওয়ায়। চন্দন, মহিচ, জায়ফল,

^{🕟 ः *} शृक्षिरी(७ वार्षिक मार्ड् इंग्र लक्ष मन मति५ वाग्र ह्य ।

জৈতী, দাগু, কফি ইত্যাদি দ্রব্য এখানকার প্রধান রপ্তানি। মাটির নিম্নে ও শিখরের উপর যে চন্দন থাকে তাহারই সারভাগ অতি স্থায় জায়কলের গাছ লেবুরমত, ফলও তদ্রপ। ইহার আচার ও মোরবা। খাইতে বড় স্থাদ। আঁটিটা জায়ফল। এই মলয়গিরি হইতে মলয়া-নিল প্রবাহিত হয়। দক্ষিণে এই বায়ুর প্রবাহ অতান্ত বেশী। বান্ধালায় তত অধিক বোধ হয় না। দক্ষিণ পশ্চিমাগত মেল্লিমী বায়ুতেই যত মেষ আনিয়া উপস্থিত করে। এজন্ম সম্ভ মলয়ের বৈষ্ঠা অতি অন্ধুত। প্রায় ৯ মান রুফ্টি হইয়া থাকে। কুপেরজিল খারাপ হইলে লোকে আমলা পাত। ভিজাইয়া শোধন করে। পরশুরাম, মলবার কানাড়া ও কোকন দাগর হইতে উদ্ধার করিয়া বদতি করান। ইছার প্রাচীন নাম কেরল দেশ। শক্ষরাচার্যার এই দেশে জন্ম হয়। এখানে এখন ওয়াইনদ প্রদেশে দোণার আকর বাহির হইয়াছে। নিজ বেপুরেই লোহার কারখানা আছে। भनश्रद शृद्ध शर्क ७ कमनाकी कृत दाका। इंशद अद्रशा मनस्यद সহিত সংযুক্ত ও ভয়ম্বর বাইননে পূর্ণ। এখানে লোকে ভালকাবেরী ও লক্ষ্মণ তীর্থে স্থান করিতে যায়। দর্শক মলয় হইতে ফিমার যোগে মঙ্গলুরে গেলে ভ্নাবারের নিকট সরস্বতীর আশ্তর্যা প্রপাত দেখিয়া যেন নয়ন স্বার্থক করেন। বন্ধে হইতে দক্ষিণমূখে ফিমার যোগে বিস্তর লোক আগ-মন করে। বছে ইইতে কারাবার পর্যান্ত ভাড়া প্রথম শ্রেণী ৭০ টাকা দিতীয় শ্রেণী ৩৫ টাকা এবং তৃতীয় শ্রেণী ১২ টাকা। কারাবার ২ইতে কুমতা পর্যান্ত ৪০ মাইল মনহল ভাড়া ১২ টাকা। । কুমতা হইতে ভ্নাবার ১২ মাইলে মনছল ভাড়া ৩ টাকা। ত্নাবার হইতে নদী যোগে গিরিশপা আম পর্যান্ত ১৮ মাইল মৌকায় যাইতে হয়। আম ছইতে জলপ্রপাতের নিকট পর্যান্ত ১৮ মাইল যাইতে মনছল ভাড়া সাড়ে চারি টাকা। গিরি-শপা আমে ধর্মশালা আছে। এই সকল বন্দোবন্ত জৈয় কারাবার কুমতা ত ত্নাবারের মামলতদার অর্থাৎ ডেপুটি কালেক্টরদিগের সাহায্য আব-শ্রক। খুঁজিয়া লইলে বমে হইতে সম্পব্যয়ে অনেকে ভাড়াবহা ঠিমার কুমতা পর্যন্তই পাওয়া যায়। মঙ্গলুর হইতে উত্তরমুখে গেলে স্বম্পই বায়। শীতের প্রারণে যাত্রাই ভাল, কারণ বর্ষার শেষে জ্বর কান্ডির জন্সলে

রাজধানী করে। যাহা হউক এক্ষণে আমরা প্রপাতের সমীপবর্তী হই-লাম । সমুখের বনের আবরণ খুলিয়া গোলে কি ভয়ক্ষর কাও! দর্শক কোথায় ভোমার সাহন! অশনি ভাড়িতের স্বায় চকিত হইবে। ভোমার নেত্র যুদিত হইবে, ইন্দ্রিয় শিথিল হইবে, শরীর স্পন্দিত হইবে, তুমিও চক্ষু কর্ণ আবন্ধ করিয়া ভূতলে পড়িবে। যেন শত শত বজ্ঞাঘাত হইতেছে আর কি বলিব! জলের কি ভীষণ গর্জন! কি ভয়ম্বর আক্ষালন! কি খোর আবর্ত্ত ! ধুমের আয়ে জলক্ষুলিজে নভোমঞ্চল অন্ধীভূত, পার্শে প্রকাণ্ড প্রকাণ্ড চূড়া, তত্ত্বপরি ভীষণ ক্লক সমূহের শীর্ষ সকল কম্পিত হই-তেছে। এ ভীগরূপ বর্ণিত হইবার নয়, এ ভীমরূপ ভুলিবারও নয়। বিষংকাল ভূতলে পড়িয়া থাকিলে ক্রমে অভ্যাস পাইয়া আসিল এবং ই জিলায়গণ মৰল হইয়া অকাষ্যে রত হইল। তখন আমরা অংশে অংশে অপ্রানর হইয়া দেখিলাম এবটা ভয়স্কর খতে, শিলাময় অনাচ্চাদিত ও क्रकरर्ग आत्र ৯०० की है गञ्जीत २हेरत । हेशत शार्श्वतम वर्जु नाकात्र अवर এরপ আনত যে দেখিলে বোধ হয় যেন মহুধাছত্তে নির্মিত হইয়াছে। এই খাতে সরস্বতী কারক শাংখা বিস্তার করিয়া পতিত হইতেছে। প্রধান শাখার পতন কালে কেণ সম্বিত ঘূর্ণমান এক প্রকাণ্ড জলগুত্ত ছইয়াছে। উহার বেগ এত তীব্র ও এত বেগে ও এরপ বলে নিম্নে পতিত হইতেছে যে ঐ নদী পতিত হইবামাত্র সরলভাবে জল বহুদুর বিশিপ্ত হইতেছে এবং জল ক্ষুলিকে বনের উপর আকাশমগুলে এক খানি অপূর্ব্ব মেষ উৎপন্ন হইয়াছে। অপরাপর শাখা ওলি পার্শ্বিয়া পড়িবামাত্র প্রস্তরের যাত প্রতি-খাতে ছিল্ল ভিল্ল হইলা যাইতেছে। প্রধান শাখার প্রপাত পৃথিবীৰ মধ্যে একটা অদুত প্রপাত বলিয়া বর্ণিত হয়। জগদিখাত নায়েপ্রায় ইহা অপেক্ষা অধিক জল পতিত হয়, কিন্তু ইহার উচ্চতা নায়েগ্রা অপেকা অনেক অনিক। ইছার উচ্চতা ৮৮৮ ফীট এবং ইছাতে প্রতি সেকেতে 84000 चन, की हे जल शर् । कि कि माट्य कि शहर कर सा दि नाम नामिश নুষ্মিক বিশে ইছার ভীষণ ভাব এত দূর বোগ ছইবে যে ইছাকেই জগতের স্কাশেষ্ঠ বলিতে হইবে। কিন্তু নিম্নে নামিবার উপায় নাই। অসম সাহসী ব্যক্তিরা উপরিছিত শিলাতলে শ্রন করিয়া তাহা হইতে মুখ বাড়া- and "

ইয়া ইছার নিম্নভাগ দেখিতেছে। এক দক্ষে দৃশ্যমান এই ৪ জল প্রাপাতের ভয়ঙ্গর কাণ্ড দর্শক জ্বেশুভ ভূলিবেন না। জ্রীকৃষ্ণ ইছার খটাক্ষের প্রপাত কহিয়াছেন, ছনাবাবের নিকট আমাদের হুর্গম গোকর্ণ মহাবলেশ্বর তীর্থ ও এক বিস্তীর্ণ ছুদ। শিবের নাম পশুপতি। "ঘোরেণ তপ্রসা লল্পং রাবণাখ্যেন রাক্ষ্যা», ইত্যাদি বলিয়া লোকে স্তব করিতেছে। বম্বে হইতে বিস্তর মহারাষ্ট্রীয় বাত্রী আইনে।

পশ্চিম সাগরাদি দেখিতে ইচ্ছা না হইলে ইরোড জঙ্গন হইতে প্রধান রেলে চলিয়া যাইবে। ইরোড ত্যাগ করিয়া ওয়ালিয়র বা নরেল তীর পর্যান্ত ভূমি ক্রমশই ঢাল। প্রজার ধার ক্ষেত্র ত্যাগ করিবার জন্ম প্রস্তরময় উচ্চাব্র ভূমির উপর fr য়া বহু কটে রেল নীত হইয়াছে। কোথাত বা মৃত্তিকা ভূপাকার কোথাও বা থাত করিতে হইয়াছে। নরেল পার হইয়া কিছুদুর পরে এক পাহাড় কাবেরী তীর পর্যান্ত বিজ্ত ২ইয়াছে। এই পাহাড় কাৰুরের ভূমি হইতে প্রায় ১৮১ ফীট উচ্চ। ক্ষেরেল এই পর্বতে পার হইয়া ঢাল অবলম্বন পূর্বক কাবেরীকে ডাইনে রাখিয়া কাকরের সমীপবভা ছইল। কাৰুরের নিকট অধামতী নদী কাবেরীতে পিতিত হুইয়াছে। ইহার বিস্তার প্রায় সহজ্র ফীট ও বালুকা অভাস্ত গভীর এই নদী পার ছইয়া আমরা কাবেরীর কেত্র দিয়া চলিতে লাগিলাম। কিছু দুর পরে কড়মতি ও কাবেরী সঙ্গম। কাবেরীর জলপ্লাবন ২ইতে পথ রক্ষা করিবার জন্ম ভূমি উচ্চ করা হইয়াছে। পার্শ্বেধান্তক্ষেত্র ও উচ্চা-বঃ ভূমি। এই সবল ভূমি ত্যাগ করিয়া রেল কাবেরীর তীরে তীরে তিচু-নাপলী নগর পঁত্ছিয়াছে। নগরের দক্ষিণ প্রান্ত উচ্চাবচ প্রস্তুরণুর্ব বালুকাময় ও অন্তর্শবরা। কাবেরীর দিকের মৃত্তিকা লোহিত বর্ণ ও বালুকা মিশিত। প্রাচীর বেটিত এই নগর পর্বতোপরি সংস্থাপিত। ৫০০ ফীট উচ্চ পর্কতোপরিস্থ ছর্গে ধাপে ধাপে আরোহণ করিবার সময় কাবেরীর দিকে অতি মনোহর দৃশ্য লক্ষিত হয়। অপর দিকের স্থানে স্থানে নারি-কেলের নিকুঞ্জ। এখানকার ভামাক, মাটীর দ্রব্য, অক্স শস্তাদি লেহির জবা, অলমার ও ঘোড়ার দাজ এদিকে প্রসিদ। স্বর্ণ রোপ্যের জবে।র जब (मज़भ कामीत , व हेक, कह, माक्षी ए वर्षा क्षित्रक, डिह्माभली ए (३)

রূপ প্রসিদ। তিচুনাপলী ছইতে দেড় মাইল দূরে স্বিখ্যাত জীরসম। ইহার তুলা অন্তুত মন্দির আমি ভারতে দেখি নাই। মনিরে একটা সম্প্র আম আছে। লঙ্কা গ্রমন কালে জীরাম কাবেরী নদীর মধ্যন্থিত **धरे बीर्श अवस्थान क**ित्रसंहित्मन। सीर्शत रेमर्गाठी २० मारेन स्टेर्र । ইহারই উপর জীরজ্জীর মন্দির সংস্থাপিত। মন্দিরের হের প্রায় ৪ মাইল ইইবে। প্রবেশ দ্বারের প্রস্তর নির্মিত স্তন্তের দৈর্ঘ্যতা ৩০ ফীট ও বেস্টন ১৫ ফীট হইবে। এইরপ প্রতি সাড়ে তিনশত ফীট অন্তরে ছয় দ্বার পার হইতে হইবে। তাহার পর ২৫ ফীট উচ্চ ও ৪ ফীট বিস্তৃত চারিদিকে আর চারি চারি ছার পার হইতে হইবে। এই সগুদার পার হইবার কালে এক এক ঘারের পর মহুষ্যের বসত বাটী, দোকান, বাজার, ধর্মশালা, দান-শালা ও মন্দিরপূর্ণ এক এক আগ লক্ষিত হইবে। একটা অতিথিশালা এত বৃহৎ যে তাহাতে সহজ্ঞ ভায় আছে। যাহা হউক এইরপে সপ্তদারের পর জীরদ্বজীর স্বর্ণবর্ণ কল্মেরতিত সতি প্রকাণ্ড প্রধান মন্দির লক্ষিত হয়। তথাপো অর্ণ ও রত্বালকারে জড়ীভূত জীরকজীর কমনীয় মূর্তি। ছত্ত দণ্ডাদি সমস্তই নিরেট অর্ণের নির্ঘিত। দেবভার আদবাবে চতুর্দিক আকীৰ্ব এবং সমস্তই বতমূলা। হিন্দ্ৰবাতীত অপর জাতি চতুর্থ দ্বারের পর আর প্রবেশ করিতে পারে না। তিচুনাপলী ত্যাগ করিয়া প্রায় ৩৮ মাইল নিম্ন ভূমি বর্ষে ব্যাহিত হয়। এজ্য পথ ৬ ফীট উচ্চ করা হই-য়াছে। ইছার পর ৪০ মাইল ধান্তক্তে পার হইয়া পুনরায় এপথে ভান জোর দিয়া তৎদমীপম্ব পূর্ষ বর্লিত বাঙ্গালার ক্যায় দেশ সকল দেখিতে দেখিতে সাগর তীরে নিগাপটম নগরে পঁতছিলাম। নিগাপটম হইতে जिल्लाभाकी भर्यास १८ माहेल मर्गा ५० रमपू । हेहाद मर्गा चानमणित थिलान श्राप्त ७० की छ। निभाभिक्ति भूनतात्र भूकिमाधत मर्मन देव्हा ना ছইলে প্রধান রেল অবলম্বন করিয়া ডিন্ডিগল চলিয়া যাইবে। অদৃশ্য ডিন-ডিগল নগরের কেলা ৪০০ ফীট উচ্চ পর্বতোপরি সংস্থিত। পর্বতের শিখরে একটা উৎকৃষ্ট দেবমন্দির আছে। ডিতিগল পার হইয়া দক্ষিণমুখে মন্ত্রার দেতুবন্ধরানেখনের ফেনন পভিছিবে। লক্ষা বাইবার জন্ম ফিনার পাইতে ইচ্ছা হইলে বা ক্যা কুমারীতে গিয়া ভারতের শেষ সীমায দাঁডা- हेट उ रेंक्ट। इरेटन हुरेकिंक्द्रन दो किनिटल्लि स्केमरन गिन्नो दिन र्याय कदिरद । क्तितल मिजूरक मर्भन देव्हा स्ट्रेल मञ्जात श्रेत जात्र यादेवात श्रीकान नाहे। মছরানগর ব্যাগাক বা ভিগে নদীর ভাইনতটে সংস্থাপিত। সহরের চারিদিকে প্রাচীর পথ গুলি অভি প্রশন্ত। এখানকার পার্কভীর মন্দির ভারতে স্থবিখাত। প্রায় ৭ বিষা ভূমি ব্যাপ্ত করিয়া আছে। ত্রিমল নায়কের চৌলট্রী অতি হুগঠিত। এই প্রশস্ত গৃছের ১২৫ শুস্তের খোদকারী অতি চমৎকার। প্রাচীন রাজবাটীর ভগ্নাবশেষত দর্শনযোগ্য। একটা ভগ্ন भर्मुक ७० भक्र कोज़। यञ्जा रक्तमात्र श्वारन श्वारन रत्नीला छैरला इग्न। এই স্থানের লোকেরা ভাত। ভাতপুত্র আদি একত হইয়া এক ত্রী বিবাহ करत । পूर्व्स मञ्जानगत लाहीन शाखानिरगत त्राजशानी हिल । এই शाखा-(मर्ग कर्जून क्षका भिक्र नाही ठीर्थ। **धर्र (मर्ग हामान्य ठीर्थ, जग**खाठीर्थ, বাৰুণতীর্থ, কন্তারুমারীতীর্থ ও স্থারকতীর্থ। এই স্থানে তুর্গা সহ মহিযা-স্ত্র যুদ্ধ হয়। এই দেশের উপকূলে মুক্তা জ্বো। এই দেশের লোক কার্চে মৃদল ও নল, ফুলে মন্ত, ফলে তৈল, আঁশে রজ্জু আদি করিয়া এক नादिरकल ब्रक्त वहकर्भ वावश्रंत करता अशास लक्षात अमनामी अरमक, অপকৃষ্ট রত্ন অনভমূলো বিক্রীত হয়। চৈত্র বৈশাধ ও ভাজ আধিন জোক্ষড়া তুলিবার কাল। প্রায় আড়াইশত নৌকা সমুদ্র মধ্যে নম্বর করে। ভুবুরীদের পৃষ্ঠে দীর্ঘে অর্দ্ধহাত ও প্রস্থে ১ পোয়া পাগর বাঁদা। হাতে চামভা জড়ান ও অন্ত। গলায় জালের থলি ও তাহাতে দীর্ঘরশি লাগান। এবং পায়ের তলে একখান বড় পাখর। পৃষ্ঠের পাখরের বলে তরক্ষে ভাদিয়া যায় ন। ও চল্লিশ হাত জলের নীচে হাঁটীয়া বেড়ায়। হাতের চাম-ড়ার জন্ম জোঙ্গড়া ডুলিতে কট পায় না, গলার থলিতে প্রায় ৫০০ করিয়া জোকড়া তুলিয়া আনে। প্রায় আধঘটা থাকিয়া নিশ্বাস ফেলিতে ছইলে গলার রশিতে টানদিলে নৌকার লোকে টানিয়া উঠায়। গলার রশির এক প্রান্ত নৌকার লোকের হত্তে থাকে। পদতলের প্রভারের ঝোকে শীত্র জলের নিম্নে গিয়া পঁতছে। সাগরের জল অক্ষ ও পরিস্ত, নিম্নের সকল তাব্য নিমে গিয়া ফুলর দেখা যায়। ছালরে আক্রমণ করিলে ভুবু-রীপা জলঘোলা করিয়া রক্ষা পায় অথবা অজ্ঞঘারা তাছাকে বদ করে। সময়ে সময়ে গ্রণ্নেট ঝিগুকের ছাজার তিশ টাকা বিক্লয় করেন। কীছারও অদুটো উত্তম মুক্তা বাহির হয়, কেহবা কিছুই পায় না।

মছরা হইতে ৩০ কোশ দূরে স্থবিখ্যাত দেতুবক রামেশ্বর। যেখানে অযোধ্যাপতি রাম সাগার পার হইয়াছিলেন। মহুরা হইতে যাতায়াত গাড়ী ভাড়া ১৫ টাকা। মছ্বার নিম্ন ভূমি অস্বাস্থ্যকর। তিনদিনের যত কমে হয় রাস্তা শেষ আবৈশ্রক। ভারত হইতে লঙ্কা পর্যান্ত সাগর এখন ৬০ মাইল বিস্তীর্ণ। এই ৬০ মাইল বাপ্ত করিয়া ভাঙ্গা সেতু। সেতু প্রায় ১২ মাইল ভারতের সহিত সংশিপ্ত। ভারত হইতে ১ মাইল ভান্ধা। তাহার পর ১১ मारेल मीर्च ७ ७ मारेल विखीर्ग बाटमश्रंत घील, जनमलत आह ३७ मारेल ভাঙ্গা। জোয়ারের সময় এই স্থানে জল থাকে কিন্তু ভাটার সময় বালি ও পাথর জাগিয়। উঠে। এইটাকে, রামমড্কা ভাষের উপর হইতে সমু-দ্রের উপর একটা কাল রেখার আয় দেখায়। তাহার পর দেভুর অংশ ১৮ মাইল দীর্থ আড়াই মাইল বিস্তু লোক পুরিত মানার দ্বীপ। যাহা রামচন্তের দেতুর অংশ ছিল এখন তাহা মাগার দ্বীপ ও তাহার উপর কেলা-যুক্ত নগর। ইহার পর ২ মাইল ভাঙ্গা। এই ভাঙ্গা পার হইলেই লক্ষা। এখানেও জলবড় কম। এত কম যে ভাটরে সময় মানার দ্বীপ হইতে মাতৃষ ও গৰু পার হইয়া লক্ষা যায়। পূর্বের এই মেতুর উপর দিয়া লোকে লক্ষা যাতায়তে করিত। সমুদ্রের ধাকায় ভান্সিয়া যাওয়াতে ১৪৮৪ শৃঃ অদ অব্ধি চলাচল বন্ধ হইয়াছে। এই দেবুর উভয় পার্শ্বে দাগরের জল কম 🔊 অভাস্তরে বালি 🤏 পর্বত। এই দকল ভাগ দেতুর অংশ ছিল। এক্তর ক্ষুদ্র নৌকাদি ব্যতীত জাহাজ চলিতে পারে ন।। আমরা ব্যাগাক নদীর সলমস্থলের কিছু দূরে ভারতের শেষ সীমায় দাঁড়াইয়া পূর্বি ত পশ্চিম সাগরের কিছু কাল লীলা দেখিতে লাগিলাম। ভয়ঙ্কর বানরী সেনা সহ সেই ধত্তর্বর উপস্থিত হইলে সেতু বাঁধিবার সময় এখানে কি তুমুল কাওই উপৃত্তিত হইয়াছিল। আজ আমি নিত্তরে দণ্ডায়মান? অরে আর্থ্য-দের গৌরবের ভূমি। আমি শত শত নমস্কার করি। এ ডানিউব বাঁধা नाहै। शांत्र (य नज़द्र इस ना ! একে इक्षीख द्रावन। नल थ जीवन विखाद কিমপে সরভে করিল, নয় পাঘাণে বুনিয়াদ পত্তন করিয়া বাঁধিবার বিলক্ষণ

কৌশল আছে। বাহুল্য ভয়ে লিখিলাম না। আমরা পোতে রাত্রি নয়টায় আরোহণ করিয়া প্রাতে রামেশ্বর পতিছিলাম। সেতুর অংশ রামেশ্বর দ্বীপ নিম্নে বালুকাময় ও বাবলা রক্ষে আকীর্ণ। চানের সম্পর্ক নাই। দেবভার আদেশান্ত্রগারে কেহই দ্বীপে হলকর্ষণ করিতে পায় না। অধিকাংশ দ্বীপ বাদী দানের উপর নির্ভন্ন করিয়া দিনপাত করে। রামেশ্বরের মন্দির জতি প্রকাণ্ড ত খোদকারীতে পূর্ব। দেখিতে অতান্ত চমৎকার। ইহার দ্বারদেশ প্রায় শত ফুট। উহার উপর অভি প্রকাণ্ড প্রাথর। চতুকোণাকার এই হৃতিন্তীর্ণ মন্দিরের দারত্রেণী দার। আমরণ অভ্যন্তরে প্রবেশ করিলাম। পূর্ব্বদিকের বারাণ্ডা মন্ত্রীসহ পলিগায় রাজমূর্ত্তিপূর্ণ করিয়াছে। এই সকল প্রস্তর মূর্তির গঠন তাদুশ উৎকৃষ্ট নহে। পলিগার বাজা এই স্থানে দান-শালা স্থাপন করিয়াছেন। বাহিরে বিস্তর লিক্ষমূর্ত্তি। পূর্ব্যদিকে প্রস্ত-রের উচ্চ বেদীর উপর কতকগুলি মূর্ত্তি বিসিয়: আছে। এই সকল দর্শন করিয়া আমরা রামেশ্বরের গৃহে উপস্থিত হইলাম। মধ্যস্থলে মহাদেবের লিক্ষ্তি ক্তমধ্যে সংস্থিত। কুত্তের উপর অর্দ্ধ হস্ত উচ্চ হইয়াছে। লিন্ধের নিম্ন-ভাগ অর্থমতিত, অন্বরত মন্তকে গলাজল ও বিলুদ্ধ পড়িতেছে। অন্ধকার গৃহ ক্ষীণলীপশিখাখোগে জ্যোত্যান। চারিদিকে চন্দনের ছড়া 🤦 ত্রিপুণ্ডুপারীরা মহাদেবের স্তব করিতেছে, অভ্যস্তরে যাত্রীকে প্রবেশ করিতে দেয় না। এই মন্দির পবন বন্দর হইতে প্রার ৯ মাইল দূর। পবন বন্দরে যাত্রীর। নেকি। হইতে নামিয়া খাকে। পথিকদের থাকিবার ধর্মশাল। মন্দ্নহে। অবিবাহিত পাণ্ডা মহাশয়ের বৈঠকখানাটী ইংরেজি প্রথায় নির্মিত। ভাগিনেয়ের। উত্তরাদিকারী হয়। নিকটে চেলিট্রি ও টোনগ-গুড়িবা নলমন্দির, নিকটন্থ সরোবর সাগর হইতে নীচ, তথাপিও ইহার জল স্থামট। এখা ন বিস্তর লোক স্থান করিতেছে। গেড়তে ভারতাবধি नक। পर्वास २८ और्थ बार्छ। अथरम ठककीर्थ। ५३ श्वात ४४ शूक्तिने, দেবীপটন ও নবপাদাণ স্থান। ইছাই দেতু মূল। ইছার পশ্চিমে রামের मर्डभेगा श्वान । उपने छेद ठक्के शैर्य पिकाल शक्तमापन, উखाद देवला देवप-তীর্থ। গদ্ধাদন সমস্ত সেতু আচ্ছন্ন করিয়া আছে। ইহার উপর পাপ-বিনাশাপ্য, গী গাসর, মঙ্গল, অত্তকুপ, ব্রহ্মকুও, হর্মৎকুও, হাগভাতীর্থা,

রামকুও, লক্ষাণ, জটা শক্ষা, অগ্নি, চক্র, শিব, শঝা, যমুনা, গলা, গ্রা, কোটি, সাগামৃত মানস ও ধল্লটোটি অবশিষ্ট এই ২২ তীর্থ পরে পরে আছে, কত লোক ভক্তিভাবে স্তব করিতেছে। দলবোজন বিস্তাণিং শত যোজন মায়তং। রামচন্দ্র সমাদিষ্টং নলসঞ্চয় সঞ্চিতং। সেতুং দৃষ্ট্রণ সমুদ্রত্ব ব্রহ্মহত্যাং বাপোছতি। দশকণ্ঠ শিরশ্ছেদ হেতবে সেতবে নমঃ। কেতবে রামচন্দ্রত্ব মোক্ষমার্গক হেতবে॥,, সেতু আর কি তোমায় দেখিতে পাইব! এখন বিদায় হই!!!

मक्ति व्

মদজীদবাটী ষ্ট্রীট ২ সংখ্যক ভবনে সেন্যক্তে জ্রীহীরালাল ঘোষদ্বারা মুক্তিত।